

राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रथों का सर्वेक्षण, भाग-२

राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थो का सर्वेक्षण

भाग-२

डॉ० नारायणसिंह भाटी

निदेशक

राजस्थानी शोध सस्थान, बीपासनी, जोधपुर

राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर

प्रकाशक
राजस्थानी प्रयागार,
सोजती गेट के बाहर, जोधपुर

पुस्तक संख्या - 198

संस्करण जून, १९८६

सर्वाधिकार डॉ० नारायणसिंह भाटी

मूल्य चार सौ रुपये (तीन खण्डों के)

मुद्रक
भारत प्रिण्टस,
जोधपुर

प्रस्तावना

जोधपुर सर्वेक्षण के प्रथम भाग में ख्यात, बात, वशावली, विगत, हाल, हकीकत और ऐतिहासिक काव्य-ग्रन्थों का सर्वेक्षण प्रेषित किया गया था। प्रस्तुत भाग ७ अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय में स्फुट ऐतिहासिक काव्य कृतियाँ हैं जिनमें ऐतिहासिक पुराणों के विविध काव्य कलाओं का वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त महाराजा मानसिंह (जोधपुर) जैसे प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्तियों द्वारा रचित काव्य कृतियाँ भी ले ली गई हैं जो कि उस काल की अनेक ऐतिहासिक घटनाओं पर प्रकाश डालने के साथ-साथ कर्ता के व्यक्तित्व और उस काल की काव्य प्रणाली आदि पर भी प्रकाश डालती हैं। इस अध्याय में सिलोका और गीत नामक रचनाओं की काफी बड़ी संख्या है जो कि इतिहास की अनेक गुणधर्मों को सुलभाने में सहायक सिद्ध होती हैं। सिलोका जहाँ ऐतिहासिक घटनाओं के प्रति लोकाभिव्यक्ति का साधन बन कर आया है और जिससे जन प्रतिक्रिया को समझने में सहायता मिलती है वहाँ वीर गीतों व कवित्तों में चारण कवियों की आँखों देखी व सुनी हुई घटनाओं का काव्यारमक अंकन है। इसी प्रकार गजलों का भी देश वर्णन की दृष्टि से बड़ा महत्व है। वे उस काल के जन-जीवन और नगरों पर अच्छा प्रकाश डालती हैं। इनमें गीतों की संख्या सर्वाधिक है क्योंकि मध्यकालीन ढिगल भाषा में ये गीत हजारों की संख्या में लिखे गए हैं। इनसे उन मोद्दामों पर भी प्रकाश पड़ता है जिन्होंने इतिहास को बनाने अथवा उसे बड़ा मोड़ देने में वीरता प्रदर्शित की है और जिनका उल्लेख दयातों व बातों में भी छूट गया है।

दूसरे अध्याय में भक्ति व दर्शन से सम्बन्धित कृतियाँ हैं। राजस्थान में सत साहित्य का खूब विकास हुआ जिसमें दादू पंथी, रामस्नेही, जसनाथी, विष्णोई आदि सम्प्रदायों का बड़ा प्रभाव जन-जीवन पर पड़ा। यह प्रभाव आज भी उन सम्प्रदायों के वागीयों में देखा जा सकता है। यहाँ राम भक्ति और कृष्ण भक्ति का भी खूब प्रचार प्रसार हुआ और कृष्ण भक्ति की अनेक सुन्दर रचनाएँ साहित्य में हुईं जिनमें यहाँ के जन-जीवन का भी सुन्दर चित्रण मिलता है। इन बातों के भक्तों का परिचय विभिन्न भक्त माला में मिलता है और कई टीकाकारों ने अपनी जानकारी से उन्हें विस्तृत रूप में दिया है। भक्त मालों की तरह सतों की परिचयों भी लिखी गईं। प्रत्येक परची में किसी एक सत का परिचय वाक्यात्मक ढंग से लिखा मिलता है। यद्यपि इनमें कई लोक-प्रवाद व काल्पनिक बातें भी आ गई हैं पर फिर भी उनका जीवनवृत्त जानने की दृष्टि से इनका बड़ा उपयोग है। राजस्थान के सांस्कृतिक अध्ययन हेतु ये कृतियाँ अपरिहाय हैं।

तीसरे अध्याय में अश्व व हाथियों की चिकित्सा से सम्बन्धित कृतियों का परिचय है। राजस्थान के ग्रामागारा में इस प्रकार की अनेक छोटी बड़ी कृतियाँ मिलती हैं। इनमें घोड़ा व हाथियों के न केवल इलाज आदि का वर्णन है परन्तु उन्हें पालने सवारी तथा युद्ध के लिये तैयार करने आदि का भी विवरण है। खास तौर पर घोड़ों की जातियों और लक्षणों पर विस्तार से विचार किया गया है। यद्यपि यह विद्या हमारे देश की प्राचीन विद्याओं में से है परन्तु मध्यकाल में जब इनका युद्ध आदि की दृष्टि से बड़ा महत्व था अनुभवों लोगों ने अपने अनुभव भी इन ग्रंथों में जोड़ दिये हैं, जो आज भी बड़े उपयोगी हैं।

चौथा अध्याय वैद्यक सम्बन्धी ग्रंथों से सम्बन्धित है। इन ग्रंथों में नाडी परीक्षा और रोग के लक्षण व निदान का विस्तृत विवरण मिलता है। अमृत सागर जैसे बड़े ग्रंथ में जहाँ ये बातें विस्तार से कही गई हैं वहाँ साधारण ग्रंथों में अनेक सस्ते नुस्खे भी लिखे हुए मिलते हैं, जिनका जन-जीवन में खूब प्रयोग होता था। आयुर्वेद की शोभ की दृष्टि से इनका बड़ा महत्व है क्योंकि कई नुस्खे यूनानी तथा अन्य विदेशियों द्वारा ईजाद किये हुए भी इनमें सम्मिलित हैं।

पाचवें अध्याय में कुछ ज्योतिष सम्बन्धी ग्रंथ हैं। यहाँ के शासकों ने इस विद्या को भी खूब प्रथम दिया था। जयपुर के नवाई जयसिंह की देन इस

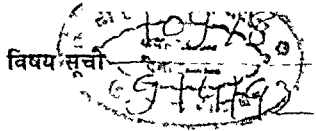
क्षेत्र में सब विख्यात हैं। इनमें तत्र मात्र मध्य-की कुछ बातों में भी मिलती है जो उस समय की भाष्यता पर प्रकाश डालती हैं।

छठे अध्याय में कुछ महत्वपूर्ण ध्याता और ऐतिहासिक महत्त्व के काव्य-प्रथा पर प्रकाश डाला गया है, जो यहाँ के संग्रहों में मिलते हैं और इतिहास तथा संस्कृति की दृष्टि में उपयोगी है।

सातवें अध्याय में बड़ी उपयोगी विस्तृत भी तब अच्छी सामग्री का परिचय दिया गया है जो महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश जोधपुर में सुरक्षित है। यह सामग्री बहिया व रूप में है जो जनानों डयाडों से सम्बन्ध रखती है। इनमें जोधपुर के शासक की रानिया पर होने वाले खच के भलावा रानियों द्वारा किये गये स्तव-हितकारी निर्माण-कार्यों का प्रामाणिक व्योरा है। यह सामग्री उस समय के रीति रिवाज, धार्मिक मान्यताएँ तथा निमाण कार्यों आदि के अध्ययन के लिए बहुत उपयोगी है।

इस प्रकार इस भाग की सामग्री न केवल इतिहास अपितु यहाँ के साहित्यिक व संस्कृति विकास के अध्ययन हेतु भी बड़ी उपयोगी है। इस भाग में ऐतिहासिक आधार वाली प्रवचन-व फुटकर काव्य रचनाओं का बड़ी मट्या में उल्लेख किया गया है। साहित्यिक रचनाएँ होत हुए भी इनकी विषय वस्तु ऐतिहासिक है। अनेक ऐतिहासिक घटनाओं और और पुराणा का इनका विषय बनाया गया है जिससे मध्यकालीन समाज व जीवन आदर्शों और मान्यताओं पर तो उनसे प्रकाश पडता ही है साथ ही अनेक ऐसी वार्ता के सकेत भी मिलते हैं जो उस काल की बड़ी घटनाओं की पृष्ठभूमि को समझने में सहायक सिद्ध होती हैं तथा उस काल की उथल-पुथल में सामान्य योद्धाओं की भूमिका को भी उजागर करती हैं, इस प्रकार उस काल के जीवित इतिहास को समझने हेतु इस प्रकार के साहित्य का अध्ययन आज अपेक्षित है।

प्रथम भाग की तरह ही इस द्वितीय भाग के सर्वोत्कृष्ट ग्रंथों का अध्ययन प्रस्तुत करने में हुकमसिंह भाटी ने तत्परता से सहयोग दिया है। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के अधिकारियों का भी बराबर सहयोग बना रहा, जिसके लिये मैं उनका आभारी हूँ।



प्रथम अध्याय

शिवल गीत, कवित्त, दोहा आदि सग्रह

१	राव अमरसिंह रो तिलोको	-	१
२	तेजसिध रा केया सबया	--	१
३	रायसिंह रासो आदि	---	२
	(१) राजा रायसिध विदनेरोया रो रासो, गकर भाट कृत २, (२) गीत महाराजा जगसिध रो ३		
४	कुण्डलिया महाराजा पदमसिंह (बोकानेर) रो आदि	---	३
५	बीर कवित्त गीत आदि	---	४
	(१) गीत दुरगादासजी रो ५, (२) दातार मूर सनवादो ५, (३) मुक्कन बत्तोसी ५, (४) गीत अजु न गौड रो ५, (५) पावूजी रो छद (मेहेजी कृत) ५ (६) उमादे भटियाणी रा कवित्त ५, (७) गीत चापावत जंतसिध रो ६, (८) गीत दुरगदासजी रो ६, (९) गीत कूपावता रा (रतनू हमीर कृत) ६ (१०) गीत महाराजा अर्जसिधजी रो (रतनू साइदान कृत), (गुजरात धी घिरे पदारिया तिल सभे रो) ६, (११) गीत महाराजा अजीतसिध रो ६, (१२) गीत महाराजा सिवसिधजी अणद सिधोत रो ईदर रं राज रो, बद्रूक रं भाव रो ६, (१३) गीत रावळ प्रतापसिधजी रो ६		
६	बीरमदे सोतकी रा डूहा	---	७
७	अमरसिंह रा भूलणा तथा बीरगीत आदि	--	७
	(१) नूनणा राव अमरसिंह (घाटा किसना कृत) ७ (२) गीत राठीड		

- विशानदासजी री (भ्राता गोयददास कृत) ८, (३) दवावेत राव अशेरान
जी री (मेहडू विहारी दास कृत) ८
- ८ गजल चित्तोड री ८
- १० घात गीत कवित्त सग्रह ८
(१) राठीड हिंदूसिध री कवित्त ६, (२) गीत औरगजेव पातिसाह नुं ६,
(३) गीत महाराजा अमैसिध नुं ६, (४) राणा राजसिंह री कवित्त ६
- ११ कवित्त सग्रह १०
(१) अमरसिंह री कवित्त १०, (२) प्रतापसिध उदावत री छंद १०,
(३) राठीड रतन महसदासात री वचनिका १०
- १२ नेमनाथ अर अमरसिंह री सिलोको १०
- १३ बारेमास रा दूहा, अमरसिंह री छंद इत्यादि ११
(१) बारे मास रा दूहा ११, (२) अमरसिध री छंद ११
- १४ राव सुरताण रा भूलणा, बीर गीत आदि १२
- १५ डोला मारू रा दूहा तथा केसरीसिंह री सिलोको १२
(१) डोला मारू रा दूहा १२, (२) केसरीसिध (राठीड) री सिलोको १२
- १६ बोहे, गजल इत्यादि १३
(१) राठीडा री कमाल १३, (२) उदयपुर री गजल १४, (३) गुण
विवेकवार नीसाणी (गाडण केसादास कृत) १४, (४) मदन राजा री
वात १४
- १७ कवित्त वात दूहा आदि १४
(१) महाराज बपतसिंह रा कवित्त (कवि जीवण कृत) १४, (२) सार्वलिंगा
सदवच्छ री चौपाई १४, (३) राजा रिसालू रा दूहा १४, (४) दूगादास
राठीड री गीत १४
- १८ उदयपुर री बरण १६
- १९ त्रिमलशाह पोरवाड री सिलोको १७
- २० कुशलसिंह तथा महाराजा बखतसिंह रा सिलोका --- १७
(१) कुशलसिध री सिलोको (बखता कृत) १७ (२) राजा बपतसिध री
सिलोको (लिखमीचंद कृत) १८

- २१ अमरसिंह तथा अजीतसिंह री सिलोको आदि १८
 (१) अमरसिंह री सिलोको १८, (२) अजीतसिंहजी री सिलोको १९,
 (३) तारा तबोल की वारता २०, (४) हीर विजय सूरि सिन्हाय २०,
 (५) चौरासी सीष २०
- २२ वीरगीत फुटकर कवित्त सग्रह आदि २१
 (१) गीत महाराजा बीजेसिंह री (कुल २४ गीत) २१
- २३ आसथानजी री साको, मेहदास कूपावत री सिलोको इत्यादि २२
 (१) आसथान जी री साको २२, (२) मेहदास कूपावत री सिलोको २३
- २४ ऐतिहासिक कवित्त सग्रह २३
 (१) कवित्त महाराजा अर्जुसिंह रा (शिवनाथ वृत्त) २४, (२) वीर रस के कवित्त हाडा क्षत्रसाल के २४, (३) वीर रस के कवित्त महाराजा अभय सिंह के २४, (४) नाम माल (नददास वृत्त) २४, (५) पातसाह भ्रकवर फोज राणा प्रताप उपर लायी जिण री कविता २४, (६) नवाब धानपाना के कवित्त २४, (७) पातसाह के कवित्त २५, (८) दारासिकोह के कवित्त २५
- २५ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि २५
- २६ कुशलसिंहजी री सिलोको २६
 (१) कुशलसिंहजी री सिलोको (बखता वृत्त) २६
- २७ जती रासो २७
- २८ गिरनार नी गजल २७
- २९ फुटकर कवित्त २८
 (१) पद्मणी वखान २८, (२) जाम लाखे री निसाणी २९, (३) लापा फुलाणी ना कवित्त २९, (४) दातार सूर नो सवादो (बारट सवर) २९
- ३० कवित्त कथा सग्रह २९
 (१) प्रस्ताविक कवित्त ३०, (२) मारकडे पुराण टीका का अनुवाद ३०,
 (३) मधुमालती कथा (चतुरभुज दास) ३०
- ३१ चापावत केशवदास री भ्रमाल आदि ३१
 (१) चापावत केशवदास री भ्रमाल ३१

- ३२ फुटकर कवित्त इत्यादि ३१
 (१) महाराजा अभयसिंहजी रा कवित्त (बखता खिडिया) ३१, (२) ई दा
 रा कवित्त (लाळेस रामदास कृत) ३१, (३) चहुवान सेरसिंह रा कवित्त
 (अमरचन्द कृत) ३२, (४) हाला भाला री कुडलीया ३२, (५) गीत
 सेतपालजी री (भज्ञात कवृ क) ३२
- ३३ कवित्त सग्रह ३२
 (कवियों के कुल नाम १३५) ३४
- ३४ पाबूजी के दोहे, सालिहोत्र थ ऐतिहासिक घटनाएँ आदि ३४
- ३५ महाराजा भीमसिंह रा कवित्त ३५
- ३६ फुटकर गीत कवित्त सग्रह ३६
- ३७ राठोडा री रास ३६
- ३८ वीर गीत कवित्त सग्रह ३७
 (१) विरद सगार (करनीदान कृत) ३७, (२) छद रत्नावली (हरीराम
 दास) ३७, (३) गीत नगजी कविया री केयोडो ३८, (४) गीत ३८,
 (५) गीत महाराजा तखतसिंह री ३८ (६) गीत कवर छत्रसिंह बामीणरा
 री (बाढा जवानजी कृत) ३८, (७) गीत पोकरणा ठाकुर भमुतसिंह री
 ३८ (८) निसाणी महाराजा विजैसिंहजी री ३८, (९) पोकरण रा
 ठाकरो देवीसिंघ महासिंघजी रा री भूमाल ३८, (१०) उदयपुर राणा
 भीमसिंह री भूमाल (मेहुडु महादान कृत) ३९
- ३९ वीर गीत कवित्त सग्रह (कुल ८ गीत) ३९
- ४० ऐतिहासिक कवित्त सग्रह ३९
 (१) मानसिंघजी री कवित्त (वणसूर चैनदान कृत) ३९, (२) जसलमेर
 महाराजा री कवित्त ४० (३) जंसलमेर रावळ बरीसालजी रा कवित्त
 (वृपाराम कृत) ४०, (४) महाराज जसवतसिंघजी रा कवित्त ४०,
 (५) जंसल छत्रसोघजी री कवित्त ४१
- ४१ छप्पय डूहा कवित्त ४१
- ४२ महाराज तखतसिंह के स्वगयास पर कवित्त ४१
- ४३ फुटकर ऐतिहासिक कवित्त (प्रतिलिपि) ४२
 (१) नागौर अमरसिंघजी गजसिंघोत रा भूलणा, बाढा चारण दुरसा कृत
 ४२, (२) कवित्त महाराजा अर्भेसिंघ जी रा खिडिया बखता जी कृत ४३.

- (३) भ्रमाल ठाकुर देवीसिंहजी पोकरण ठाकुर अर जणिमा लारा भाटिया सू वेढ हुयो तिण विपे कवि जुडिया रा लालस चारण सबळ जी कृत ४३,
 (४) गीत सपखरो आसोप ठाकुर विजैसिंघजी दिघणीयाँ री फौज सु मेडते भगडो कर काम आया तिण सम री ४३, (५) रूपनगर री सतिया रा छप्पय (बारट अंजनजी कृत) ४३, (६) रूपादे जी री बेल (हरजी भाटी) ४३, (७) रूपक राव धी सिवदानसिंघ भारधसिंघोत, बारट लालेजी कहयो ४४, (८) अजीत अथ, पोकरजी सिरदार काम आया तिको समे ४४
- ४४ मान जसो मडण ४५
- ४५ राजा हरीसिंह री सप्रह ४५
 (१) कवित्त ४६, (२) उम्मदसिंह तथा भीमसिंह के पद्य ४६, (३) गीत बडो सणोर पोकरण ठाकुर देवीसिंघ री ४६
- ४६ फिरगी री गीत ४७
- ४७ धीर गीत कवित्त सप्रह आदि ४७
- ४८ गीत राव कल्याणमल अर बिठू पदमा री तथा नागएचीया देवी रा सोरठा आदि ४८
 (१) गीत राव कल्याणमल री ४८, (२) गीत बीठू पदमा री ४८, (३) सोरठा श्री नागएचीया देवी रा ४८
- ४९ स्फुट कवित्त गीत बशावलिया आदि ४९
 (१) पृथ्वीराज चहुआण पर स्फुट छंद आदि ४९, (२) गीत ठाकुरा री ४९, (३) गीत राजा राइसीध री ४९, (४) गीत अकबर री ४९, (५) गीत सूरसिंघ री ४९ (६) गीत सपखरी दुरगदासजी री ५०, (७) गीत उपसेन चुडासवा री गिरनार राज्ये ५०, (८) दोहा अमरसिंघ री कटारी रा ५०, (९) राठोडों री बशावली ५० (१०) राणा री पट्टावली ५०, (११) शाखाओ री विगत ५०
- ५० धीर गीत कवित्त सप्रह ५१
 (१) दूहा महाराज राजसिंह रा कह्या ५१, (२) दूहा महाराजा राजसिंहजी नै राठोड जोगीदास कहै ५१, (३) गीत राजसिंघ री मनरूप खिडियो कहै ५१, (४) गीत रावत प्रतापसिंघजी री मथुरादासजी कहै ५१, (५) गीत पदमसिंघजी री, मथुरादास घघवाडो कहै ५२, (६) गीत प्रोहत जसा

अचलदासोत री ५२, (७) निसाणी हरिसिंघजी री खिडिया हरनाम जी वही ५२ (८) खेतपाल जी री छद (खिडिया हरनाम कृत) ५२

- ५१ वीर गीत सग्रह ५३
(कुल १७ गीत)
- ५२ वीर गीत सग्रह आदि ५३
- ५३ वीर गीत कवित्त सग्रह ५४
(कुल ६ गीत)
- ५४ वीर गीत सग्रह ५५
(कुल ५ गीत)
- ५५ वीर गीत सग्रह आदि ५५
(कुल ५ गीत)
- ५६ वीर गीत सग्रह - ५६
- ५७ वीर गीत सग्रह ५६
(१) कवित्त नवरत्न रा, माहाराज गजसिंघ रा (माघोदास भाट कृत) ५६
(कुल २० गीत)
- ५८ गीत रूपे सुरजमल री तथा राजा भीमसिंह री रूपक आदि ५८
(१) गीत रूपे सुरजमलोत री ५८, (२) महाराज भीमसिंह री रूपक (नाथू निरभारामकृत) ५८, (३) गीत सपखरा (महाराजा बखतसिंघ) ५८
- ५९ वीर गीत सग्रह ५९
(१) गीत मेडतिया सुगनसिंघ कीसोरसिंघोत री ५९, (२) गीत सबलसिंघ देवीसिंघोत री ५९, (३) गीत मेडतिये जालमसिंघ निसोरसिंघोत री ५९, (४) गीत सेरसिंघ री ५९ (५) गीत चापावत देवीसिंह महासिंघोत री ५९, (६) गीत चापावत कुसालसिंघ नै सेरसिंघ री ६० (७) गीत मेडतिया सेरसिंघ सिरदारसिंघोत री (आडा पहाडखान कृत) ६०
- ६० वीर गीत दूहा सग्रह ६०
(१) जोधपुर महाराजाबा की जम कुण्डलिया ६०, (२) गीत आवेर रा पणी राजा रामसिंघजी री ६०, (३) भाव पचासका (बदावन दास) ६१
(४) गीत महाराजा बीजसिंघजी री ६१, (५) डुरगदास आसकणोत रा दूहा (खिडिया तेजसी कृत) ६१

- ६१ राठीड देवीसिंह री गीत आदि
(१) राठीड देवीसिंहजी री गीत ६२
- ६२ वीर गीत कवित्त सग्रह ६२
(कुल ३४७ गीत व कवित्त)
- ६३ वीर गीत सग्रह ६६
(१) वश भास्कर के छंद (सूरजमल कृत) ६६, (२) गीत वीरमदेजी री ७०, (३) महाराजा बलवतसिंघ री निसाणी (बारट दुरगादत कृत) ७०, (४) गीत पृथ्वीसिंघ री (खिडिया प्रतापजी कृत) ७०
- ६४ वीर गीत सग्रह आदि ७०
(कुल १३ गीत)
- ६५ वीर गीत कवित्त सग्रह ७१
(१) कवित्त ठाकुरा द्वारकादासजी री (खिडिया ददाजी कृत) ७१, (२) गीत कुशलसिंघ री (लाळम नवला कृत) ७२, (३) गीत राजा उमेदसिंघ री (खिडिया हुकमीचंद कृत) ७२, (४) नीसाणी नसीत की ७२, (५) नीसाणी ७२, (६) गीत (बारट स्यामदान कृत) ७२
- ६६ फुटकर वीर गीत सग्रह ७३
- ६७ वीर गीत सग्रह ७३
(कुल ६ गीत)
- ६८ वीर गीत सग्रह ७४
(१) गीत चापावत कुशलसिंघ री (नवलजी कृत) ७४, (२) गीत मेडतिया भीमसिंघ री (आढा खुमाण कृत) ७४, (३) गीत मेडतिया भीमसिंघ री (ठा० खुमाण कृत) ७४, (४) गीत भाटी वीसनसिंघ री ७५, (५) गीत महाराजा बलवतसिंघ री ७५
- ६९ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि ७५
(कुल ५४ गीत)
- ७० वीर गीत कवित्त सग्रह ७६
(१) गोगादेजी (राठीड) री छंद जोइया दला नै मारियो जिण भाव री (पहाडखान कृत) ७७ (कुल ३७ गीत)
- ७१ गीत भाण सोणरा री ७६

७२	वीर गीत कवित्त सग्रह आदि (कुल ४ गीत)	७६
७३	उदभाण री गीत	८०
७४	महाराजा जसवतसिंह री गीत	८०
७५	वीर गीत कवित्त सग्रह आदि (१) कवित्त राजा सिवराजजी का (भूषन कृत) ८१, (२) गीता री सूची ८१, (३) कवित्त महाराजा भर्मसिंघजी रा (बखता खिडिया कृत) ८१, (४) गीतो की सूची ८१ (कुल २२ गीत)	८०
७६	वीर गीत सग्रह (१) गीत खिडियो लक्षमन री कही ८२, (२) गीत हुकर्मसिंघ री (नगजी खिडिया कृत) ८२, (३) गीत बूडसू ठाकर प्रतापसिंघ री (खिडिया नगजी कृत) ८३	८२
७७	वीर गीत, भवतार चरित्र आदि (१) गीत बडली लालसिंह री ८३, (२) कवित्त (अज्ञात कवृ क) ८३, (३) विजय अवतार गीत (भवतार चरित्र) बारट नरहरदास कृत ८३, (४) राठोडा री पीडिया ८३ (५) राठोडा री पीडिया ८३, (६) गीत सावभडो ८३	८३
७८	वीर गीत कवित्त सग्रह आदि (१) गीत ठाकुरा श्री गोरवरघनजी रा ८४, (२) गीत उदावता रा, साभडावश जोरजी कृत ८४, (३) कवित्त राणा कूभाजी री ८४, (४) फुटकर गीत कवित्त ८४ (कुल २३६ गीत)	८४
७९	वीर गीत कवित्त सग्रह (कुल २२० गीत कवित्त)	९१
८०	वीर गीत कवित्त आदि सग्रह (कुल ११ गीत)	९८
८१	वीर गीत कवित्त सग्रह (कुल ३३ गीत)	९८
८२	फुटकर गीत कवित्त इत्यादि (कुल ५ गीत)	९९

८३	वीर गीत सग्रह (कुल १३ गीत)	६६
८४	वीर गीत कवित्त सग्रह (कुल १६ गीत)	१००
८५	वीर गीत दोहा सग्रह (१) गीत दोहा नाथो रा १०१, (२) गीत वीरमदे सोनगरे री १०१, (३) गीत राव गागे री १०२, (४) गीत मालदेजी री १०२, (५) राजान राजावत री वात वणाव १०२, (६) गीत राव करमसेण री (आढा दुरसा कृत) १०२, (७) गीत राजा बहादुरसिधजी री १०२	१०१
८६	वीर गीत कवित्त सग्रह (कुल ६५ गीत)	१०३
८७	महाराजा मानसिंह (कुल ८ गीत)	१०६
८८	वीर गीत सग्रह (१) गीत राणा प्रताप री १०७, (२) गीत राणा अमरसिध री १०७, (३) गीत मानसिध री १०७, (४) गीत महाराजा विर्जसिध री (उमेदसिंह सादू कृत) १०७, (५) गीत प्रसतावीक छोटी साणोर (नवला लाळस कृत) १०७, (६) गीत आद्वुजी री ओपो आढो नवलो लाळस भेळो कहै १०७	१०६
८९	वीर गीत सग्रह (कुल २८ गीत)	१०८
९०	वीर गीत कवित्त सग्रह (१) कवित्त धीव उदावत री (अलुजी कृत) १०९, (२) कवित्त भोम गोपाळदासोत री १०९, (३) गीत भगवानदास वाघोत री १०९, (४) गीत भोपति बुदेंसीघोत री ११० (५) गीत कृपा महाराजोत री (मेहाजी कृत) ११०, (६) गीत जोधाजी री (हरसूरजी कृत) ११०, (७) गीत बाधा सीहावत री ११०, (८) गीत सीहा सेतरामोत री ११०, (९) गीत सोभत सलपावत री ११०, (१०) गीत सावळदास भोजराजोत री (बारट लषा कृत) ११०, (११) गीत नारायणदास पगारोत री १११, (१२) गीत सूरजमल जैमलोत री १११, (१३) गीत राजा मानसिध री १११,	१०९

(१४) गीत पतिसाह अकर री १११, (१५) गीत सामळदास भोजराजोत री १११, (१६) गीत मूरजमल हाबा री (कविया अलू वृत) १११, (१७) गीत श्री नारायण री (नरहरदास वृत) १११, (१८) गीत राणा प्रतापसिंघ री (भासीया पीरा दलावत वृत) ११२, (१९) गीत राणा प्रताप री (रामा सादू वृत) ११२ (२०) गीत राजसिंघ विसनदासोत री ११२, (२१) गीत कचरा जसराजोत री ११२, (२२) गीत सुरताण मानावत री ११२, (२३) गीत ईसरजी री ११२, (२४) गीत जगताप कल्याणदासोत री ११२, (२५) गीत भासकरन देईदासोत री (बारट लखा वृत) ११२, (२६) गीत प्रधीराज कल्याणमलोत री (लाखा वृत) ११३, (२७) गीत मूरसिंघ भगवानदासोत री (बारट लाखा वृत) ११३, (२८) कवित्त सावळदास वईसिंघोत री (अलूजी कृत) ११३, (२९) गीत प्रधीराज जमलोत री (दूदा बीठू वृत) ११३, (३०) कवित्त बीठलदास री ११३, (३१) कवित्त गोपालदासजी री ११३, (३२) गीत हरिसूर बारठ री कहीयो ११३ (३३) नीसाणी भोजराज मनोहरदासोत री (बारट नरहरदास कृत) ११३, (३४) नीसाणी राणा जगसीगजी री (हेमराज सामोर कृत) ११४, (३५) भूलणा महाराजा श्री गजसिंघ रा (बारट राजसिंघ कृत) ११४ (३६) भूलणा अचळा तिलोक कछवाह रा (सादू भाला वृत) ११४, (३७) गीत भगवर्तसिंघ री (बारट सतीदान कृत) ११५, (३८) गीत जैतसिंघ री (बारट सतीदान कृत) ११५, (३९) गीत मेडतीया री साणोर ११५ (४०) कवत ठाकुरा भोमसिंघ री (गाडण खुमाण कृत) ११५, (४१) गीत केसरीसिंघ सेखावत री ११५, (४२) गीत सूजाजी री ११५, (४३) गीत महाराज सुजाणसिंह री ११६ (४४) गीत महाराजा श्री गजसिंघ री ११६, (४५) गीत पिडिया भरदास री कही ११६ (४६) गीत ठाकुरा उदसिंघ री (सादू अनोपसिंह कृत) ११६, (४७) गीत ठाकुरा हरनाथसिंघ री ११६, (४८) गीत ठाकुर जोरावर सिंघ री ११६ (४९) गीत ठाकुर हरनाथसिंघ री ११६ (५०) गीत राव करमसी री ११६, (५१) गीत ठाकुर भोमसिंघ री (भासीया सीराम वृत) ११७, (५२) गीत ठाकुर जोरावरसिंघ री ११७, (५३) गीत ठाकुर भोमसिंह नू (महडू हरदान कृत) ११७, (५४) गीत कुसळसिंघ हरनाथोत री ११७, (५५) गीत ठाकुर भोमसिंघ री (लाळस माला वृत) ११७, (५६) गीत ठाकुरा हरीसिंह री (साहिबदान रतनू वृत) ११७, (५७) गीत मोतीसर

प्रभूदान कहे ११८, (५८) गीत हरनाथ रौ (साहू भानीदास कृत) ११८,
(५९) गीत ठाकुर कुसाळसिध रौ ११८

६१ घोर गीत साग्रह

(१) गीत सनूबर भीमसिधजी रौ ११८, (२) गीत- कुचामण ठाकुर
शिवनाथसिधजी रौ ११८, (३) गीत जसोल बैरीसाल रौ (जाला कृत)
११९, (४) गीत जसोल भोमजी रौ (जाला कृत) ११९, (५) गीत सोढा
सिधदासजी रौ (जाला कृत) ११९ (६) गीत भ्रमभररा राजा बगतावर
सिधजी रौ (जाला कृत) ११९ (७) गीत ठाकुर तगतसिध रौ (जाला
कृत) ११९, (८) गीत चांपावना रा (जाला कृत) ११९ (९) गीत होटतु
रामसिध रौ (जालाकृत) ११९, (१०) गीत मा० भ्रमभसिह रौ (करणी
दान कृत) १२०, (११) बाव रा राणा सरदारसिध जी रौ कवित्त (जाला
कृत) १२०, (१२) गीत भ्रमसिधजी रौ (बखता खिडिया) १२०, (१३)
गीत अजीतसिध रौ १२०, (१४) गीत बखतसिध रौ १२०, (१५) गीत
(बाकीदास कृत) १२०, (१६) गीत (महडू महादान कृत) १२०,
(१७) गीत (बाकीदास कृत) १२१, (१८) गीत मोकलसर चुतरसिध
रौ (जाला कृत) १२१, (१९) गीत डूगरपुर रौ (बाकीदास कृत) १२१,
(२०) गीत सरूपसिग रौ (जाला कृत) १२१, (२१) गीत बाभा शिवनाथ
सिग रौ (जाला कृत) १२१, (२२) गीत काणारो ठाकुर केरसीग रौ
(जालाकृत) १२१, (२३) गीत (जाला कृत ३ गीत) १२१, (२४) गीत
भाटी हरदास जी रौ १२२, (२५) गीत (जाला कृत) १२२, (२६)
गीत सरणीया जंसाजी रौ १२२, (२७) गीत मालगढ रामसीग रौ (जाला
कृत) १२२, (२८) गीत सरवईया भभूतसिग रौ (जाला कृत) १२२,
(२९) गीत सरवईया विजाजी रौ (ईसरजी कृत) १२२, (३०) गीत
रायपुर माधोसिग रौ (जाला कृत) १२२, (३१) गीत रतलाम बपु तसिध
रौ (जाला कृत) १२२, (३२) गीत किशनसिध धोवावत रौ १२३, (३३)
गीत राव दसल भुजपती रौ (जाला कृत) १२३, (३४) गीत कुभा सीची
रौ १२३, (३५) गीत गोपाळदास सुरताणोत रौ १२३, (३६) गीत भुज
राव देसल रौ (जाला कृत) १२३, (३७) गीत महिषा पमार रौ १२३,
(३८) गीत गगे सीहाजत रौ १२३, (३९) गीत उदै जंतसिधोत रौ (रूपा
कृत) १२३, (४०) गीत (जाला कृत) १२४, (४१) गीत मांडण
बू पावत रौ (दुरसा कृत) १२४, (४२) गीत सालिमसिध बू पावत रा

- (जाला कृत) १२४, (४३) गीत वढगाव मोकसिध रो (जाला कृत) १२४, (४४) गीत रावळ जाम रो (सखता लाळस कृत) १२४, (४५) गीत वढ गाव मोकसिध नै भमराव मूता रो (जाला कृत) १२४, (४६) गीत गढढ सोडा घना रो (जाला कृत) १२४, (४७) गीत रावळ जाम रो (ईसर कृत) १२४, (४८) गीत रावळ जाम रो (भासा कुरसा कृत) १२४, (४९) गात रायपुर माघोसोगजी रो (जाला कृत) १२४, (५०) गीत टापर गुला रो (जाला कृत) १२४, (५१) गीत टापर बापरा रो (जाला कृत) १२४, (५२) गीत मा० तगतसिह रो १२४, (५३) गीत जसोल उमजी रो (जाला कृत) १२४, (५४) प्रथ रस रतन १२४ (५५) कमाल ठाकुर रूपसिध जी रो (बाकी दास कृत) १२६

६२ वीर गीत सग्रह

- (१) गीत राव रतनसीध रो (महड्डु मुक्कन कृत) १२६, (२) गीत राव भखंराज रो (भाडा महेशदास कृत) १२६, (३) गीत मानसिध रो (भासिया रामा कृत) १२६, (४) कवित्त भचल माढणसीधोत रो (भाडा पहाडखान कृत) १२७, (५) गीत जाडेचा मोहड रो (भाडा पहाडखान कृत) १२७ (६) कवित्त स्याळ रा (जंतावत केसरीसिह कृत) १२७, (७) गीत गोकळदास भाणावत रो (मोतीसर चतुरमुज कृत) १२७

६३ वीर गीत सग्रह

- (१) परमेश्वरी की नीसाणी १२७ (२) गीत महाराजा श्री अनोपसिधजी रो (गाढण गोकळदास कृत) १२८ (३) गीत महाराजा अनोपसिधजी रो (गाढण भाईदान कृत) १२८, (४) निसाणी गोगाजी रो १२८ (५) गीत महाराज बिरदसोग जी रो १२८, (६) गीत महाराज प्रतापसोग रो १२८, (७) गीत पहाडसिध करमसोत रो १२८ (८) गीत राजा बखतसिध रो १२८ (९) गीत महाराजा विजसिध रो (साडू उमेदसिध कृत) १२८, (१०) गीत महाराजा बपतसिह रो (साडू पृथ्वीराज कृत) १२९ (११) गीत जगराम उदावत रो १२९, (१२) गीत महाराजा भीवसिधजी रो १२९ (१३) गीत महाराजा सूरतसिध (बीकानेर) रो (साडू जालम कृत) १२९, (१४) गीत ठाकर सिवसिधजी रो १२९, (१५) गीत भमर सिध बगसीरामोत रो (साडू जालम कृत) १२९ (१६) गीत भाटी जसवतसिह देईदानोत पेजडले रो १२९, (१७) गीत जबानसिध वनसिधोत

रो (रास ठाकुर) १२६, (१८) गीत बेमरीसिध रतनसिधोत आसोप रा
 ठाकुर रो १३०, (१९) गीत जोधराज रो (जालम वृत्त) १३०, (२०)
 गीत नवलमिध सिधसिधोत रो (जालम वृत्त) १३०, (२१) गीत कोटा रा
 महाराजजी रा १३०, (२२) गीत गुमानसिध रो १३०, (२३) गीत बगही
 रा ठापुरां रो १३०, (२४) गीत सेसावतां रो (साद्र उमेद वृत्त) १३०,
 (२५) गीत समरसिंह सिधसिधोत रो १३०, (२६) गीत सिधसिध रो
 १३१, (२७) गीत नवलसिध सादुळसिधोत रो १३१ (२८) गीत नरसिध
 दास नवलसिधोत रो १३१, (२९) गीत हणतसोग केसरीसिधोत रो १३१,
 (३०) गीत मुजानमिध बेमरीसिधोत रो १३१, (३१) गीत बाघसिध
 बिसनसिधोत रो १३१, (३२) गीत भरजनसिध वपतसिधोत रो १३१,
 (३३) गीत जोगीराम हाडीका रो १३१, (३४) गीत दलजी हाडीका रो
 १३२, (३५) गीत भारसिध उरजनसिधोत रो १३२, (३६) गीत भम
 सिध बागसिधात रो (साद्र प्रताप वृत्त) १३२, (३७) गीत जगतसिध उमर
 रो राजगढ १३२, (३८) गीत लखमणसिध नाहरमिधोत रो (साद्र जालम
 वृत्त) १३२, (३९) गीत दुर्लसिध साइखानी रो १३२, (४०) गीत ठाकर
 सिधसिध रो १३२, (४१) गीत जालिम रो कही १३२, (४२) गीत
 दोलतसिध नीबाज रो १३३, (४३) गीत कल्याणसिध रो १३३, (४४)
 गीत खैरवा रा ठाकुर रो १३३, (४५) गीत हरीसिधजी चूरू रा ठाकुर
 को १३३, (४६) गीत हिदूसिध प्रतापसिधोत रो १३३, (४७) गीत सूजा
 कविया रो कहीयो १३३, (४८) गीत कुसळसिध रो १३३, (४९)
 नीसाणी साद्र उमदजी रो कही १३३, (५०) गीत किशनगढ रा १३४,
 (५१) गीत नीबा नीबडी रा १३४, (५२) गीत सावळदास राणावत रो
 डाबर को ठाकर १३४, (५३) गीत मडतीया रो १३४, (५४) गीत सेर
 सिध रो १३४, (५५) गीत महाराज विजसिध रो (स्वामी परसराम वृत्त)
 १३४, (५६) गीत चढावल रा १३४, (५७) कवत महाराजा भभयसिध
 जी (खिडिया बखता वृत्त) १३४, (५८) गीत नीबाज रा ठाकुर रो १३५,
 (५९) गीत खगारसिधजी लाडपानी रो (दवाजी रतनू वृत्त) १३५

६४ घोर गीत संग्रह १३५

(१) गीत कटाळीया ठाकुरा रा १३५, (२) गीत दूहा पदमसिध (चौहान)
 रा १३५ (३) मुरजाळ भूपण (बाकीदास वृत्त) १३६, (४) गीत ठाकुर
 भमरसीगजी रो १३६ (५) महाराज सबळसिध रो गीत १३६, (६)

नीसाणी गाढण बेसोदास जी रो वही १३६, (७) गीत कीसीयाणपुर राव दुरजणसिध रो महाराजा मानसिध रो फुरमायोढी १३६ (८) गीत सीकर रा राव माघोसिगजी रो (गाढण मैतापदान वृत) १३६, (९) सुरजगढ ठाकुर साहब रो गीत १३६, (१०) गीत ठाकुर उरजणसिध रो (लाळस रामदान कृत) १३७, (११) गीत भाढा पाडपान रो कयो १३७, (१२) गीत जसलमेर बैरीसाल रो १३७

९५ धीर गीत कवित्त सग्रह आदि १३७

(१) कवित्त मोकमसिध जैतमलोत रा (वारट भोजनजी वृत) १३७, (२) गीत मसूदे ठाकुर भेरुसिध रो १३८, (३) गीत विपळिया ठाकुर रो (मोतीसर लछमण कृत) १३८, (४) गीत (भीकजी दघवाडिया कृत) १३८ (५) गीत (दघवाडिया चावडदान वृत) १३८, (६) गीत (सालूजी वृत) १३८, (७) गीत - (उम्मेदसिध सादू वृत) १३८, (८) गीत (दघवाडिया भीकजी कृत) १३८, (९) गीत (सादू बट्टी दास कृत) १३८, (१०) गीत (सादू उम्मेद वृत) १३९, (११) गीत - (मोतीसर लछमण कृत) १३९, (१२) गीत खिडिया हुबमीचद कृत) १३९, (१३) गीत (सादू लालसिह वृत) १३९ (१४) गीत (कुसला जी वृत) १३९, (१५) गीत महाराज रतनसिध रो (भासिया जैतरूप कृत) १३९, (१६) गीत (सैणीदान कृत) १३९ (१७) गीत रोमा ठाकुर सेरसिह आउवा कुशलसिध रो (करणोदान कृत) १४०, (१८) गीत महाराजा विजैसिध जी रो १४०, (कुल ८ गीत धीर)

९६ धीर गीत सग्रह १४०

(कुल २१ गीत)

९७ नाहरपान राजसिधोत रो गीत १४१

९८ मानसिह रा कवित्त गीत १४२

(कुल ५ गीत)

९९ धीर गीत सग्रह १४२

(कुल ४ गीत)

१०० गीत कवित्त सग्रह आदि १४३

(कुल ४४ गीत)

१०१	राठोड इब्राहिम रो भमाल	१४५
१०२	भरुधर क्षत्रिय वंश प्रकाश	१४६
१०३	जगत विनोद	१४६
१०४	सामर पुढ	१४७
१०५	धीर गीत कवित्त सग्रह (१) गीत जलधरनाथ रो (भासिया बुढा कृत) १४८	१४८
१०६	गीत कवित्त दूहा बात सग्रह	१४९
१०७	सिधर वसोत्पति षोडि वार्ता	१४९
१०८	धीर गीत कवित्त सग्रह	१५०
१०९	धीर गीत छप्पय कवित्त सग्रह	१५१
११०	राधा कृष्ण दोहे और ऐतिहासिक बातें	१५१
१११	गीत कवित्त बात सग्रह (१) गीत व्यास तेजकरण रो १५२ (कुल २० गीत)	१५२
११२	फुटकर ख्यात बात सग्रह	१५३
११३	ख्यात बात धीर गीत सग्रह (१) गीत बापावत दलपत गोपालदासोत रो १५४	१५३
११४	छंद प्रबंध	१५४
११५	दूहा सग्रह आदि (१) दूहा गजसिंघ रा पट्टीया नरबद रा कह्या १५५, (२) दूहा कृपा महेराजोत रा रतनू डूगरसी रा कह्या १५५, (३) जैमल वीरमदेउत रा रतनू डूगरसी देवाउत रा कह्या १५५ (४) वीरमदे दूदावत रो गीत १५५	१५५
११६	धीर गीत कवित्त सग्रह (१) भमाल ठाकुर रूपसिंह (रामपुर) की १५६	१५६
	दूसरा अध्याय शक्ति व दशन	
११७	पद मुक्तावली	१५७
११८	भक्त माल	१५७

११६	मक्त माल	१५६
१२०	भ्रमरतार चरित्र	१५६
१२१	परघी सप्रह (कुल १५ परविमें)	१६०
१२२	श्री कृष्णजी की बारे मासा पोगाके	१६१

तीसरा अध्याय

अथ एव गज चिकित्सा

१२३	गज चिकित्सा	१६२
१२४	घोडों की सालोत्र, कवित्त बोहा आदि (१) घोडो की सालोत्र १६३	१६२
१२५	ईलाज हाथी को	१६४
१२६	शालि होत्र	१६४
१२७	घोडों की चिकित्सा तथा अथ पिछांण आदि	१६५
१२८	हाथियों को सालिहोत्र	१६५
१२९	घोडां की सालोतरी	१६६
१३०	शालीहोत्र, धीर गीत सप्रह (१) शालीहोत्र १६६ (कुल ४ गीत)	१६६
१३१	हाथी को सालोतर	१६७
१३२	सालिहोत्र (प्रतिलिपि)	१६७

चौथा अध्याय

वद्यक

१३३	वद्य रत्न	१६९
१३४	अमृत सागर	१७०
१३५	अमृत सागर	१७१
१३६	वेद अमृत रत्न	१७१

पाचवा अध्याय

ज्योतिष

१३७	मुहूर्त मुक्तावलि	१७३
१३८	ताजिक सार	१७३
१३९	रत्नमाला	१७४
१४०	मुहूर्त चिंतामणि	१७५
१४१	विवाह पढल	१७६
१४२	लग्नपत्र	१७६
१४३	नार चद्रिका	१७७
१४४	विवाह पद्धति	१७७

छठा अध्याय

ख्यात, बात आदि

१४५	महाराजा भानसिंह की ख्यात	१७९
१४५अ	शाहपुरा (मेवाड़) की ख्यात	१९३
	(१) महाराजा सुजानसिंह १९३, (२) महाराज दौलतसिंहजी १९४, (३) महाराज भारतसिंह जी १९५, (४) महाराजा उम्मेदसिंहजी १९६	
१४६	राजाओं की पीढियें तथा परधानगी दीवानगी की विगत	२०१
	(१) राठौड़ राजाओं का दूहा २०१, (२) महोर में राजावा रा देवल है तिण री विगत २०१, (३) राठौड़ो री पीढियो में राजा हुवा, राजावो री जन्म तथा पाटवी विराजीया तथा धाम पधारिया तिण री याद २०१, (४) परदानगिया ईनायत हुई जोधपुर में भुसायबो ने तिण री विगत २०१, (५) दीवानगीया ईनायत हुई जोधपुर में उण री विगत २०२, (६) बगसीया ईनायत हुई जोधपुर में तिण री विगत २०२, (७) वीकानेर रे महाराजा साहब री विगत २०२, (८) किशनगढ के महाराजा साहब री विगत २०२, (९) जयपुर उदयपुर के राजाओं री विगत २०२, (१०) अलवर के राजाओं की पीढिया २०३, (११) बूंदी री तबारीय २०३, (१२) राठौड़ो री ख्यात २०३	

१४७	गुणसार (गुणसागर) महाराजा अजीतसिंह जोधपुर	२०३
१४८	बीसलदेव चहुआण रास	२०५
१४९	अजीतोदय	२०५

सातवा अध्याय

ऐतिहासिक बहियें

१५०	महाराजा श्री अजीतसिंह के समय कपडा रा कोठार री बही	२०७
१५१	महाराजा तखतसिंह री राणी राणावत र मंदिर तालके री बही	२१३
१५२	महाराजा तखतसिंह री राणी राणावत री बहिन रे विवाह री बही	२१५
१५३	महाराजा तखतसिंह री रानी राणावत री कमठा री बही	२१६
१५४	महाराजा तखतसिंह री रानी राणावत रे भानूपर्यों री बही	२१८
१५५	महाराजा तखतसिंह के पुत्र भाषोसिंह रे जमोत्सव री बही	२२०
१५६	महाराजा तखतसिंह रे नजर निद्धरावल री बही	२२२
१५७	जोधपुर राजघराने र विवाह री बही	२२५
१५८	महाराजा अजीतसिंह एव महाराजा मानसिंह री बही (फुवरियों के विवाह री)	२३०
१५९	देवलोक हुवा री बही	२३८
१६०	महाराजा जसवतसिंह (द्वितीय) रे पुत्र सरदारसिंह रे विवाह री बही	२४०
१६१	महाराजा श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री (सूरजकबरजी) रे हाथ खच री बही	२४५
१६२	महाराजा विजयसिंह री राणी इंदर फुवर री बही	२४६
१६३	महाराजा श्री मानसिंह जी रे पडदायतजी श्रीमती पनराय बाबडी खुदाई जिए री बही	२५०
१६४	महाराजा श्री मानसिंह जी रे पडदायत श्री पनराय रे हरिद्वार व गंगा तीर री बही	२५१

- १६५ महाराजा श्री मानसिंहजी साहब रे पडदायत श्रीमती पनराय री बही २५२
- १६६ महाराजा श्री मानसिंह जी री महारानी श्रीमती तीजा (तृतीय)
मटियाणी साहिबा ठाकुरजी (श्री कृष्ण भगवान) री मंदिर
बरणबायो उण री बही २५५
- १६७ महाराजा श्री मानसिंह रे घघ गाठ री बही २५६
- १६८ महाराजा मानसिंहजी रे पडदायत श्री छोटा रूपजोतजी देवलोक हुवा
उण री बही २५७
- १६९ महाराजा श्री मानसिंह जी रे राजकुवर छर्नासिंह रे विवाह री बही २५८
- १७० महाराजा श्री मानसिंहजी की रानी श्रीमती मटियाणी साहिबा रे
रे हाय खच री बही २५९
- १७१ महाराजा जसवर्तसिंहजी (द्वितीय) र घडे री बही २६२
- १७२ महाराजा श्री मानसिंह के राजलोक श्रीमती तीजा मटियाणी रे
हाय खच री बही २६३
- १७३ महाराजा श्री मानसिंह के राजलोक श्रीमती तीजा तृतीय
मटियाणी से सम्बन्धित बही २६५
- १७४ महाराजा श्री मानसिंह के राजलोक श्री तीजा मटियाणी रे
रवास री बही २६५
- १७५ महाराजा मानसिंह जी के राजलोक श्री तीजा मटियाणी साहिबा
(प्रताप कवर) रे बरागाया कवित्त री बही २६६
- १७६ महाराजा मानसिंह जी के बाईजी श्री स्वरूप कवर रे विवाह री बही २६७
- १७७ महाराजा श्री मानसिंहजी के राजलोक श्रीमती तीजा तृतीय
मटियाणी रे हुवन री बही २७०
- १७८ महाराजा मानसिंह जी के राजलोक पाचवा मटियाणी जी री
छतरी री बही २७१
- १७९ महाराजा श्री तल्लसिंहजी रे महाराज कुमार श्री माधोसिंहजी
रे घघ गाठ री बही २७२

१८०	महाराजा श्री तख्तसिंहजी रे राजलोक श्री राणावत जी की बही	२७२
१८१	महाराजा श्री तख्तसिंह रे राजलोक रे जनम बृंहसिपों की बही	२७३
१८२	महाराजा जसवतसिंह जी (द्वितीय) रे राजलोक श्री जादेघोजी जसवत सराय कराई जण की बही	२७४
१८३	महाराजा विजयसिंह की बही	२७६
१८४	महाराजा श्री तख्तसिंहजी रे राजलोक श्री जादेघोजी की बही	२७६

प्रथम अध्याय

डिंगल गीत, कवित्त, दोहा संग्रह

१ राव अमरसिंह रो सिलोको

१ राव अमरसिंह रो सिलोको, २ रा० शो० स०, ३ ७५५,
४ २५×१०५ सेमी०, ५ २, ६ १३, ७ वि०स० १७१४, ई० सन् १६५७,
८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० जोधपुर के महाराजा गजसिंह के
सबसे बड़े पुत्र राव अमरसिंह के बारे में ३६ सिलोका छदा में उनके जीवन की
घटनाओं का वृत्तांत है। जैसे—गजसिंह का रूढ़ होकर ज्येष्ठ पुत्र को राज्य के
हक से वंचित करना, अमरसिंह का बादशाह शाहजहा से मिलना व नागौर की
जामीर प्राप्त करना, कई युद्धों में भाग लेना व अंत में राठीड अमरसिंह की वीरगति
इत्यादि घटनाओं का उल्लेख है।

प्रारम्भ—

“सरसत सामिण तुभ पाएजी लागू जाणू ह घणो री बुद्धि ज मागू ।
कवर अमरसिंहजी रो कहू सिलोको, एक मना हुई साभलिस्यो सिलोको ।”

अथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध किया हुआ है। लिपि सुवाच्य है।
ऐतिहासिक घटनाओं के प्रति लोक रूचि का इससे पता चलता है।

२ तेजसिंघ रा केया सर्वैया

१ तेजसिंघ रा केया सर्वैया, तेजसिंह कृत, २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३
७५३५, ४ ११४×२५४ सेमी०, ५ १६, ६ १४, ७ वि० स० १७४४,
ई० सन् १६८७, सरखेज, ८ देव मुनि, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रारम्भ
का पत्र लुप्त है। इसमें जैनो के चक्रवर्ती राजाओं का वृत्तांत काव्य रूप में दिया
गया है। कृति का प्रारम्भ इस प्रकार से हुआ है—

“ जरासंध प्रेषित दगार प्रति दून वधन गाने ।

दत दगार प मुत्था जरासंध ते कह दवकी पुन दोया ज रहा जरामधु ॥६॥”

कृति का रचना-भास, नाम अज्ञात पत्र १६ पर इस प्रकार लिखित है—

‘सवत सरतर वर्षे तनालोस मूरति तयर थामागा मवाई सध मुयी चाप वीर परिवारजन मवन रिउ गुण मु गुण पदार्द ।

इति श्री पूज्य श्री तजसिधजी कृन चत्रयति मुद्दि वणन मवइमा ॥
पुष्पिका—

इति श्री मत् श्री पूज्य श्री तजसिधजी तद्दि न यन दवजी मुनि ना सति ।
सवत १७४४ वर्षे धाम्नु यदि ५ तिन निपनमिम्तु सरपज धाम ।”

प्रस्तुत ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखित किया गया है । पत्र मुल
ह । अंतिम पत्र रगीन बलजूदा से मज्जित है । प्रारम्भ के पत्र सुप्त होने से
कृति अपूर्ण है । जैन धर्म अनुगोला हेतु कृति उपयुगी है ।

३ रायसिंह रासो आदि

१, रायसिंह रासो आदि, शकर भाट, भाति, २ रा० छा०स०, ३
१२८२७ ४ २१५ १६ / सेमी०, ५ ६५, ६ १३-२०, ७ वि० स० १७४७,
ई० नन् १६६०, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० ग्रन्थ के प्रारम्भ में
सरस्वती छन्द, शिव स्तुति, गह विचार, माताजी का गीत आदि कृतियां संकलित हैं ।
प्रारम्भ—

‘बुध विविध करणी की बुद्धि करणी, रूप करणी, निरप्पण
कर दियण वाळी पदम माळा ॥१॥”

१ राजा रायसिंह बिकानेरीया रो रासो शकर भाट कृत -

प्रस्तुत लघु काव्य बीकानेर के राजा रायसिंह (वि० स० १६३०-१६६६)
की प्रशंसा से संबंधित है—

प्रारम्भ—

‘बलि आग प्रेय मुवण राय हरि ह्वय सारी ।

इद्र करण आवीयो कव चतन हु उत्तारी ॥१॥

अंतिम भाग—

रायसंध राया तिलक कीधी नाय विचार ।

ई दोइ दूहा जोवता, दाता वडा ससार ॥२६॥

॥ शकर भाट कह्या ॥’

२ गीत महाराणा जगसिंघ री -
प्रारम्भ—

“धजवड ह्य जगड नमी तप धारी

सभलिया माडव पुरसीण, रिवासा पडते ॥१॥”

इसके अतिरिक्त ग्रथ मे चोबोली क्या, चितामणी, हणमल रा दूहा, बुद्धि रासी, बारे मास रा दूहा, नागदमण, स्फुट पद आदि वृत्तिया सकलित हैं।

ग्रथ अनेक व्यक्तिया के हाथ से लिपिबद्ध है। ग्रथ के कुछ पत्र लुप्त हैं, कुछ कीट भक्षित हैं और कुछ पत्र आपस मे चिपके हुए है। ग्रथ पर गता एक ओर है। पत्र बहुत जीण हैं।

४ कुण्डलिया महाराजा पदमसिंह (बीकानेर) री आदि

१ कुण्डलिया महाराजा पदमसिंह (बीकानेर) री आदि, चारण गोरघन, २ पु० प्र०, ३ २५ ४ २४ ३ × १६ सेमी०, ५ ६, ६ १६-२१, ७ वि० स० १७१७, ई० सन् १६७४, ८ रामभाण, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १०, प्रस्तुत ४७ कुण्डलियो मे बीकानेर के महाराजा कणसिंह के पुत्र पदमसिंह के वीरतापूर्ण कार्यों व युद्धा का वृत्तांत अंकित है। वह घमतपुरा (धरमाट) व समूतनगर आदि के युद्धा मे अपने भाई केसरीसिंह के साथ रह कर औरंगजेब के पक्ष मे लडा था। फिर दक्षिण मे रहते हुए उसने कई युद्धो मे भाग लिया तथा अत मे तापती नदी के तट पर मराठो से लडता हुआ वि० स० १७३६ मे वीरगति को प्राप्त हुआ।

प्रारम्भ—

“आपो लबोवर उकति हु सारद सुप्रसन होयहे गुण वपाणु पदम।

कमधज सुतन करन, करन तन वपाणु पदम।

अच डाकर रण पपा ज रीत, अगजीत पत्रवाटपण।

दिली दल सिधा पगत्यागि जस दापिजे, उकति गुण तेणि क लबोवर

आपिजे ॥१॥

युद्ध सवधी कुछ कुण्डलिया उद्धृत है—

करता अमला नर कहै, घो घण घटा घाव

भागा पीछे बाहुडै तोनु रग चढाव

चढै रगे छोहि आवे हरी चापडै

लडे बुदेल राव छकियो लोहडै

अरि उपडियो आविमो उवारै

कळह ची पुर उत अचड प्राजी करै ॥३१॥

वाजे जाणै लाहडे, भाजि न जाणै जाध

याय मुहगा रपीये, साका बध सउध

सजोधा वाजीया हुवै जोध सभरि

त्रिहारी कुसल पगि पळा पाडै विहारी

चाड राजा पदम पूरि वैकूठ चडै

लड रिणि प्राग ॥ भीमडा लोहडै ॥३५॥

घूम मतवाळा जिही छकी पियाला लोहि,

वणीयो रणताला विचै दळ नजाळाह डोहि

डोहि पळ्ळ्या पगि कीध मगळ डळा,

वळा विळि ग्रीवणी चले रत वाहळा,

तडछीया भडा अनडा घडा पूदता

घडा घूमडि वणीया पदम घूमतो ॥२५॥”

श्रुतिम—

‘रहिसे नाम चियार जुग, जो लहिस रसाण

मरदा ज्या जीता मरण, ता जुग जीत वपाण,

वपाणे घणै जगि पदम वापणीयो जास चो मरण राहा कुळ जाणीयो

देव दीवाण विधि घना धन दापीयो, रिधु जुगि नाम जुग च्यारि लग

रापियो ॥४७॥

पुष्पिका—

‘इति श्री कुडलीया महाराजा श्री पदमसिंघजी री सपूण । सवत १७७४
वर्षे मीती वैसाख सुदि ७ रविवासर लि० महातमा रायभाण । वाचे ज्याने राम
राम छै ॥ श्री शुभ भवतु ॥ कल्याण मस्तु ॥

इसके अतिरिक्त कुछ सवय सांगी हरजस आदि ग्रथ म लिपिबद्ध हैं जो
वाद मे अय व्यक्त के हाथ से लिखे गय ह । मूल कृति की लिपि सुवाच्य है ।
कुछ पत्र चिपके हुए हैं । गत्ता नहीं है ।

५ वीर कवित्त गीत आदि

१ वीर कवित्त गीत आदि रतनू हमीर, रतनू साईदान आदि २ रा०
गा० सं० ३ ६७२७ ४ १५२× १६ सेमी०, ५ ८६, ६ १८, ७ वि० सं०

१७८३, ई० स० १७२६, ८ जेनारायण ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रारम्भ मे कुछ बिना शीषक के गीत निम्नलिखित हैं जिनके लेखक अज्ञात हैं ।

प्रारम्भ—

“सोलह बल सक्कर भूयग मर माहिव उहस अगम विप अत अणमग
ग्रादि ।”

१ गीत दुरगादासजी री -

प्रारम्भ—

“एक साधना कू धाने रयो नाव विसाण नाकू न कूपे ग्रादि ।”

२ दातार मूर समवादे -

“बळ भागळि विउभुग रायहर हय पसारै ।

वरण इद्र अप्पियो क्यच तन हूति उतार ॥१॥”

३ सुकन बत्तीसी -

सुकन सबधी दाह लिमिवद्ध है—

प्रारम्भ—

“राजा डावो जीमणो ज भरव किरलाय ।

सुकन विचार पधीया पग पग लाप लहाय ॥१॥”

४ गीत अर्जुन गौड री -

प्रारम्भ—

पडीयो नह धरा न भपीयो पपीहा, उपाडे न लागियो जागि ।

अरजन गौड तणी सारी अग लडता गयी लोहडे लागि ॥१॥”

५ पाबूजी री छद (मेहेजी कृत) -

प्रारम्भ—

“वस कमषज पाल्ह वरदाइ

वेगड विरद बहण वरदाई,

वेहर रे वाका वरदाई,

वाका पाघोरणा वरदाई ॥१॥”

६ उमादे भटियाणी रा कवित्त -

प्रारम्भ—

“गारहरे राज गिर, चाडै जल रूपक चाड

भेदपाट चित्रकाट, भलो जोधपुर भमाई ॥१॥”

६ राजस्थान के इतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग २

७ गीत चापायत जतसिध रौ -

प्रारम्भ—

'कीया हमला दिली रा नाथ सतरा सु कीध हवा ।
कराढा वजाम जागी बापूवारे वंता रा ॥१॥"

८ गीत दुरगवासजी रौ -

प्रारम्भ—

'गुरड दूरग प्रसण गिलण, भारत्य दुरग भ्रमग,
भोइग असुर नच पग भयण वाव रिपुरा विडग ॥१॥"

९ गीत कूपावती रा (रतनू हमीर कृत) -

प्रारम्भ—

दवा दातारा जूजारा च्यारा वेदा भवतारा दसा,
धारा हरा वारा गिरा रूप सुरा धाम ॥१॥"

१० गीत महाराजा अर्भसिधजी रौ (रतनू साइवान कृत), (गुजरात की घरे पदारिया तिए सभे रौ) -

प्रारम्भ—

"धजा फरुके मंगळा बाजै नवागळा बाज ।
धीह सावळा उजळा दळा सलल त्रिसीग ॥१॥"

११ गीत महाराजा अर्जोतसिध रौ -

प्रारम्भ—

'आचार चिहु छक् उधरा, तरवार तूटे तेज रा
हीदूआण अजमल भाण भळहळ, ताडवा तुरकाण ॥१॥"

१२ गीत महाराजा सिधसिधजी अणर्दासिधोत रौ ईडर र राज रौ, बडूक र भाव रौ -

प्रारम्भ—

कुदा सागरा चढाव सुदा रोणाना मुचगा कोध ।
दीध ते उमेदा धुरा माल सेहस दोम ॥१॥"

१३ गीत रावल प्रतार्पसिधजी रौ -

प्रारम्भ—

"दळ मेल रहचण देवला वेडा कचेध वचि हुवला
चित पध धारे पतो चढीमो धूण नुज धाराल ॥१॥"

इनके अतिरिक्त ग्रंथ में विवेक वार री नीसाणी, नागदमण, गूढाय रा दूहा, हरिरस, घोडो रा बखान रा दूहा और अनेक स्फुट कवित्त गीत सकलित हैं। ग्रंथ दो व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है। ग्रंथ पर गता नहीं है, सभवत कुछ पत्र इसके गायब हैं।

६ वीरमदे सोलकी रा दूहा

१ वीरमदे सोलकी रा दूहा, आढा दुरमा कत २ रा० शा० स०, ३ १४६६६, ४ १६५ × २६ सेमी०, ५ १२, ६ ८-१०, ७ वि० स० १७८४, ई० सन् १७२७, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० वीरमदे सोलकी की प्रशंसा में ५६ दोहे अंकित हैं।

प्रारम्भ—

“आपर द अभि आस सक लबोदर सारदा।

विरुद विरमद तणो चीत्र छद प्रहास ॥१॥”

अन्तिम भाग—

“जिण वाका गढ तपीया वाकै मनि विदेह

तिण ही कहीयो ददतण, वाको वीरमदेह ॥२॥”

पुष्पिका—

‘सवत १७८४ रा वेसाप बदी ३ लीपतु ? राजा श्री गुमानसिंघजी रै पठनाथ।’

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है, लिखावट पत्र के एक और है। मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य व अध्ययन व लिय भी कृति उपयोगी है।

७ अमरसिंह रा भूलणा तथा वीरगीत आदि

१ अमरसिंह रा भूलणा तथा वीरगीत आदि, आढा किसना, आढा गीयददाम, मेहडू विहारीदास आदि, २ रा० शा० स०, ३ १४६६५, ४ २० × २६ सेमी०, ५ २७, ६ ६-१२ ७ वि० स० १७८४, ई० सन् १७२७, ८ चतुरमुज, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रंथ में लिपिवद्ध कृतिया का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ भूलणा राव अमरसिंह (आढा किसना कृत) —

प्रारम्भ—

“हिवडागर हीदुव राव भला मडे वजीये जग

हत बधीया नव पड जपे ।”

(अपूर्ण व नुटित है)

८ राजस्थान के इतिहासिक ग्रन्थों का संश्लेषण, भाग-२

२ गीत राठीट किसानदासजी की (भाड़ा गोपबदास कृत) -
प्रारम्भ—

पते प्रांवाळा दाढाली रीठ, रणनाल वेढ रर्ष
मुभट वेवट घट जु जु घट गाज ॥१॥”

३ दवावेत राय असेराजजी की (मिहट्टू मिहारोदास कृत) -
प्रारम्भ—

अरवद ग चहुआण वस, हिंदुस्थान मा सिणगार
गाउ राव अपमाल हीदू का अवतार, गो किमा ।

अंतिम भाग—

‘सा रहीम उमर दरार भठार गीरू का
पुदी भालम तर्प राव अर्पराज
दवावेत मपुरण सवत १७८४ रा अमाड सुद ८ लिपतु जो० चतुरमुज ।’
(पत्र-२३)

८ गजल चित्तौड की

१ गजल चित्तौड की, २ रा० शो० स०, ३ ५०० ४ १०५ × २५५
सेमी०, ५ ३ ६ १२, ७ वि० स० १७६६, ई० सन् १७४२, ८ अज्ञात,
९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत गजल में चित्तौड के अजेय दुर्ग व गहर की
प्रशंसा की गई है। ग्रंथ एक दोहे से प्रारम्भ हुआ है—

चरण चतुमुज वसर चित ठीक करे मन ठोड

अंतिम भाग—

‘भाली वाव से भुक्ते भरणा भगी भुड दरपत की जोर भाई,
कहे कवि पेलयी कवि तारे गद गल गड चीत्रोड की पूब गाई ।’

इति श्री चित्तौड गढ़ की गजल संपूर्ण स० १७६६ मिति वेसाप सुदि ८
दिने शनवारे ।”

यह गजल एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध की गई है।

१० बात गीत कवित सग्रह

१ बात गीत कवित सग्रह २ रा० गो० स०, ३ ४६७३, ४ ११५
× १४५ सेमी० ५ ६७, ६ १०-१४, ७ वि० स० १७६६, ई० सन् १७४२,
८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रंथ का प्रारम्भ “दाढाला
वाराह की बात” से हुआ है—

'जब दीप भरघ पड मे झठारा गिरा रा पिर अरवद सो अरवद किसडो एव छँ, ईण दूहा जिसडो आदि ।'

वार्ता पूरा ह, पहले सर्वेक्षित ग्रन्थों में आ चुकी है ।

१ राठौड हिन्दूसिंह रौ कवित्त -

रधुनाथसिंह के पुत्र राठौड हिन्दूसिंह की प्रशंसा में एक कवित्त अंकित है—
प्रारम्भ—

“रिण बाला रावता बाळि हेमरा बडाळी
दळ नायक दीपीयो ।”

अन्तिम भाग—

‘ बाटँ लकाळ हिंदु कमघ रिण रढाळ रधुनाथ रौ ।’ (पत्र-३)

२ गीत श्रीरगजेव पातिसाह नु -

यह श्रीरगजेव वादशाह का एक प्रशस्ति गीत है ।

प्रारम्भ—

‘ खरा खजाना पेम का भूठा टिक न कोय
श्रीरग भाग सो टिकँ जो तेरा बदा होय ।’

अन्तिम भाग—

“सात दीप नव खड मे मन गोवल अवरग साह जस ।’ (पत्र-३)

३ गीत महाराजा अर्भसिंह नु -

प्रस्तुत गीत जोधपुर महाराजा अर्भसिंह का है ।

प्रारम्भ—

‘ इसो बणायी परम हींदु दुहु वाता तरुँ साटँ
थरके अरिद नित प्रीथी तरुँ साटँ”

अन्तिम भाग—

“राजा दहु राहा तरुणी बाजी धीहु बहु राखँ
राजा तणी साजी बाजी राखँ सुरा राय ॥५॥” (पत्र-१)

४ राणा राजसिंह रौ कवित्त -

प्रस्तुत कवित्त उदयपुर के राणा राजसिंह की प्रशंसा में लिखा गया है ।

प्रारम्भ—

“मजि धरा मेवाडियेउ मडे उदयापुर, प्रसिध डाळ पसरे ।”

अन्तिम भाग—

“राजड नरेस जगतेस रौ रचँ त्रिप कीरत रौ ॥१॥” (पत्र-३)

१० राजस्थान व एतिहासिक प्रथा का सर्वेक्षण, भाग २

ग्रथ अनन्य व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है, ग्रथ में अनन्य डिटल गीत व वित्त दोहे संकलित हैं ।

११ कवित्त सग्रह

१ कवित्त सग्रह ० रा० गा० स० ३ ५४७०, ४ १५×११५ सेमी०, ५ ७४ ६ १५-२१, ७ वि० स० १८०२, ई० सन् १७४५, ८ १० गुलालचंद ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० विवरण प्रथम इस प्रकार है—

१ अमरसिंह रौ कवित्त -

ग्रथ के प्रारम्भ में राठौड़ वीर अमरसिंह का एक कवित्त लिपिबद्ध है जो अपूर्ण है ।

प्रारम्भ—

“अडाभौड राठौड़ साह दरगह जद आयो
निजर न की पतिसाह पैर हाजर वततायो आदि ।”

२ प्रतापसिंह उदावत रौ छंद -

प्रतापसिंह उदावत की प्रगसा में छंद लिपिबद्ध है ।

प्रारम्भ—

‘लुळि लुळि पाए लागु लबोवर आगेवाणी सुरा लबोदरि आदि ।’
(पृ०-७)

३ राठौड़ रतन महसदासोत रौ वचनिका -

यह वही कृति है जो ग्रथांक ६३४ रा गो स में वर्णित है ।

मूल ग्रथ एक व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । ग्रथ में इसक अतिरिक्त खेत्रपालजी रौ छंद, गगाजी रौ गीत मानाजी रौ छंद, उपदेश गीत भगवानजी रौ छंद महादेवजी रौ छंद, आयुर्वेदिक नुस्खे इत्यादि संकलित हैं ।

प्रारम्भ के ८ पत्र लुप्त होने से ग्रथ अपूर्ण है ।

१२ नेमनाथ अर अमरसिंह रौ सिलोकी

१ नेमनाथ अर अमरसिंह रौ सिलोकी २ रा० शो० स० ३ ३६४८, ४ १०५×२५ सेमी०, ५ १, ६ १७, ७ १८ की शताब्दी का मध्य, ८ अनात ९ राजस्थानी देवनागरी, १० ग्रथ का प्रारम्भ नेमनाथजी के सिलोके से हुआ है—

प्रारम्भ—

समरु सारद न गुणपति राणी, विघन टाळै छो अकिल बाणी
कहु सिलोकी नेमनाथ केरी जादव वस माहि वडेरी ॥१॥’

पत्र के दूसरी ओर महीन अक्षरों में अमरसिंह का सिलोका लिपिवद्ध है, यह सिलोका प्रथाक ७५५ रा० ५१० स० के समरूप है। यहाँ केवल सिलोके का अंतिम भाग दिया जा रहा है—

“देव्यो वयारो हिवा री हीयो, इण पतिसाहो म ओ काम कीयो
कुमर अमरें री अहकार साले वोग न उपरि छोडोजी काले
साहिव खान री दीवाण जुडीयो वाघारो विमणो जी मानो
नागीर उपर चडीयो जीका नै सुर सापी अविचल दापी,
राव राठीडा सदा सुपी रापी ॥२५॥”

प्रस्तुत ग्रन्थ की यह कृतियाँ भिन्न भिन्न व्यक्तियों के हाथों से लिखी गई हैं।

१३ वारेमास रा दूहा, अमरसिंह री छद इत्यादि

१ वारेमास रा दूहा, अमरसिंह री छद इत्यादि, २ रा० शो० स०,
१ ३२८, ४ १५ × १३ सेमी०, ५ १४७, ६ १४, ७ वि० स० १८०७-
१८१२, ई० सन् १७५०-१७५५, ८ अमीचद, ९ राजस्थानी, देवनागरी १०
ऐतिहासिक कृतियाँ का विवरण क्रम इस प्रकार है —

१ वारे मास रा दूहा -

प्रस्तुत छोटी सी कविता में १२ महीनों का परम्परागत वृत्तांत है।

(पत्र-१)

२ अमरसिंह री छद —

यह ११ छंदों की रचना नागीर के शासक राव अमरसिंह राठीड की प्रशंसा में अंकित है।

प्रारम्भ—

“अमरसिंह जब मुजरें आया, पातसाह कु सीस नमामा
भया अचुक से आन हि मारी असा जाघ कुण है अहकारी ॥१॥”

(पत्र-२)

ग्रन्थ में इसके अतिरिक्त जलाल गहणी री वार्ता, चौथ माता री कथा, गिरधर रा दोहा, मुदामा चरित्र आदि कृतियाँ संकलित हैं।

ग्रन्थ पत्र गत्ता वही है। प्रारम्भ में १६ पत्र गायब हैं। ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथों से लिपिवद्ध किया गया है। अनेक पत्र कीट भक्षित हैं।

१२ राजस्थान के एतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग २

१४ राव सुरताण रा भूलणा, घोर गीत आदि

१ राव सुरताण रा भूलणा, घोर गीत आदि, दुरसा आडा गोपग्नम, मेहडू दला आदि २ रा० गा० स० ३ १५६७५, ४ १८५ × २८ सेमी०, ५ १७ ६ ११-१२ ७ वि० म० १८०७ १८१६, ६० सन् १७५० ६२, ८ आडा उदासिध, ९ राजस्थानी देवनागरी १० सिरौही के राव सुरताण के स्वाधीनता प्रिय व्यक्तित्व की प्रशंसा की गई है।

१ भूलणा राव सुरताण रा (दुरसा वृत्त) -

‘साम गुणेश प्रसन्न हो सुर आगेवाणा
सुडाडड म सुधि बधि धरणा ।’

पुष्पिका—

“सवत १८१६ आमाड वद ११ आडा उदानीध लिपतु ।”

कुछ ग्रन्थ गीत भी उपयोगी हैं।

(पत्र-६)

१५ डोला मारू रा दूहा तथा केसरीसिंह रो सिलोको

१ डोला मारू रा दूहा तथा केसरीसिंह रो सिलोको, २ रा० शो० स०, ३ १६३७ ४ १७ × १५ सेमी०, ५ ५६, ६ सवत १८२२, ई० सन् १७६५, ७ १३-१५, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० सग्रहीत पुटकर कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

ग्रन्थ का प्रारम्भ पारसनाथ की स्तुति से हुआ है —

‘श्री गणेशायनम वरकारो वर मङ्गलाया टाळे भव दुख तणो नवास ।

सकट भाज पारसनाथ अर उठी नीत कर प्रमाण ।’

१ डोला मारू रा दूहा -

डोला और मरवण के प्रेम संबंधित दोहे वार्ता है, प्रस्तुत कृति अग्रणी है। पूरा वार्ता व दोहा के लिये देखें ग्रन्थक ३८ और २७६ (रा०शो०स०) (पत्र-१३)

२ केसरीसिंह (राठौड) रो सिलोको -

प्रस्तुत का य मे राठौड केसरीसिंह की प्रशंसा अंकित है।

प्रारम्भ—

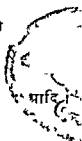
‘सरसते साजण तुज पाये लागु

जाण घणोरी बुध जी मागु

राठौड केसरीसिंहजी रो कैसू सिलोको

इक मना दे साभळ सोलोको

गाव पीवाडी दीयाण वाडी
जठ तो तुठी सारद माता
सारद माना सबद सुणाव
गुण केसर रा सरूप गावै



अन्तिम—

“कवर अणदनिध न केसर मलीया
घरीया नगरा वाजीया यात्रा,
जठ उठीया केसर राजा ।

‘ इति केसरसिंहजी रो सीलोरो सपूरण, सवन १८२२ मित्ती माघ वदि
श्री । (५५-४)

ग्रथ मे इन कतिया के अतिरिक्त होली रो भाल रो परस्य अमल रा सवादा
नीसाणी भाग रो, भाग रो छद, दादा पारसनाथजी रो तिलाको, चद कवर रो वात,
सदेववछ व सावलिग रा दूहा माजन रा दूहा साचल रा गीत हीयाळी अर्थ सहित,
(उपदेश सयधिन), स्फुट मत्रादि बहुत सधेय म सकलित है ।

ग्रथ के अन्तिम पत्र पर जनियो के आदि तीर्थंवर ‘रिखभजी से सवधित
दोहे लिखे हैं और इन दोहा के साथ ही ग्रथ समाप्त हो जाता है ।

अन्त-

‘ सवत् १७८६ सुदि मूल त्रिक दिम फागण मासे हारीप
सरम्बती मूल स्यध सवाई मेवग बालचद गुण गाडयो ।

ग्रथ एक ही हाथ से लिपिवद्ध किया गया है । ग्रथ पर कपडे का गत्ता मडा
हुआ है ।

१६ दोहे, गजल इत्यादि

१ दाह, गजल इत्यादि, २ रा० शो० स०, ३ ३४५, ४ ११×
१५ सेसी०, ५ १०५, ६ १५ ७ त्रि० स० १८२८, ई० सन् १७७१ बन-
कापुर, ८ पतचद, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० ग्रथ मे निम्नलिखित
वृत्तिया संग्रहित हैं—

१ राठीडो रो भ्रमाल -

प्रस्तुत भ्रमाल मे राठीडा की चापावत व मेडलिया शाखा के सरदारों का
गुणगान (वाक्य रूप मे) किया गया है ।

१४ राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रथा का सर्वेक्षण, भाग-२
प्रारम्भ—

देवा नायक वर दीयो, सु परब न हुवो सगत ।
वापाणु राठौड वस अवरल वाण उक्त ॥१॥”

(पत्र-४)

२ उदयपुर री गजल -

इसमे उदयपुर शहर की प्रशंसा अर्कित है ।

प्रारम्भ—

जपु आदि एकलिंगजी नाथ दुवारें नाथ ।
गुण उदयापुर गावता सता करी सनाथ ॥१॥”

(पत्र-५)

३ गुण विवेकवार नीसाणी (गाडण केसोदास कृत) -

प्रारम्भ—

‘नीसाणी—ऊकार अरूप रूप निरगुण निरवाण नाथ निरालव निराकार
प्राण हदा प्राण मनछा देवी दूसरी शिव सकति समाण ।
४ मदन राजा री बात -

(पत्र-१०३)

प्रस्तुत पौराणिक गाथा पूव देश के राजा मदनसिंह की है ।

प्रारम्भ—

रिस्वानद पाये नमी सुत दच चीत धार ।
मदन सतक जो मिले, जु निनो किरतार ॥१॥’

(पत्र-१८)

बात—

‘श्रीपुर नगर के विप जनानदव ती वा माहे वामदेव को प्रसाद । तिहा
मदन कुमार घोडो वाये आदि ।’
प्रथ अलग अलग व्यक्तिया के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । उपरोक्त
कतिया के अतिरिक्त अनेक अनतिहासिक कतिया ग्रथ मे सकलित हैं ।

१७ कवित्त वात दूहा आदि

१ कवित वात दूहा आदि कवि जीवण इत्यादि, २ रा० गो० स०,
३ ३२६१ ४ १० × ११५ नेमी० ५ २५५, ६ १३-१६ ७ वि० स०
१८ ३५ ई० सन् १७७८ ८ प० विजवद इत्यादि ९ राजस्थानी, देवनागरी,

१० ग्रथ वा प्रारम्भ जमराज, वायनी कति स दूहा है । प्रारम्भ—
‘उगार अपार भगत धधार सब नर नार ससार जप है ।
वायन प्रशर म धुर प्रशर जोत प्रयो तन बाट तर्प है ।’

(पत्र-१२)

१ महाराज वधतसिंह का वधित (कवि जीयण कृत) -

य वधित जोधपुर के शासक महाराजा वधतसिंह की प्रशंसा में लिखा गया है।

प्रारम्भ—

‘वलीय चकर चिहुचकक, मिलीय सुर गण गणम वीय
रलीय फलीय राजेम वलीय चित वात गु किजीय आदि”

अन्तिम भाग—

“हाथ वसतस अनिहारत वजा महवा गयो हा
सवाई सब रह्यो पुण होय क ।” (पत्र-४)

२ सावलिगा सदवच्छ री चौपाई -

३३३ चौपाई दाहो म सावलिग सदवच्छ की प्रेम-कथा वर्णित है।

प्रारम्भ—

स्व स्त्री सोहण सुभाग वचित-सील विलास
दायक जिन नायक नमु पूरण आस उतार ॥१॥
सरस वचन कवि गुण सुमति सबळ कळा दातार
सु प्रमन प्रणमु सरसती वर दाई मु विचार ॥२॥”

अन्तिम भाग—

दूहा— ‘वेधक जो वाचे मुणे हवेत मुख वित होय
सावलिग मुख तरही मदेवच्छ सुत धाम ।’ (पत्र-२३)

३ राजा रिसालू का दूहा -

राजा रिसालू की वार्ता से सबधी ५४ दोहे संकलित हैं।

प्रारम्भ—

“बाळा मृगाउ भाडिका अपनप पहलेव,
ताका हठीयो तणा आवतडा भालेव ॥१॥”

अन्तिम भाग—

“पूलमती हठीयो कीयो धारू कीयो सानार
शील सावलदे पाळियो राजा सोभ वुहार ॥५४॥”

४ दुर्गादास राठौड री गीत -

यह वीर दुर्गादास राठौड का प्रशस्ति गीत है।

प्रारम्भ—

“मडा राम रोज सारा एती अतर भयो दुह राम उरा नरा पेखो ।
राम उभा थका हणू लडीयो रिमा दुरग जसराज विण लडे देयो ॥१॥”

१० राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्था का सर्वेक्षण, भाग २

प्रारम्भ—

' देवा नायक वर दीयो, सु परव न हुवो सगत ।
वापाणु राठौड वस, अवरल वाण उक्त ॥१॥' (पत्र-४)

२ उदयपुर की गजल -

इसमें उदयपुर शहर की प्रशंसा अंकित है ।

प्रारम्भ—

जपु आदि एकलिंगजी नाथ दुवारै नाथ ।
गुण उदयापुर गावता सता बरी सनाथ ॥१॥' (पत्र-५)

३ गुण विवेकवार नौसाणी (गाडण केसोदास कृत) -

प्रारम्भ—

नौसाणी—ऊकार अरूप रूप निरगुण निरवाण नाथ निरालब निराकार
प्राण ह्दा प्राण, मनछा देवी दूसरी शिव सकति समाण ।" (पत्र-१०३)

४ मदन राजा की बात -

प्रस्तुत पौराणिक गाथा पूव देश के राजा मदनसिंह की है ।

प्रारम्भ—

रिस्वानद पाये नमी, सुत दच चीत धार ।
मदन सतक जो मिले, जु किनो किरतार ॥१॥' (पत्र-१८)

बात—

"श्रीपुर नगर के विषे जनानदख ती का माहे कामदेव को प्रसाद । तिहा
मदन कुमार घोडो बाघ आदि ।'

प्रथ अलग अलग व्यक्तिया के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । उपरोक्त
कृतिया के अतिरिक्त अनेक अनतिहासिक कृतिया ग्रथ मे सकलित हैं ।

१७ कवित्त बात दूहा आदि

१ कवित्त बात दूहा आदि, कवि जीवरण इत्यादि, २ रा० शा० सं०,
३ ३२६१, ४ १० × ११५ नेमी०, ५ २५५, ६ १३-१६, ७ वि० सं०
१८३५ ई० सन् १७७८, ८ ५० विजेचद इत्यादि, ९ राजस्थानी, देवनागरी,
१० ग्रथ का प्रारम्भ जमराज, वावनी कति सं दूहा है । प्रारम्भ—

'उकार अपार भगत भयार सब नर नार ससार जपै है ।
वावन भयार मे धुर भयार जोत प्रयो तन काट तपै है ।' (पत्र-१२)

१ महाराज वपतसिंह का कवित (कवि जीयण कृत) -

ये कवित जोधपुर के शासन महागजा वपतसिंह की प्रशंसा में लिखा गया है।

प्रारम्भ—

‘चलीय चक्क चिहुचक्क, मिलीय सुर गण गणम कीय
रलीय फलीय राजेस वलीय चित वात नु किजीय आदि”

अन्तिम भाग—

‘हाथ बसतस अनिहारत बजो महवा गयो हा
सवाई सब रछी पुण होय क।” (पत्र-४)

२ सार्वलिंगा सदैवच्छरी चौपाई -

३३३ चौपाई दोहा म सार्वलिंगा सदैवच्छरी की प्रेम कथा वर्णित है।

प्रारम्भ—

“स्व स्त्री सोहण सुभास, वचित-मील विलाम
दायक जिन नायक नमु पूरण आस उतार ॥१॥
सरम वचन कवि गुण सुमति सबळ कळा दातार
सु प्रसन प्रणमु सरसती वर दाई सु विचार ॥२॥”

अन्तिम भाग—

दूहा—
वेधक जो वाचे मुणे हवेत मुख वित होय
सार्वलिंग मुख तरही मदेवच्छ सुत घाम।” (पत्र-२३)

३ राजा रिमालू का दूहा -

राजा रिमालू की वार्ता स सबधी ५४ दोहा सकलित हैं।

प्रारम्भ—

“वाळा मृगाउ भाटिका त्रपत्रप पहलेव
ताका हठीयो तणा आवतडा भालेव ॥१॥”

अन्तिम भाग—

“फूलमती हठीयो कीयो धारू कीयो मोनार
शील सावलदे पाळियो राजा सोभ बुहार ॥५४॥”

४ दुर्गादास राठीडरी गीत -

यह वीर दुर्गादास राठीडरी का प्रशस्ति गीत है।

प्रारम्भ—

‘मडा राम रोज सारा एती अतर भयो दुह राम उरा नरा पखो।
राम उभा थका हणू लडीयो रिमा दुरग जतराज बिण लडे देयो ॥१॥”

अंतिम भाग—

“रामायण जिए जियो महाभारथ रचे जोध जुडता थका सार जोय ।

देवता मानवा सुरा बीच देखता कमध री वरावर न कोय ॥४॥”

(पत्र-१)

उपरोक्त कृतियों के अनिश्चित ग्रन्थ में ग्रन्थ अनेक साहित्यिक कृतियाँ लिपि बद्ध हैं ।

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । पत्र की भक्ति होने के कारण कहीं कहीं अक्षर पढ़ने में नहीं आते हैं । ग्रन्थ जीप होने के कारण कुछ पत्र जल्द से अलग हो गये हैं । लिपि सुवाच्य है । कहीं २ अक्षर बहुत महीन लिखे गये हैं । ग्रन्थ के बीच के पत्र चिक्ने हैं ।

१८ उदयपुर री बरान

१ उदयपुर री बरान, २ रा० शो० स०, ३ २५७६, ४ १०५× २४ सेमी० ५ ३ ६ १६ ७ १८ वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत ग्रन्थ में उदयपुर शहर का बरान किया गया है, जो उस समय की स्थिति को दर्शाता है ।

प्रारम्भ—

समरू माता सरस्वती भागु बाणी माय

अनीपम उदयपुर तणी वरणव कहू विणाय ॥१॥”

“सहिर घणा श्रवणे सुण्या दीठा नयण अनेक,

उदयापुर नी ओपमा नही कोई आवे ऐव ॥२॥”

इसके अनिश्चित दिनांक (कुलदानी स्त्री) पञ्चीसी के २५ दाहे भी प्रकृत है । ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । लिपि सुवाच्य है ।

१९ विमलशाह पोरवाड री सिलोको

१ विमलशाह पोरवाड री सिलोको, भोज भाट, २ रा० शो० स० ३ ३६३८, ४ १०५× २३ सेमी०, ५ ६ ६ १५ ७ १८ वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अनात, ९ राजस्थानी देवनागरी १० प्रस्तुत सिलोका श्रावण क दण्डनायक विमलशाह पोरवाड का है ।

१ मूहता नगरी के अनुसार (ध्यात प्रथम भाग स० रामनारायण डूंगर पृ० २२१ की पं० टिप्पणी) श्रावण पर विमल वमरी नाम का प्रथमप्रेष का प्रसिद्ध मन्दिर बनवाने वाला विमलशाह पोरवाड भीमप्रेष की आर स दण्डन मक हीरर आरु पर रूना था ।

प्रारम्भ—

“मरसति सामण वे कर जोडी चाहु वरवारणे गीरनार गोडी
जाईये सेतुजे दिल मुघ दोडी कविता ने कुमल कल्याण कोडी ॥१॥
मुरधर माहे तीरथ साजा आयु नव कोटी ना वहीजे राजा
गाम गढ ने देवळ दरवाजा चोमुख चपा न उपर छाजा ॥२॥

सिलोके में सब प्रथम आबू पवत का बरण करत हुए पाटण का वृत्तांत किया है फिर विमलशाह से राजा द्वारा धन छीनन का प्रयत्न करने पर विमल द्वारा आबू पर ऋषभदेव का मन्दिर^१ बनवाने का वृत्तांत है। मामा विमलशाह को शादी करने के लिये आग्रह करता है परंतु भानजा इस प्रस्ताव का ठुकरा देता है और विशाल मन्दिर बनने के पश्चात् जो धन बच जाता है वह भी भोज इत्यादि करके खच कर देता है।

अंतिम भाग—

‘पीतावर जोग बनकदे जायो नाम पणे नाम गी कहवायो
पटित विनय विमय गुण गायो भोज भाट ससार कीरत कहवायो ॥११०॥’

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है, लिपि सुवाच्य है पर कहीं कहीं काट छाट आवश्यक है।

२० कुशलसिंह तथा महाराजा बखतसिंह रा सिलोका

१, कुशलसिंह तथा महाराजा बखतसिंह रा सिलोका बखता, लिखमीचद,
२ रा० शो० स०, ३ ६०२७, ४ ११३×२४सेमी०, ५ ७ ६ १०
११, ७ वि० स० १८४७, ई० सन् १७६०, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देव-
नागरी, १० कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ कुशलसिंह री सिलोकी (बखता कृत) -

यह सिलोका ग्रंथाक ८८०४ रा० शो० स० में आये सिलोके के समरूप है।
यह काव्य पूरा है। यहाँ केवल अंतिम भाग दिया जा रहा है।

अंतिम भाग—

‘जठँ इद्र लोक री या लबी आवे राठीड कुशलसिंघजी सुरग सिघावे।

राणी भटीयाणी सत ज कीधो कवर जैतसिंघ ने टीकी जी दीधौ ॥६७॥

१ रासमाता (प्रथम भाग स० गोपालनारायण बहुरा पृ० १८४) यह देलवाडा का मन्दिर विमलशाह ने वि० स० १०८८ में बनवाया।

१८ राजस्थान के ऐतिहासिक भ्रया का सर्वेक्षण, भाग-२

बाप सु बेटो सवायो होसी रसडा प्रवाडा बपतो सा गावं
मता नै मुरकी भोजा रा पावं घोडा नै सीरपाव भोजा रा पावं ॥६८॥

पुष्पिका—

‘इति श्री राठौड कुमलसिंघजी री मिलोको नम्पूण सवत् १८४७ से रा वपे
मीती चत बद ११ दिन लिपत ।’ (पत्र-१)

२ राजा बपतसिंघ री सिलोको (लिखमीचद-कृत) -

प्रस्तुत सिलोका नागौर के शासक बखनसिंह का है। इसमें वर्णित है कि
उक्त महाराजा न रामसिंह से किस प्रकार राज्य अर्जित किया।

प्रारम्भ—

“राजा बपतसिंघ रा कहिसु मीलोको
एक मना थै साभळज्यो लोका
सरस्वत दीसे गढ नागोरो
पतसा महमदपा कागद लीपावं आदि”

अन्तिम भाग—

“गाधी लीपमीचद सिलोको जोडी
सिलोका राजाजी री हुवो सवायो
वाको तो राजा बगतसिंघ कवायो
बाप सु कवर हासी सवायो।

इति श्री बगतसिंह री सिलोका संपूण सवत् १८४७ ।’ (पत्र-२)

यह ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य
है।

२१ अमरसिंह तथा अजीतसिंह री सिलोको आदि

१ अमरसिंह तथा अजीतसिंह री सिलोको आदि २ रा० प्रा० वि० प्र०,
३ २३६८, ४ १० × १५४ सेमी०, ५ ६०, ६ ६-१२, ७ वि० स०
१८४८, ई० सन् १७६१, नेमजी दाहया, ८ नेमजी ९ राजस्थानी, देवनागरी,
१० ग्रंथ के प्रारम्भ में गणित विषयक कुछ कृतियां लिपिबद्ध हैं, ऐतिहासिक कृतियां
का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ अमरसिंह री सिलोको -

नागौर के शासक राठौड अमरसिंह से सम्बन्धित प्रगति काव्य है। मिलावें
प्रयाग ७५५ रा० ग० स० ।

प्रारम्भ—

“सरसती सामण तुजि पाये जी लागु
जाणु तो घणो री युधि जी मार्गु,
राव अमरसिंघ जी को वहु शिलोको,
एक मना थ सामलज्यी लोको ॥१॥
गाव तिलवासणी महादेवजी री थाणी,
जठे बधीयो छै राठीडा मानो,
गढ जो याणो गजसिंघ राजा,
जिणु रै तो वाजै नित प्रति वाजा ॥२॥”

अन्तिम भाग—

“चद सूरिज लुगि नामोजी चाढथी,
भारसिंघ जी री साची लडाई,
सनमुप माने पतिसा गवाई,
थानसिंहजी री साची भलाई ॥२१॥” (पन्-३)

२ अजीतसिंघजी री सिलोको -

लोक-शैली में लिखित इस काव्य में जोधपुर के शासक महाराजा अजीतसिंह के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए बहादुरशाह प्रथम से फर्रुखशियर के समय की कुछ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं का विवरण दिया गया है।

प्रारम्भ—

‘माता सरसती मोटी माहा माह,
तोनै तो समर्या कमणा नही काह,
कहीयो सीलोको सुणज्यो इण काजौ,
महाराजा अजमल री वपाणु राजौ ॥१॥
महाराजा बँठा जालोर माहै,
पतस्या औरग ने लागु जी पाए,
अब होय कासीद दीली सु आया,
पातस्या औरग नै मोप पुहचाया ॥२॥”

अन्तिम भाग—

“समै इक्यासै आसाड मासो,
राजाजी कीयो देवलोव वासो,

चौथे सीलार्क पमाजी छार्ज,
जोघ्याम्मे बाजा अविचन प्रार्ज ॥३१॥”

पुष्पिका—

इती श्री अजीतसिंहजी का सीलोको सपूरण । मिति वैसाख वदि ११ समत
१८४८ का लीपत नैमत्रिज दाह्या मध्ये जसवीर्ज जी का चेला नमजी लीप्यो छ ।
काळ मे लीपी छै धान को भाव हपीयो १) सर ३६ छो ।” (१-४३)

३ तारा तबोल की वारता -

यह वही वारता है जा प्रथाक रा० शा० स० म वर्णिन है ।

प्रारम्भ—

‘ मुल्तान वासी नाव ठाकुरसी बुलवादास
दूरदस की सु वारता दपि आयो सु लीपी छ ।

प्रथम गुजरात सु कास ३०० अहमदाबाद नगर छै अहेमदाबाद सू कोस
३०० से आगरा छै, आगरा सु कास ३०० लाहोर छै आदि ।” (पत्र-३३)

४ हीर विजय सूरि सिंहाय -

यह एव लघु काव्य हीरजी नामक साधु तथा बादशाह अकबर स सम्बन्धित
है । साधु के आग्रह से अकबर गौ हत्या इत्यदि बन्द करा दता है ।

प्रारम्भ—

ब कर जाडो जी विनवु सारद लागु जी पाय
वाणी जापाजी निरमळी गाय स्यु तप गछराय
ते मन मोह्यो हो हीरजी अकबर कागद मोकळा
हीरजी वाचन जोय तुम मिलवा भाजा ।

मरती रापी चीडकली कटती रापी जी गाय
अकबर स्याह प्रति बाधने लीपो जस जग माहि ॥७॥’ (पत्र-१)

५ चौराम्नी सीय -

इसम ८४ नीति सम्बन्धी बातें सग्रहीत ह । यथा—

प्रारम्भ—

आपण देवतो के उपरं द्रड मन रापीज
जिए के गाव वसीज तिए री भलो ताकीज

इसम लाव मायतामा का अच्छा परिचय मिलता है ।

(पत्र-५)

इसके अतिरिक्त ग्रन्थ म गुरजजी का सिनाको, सातिनाथ जी को स्तवन, चेत बदशा, नमनाथजी की विनाती, नमनाथजी को तबना लघु चरणाय राजनीति नासन तथा अनन्य मन्त्रादि लिपिबद्ध है।

मूल ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। प्रारम्भ का एक पद्य सुप्त है। ग्रन्थ पर कपड़े का गत्ता मत्त हुआ है। पद्य कुछ जितर हुए एक प्रस्त-व्यस्त हैं। मध्यकालीन मापताम्रा के अध्ययन हेतु ग्रन्थ उपयोगी है।

२२ धीर गीत फुटकर कवित्त-संग्रह आदि

१ धीर गीत फुटकर कवित्त-संग्रह आदि चारण रामचन्द्र, दबीदास दीलन राम, ० रा० प्रा० वि० प्र० ३ १३५११, ४ ११५ × १५५ समी० ५ २३०, ६ ११-१४, ७ वि० स० १८४६, ८ गन् १७६२ जालोर ८ सबग विग्दीचद, ९ राजस्थानी, दवनागरी, १० ग्रन्थ म समाविष्ट कृतिया का विवरण-ग्रम इस प्रकार है—

१ गीत महाराजा बीजेसिंघ रो —

प्रारम्भ—

रैण जमायो अमल रुक भिळा हो अगजी राजा,

सदा रैत जैत कीध भोमाया सरव ॥१॥

इसके अनिर्दिष्ट कुछ बिना शीपक के गीत भी अग्रिम पन्ना में लिपिबद्ध है। फिर नासनेत की कथा दी है। पुष्पिका इस प्रकार है —

इती श्री नासनेत री कथा संपूरण तीपतु सेवग वीरधोचंद्र धानमलीन तीपी जालोर म दालतरामजी री पोधी सु ऊनारी सबत १८४६ रा भाद्रवा सुद १० सोमवार संपूरण ।" लिपिबद्ध गीता व कविता की सूची इन प्रकार है —

- (२) गीत सपसरो इद्र री
- (३) गीत सपसरो जलधर री
- (४) गीत सपसरो मलीनाथजी री
- (५) गीत महादेव री (चारण रामचंद्र कृत्)
- (६) माड रागणी री छद
- (७) गीत सुपसरा सारदा माता री
- (८) गीत पतलाजी री
- (९) गीत करणी माता री
- (१०) गीत त्रकुटग्रथ श्री कृष्णजी री (जगा खिडिया कृत)

- (११) दूहा हाथिया रा
 (१२) कवत बरूणा रस गजसिंघ री
 (१३) कवत भ्रमसिंघ री
 (४) कवत बखतसिंघ री
 (१५) कवल विजसिंघ री
 (१६) कवन नव काटा री
 (१७) गीत बखतसिंघ रा
 (१८) कसौदास बावनी
 (१९) देवीदास रा बह्या कवत - (१२२ नीति विषयक कवित्त)
 (२०) कूडलिया जसराज हरघबलोत री (२८ छंद ईसरदास कृत)
 (२१) छंद खेतरपाल जी री
 (२२) दवावेत छत्रसिंघ रामसिंघात री
 (२३) गीत मुता मोकमसौग चाणोद रा कामदारा री (दीलतराम कत)
 (२४) गीत भठारी मानमल री

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में पर्यायवाची शब्द (इंद्र, नाग, चंद्रमा, ज्वाला, पृथ्वी) प्रस्ताविक कवित, जान रा कवित, फुटकर कवित सिंघ रासो, समा सार रा कवित, केहर कृत कुण्डलियाँ, देवीदास रा कवित, राग गगनियाँ, परणी री पानी, महादेव जी रा सवेया इत्यादि कृनिया निपिवद्ध है।

२३ आसथानजी री साको, महेशदास कूपावत री सीलोको इत्यादि

१ आसथानजी री साको, महेशदास कूपावत री सीलोको इत्यादि, २ रा० शो० स०, ३ ५४६४, ४ १०५ × १५ सेमी०, ५ १२८ ६ १०-१२, ७ वि० स० १८५८, ई० सन् १८०१, रीया नगर ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० विवरण ब्रम इस प्रकार है—

१ आसथान जी री साको -

ग्रंथ का प्रारम्भ गणपति की स्तुति से हुआ है।

“प्रणमिष आदि सुर सब सिंघाई रवनी तायुंमति वरदाई।

बर वरण नेव पु रूप बडाई ती सगति सह्य माय सराराई ॥१॥”

इस काव्य में वर्णित है कि, राव सीहाजी के ज्येष्ठ पुत्र आसथान ने खेड से धा कर पाली गोदावाह पर फीरोजशाह से युद्ध किया और सन् १२४८ वेगाल मुदि १५ को मारा गया।

साके का कुछ अंतिम अंश यहाँ दिया जा रहा है—

“ सवत वारं अठातालीसे वरसे वैसापी पुनम प्रवित आवीया काम
आसयान इम

सतावीसा सुभटा महिन एक पडे राठीड चालिस सात सोलकी सेहता,

पनरं पडे पमार पाच पडिहार वदिता ।

भाटी दस घर पडे आठ गेहलोत इधकाई, (1

चौहवाण पाच पग भडे गोहिल दस गीणीया भाई —

साखला सात दस वाणास भटे विप्र बीस सग्राम सीर ।

आसयान बमघ साको कीया पाली गोदावाव पर ॥१॥”

२ मेहदास कुपावत रो सिलोको —

प्रस्तुत सिलाका आसोप के ठाकुर महेशदास कुपावत (दलपत का पुत्र) का है। इसमें इनके विवाह मराठा से युद्ध करने और अन्त में वीरगति को प्राप्त होने का उल्लेख है।

प्रारम्भ—

“समरू सारद ने गुणपत वरदाई वावन गीर ने चौसट मेहमाई
केसु सीलीको मेहदास केरो पाप कुपावत मसलत माहे बडेरो
दलपत रो कबर दूजो सादुली राणी नरुबी नपतेत जायो आदि ।”

यह घटना १८४७ की है जसा कि सिलोके की अंतिम पक्तियों से पता चलता है—

“ ठाकुर तो कीघो बंकु ठ वासा जाघाणा सतारो अडियो
लूण रै खातर मेडते पडियो
आसोप मालम प्रेयबी म कीनो राज नै पाट रतनसिध नै दीनो
सवत अठारे वरस सैताले मास भाद्रवो बीज उजावळी
सीपे सुणे जिण रा दालद्र जाव रीघ सीघ घरमे अपतेडी आवै ।”

(पत्र-५३)

मूल ग्रन्थ एक व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है, लिपि सुवाच्य है। ग्रन्थ में इसके अतिरिक्त उपदेश सबधी व अधिकांश जन कतिया सबलित हैं।

२४ ऐतिहासिक कवित्त सग्रह

१ ऐतिहासिक कवित्त सग्रह, शिवनाथ, नददास आदि, २ १० शो० स०,
३ ३६, ४ १३४×१८५ सेमी०, ५ १११, ६ २०-२५, ७ वि० ९

१८६१, ई० सन् १८०४, सोजत, ८ सवाईमल सिंघवी, ९ राजस्थानी, व्रज तथा देवनागरी १० ग्रंथ के प्रारम्भ में अनेक फुटकर कवित्त लिपिवद्ध हैं। ऐतिहासिक कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ कवित्त महाराजा अर्भासिंघ रा (शिवनाथ कृत) -

महाराजा अर्भासिंह की प्रशंसा में ४ कवित्त और ७ दोहे अंकित हैं।

कवित्त प्रारम्भ—

“गुन गन आगर उजागर सुजस कर सुपा को सागर समर भोज सावधान।
महादान महजान बान भेसी राव र की गावत सुजस सुप पावत कळानिधान ॥”
दोहा प्रारम्भ—

पाप हमाऊ कल्प वृद्ध पारस समद सुरेस

या पाचा हुता अधिक, अभमल तपे नरेन ॥१॥” (पत्र-१)

२ वीर रस के कवित्त हाडा छत्रसाल के -

प्रस्तुत काव्य वूदी के स्वामी रतनसिंह हाडा के पुत्र छत्रसाल हाडा की वीरता में सबधित है।

प्रारम्भ—

‘औरग औं दाश लर ते दोड आगरा पे केक भजि गये केक मारग एचान म,
काहु करि बाजी दगा बाजी कर जोय राप तेऊन वच न पाये भेसे महाकाल म,
(पत्र-१)

३ वीर रस के कवित्त महाराजा अर्भासिंह के -

महाराजा अर्भासिंह अहमदाबाद युद्ध में विजयी हुए उससे सबधित हैं।

प्रारम्भ—

‘भेसी जुध जीती अभमल राज राजेसर ममर,

विलद गयी तासा मत मडी द्वै ॥१॥” (पत्र-१)

४ नाम माल (नददास कृत)

पर्यायवाची शब्द विषयक कति।

५ पातसाह भकवर फोज राणा प्रताप उपर लायी जिण रो कविता -

६ नवाब पानपाना के कवित्त -

खानखाना से सम्बधित एक कवित्त है।

प्रारम्भ—

“बरम के पानपाना विरच्यो विराने देस नगिन की फौज कटो
पग मुप जो परी

माते माते हाथिन के टलया हनाय मारे भानू ऋठा डारत

भ्पाय मारे भापरी ॥१॥

७ पातसाह के कवित्त -

इमम भालमगीर धीर जहागीर के एक् एक् कवित्त हैं ।

प्रारम्भ—

(भालमगीर) गढ न गढी सेदल मढल मढी सल घोजापुर दल मल आच्यो-।

(जहागीर) मजन दाव औघट घाट भए जहागीर चढे गज ढालन मो-।

(पत्र-१)

८ दारासिकोह के कवित्त -

दारासिकोह की धार्मिक उदारता आदि से सम्बन्धित हैं ।

प्रारम्भ—

मारे महि मढळ मे कीरत पसारी भारी दारा साही जत्र दिल्ली तरनाह की
नरम परम चिन धरम मरम जान सरम समुद्र है निवाई बोल बाह की ।

(पत्र-२)

इमके अतिरिक्त ग्रन्थ म अनेक फुटकर कवित्त दोहे आदि कृतियाँ सकलित हैं ।

ग्रन्थ अपूर्ण है । मूल ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध है । लिपि म लाल म्याही का प्रयोग ह ।

२५ धीर गीत कवित्त संग्रह आदि

१ धीर गीत कवित्त संग्रह आदि मुन्दरदास आदि, २ रा० शो० स०
३ ६६३३, ४ २२ × १६ सेमी०, ५ ७६, ६ १३ १६ ७ वि० स० १८५६,
ई० सन् १८०२, सोजत, ८ ५० राजसागर ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रन्थ
के प्रारम्भ म व्याकरण, नददास वृत्त मान मजरी, (नाम माला), और हरिरस
इत्यादि वृत्तिया लिपिबद्ध ह ।

ऐतिहासिक कृतिया का विवरण-क्रम इम प्रकार है—

(१) कवित्त दोहे (मारवाड के राजाआ के वशावली सम्बन्धी कवित्त)

(२) विरद सिणगार

(३) महाराजा भीमसिंह रा कवित्त

(४) गीत विशनगढ राजा राजसिंघ री

(५) गीत तूग मेडतिया काम आया तिण री

(६) गीत केसरीसिंघोत जोधा री

- (७) गीत सिधवी जोधराज री
 (८) गीत मा० मानसिधजी री
 (९) गीत महाराजा अजीतसिध री
 (१०) महाराजा विजसिधजी री निसाणी (सुन्दरदास कृत) —
 ग्रथ निर्माण के बारे में एक जगह लिखा है—

‘सवत अठार गुणसठे मय मास पप सेत ।

मगल दिन एकादसी लिपी रिष घन हेत ॥

लि० प० राजसागर श्री सोजत मध्ये । श्री जसवतराजजी वाचनाथ ।”

यह ग्रथ दो व्यक्तियों के हाथ से लिपिवद्ध हुआ है । ग्रथ के बहुत से पत्र लुप्त और श्रुति है ।

२६ कुशलसिंहजी री सिलोको

१ कुशलसिंहजी री सिलोको, बखता, २ रा० शो० स०, ३ ८८०४,
 ४ १२ × १७ सेमी० ५ ८०, ६ ११-१५, ७ वि० स० १८७५, ई० स०
 १८१८, ८ अनात, ९ राजस्थानी देवनागरी १० ग्रथ के प्रारम्भ में अनेक
 जन कृतिमाँ लिपिवद्ध है ।

कुशलसिंहजी री सिलोको (बखता कृत) -

प्रस्तुत काव्य आउवा ठाकुर चापावत कुशलसिंह की प्रशंसा में लिखा गया है ।

प्रारम्भ—

‘माता सरसती मोटी महमाई
 तोने समरु तो कुमणा नही बाई
 राठीड कुसलीघजी री बहु सरलोको
 एकण मन ती साभली लोको आदि

अन्तिम भाग—

इक दिन रामसिधजा बोवाज वायो
 कुसलीग राठीड गाढी रीसायो
 कुसलीग रीसाया भू डो जी हासी
 धरती घारी में घु पल वेसी ।”

(पत्र-३)

सिलोका अपूर्ण है । इसके अतिरिक्त ग्रथ में अनेक महत्वहीन कृतियाँ संकलित हैं । ग्रथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिवद्ध हुआ है । ग्रथ पर गता नहीं है अनेक पत्र ग्रथ से लुप्त हैं ।

२७ जती रासी

१ जती रासी, करणीदान ० रा० प्रा० वि० प्र० ३, २८८७२, ४ १३७ × १४ सेमी०, ५ ४, ६ १३-१४, ७ वि० स० १८७७, ई० सन् १८२०, ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, देवनागरी १० यह दुर्लभ वृत्ति सूरज प्रकाश वाख्य के रचयिता प्रसिद्ध कवि करणीदान रचित है। इसमें जतिया के प्रति कवि ने अपने उद्गार प्रकट किये हैं। तत्कालीन जातीय विचारधारा का इसमें पता चलता है।

प्रारम्भ—

“श्री गणेशायनम अथ जती रासी कवीया करणीदान री कहियो ॥ गाथा ॥
सर सर प्रफुल मरोज तर तर सुत चाणी पढ बीकल
मद घर घर छह मोन मोप जोप इसडो मुज नगर ॥१॥

रूहा—

पुत्री सवा रै पदमणी, अदभुत रूप अपार,
आप परणवा जावना, कमधज राज कु वार ॥१॥

अन्तिम भाग—

मिथ कामल रिप्प इसा सरणी
भव सिध सतीत्र करण भएँ ॥३४॥

इति जती रासी संपूरण स० १८७७ रा मृगशिरा वद ६ ॥ अदित्यवार ॥”

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखित किया गया है। अन्तिम ४ पत्र खाली पड़े हैं। ग्रन्थ पर गत्ता नहीं है।

२८ गिरनार नी गजल

१ गिरनार नी गजल, करयाण, ० रा० प्रा० वि० प्र०, ३ ८८४, ४ १०७ × २०५ सेमी०, ५ ३, ६ १२-१३, ७ वि० स० १८८८, ई० सन् १८३१, आघोर्ष, ८ कीर्ति कुशल, ९ ब्रज मिश्रित राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें गिरनार का तत्कालीन वर्णन है। कृति सांस्कृतिक अध्ययन के लिये भी उपयोगी है।

प्रारम्भ—

रूहा—

“बर दे माता वागेस्वरी गजल बहु गुण पाण
जवर जग है जीणगढ वाचा तास वपाण ॥१॥

२८ राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग २

महबतपान महीपती रिधु विराजे राज

गय थट हय थट गाजता सबही सारे साज ॥२॥”

प्रस्तुत काव्य में ५६ दाह संग्रहीत हैं। ५८वें दोह में कृति का रचना काल इस प्रकार अंकित है—

“सबत अठार अठवीसक, महा विद बीज के दिवसेक

कीनी यात्रा गढ गिरनार, कहता गजल अति सुपकार ॥५८॥”

पुष्पिका—

‘इति श्री नमनाथ गजल गिरनार नी वणव ताकथ मिद सपूर्ण ॥ सबत १८८८ नाववें चत्र मासे कृष्ण पक्षे पचम्या तिथी भृगुवासरे इद गजल गिरनार ना सपूर्ण ॥ लिखित प० श्री १०८ श्री ५० ज्ञान कुशल जो गणपत सिष्य प० कीर्ति कुशल लिखित ग्राम श्री आघाई मध्य ।’

अथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिखित हुआ है। कृति पूरा है। पत्र खुले हैं।

२६ फुटकर कवित्त

१ फुटकर कवित्त, बारहट मजर आदि, २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ ११२२, ४ २३×१२ सेमी० ५ ८८, ६ २६-३०, ७ वि० स० १८८८, ई० सन् १८३१ ८ कीर्तिकुशल, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत अथ म अनक कृतिया संग्रहीत हैं। महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कृतिया का विवरण इस प्रकार है—

१ पद्मणी वरण -

इसमें स्त्री की ४ जाति के लक्षण बताये हैं। मध्यकालीन सौन्दर्य भावना और सामाजिक मायताएँ इससे स्पष्ट होती हैं।

प्रारम्भ—

“पद्मनी पर स्वदते कसतूरी की सी वास

कमल गध मुपत चल भमर तजत नहि पाम ॥१॥

कवित्त—

पद्म गध पद्मनी भमर विहु फेर भमतह

चद बदन चह रग भग चदन सुवासह आदि ।

अंतिम भाग—

ता ससा पुरस मुप जोग नारि पदमावति लोडे

हिरण पुरस मुप जाग नारि चिवाणि हित जोडे

वपभ पुरसह हस्तनी भोग त्यो ही सुप पावै
अश्व पुरूप सजोग नारि यपिनी सुहाव
मृग शशिक वृषभ अस तुरग ज्याति च्यार पुरसा तणी
अल्लावदीन मुलतान मुणि जाति च्यार नारी तणी ॥८॥”

२ जाम लाखे रो निसाणी -

भादेसर के लाखे जाम की प्रशसा मे ३० नीसाणी छद सग्रहीत है ।

प्रारम्भ—

‘मो कर भवानी मेहरवानी अपर आगेवान
वापाणण लाइक सुर विनाइक दे सवाइक दान ॥१॥

अन्तिम भाग—

हूनू दीय साज घनी दीलत सत्र दन सवाई
अस्मान जमी ताम अमर जाम नाम न जाइ ॥३०॥”

३ लापा फुलाणी ना कवित्त -

लाखे फुलानी की प्रशसा मे ५ छप्पय कवित्त सग्रहीत है ।

प्रारम्भ—

“प्रथम चउदह वोडि सेनगह मिळि सुमट्टा
घर पूरव उमड वही सिरवाट उबट्टा ॥१॥”

४ दातार सूर नो सवादो (बारट सकर) -

यह २३ छंदों की छोटी सी कविता दातार और सूर के बीच होने वाले विवाद पर लिखी गई है । देखें ग्रन्थक ६७२७, रा० शो० स० । प्रस्तुत कृति का अन्तिम पत्र लुप्त होने से अपूर्ण है, इसमें केवल १५ छंद ही हैं ।

इसके अतिरिक्त ग्रन्थ में अनेक छंद दोहे, अमल नो छंद, बल्लभावाय विरचित मधुराष्टक, गोडी पाश्वनाथ नो छंद, इस्क चिमन, राम भैरव नो छंद, राधा कृष्ण सवाद, उपदेश चिंतामणी, माताजी रो छंद, भारती नो स्तोत्र, कोटेसर नो छंद इत्यादि कवितिया सकलित हैं ।

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । प्रारम्भ और अन्तिम एक पत्र लुप्त होने से ग्रन्थ अपूर्ण है । पत्र कुछ कीट भक्षित हैं । ग्रन्थ पर गत्ता नहीं है ।

३० कवित्त कथा सग्रह

३ कवित्त कथा सग्रह, चतुर्भुजदास आदि २ रा० शो० स० ३ ६६३२,

४ १५ × १४ ५ सेमी०, ५ १७३ ६ १३-१६, ७ वि० स० १८६२ ६

३० राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग २

३० सन् १८३५-३७, सिरोही, ८ पचोली जैविसन, ९ राजस्थानी, देवनागरी,
१० विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ प्रस्ताविक कवित्त —

प्रारम्भ मे कुछ प्रस्ताविक कवित्त लिपिबद्ध है ।

प्रारम्भ—

‘प्रथम जग्य के हत आपदा सत्रु सिधारन
मित्र व्याह कुन होय दाम तँ काम मुधारन ॥१॥’
घ्रागे महाराजा मानसिंह वृत एक कवित्त दिया गया है ।
‘वेरी मारण मीरया राज काज इदर राज ।
में तो सरणी नाय के नाय सुदार काज ॥’

२ मारकडे पुराण टीका का अनुवाद —

इसम मारकडे पुराण काव्य की टीका का अर्थ लिपिबद्ध है ।

प्रारम्भ—

“श्री सारदाय नम थी मारकडे पुराण माहे श्री भगवती जी रो आपान
सतसी पाठ छे तिण री टीका री अर्थ लिपते अध्याय १३ छ तिणरी विगत—
मघकीटभ री वध, २ महेषी मुर सँया वध ३ महेपासुर वध, आदि ।”
पुष्पिका—

“सुभ भयतु किल्याणम सतु सपुरण १८९२ रा
चैत मासँ सुकल पयै तीथ १३ बुधवार”

३ मधुमालती कथा (चतुरभुज दास) —

यह मधु और मालती की प्रेम वार्ता कथा रूप म है । मिलावै प्रथाव ७८,
रा० शो० स० । कृति अपूर्ण है ।

प्रारम्भ—

“वर विस्वतनयावर पाउ सकर-सुत, गणपति मिर नवाऊ आदि’
पुष्पिका—

‘सवत १८९४ रा आसोज सुद ९ अस्तमी वार शनीसर वार सिरोई नगर
मध्ये लीपी लिखन पचोली जैविसनजी सुत देवकीसन माधुर जात नारनोलीया पाणी
पत मुरजमाणजी री देव देव उतारी ।”

प्रस्तुत अर्थ दा व्यक्तिया के हाम से लिपिबद्ध किया गया है । इसक अतिरिक्त
अर्थ में स्फुट दोहे कुण्डलिया तथा नवरात्रि की कथा लिपिबद्ध हैं ।

३१ चापावत केशवदास की भूमाल आदि

१ चापावत केशवदास की भूमाल आदि २ रा० शो० स०, ३ १६२४, ४ ३० × २३५ सेमी०, ५ २५, ६ १७ २४, ७ वि० स० १८६७, ई० सन् १८४० ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, देवनागरी १० विवरण क्रम इस प्रकार है—

चापावत केशवदास की भूमाल -

प्रस्तुत भूमाल काव्य चापावत माटण के पुत्र केशवदास की प्रशंसा में है। इसमें वंशज केशवदासोंत चापावत कहलाये।

प्रारम्भ—

‘ देवा नायक वर देयो सुप्रसनु हुआ सगत
चापाणु राठोड वम अवरल वाण उक्त
अगा साचोजा अपरा, समर सगत गुणपन हो श्री ज्या सपरा
पहला कर आक चारघ जलघर पीर ती आदि ।”

पत्र सुप्त होने से भूमाल अपूर्ण है। इसके अतिरिक्त सिणगार भूमाल, सीह छत्तीसी, मूर छत्तीसी विदर बत्तीसी, दातार बावनी, भुरजात भूषण आदि बाकीदास वृत्त कुछ वृत्तिया सग्रहीत हैं। ग्रंथ अनेक व्यक्तियों द्वारा लिपिबद्ध है। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है।

३२ फुटकर कवित्त इत्यादि

१ फुटकर कवित्त इत्यादि (१) बखता खडिया लालस रामदास, सेतबर अमरचदजी, २ रा० शो० स०, ३ ६१८, ४ १७ × १२ सेमी० ५ ६२, ६ १८, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रंथ में ऐतिहासिक कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ महाराजा अमरसिंहजी रा कवित्त (बखता खडिया) -

महाराजा की प्रशंसा से सम्बन्धित १६६ कवित्त हैं, अतः में महाराजा द्वारा भाग लिये युद्धो इत्यादि का वर्णन है।

प्रारम्भ—

“आद सिवत इसरी मगल करी चितामण
कामधन पोग्दो तुही पारस सिव भामण ॥१॥” (पत्र-३७)

२ ईंदा रा कवित्त (लालस रामदास कृत) -

पठिहार इंदो की उपलब्धिया व गुण गान से सम्बन्धित २५ कवित्त हैं, अतः में मुगलो से युद्ध कर मडोर पर अधिकार करने इत्यादि का वृत्तांत है।

प्रारम्भ—

‘गणपत उक्त गहोर घदन गयस्वड विराज

महा रदन एक मड मदन एक मडह सार्ज ॥१॥” (पत्र-६)

३ चहुमान सेरसिंह रा कवित्त (अमरचंद्र कृत) —

चौहान नेरसिंह के भावर शेर स युद्ध करने सम्बन्धित १६ कवित्त हैं।

प्रारम्भ—

“मुघ उदार सरस्वति, सहज भ्रण परस बोमल

वार एण गुण चुवण, धर गिर धानक धमल ॥१॥” (पत्र-५)

४ हाला भाला रो कूडलीयाँ —

हाला भाला की वीरता से सम्बन्धित २७ कुण्डलियाँ हैं।

‘हाला भाला होवसी सीहा ज लयो वय

कै धर पली आपणी क आपाणी पर हृष ॥१॥” (पत्र-६)

५ गीत खेतपालजी रो (अज्ञात कृत) —

प्रारम्भ—

“तरा उ धरा सिखर गिरा आदि ।”

(पत्र-२)

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है।

३३ कवित्त संग्रह

१ कवित्त संग्रह, २ रा० शो० स० ३ ६७१५, ४ २४५×१६
सेमी०, ५ २१८, ६ ७-३१, ७ १६वीं शताब्दी का ग्रन्थ, ८ अज्ञात, ९
राजस्थानी, ब्रज, १० अनेक विषयों से सम्बन्धित इस ग्रन्थ में कई कवियों के
कवित्त संकलित किये हुए हैं। यहाँ उन कवियों के केवल नाम दिये जा रहे हैं।
अधिकांश कवित्त रीति काल के हैं तथा कई कवित्त ऐतिहासिक भी हैं।

प्रारम्भ—

“कवित्त केसवदामजी रा—

सुल से फुल सुवास कुवास सी

माकसी से भये मीन सभाये ।”

कवियों के नाम इस प्रकार हैं—

१ कवि जग ठाकरा

२ कवि राव

३ कवि सोमनाथ

४ कवि घनश्याम

५ कवि सेनापत

६ कवि रसखान

७ कवि चितामन

८ कवि पुखी

९ कवि मोनालघर

१० कवि सेख	११ कवि सीपत	१२ कवि निवाज
१३ कवि वेणी	१४ कवि नगरदारा	१५ कवि अभिरामन
१६ कवि गग	१७ कवि जेराम	१८ कवि बलभद्र
१९ कवि निपट निरजन	२० कवि श्रीधर	२१ कवि नरोत्तम
२२ कवि सेन	२३ कवि मुन्दर	२४ कवि नाथ सागर
२५ कवि सखी अखरा	२६ कवि जानद	२७ कवि मनराभ
२८ कवि नीलकण्ठ	२९ कवि छिनपाल	३० कवि पारम
३१ कवि वद	३२ कवि ममारण	३३ कवि माधव
३४ कवि रसरस	३५ कवि मडन	३६ कवि आलम
३७ कवि गध	३८ कवि गुणाल	३९ कवि परवत
४० कवि चद	४१ कवि भीम	४२ कवि परसाद
४३ कवि मुन्नीनाथ	४४ कवि परमराम	४५ कवि बिहारी
४६ कवि दयानिध	४७ कवि मुजान	४८ कवि कल्याण
४९ कवि निहाल	५० कवि कालदाम	५१ कवि देव
५२ कवि भूपण	५३ कवि उदनाथ	५४ कवि मेहमद
५५ कवि मोतीराम	५६ कवि काशीराम	५७ कवि सायब
५८ कवि रिम्नवार	५९ कवि भरमी	६० कवि किसोर
६१ कवि सुखदेव	६२ कवि रग खान	६३ कवि भरू
६४ कवि राजाराम	६५ कवि ठाकुर	६६ कवि करीम
६७ कवि ताप	६८ कवि गोवन	६९ कवि सिरोमण
७० कवि जगदीस	७१ कवि दुलह	७२ कवि घनीराम
७३ कवि चतुर	७४ कवि दतराम	७५ कवि सामात
७६ कवि प्रह्लाद	७७ कवि नद नामर	७८ कवि हमीर
७९ कवि सिधारा	८० कवि गगाधर	८१ कवि रामवरण
८२ कवि रसवनाथ	८३ कवि मुरार	(नागौर)
८४ कवि सेखर	८५ कवि दास	८६ कवि गिरधर
८७ कवि बलदेव	८८ कवि सेवक	८९ कवि रवीनाथ
९० कवि द्विजदेव	९१ कवि नद	९२ कवि राज
९३ कवि पदमाकर	९४ कवि बचीद्र	९५ कवि सीतल
९६ कवि महाराजा	९७ कवि गोपाल	९८ कवि महाराज
मानसिंह	९९ कवि जायस लाडूनाथ	जसवतसिंह

१०० कवि गाय	१०१ कवि सप्तान	१०२ कवि सातमन
१०३ कवि कवचानन्द	१०४ कवि राम छत्रमान	१०५ कवि ईश्वर
१०६ कवि पूधरा	१०७ कवि गुमर	१०८ कवि हनुमान
१०९ कवि हरीराम	११० कवि मणिदेव	१११ कवि हरिवंश
११२ कवि परमरा	११३ कवि प्रभाकर	११४ कवि मूरज
११५ कवि दयादेव	११६ कवि गुणोराम	११७ कवि सुवर्ष
११८ कवि लाल	११९ कवि तुदन	१२० कवि भगवान
१२१ कवि महूर	१२२ कवि बाघा	१२३ कवि मुरलीधर
१२४ कवि सिमुरा	१२५ कवि राम	१२६ कवि ससीनाथ
१२७ कवि वरणीदान	१२८ कवि गुरत	१२९ कवि कानवा
१३० कवि सरदार	१३१ कवि नरस	१३२ कवि रामुस
१३३ कवि रघुनाथ री भा	१३४ कवि प्रेम	१३५ कवि सुखराम

इसमें प्रत्येक कवि की कविता नये पृष्ठों पर प्रारम्भ हुई है। इसके अतिरिक्त भी दोहे, कवित्त आदि ग्रन्थ में सम्मिलित हैं। प्रस्तुत वे सिला ग्रन्थ एक ही शक्ति के हाथ में लिपिबद्ध किया गया है जिस पर चमड़े का गत्ता है। मध्यकालीन साहित्य की दृष्टि से ग्रन्थ महत्वपूर्ण है।

३४ पाबूजी के दोहे, सालिहोत्र व ऐतिहासिक घटनाएँ आदि

१ पाबूजी के दोहे, सालिहोत्र व ऐतिहासिक घटनाएँ आदि, २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ ३५५०, ४ १५४ × २४२ सेमी० ५ ६२ ६ २०, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, ८ कृपि दिया, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० विवरण क्रम इस प्रकार है—

(१) पाबूजी रा ब्रह्मा, (२) गजल गढ़ चित्तौड़ की तथा (३) सालिहोत्र के अतिरिक्त निम्न ऐतिहासिक घटनाएँ दी गई हैं—

(४) ऐतिहासिक घटनाएँ —

ग्रन्थ के अन्त में कुछ ऐतिहासिक घटनाएँ उनके सबत इत्यादि दिये हैं यथा—

“(अ) सबत १७४६ वर्ष पाम वदि निवाय अमाइत धान री बटी रावण पडो तिए नु भेमेतिय जाय पाडा नु भारीयी ।

(आ) सबत १७४६ वर्षे पोस माहे सहाराज भजीतसिधजी अजमेर गया, महा वदि ८ तुरक सिजीपान सु मिल्थिया ।

(२) सवत १७४६ माह फागुण माहे गढ सिवाणे गया, अजीतसिंघजी उरा आया स० १७४६ मगसिर सुदि ५ गढ विजे गढ गोडा नु मारने लीघो मुजाणसिंघ बेगरोसिंघात लीघो ।

(ई) सवत १७४६ माहे राजा मुजाणसिंघजी मु सोभ्रति जंतरण उतरिया ।

(उ) सवत १७४६ फागुण वदि ४ दिने तुरक लसवरीपान सोभ्रत आयो ।

(ऊ) १७४६ चैत्र सुदि १४ दिन नाथजी रौ गुढी लसवरीपान पोसीयो ।

(ए) सवत १७५५ आसोज वदि १० माह गणो जैसिंघजी देवलोक बिस हवा ।

(ऐ) सवत १७३५ वषे चैत्र वदि ७ वार शनी निवाव बहादरपान मेडते आयो ।

(ओ) सवत १७४३ रा चैत्र माहे दुर्गादास अरबवर आया ।

(औ) सवत १८४८ रा फागुण सुद ३ वगडी महाराज कु वर जालिमसिंघजी वगडी आया, वगडी रँ लाका नँ दुप दीनी घणो, रु० १७ हजार लीया, पछे चैत्र सुद ३ वृच बीयो सो बीलाडे जाये पडीया ।

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में अनेक महत्त्वहीन वृत्तिया भी संग्रहीत हैं। ग्रंथ के अधिकांश पत्र लुप्त होने व दूटित होने से अपूर्ण है। ग्रंथ पर गता जीरा है। ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है।

३५ महाराजा भीमसिंह रा कवित्त

१ महाराजा भीमसिंह रा कवित्त, विठू उमेद, २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ १३५१७, ४ २१ × १६५ मैमी०, ५ १३, ६ २३ २५, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य ८ अंशत, ९ राजस्थानी, दवनागरी, १० ग्रंथ के प्रारम्भ में राजस्थानी छंद शास्त्र से सम्बन्धित कृति लिपिवद्ध है। (पत्र-२)

भीमसिंह रा कवित्त -

प्रारम्भ के छप्पया में जोधपुर के महाराजा भीमसिंह के परिवार की जानकारी दी है। फिर उनकी कुछ उपलब्धियां को प्रकट किया गया है।

प्रारम्भ—

‘ करे कमधज, जीघो दस घरस जळाहळ
तीन मास ईम तवै बीस दिन पाच वळाहळ,
फता सुतन घर फवै जगत दीन दुलही जोयै
दाळद कविया दवै, माज मुरपत जू मणै

किलमाण दीपण बाळा वटक मुरधर आवण मटियो ।
अठार समत साठे वरस भीम सुरपुर भेटियो ॥१॥”

जतिम भाग—

“भीव तणो भणकार सुण नागौर सिगाली ॥७॥”

कृति पत्र लुप्त होने से अपूर्ण है। इसके अतिरिक्त छंद शास्त्र सम्बन्धी अपूर्ण कृति रूप दीप संग्रहीत है।

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है। ग्रन्थ अपूर्ण है।

३६ फुटकर गीत कवित्त संग्रह

१ फुटकर गीत कवित्त संग्रह २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ १३५१३
४ २४ × १६ सेमी०, ५ ४३ ६ २३ २५ ७ १९वीं शताब्दी का मध्य,
८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रारम्भ में शृंगार और भक्ति
सम्बन्धी कवित्त दोहे, सवये इत्यादि लिपिवद्ध है तदुपरांत कुछ ऐतिहासिक व्यक्तियों
पर कवित्त हैं। कृतियों का क्रम इस प्रकार है—

- | | |
|-------------------------|--|
| १ सींगार कवत | २ गीत प्रस्ताविक साणोर (वीकानेर कल्याणदान की मृत्यु पर लिखा) |
| ३ कवत पोपरणा रो | ४ गीत प्रोयता रो |
| ५ कवत सेवगजी थानमलजी रो | ६ कवत गुसाईजी रा |
| ७ कवत पारवार आसराज रो | ८ गीत मोदी टीकमदास रो |
| ९ गीत भाटी मुरजमल रो | १० कवत कोठारिया रा |

इसके अतिरिक्त ग्रन्थ में प्रस्ताविक कवित्त, चौथे माताजी रो छंद, गूढाय रा दोहा, फुटकर दोहा, बल्लजुग रो निसाणी वीसर जानी रासौ इत्यादि कृतियाँ संकलित हैं। ग्रन्थ पर गत्ता नहीं है। प्रारम्भ व अन्त में पत्र लुप्त होने से ग्रन्थ अपूर्ण है। लिखावट अशुद्ध है।

३७ राठोडा रो रास

१ राठोडा रो रास, २ रा० गो० म०, ३ १७६६, ४ १२ × २३ ५
समी०, ५ ५ ६ १०, ७ १९वीं शताब्दी का मध्य, ७ अनात, ९ राज
स्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत काव्य में राठोड राजवंशों की प्रशंसा है।
प्रारम्भ—

पहिली विनायक देवता वीनवु हू लुळि लुळि लागू माता सारद री पायकि,
राम आपुजी राठोड रो माने भूलो चूवो आखर देज्यो समदायकि ।’

इसमें दूदा भेडतिया, राव मालदेव, बगडी के पृथ्वीसिंह, जैतारण के जता, सोजत के बयर महेश, डोडवाणा के कूपा और मडता के पीथा इत्यादि राठौडा के वीरतापूर्ण कार्यों का विवरण अंकित है।

अन्तिम भाग—

“ बगडी थारे जी गोखे प्राती उविर ही धूवा धरकोल की
माथा री माणी राणी राखडी हाथ रा मोत्या राणी हमती दात की।
सरसो रहै दाजी पो मरता।”

अथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य नहीं है।

३८ वीर गीत कवित्त सग्रह

१ वीर गीत, कवित्त सग्रह, करनीदान, हरीरामदास, नगजी कविया, आडा जवानजी मेहडु महादान आदि, २ रा० शो० स०, ३ १३५०६, ४ २६ × १७ सेमी०, ५ , ६ १६-२३, ७ वि० स० १६१३ ई० सन् १८५६, ८ वैष्णव निरजन, ९ राजस्थानी, दवनागरी, १० प्रारम्भ में कुछ स्फुट कवित्त लिपिबद्ध हैं।

प्रारम्भ—

“श्री गणेशाय नमः, श्री भगवत दवाय नमः, श्री सुरसती जी नमः, श्री जोगमाया नमः ।”

१ विरद सगार (करनीदन कृत) —

मिलावें ग्रथाक २०६, रा० शो० स० । (पत्र-६३)

२ छद रत्नावली (हरीरामदास) —

भक्ति सम्बन्धी काव्य कृति है। इसमें छंदों के लक्षण दिये गये हैं।

प्रारम्भ—

दोहा छंद—

“गुरु गनपति गोविंद को, नाम सीस हरि राम
पिगल मति भापा विप, रचत रुचिर पर काम ॥१॥”

पुष्पिका—

‘इति श्री हरिरामदास निरजुनी डोडवाणीया कृत छद रत्नावली नाम अथ संपूर्णम् । अथ लिपिकृत वैष्णव निरजन हरीदासोत्त वृत्त पठनाथ वारठ सेणीदान समत १६१३ का मीति असाढ सुदि १४ वार बुधवासरे ।’ (पत्र-१४)

३८ राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग २

३ गीत नगजी कविया रौ केयोष्टी -

प्रारम्भ—

' रीसी तो सयायो नीजर वीमहर दीपता
नाम ध्रम देपता जगत सायी ॥१॥''

४ गीत

-

प्रारम्भ—

“दल सबल दीपण उलटोया दीस,
घट बटका बरती दळ पाय ॥१॥''

५ गीत महाराजा तखतसिंह रौ -

प्रारम्भ—

“गजा घाट घुमे भडा काज साजा गरव
उरडछन चढे फीजा अरहोग, आप रौ राज ॥१॥''

६ गीत कवर छत्रसिंह बामीणरा रौ (भाडा जवानजी कृत) -

प्रारम्भ—

जागी ज्याली तोपपाना वाळी, जुभाउ नीघसे जगी
ताळी पुले पथ पाळी कपाळी ताढीस वाघ आळी ॥१॥

७ गीत पोकरणा ठाकुर भभुतसिंह रौ -

प्रारम्भ—

छडे ऐल चीक समत वरस ईक गणीसे
वार नीमाणी बीस वावीसे, दूजो को आधार दीसे ॥१॥''

८ निसानी महाराजा विजसिंहजी रौ -

प्रारम्भ—

“जोध प्रतपौ जोघपुर, बोहो तेज अपार
वरदायक वकतेस का मुज आके अघारे ॥१॥''

९ पोकरण रा ठाकुरों देवीसिंह महासिंहजी रा रौ भूमाल -

प्रारम्भ—

“भाटी केसोदामजी देवनामक कवर दीयो सु प्रसन होय सगत
वापाणु राठीठ वस अवरल वाण उवत ॥''

१० उदयपुर राणा भीमसिंह रौ भूमाल (मेहडू महादान कृत) -

प्रारम्भ—

भड लागा भतरा भीलम जोय हवा जाण
भीमाजल अलीयी भवर महला ॥'

इसके अतिरिक्त ग्रन्थ में पृथ्वीराज के दोहे, वृद्ध सतसई (कवि वृद्ध कृत), शनिवार की कथा, स्फुट दाहे आदि संकलित हैं।

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध है। अनेक पत्र श्रुतित हैं तथा पानी से भीग हुए हैं।

३६ वीर गीत कवित्त सग्रह

१ वीर गीत कवित्त सग्रह, आढा किसना, आढा मुणजी, मेहडु महादान और चुतराराम आदि, २ रा० शा० स० ३ ६०४८, ४ १७४ × १५५ सेमी०, ५ १६० ६ १२-१६, ७ वि० स० १६२८, ई० सन् १८७१ ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० ग्रन्थ के प्रारम्भ में अनेक ऐतिहासिक कवित्त आदि लिपिबद्ध हैं ऐतिहासिक काव्यों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

- १ गीत ठावर सुरताणमीगजी री (आढा किसना कृत)
- २ कवित्त वीरमदे रा
- ३ कवित्त मिगीजी अदराजजी रा (आढा मुणजी कृत)
- ४ गीत वीरमदेणी रा (आढा अणाराम कृत)
- ५ कवित्त राणा भोमसिध रा (मेहडु महादान कृत)
- ६ गीत महाराज कुमार जसवतसिध रा
- ७ गीत बडूक रा
- ८ गीत महाराज गजसिध री (चुतराराम कृत)

इनके अतिरिक्त अनेक बिना शीपक के तथा अपूर्ण कवित्त ग्रन्थ में संकलित हैं। ग्रन्थ के अनेक पत्र फटे और भीग हुए हैं। ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है, लिपि सुवाच्य नहीं है।

४० ऐतिहासिक कवित्त सग्रह

१ ऐतिहासिक कवित्त सग्रह आदि, चनदान कृपाराम आदि, २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ १३७८४, ४ १३ × १६ सेमी०, ५ , ६ ६-१०, ७ वि० स० १६३७, ई० सन् १८८०, ८ कृपाराम, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रारम्भ में छद्म रत्नावली कृति लिपिबद्ध है जो पत्र लुप्त होने से अपूर्ण है।

१ मानसींघजी री कवित्त (बणसूर चनदान कृत) -

प्रस्तुत शोक काव्य महाराजा मानसिंह (जोधपुर) की मृत्यु पर रचित है।

प्रारम्भ—

“समत बुरी उगणीस सईको वरस सुणायी
रूत वरपा नभ मास, सुक्ल पय दुप सरसायी

४० राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-२

बल्ले इगारस बढी वार निस नाथ वचाणो
रही रात पट घडी, रसा बल्ल घोर रचाणो

अन्तिम भाग—

चीवीस साय चहुवाण री, अपोज वान उजालिया,
सिव उरी आद नीबज सहज उर सपीर देपलिया ॥३१॥”
(पत्र-३१)

२ जैसलमेर महाराजा री कवित्त -

जैसलमेर के रावल वीरीसालसिंह मे सम्बन्धित एक कवित्त निम्ना है ।

प्रारम्भ—

भोर घनघोर ज्या चकोर कैन छत्र पत
मौर मकरद मेघ राग जू मलार की

३ जसलमेर रावल वीरीसालजी रा कवित्त (कृपाराम कृत) -

इन २० छप्पय कवित्त मे जैसलमेर रावल वीरीसाल (वि० सं० १६२१
१६४७) की प्रशस्ति है ।

प्रारम्भ—

राजन के राज वरीसाल महाराज तोने
दिवस दिवारी ओसो उछव करायो है ।
अनत कृपाल नभ नारी बेस वारी
नृत्य करत अलाप तोर अदमुत मचायो है ॥१॥

अन्तिम—

अहा वरीसाल महाराज अहरि रूप द्वै कता
पृथ्वी गजराज कव कुरव दरावता ॥२०॥ (पत्र-६३)

४ महाराज जसवर्तसिंघजी रा कवित्त -

जोधपुर के शासक महाराजा जसवर्तसिंह से सम्बन्धित १२ छप्पय कवित्त
लिपिवद्ध हैं ।

प्रारम्भ—

वीकम करन हरबद भोज आददे के हुते
सो विला गये कीरत सुनत हैं ॥१॥

अन्तिम भाग—

समता न पावै वार वार हार जावै तो हू
हर ना तजाव यही ध्याल म रहाव है ॥१२॥ (पत्र-५)

५ जसल छत्रसौधजी री कवित्त -

प्रारम्भ—

उगै मेडासी चर विडग गेदि मान धीम

मेम फुन सीस घर भार काज डोलेला ॥१॥ (पत्र-१)

इसके अतिरिक्त ग्रन्थ में जोगमाया रा कवित्त, कवि कुल कठा भरण, विहारी दूहा, बीर मायण री नीसाणी, व्यगाथ कौमदी रा कवित्त, अलकार रत्नावर रा दूहा इत्यादि कृतियाँ संकलित हैं। एक जगह पुष्पिका इस प्रकार दी है—

“१६३७ रा फागण सुद १३ दा० वृषाराम रा छ श्री रस्तु ।”

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। बीच बीच में अनेक पत्र रिक्त पड़ हैं। पत्र तुम होने से ग्रन्थ अपूर्ण है। ग्रन्थ पर गत्ता नहीं है।

४१ छप्पय दूहा कवित्त

१ छप्पय दूहा कवित्त, मानसिंह २ रा० शो० स०, ३ १३६६४, ४ १३५ × १७ सेमी० ५ ६, ६ ११, ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, दवनागरी, १० महाराजा मानसिंह कृत कृष्ण, विष्णु, गोरखनाथ व छप्पय, दूहे, कवित्त इत्यादि संकलित हैं।

प्रारम्भ—

श्री गणेशायनम उष्प—

दुरद वनद मडत प्रचड सिंदुर ललाट घर

रचि कपोल मिल कर तम पडवृन विलास बर ॥

ग्रन्थिभ भाग में पहलिया दी गई है—

हरीया मूग मडोर रा जैसलमर जवार ।

म्ह कीहू कुटा पीचडी वृटणहार गोवार ॥

सोना गेरो नगरी, कुपा हदी गई ।

छुटा मारा सिरक पथरणा, परणी धारी जाई ॥ सपुरण छ ॥

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रन्थ पर गत्ता नहीं है।

४२ महाराज तखतसिंह के स्वर्गवास पर कवित्त

१ महाराज तखतसिंह के स्वर्गवास पर कवित्त, वैजनाथ मिडिया, २ रा० शो० स०, ३ १४६७६, ४ १५५ × २० सेमी० ५ १, ६ ११,

४२ राजस्थान के ऐतिहासिक कवि का सर्वेक्षण, भाग २

७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० जायपुर के शासक महाराजा तसनसिंह के स्वगवास पर एक कविता लिखित है। प्रारम्भ—

प्राज छत्र छत्रि को भाग सो अस्त भयो
अज पात पछित का पारिजात परगो
आज मान सिधु फूटो मगन मरालन की
आज गुन गात्र को गिरीम गज गिर गौ
अन्त म एक दोहा इस प्रकार अंकित है—
बिसर गयो बट बमरी गो गापन का गह।
तसत कहैया का गजा ।

यह कृति एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखित की गई है। लिपि पुरानी नहीं है। पत्र का एक किनारा खण्डित है। इससे चारण कवि परम्परा प्रकट होती है।

४३ फुटकर ऐतिहासिक कविता (प्रतिलिपि)

१ फुटकर ऐतिहासिक कविता (प्रतिलिपि), दुरसा आढा, बखता खिडिया बदन मोसण, जगा तिडिया, सबला लाळस, बारट भोजन, बारट लाला, बारट ईसर हरजी भाटी आदि २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ १५६५४, ४ ३३ × २० ६ सेमी०, (रजिस्टर नुमा) ५ १२० ६ २५-३१, ७ १६ वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ बारट जंतदान आदि (प्रतिलिपिकार), ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस रजिस्टर में कुछ ऐतिहासिक कृतियों की प्रतिलिपियां इस प्रकार दी हैं—

१ नागौर अमरसिंहजी गजसिंघोत रा भूलसा आढा चारण दुरसा कृत -
यह महत्वपूर्ण कृति ७० भूलसा छंदा की कविता नागौर के राव अमरसिंह राठौड से संबंधित है जो अपूर्ण है।
प्रारम्भ—

आद बडा घट हिंदवा राव माल मडोवर
जीपे जग हथ बधिया नव खडा उपर
लख रावत आफळिया नव लाख बहादर
दग दिस छापी मदनी जिए मेघाडवर ॥१॥

प्रतिम—

भोज मुभो जगनाथ का अखियात उवारे
गिरधर गागावत मुओ राव ब्रह्म अडार ॥४॥

(पत्र-२)

२ कवित्त महाराजा अर्भसिंह जी रा लिटिया वपता जी कृत -

इन १६६ छप्पय कवित्त मे अर्भसिंह व सग्गुनदखा के बीच अहमदाबाद के युद्ध का वणन है ।

आद सगत ईसरी मगल कारी चित्रामण
वामधन पोरसो तुहिज पारस सिव भामण ॥१॥

३ भमाल ठाकुर बेबीसिंहजी पोकरण ठाकुर अर जणिया तारा भाटिया सू वेड़ ह्यो तिए दिपे कवि जुडिया रा तालस चारण सबलजी कृत -

यह ३० भमाल छंदो की रचना पोकरण ठाकुर बेबीसिंह चापावत व भाटिया के बीच युद्ध से संबंधित है ।

भमाल प्रारम्भ—

दया नामक वर दिशो मु प्रसन्न हाय सवन
वाखाणू राठोड वस अवरल वाण उवत
अवरल वाण उवत मजाडा अवरव री ॥१॥

अन्तिम—

गुण कता कव राव मामण गाव ही
ज्या लग सूरज चद गुजम नह जावही ॥३०॥ (पत्र-४)

४ गीत सपखरो आसोप ठाकुर यिजसिंहजी दिपणीया री फोज सू मेडते भगडो कर काम आया तिए समे री -

प्रारम्भ—

घावा वाणासा निलका धू साबळा गगा जळ धोक
वील पना कटारा अपत्रा गाळी वाण ॥१॥ (पत्र-२)

५ रूपनगर री सतिया रा छप्पय (बारट अजन जी कत) -

इमम कुल ५२ छप्पय कवित्त लिपिबद्ध हैं ।

६ रूपादे जी री बेल (हरजी भाटी) -

प्रस्तुत बेल का निर्माण भारवाड के शामक मल्लिनाथ और उनकी चमत्कारी विद्वधी रानी रूपादे के जीवन प्रसंगा को लेकर किया गया है ।

प्रारम्भ—

घर धारू रै धरणी घर आप परिहरिये पूरवाला पाप,
अहकार जग रह्या अनाप, जग प्रारभिया ॥१॥

रचना काल के बारे में लिखा है—

समत चवद सौ श्री मार, गुणचाळीसा चरस विचार
उजल प्रीच सनीसर वार, चत भयो परधो परचार ॥६८॥

इसमें कुल ६६ बेलियो क छंद गीत है । (पत्र-२)

७ रूपक राव श्री सिधदानसिध भार्यासिधोत चारट लातेजो कह्यो -

इसमें जाधा कसरीनिघान लाडणू का बरण है ।

प्रारम्भ दोहा—

“सुराराम सु प्रसन हुय दीजे मुहि वरदान
मुज गाठ भार्य सुतन दळनायक मिबदान ॥१॥

छंद पाघडी—

जोधण नाथ राजा विजेस, मुज विभो देख लाजत सुरेस
मद छरे द्वार रघुम्मत मतग ॥१॥

अन्तिम भाग—

मुत भ्रात अवर रीन्हा सुकाज,
समापिया पटा गहण समाज
कर मुजा पाण भारत सक्रोध
जोध हर बंध इण भान जोध ॥२०॥

लिपतू सग्रह करता वारहट जैतदान ।” (पत्र-१२)

८ अजीत ग्रथ, पोकरीजो सिरदार काम आया तिका समे -

गाथा—

‘अबिया असक्ति आदेस वाचत प्रभत वंद पुण वायक
सिधि रिध वयण दियण सुर राणि सुभ सुप्रसनि सुरस्वति मात ॥१॥

अन्तिम भाग—

अहे वीराड वीधी इळा नाम नह जाय भव
कमधजा अमे साक किया कयी द्रोत ईसरस कव ॥७१॥
इति श्री पुसवर जुध संपूणम् वारट इमरदासजी रो कह्यो ।” (पत्र-१५)

इसके अतिरिक्त ग्रथ म राम गुलजार महाराजा मानसिंह री बदनजी मीसण
कृत (दिखें प्रयाक ३६ पु० प्र०), राठीड रतनसिंह री वचनिका जगा सिद्धिया कृत,
(दिखें प्रयाक ६३८, रा० शो० स०) तथा उमादे भटियाणी रा कवित (दिखें प्रयाक
१०८४२, रा० प्रा० वि० प्र०) आदि कृतिया सप्रहीत हैं ।

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति क हाथ से की गई है ।

४४ मान जसो मडण

१ मान जसो मडण, बाकीदास, २ पु० प्र०, ३ ३६ बन्द २, ४ ५ ३५ मीटर × २५ ५ सेमी०, ५ १, ६ २६७, ७ १६ वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत इसी लम्बे पत्र में महाराजा मानसिंह पर २२७ दोहे सग्रहीत हैं। य दोहे उनके राज्याश्रित प्रसिद्ध कवि बाकी दास कृत हैं। साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से इनका बड़ा मूल्य है।

प्रारम्भ—

“॥ श्री श्री श्री १०८ श्री पावदा री हजूर म दवागीर
आसीया बाकीदास दूहा बध रूपग मान जसो
मडण कह्यो सो मालम हुमे ॥दोहा॥
निराकार निरगुण नमो सगुण नमो साकार
जालधर जोगसवर अनघ चरित्र उदार ॥१॥

अंतिम दोहा—

नभ ससहर भाण भे जा लग ता लग अये
जोपा गढ जोबाए गोपा करो गुमान रौ ॥२२७॥

॥ इति श्री मान जसो माडण संपूर्ण ।

लिखावट एक व्यक्ति के हाथ से की है। कई पत्रों को जोड़ कर यह लम्बा पत्र बनाया गया है। लिपि एक ओर ही है।

३५ राजा हरीसिंह रौ सग्रह

१ राजा हरीसिंह रौ सग्रह (फाइल), २ रा० नो० स० ३ १६४६१, ४ ३५ × २१ ५ सेमी०, ५ ६६, ६ २२-२४, ७ २० वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८ अज्ञात, ९ हिन्दी, राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें कुछ राजपूत राजाओं उमरावों से संबंधित घटनाओं एवं प्रशस्ति-काव्यों की प्रतिलिपियाँ दी गई हैं जिनमें से कुछ कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

“प्रारम्भ छप्पय रजपूत री खात रौ —

राजी छै रजपूत दुसह दाळिद्र घो देवे
रूठे जद रजपूत खळा जड सू खो देव
रूठा तो जम राण राम सा तूठा राजी
हाण लाभ नह हुव जका बयू जाया माजी
दुख सुख समान बरते सदा तेग उप्रवट ताणणा
बदगी बर भूले न वे जे रघड भड जाणणा ॥१॥”

१ कवित्त -

राठौह अमरसिंह ने सलावतखा की भांगरे के किले में कटांगे का प्रहार कर प्राणान कर दिया उस समय था—

प्रारम्भ—

“यजन माहे भारी थी की रस में सुधारी थी,
हाथ में उतारी थी कि सावे नू में डारी थी ।
मेखजी के दद माहि गद गी जमाई मद,
पूरे हाथ साधी थी कि जोधपुर सवारी थी ॥१॥”
(२ कवित्त, १ दाहा)

२ उम्मेदासिंह तथा भीमसिंह के पद्य -

कुछ पद्य देकर ७ दोहे दिये हैं, इनके बारे में लिखा है—

सन् १६२४ ई जनवरी मास में कोटा महाराजा श्री उम्मेदासिंहजी और महाराज कुमार श्री भीमसिंहजी बीकानेर पधारया तरा नीचे लिखा पद्य बणाया गया—

आज कोटा पति अधिक छवि छाया
उर धर दया दीन दुखियन की
सब ही दुख मिटायी आदि ।”

३ भीमसिंहजी सणोर पोकरण ठाकुर देवीसिंह की -

प्रारम्भ—

“कहे विजो महाराज सुण सवाई देव ब्रण
हे कहा बात सो उदर माही
पडदली माहि जोधाण मातो परो
नरिद्र वा कटारी छै क नाही ॥१॥

इसने अतिरिक्त महाराजा प्रताप से संबंधित भी कुछ कवित्त, विविध रागों के काव्य, इत्यादि अनेक कृतियां अंकित हैं। एक जगह लिखा है कि वि० स० १६६८ में हरीसिंह के एक फोडा हुआ जो चीर फाड से ठीक नहीं हुआ अन्त में रामदेव बाबा की कृपा से ही ठीक हुआ जब उन्होंने २३ दोहे सोरठा की रचना की।

प्रारम्भ—

‘कष्ट हि दूर करोह मुणो अरज हरीसिंह की
भक्ति भाव भरोह, स्पणेषे रा रामदेव ॥१॥”

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है। लिखावट साफ सुधरी है।

४६ फिरगी री गीत

१ फिरगी री गीत, २ रा० शो० स०, ३ ६५८१, ४ ११५ × २६५ सेमी०, ५ १ ६ १० ७ २० वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत काव्य-वृत्ति अंग्रेजी सरकार से संबंधित है। इसमें इनकी जालीचना करते हुए बलकता शहर की प्रशंसा की गई है।

प्रारम्भ—

दस म आयो फिरगी, हल वा को भगी
रमाला तोपखाना जगी, बीबीया फिरती सिर नगी आदि ।”
वृत्ति अपूरण है।

४७ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि

१ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि गाडण केशवदास, लालस जतसी, जोसी गगदास, वारट हरसुत खिडिया ईसरदास, आढा डूगरसिंह, उदेराज, वारट शिव दान, कविया पचायण चितामण आदि, २ रा० शो० स०, ३ १५००६ ४ ११४ × १६ सेमी० ५ १३२ ६ १६-२१, ७ वि० स० १७४६, ई० सन् १६८६, ह्युडिया ग्राम, ग्राम गुडा आदि, ८ कल्याण, नाया, पुनमिया रावत आदि, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रारम्भ 'विवेक वार री निसाणी' (गाडण केशवदास वृत्त) से हुआ है। प्रथम पत्र खण्डित होने व पत्र भीमे होने से ठीक से पढा नहीं जाता है। कुछ कृतियाँ इस प्रकार हैं—

- | | |
|--|--|
| १ गीत महाराजा जसवर्तसिंघ री
(लालस जत कृत) | २ गीत राजा सूरसिंघ री |
| ३ गीत राजा गजसिंह री
(जोसी गगदास कृत) | ४ गीत राव मालदेव री
(वारट हरसू कृत) |
| ५ गीत पावूजी री | ६ सोलकियों री कवित्त |
| ७ गीत राठौड दयालदास अमरावत री | ८ गीत जगनाथ कचरावत री
(खिडिया ईसरदास कृत) |
| ९ गीत मुकददास किसनसिंघोत री | १० गीत केशरसिंघ भगवानदासोत
उदावत री |
| ११ गीत राठौड भगवानदास री
(आढा डूगरसिंह कृत) | १२ दोहा सग्रह (उदेराज कृत) |

इसमें प्रेम शृंगार इत्यादि विविध विषयों के ४६१ दोहे सग्रहीत हैं। पुष्पिका इस प्रकार अंकित है—

' इति उदैराज वन दूहा श्री श्री लिपिता सा नाथा ह्युढीया ग्राम वाडा मध्ये स० १७४६ रा मिगसर वदि १२ । "

मास्वतिय व साहित्यिक दृष्टि मे इस कृति का बडा महत्व है ।

- १३ गीत सपखरो, भाटी अमरा री १८ कवीत राव रिणमल रै २०
(वाग्ट सिवदान वन) बेटा री
- १५ श्री रतन महेमदामात री वाटको १६ कथित महाराजा गजमिष रा
(कविया पचाइण वत)
- १७ गीत रतन महेसदासात री १८ दातार मूरा री सवागो
(चितामण कृत)
- १९ गीत सवाईमिष री साहिवा
सुरताणीया री केयो

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ मे लिपिबद्ध है व ग्रन्थ के कुछ पत्र मुद्रित हैं, जिल्द से अलग है । लिपि के अक्षर कही बहुत बारीक व कही मोटे हैं ।

४८ गीत राव कल्याणमल अर विठू पदमा री तथा नागणेचीया देवी रा सोरठा आदि

१ गीत राव कल्याणमल अर विठू पदमा री तथा नागणेचीया देवी रा सोरठा आदि २ रा० शो० स०, ३ १४०२८ ४ २३ × १३ समी०, ५ ४०, ६ १८-२३, ७ वि० स० १७४८, ई० मन् १६९१, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ गीत राव कल्याणमल री ।—

प्रारम्भ—

जारजया

'सू डाढड प्रचड सुड वरा सुर मूह

आगेवाण सुड गुणोसर ॥१॥"

२ गीत विठू पदमा री —

प्रारम्भ—

"मानू इ नव धाम गति महमहण

राणा कीरत न समरण सेवे अरचणी वदण ।"

३ सोरठा श्री नागणेचीया देवी रा —

राठोडो की कुल देवी नागणेचीया से सम्बन्धित ७ सोरठे लिपिबद्ध हैं ।

प्रारम्भ—

‘धूहड सुभ ध्याई प्रगट करड कीघी प्रिथी
पूजे जिण वस पाई, सेवग तदि हता सकती ॥१॥’

इन कृतियों के अतिरिक्त अनेक दोहे, सबैये, आयुर्वेद के नुस्खे, वेगराज चारण की जन्म पत्री (वि० स० १७२६) आदि कृतिया सद्गहीत हैं।

ग्रथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। पत्र जीण होने के कारण किनारा से खण्डित हैं तथा कुछ पत्र लुप्त हैं। ग्रथ पर गत्ता नहीं है।

४६ स्फुट कवित्त गीत वशावलिया आदि

१ स्फुट कवित्त गीत वशावलिया आदि, २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ २२५५४, ४ १०५ × १६ सेमी०, ५ ४५, ६ १४२०, ७ वि० स० १७६५, ई० सन् १७०८ पिपाड नगरे, ८ जीवन, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ मे निम्नलिखित कृतिया सद्गहीत ह—

१ पृथ्वीराज चहुआण पर स्फुट छंद आदि -

प्रारम्भ—

“पच सेर फुलेल पच मरद जनन अ गाह
वाहु दड प्रचड मुज सेन दजधा ॥१॥”

२ गीत ठाकुरा रौ -

प्रारम्भ—

‘आणद घणा किन्न अहो निस उलग,
आनन काई रिदा मभि उन चित ॥१॥”

३ गीत राजा राइसीघ रौ -

प्रारम्भ—

पाताळ तयो वळि रहण न पाळ रीध मडे व्रन सरग रहे
महि अत लोग राइसिघ मारै, कठे रहु ॥१॥”

४ गीत अकबर रौ -

प्रारम्भ—

‘वाणा पति लपणि कहा अरजन बाणापति
सिरह लहण, कस सघार, ससै भाज हमाउ समोभ्रम ॥१॥”

५ गीत सूरसिघ रौ -

प्रारम्भ—

‘सपत भळभळै समुद सेस न हुवे सुधिर
विउरे इद रा हसत बजीया, सगाधर हळमळा ॥१॥”

५० राजम्पात न गतिहासिक प्रयाग का गवैग, भाग २

६ गीत संयरो बुरगदासत्री री -

प्रारम्भ—

'मत्त म्प पति साह दाय राह् अतम सितम
इगा भट 'याम तय काट अरग ॥१॥'

७ गीत उपसेन चुडासवा री गिरनार राग्गे -

प्रारम्भ—

पत पुम सादया हान हर साढे पाग
किणोन डेडी मगु दा मनव ती काय ॥१॥'

८ दोहा अमरतिथ री बटारी रा -

प्रारम्भ—

"दलहती दीली हुइ राय भनी जमदङ्क
पृथी दहली पयली, यह अदली याड ॥१॥" (१८ दोहा)

९ राठीडी री बगावली -

आदि नारायण से राव 'अद्रसेन तय' राठीड राजापो की बगावली प्रकित है।
सीहा के पदवान् बुछ राजाआ स सबधित घटनाआ का जिअ भी बिया है।

१० रांणा री पट्टावली -

इसमे सीतोदीया महाराणाआ की बगावली गहनित्य म राणा सप्रामोदह
तय प्रकित है।

११ गालाभों री विगत -

इसमे चौहाना की २४, गहलाता की २४, परमारो की ३५, तथा सोलकिया
की १० शाखाआ के नाम प्रकित हैं।

इसव अतिरिक्त प्रय मे स्फुट कवित्त छद, कोक शास्त्र व्याख्यान (प्रानद
कृत) भवानी जी री छद इत्यादि कृतिमा लिपिवद्ध है। कव शास्त्र कृति के अन्त
मे पुष्पिका इस प्रकार है—

पुष्पिका—

इति श्री कोकसार जानद कृत सपूर्ण सवत १७६५ रा कार्तिक वदि १ तियो
लि० पीवाड नगरे जीवण न लि० ।"

प्रय अनेक व्यक्तिया के हाय से महीन अक्षरा म लिखा गया है। प्रारभ व
अन्त के पद लुप्त होने से प्रय अपूर्ण है। प्रय पर जीण कपडे का रत्ता मडा
हुआ है।

५० वीर गीत कवित्त संग्रह

१ वीर गीत कवित्त संग्रह, महाराजा राजसिंह, खिडिया गोवधन, राठोड जोगीदास मनरूप खिडिया मयुरादास, हरनाथ खिडिया आदि २ पु० प्र०, ३ १६१ ४ २५ × १६ ५ सेमी० ५ ८७, ६ २०-२४ ७ वि० स० १७७२, ई० सन् १७१५, ८ राठोड हरीसिंह, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रन्थ में संग्रहीत ऐतिहासिक कवित्तों का विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ दूहा महाराज राजसिंह का कह्या -

प्रेम विषयक ४७ दोहे अंकित हैं।

प्रारम्भ—

काम सुघट बादर कहे विरहन के उर दाह
सिलाह वारी ले सीधु ते भई सेत ते स्याह ॥१॥

अंत—

कच की टेरत दिन राती, हो तुम साम सहाई
तोनु लागी जगु जग नाईक जग वाई ॥४७॥

पुष्पिका—

इति दूहा महाराज श्री राजसीधजी का कह्या सपुरण भीती आसोज सुदी २ समत १७७२ लिपि राठोड हरीसिंहजी वास कुचल मध पोथी लपी।" (पत्र-३)

२ दूहा महाराजा राजसिंहजी न राठोड जोगीदास कहै -

प्रारम्भ—

'गग सुर घर, गेर, गैगन श्री जल सु पवन
सेव इद चद व्रमा सक तेता लग भान नुन ॥१॥'

३ गीत राजसिंह री मनरूप खिडियो कहै -

"पडै तालाविलद ओळा साही उमै कहे
बहु फौजा राजसीध धक अणि चाडि,
बधि चाल बटा बधि साहीजादा अडि बटी
राडि उली नही अजि सही पातिसाहा राडि ॥१॥"

(१० द्वाला का गीत)

४ गीत रावत प्रतापसिंहजी री मयुरादासजी कहै -

"सुरिज हवै राणा राह हरीचद सुत,
छळ दापे सीसोद छती,

५२ राजस्थान क एतिहासिक ग्रंथ वा का सर्वेक्षण, भाग २

समस्त राणा ता राजन अगोमित
पटहथ राणा तो मीघ पता ॥१॥”

५ गीत पदमसिधजो री, मुधरादास पधयाडी कहै -

प्रारम्भ—

“पडी वीज अण गाज री अमुर सिरि उपरा,
वेसरी सीघ गज सिरि कुप्पियो
लाय लागी नौपडो वन लागयो
घाडी भुवो विना पदम धिपीयो ॥१॥”

६ गीत प्रोहित जसा अचलदासोत री -

प्रारम्भ—

‘जुघ जाजर हुवै जीता पगि जीप,
घणु ठीवाण घणु घणा
मही हैसाइत प्रोहीत मुरधर
ताइ हैसाईत मरण तणा ॥१॥”

७ निसाणी हरिसिधजो री खिडिया हरनाथाजो कहो -

प्रारम्भ—

सिधि बुधि आपो सुरसती गुण भेद गुणपत्ति,
विसन ब्रह्मा वीस ह्वि मोटी आखति,
गाऊ जा गावत गुणा नर मोटे नपत्ति आदि ।” (पद-१)

८ खेतपालजो री छद (खिडिया हरनाथ कृत) -

जोगीदास कृत पद हरजस साखियो के अतिरिक्त नददास कृत मानमजरी
इत्यादि कतिया अंकित है। पुष्पिका इस प्रकार दी हैं—

“इती श्री मानमजरी नददास कत
भाषा समापता सपुरणे, मिती जेठ
सुदी १ वार दित वरस समत १७७२
लीपी पोयी ।”

ग्रंथ अनेक व्यक्तिया क हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिखावट साधारण है। ग्रंथ पर कपडे का गत्ता चढा हुआ है। अन्तिम कुछ पत्र कीट भक्षित हैं।

५१ वीर गीत सग्रह

१ वीर गीत सग्रह आढा पहाडसिंह, जगा, कमो नाइ सावल डोली आदि,
२ रा० शो० स०, ३ ४८६२, ४ १६ × १८ ५ सेमी०, ५ ६६, ६ १३-१८,
७ सवत १७८८-६१, ई० सन् १७३१-३४, लाबीया ग्राम ८, ९० नेमीदास आदि,
६ राजस्थानी, देवनागरी, १० विवरण ब्रम इस प्रकार है—

- (१) महाराजा अजीतसिंहजी रौ गीत
- (२) गीत देवताग्रा रौ
- (३) गीत महाराजा अर्भसिंघ रौ (पहाडसिंह कत)
- (४) गीत महाराजा जसवतसिंघ रौ
- (५) गीत राणा जगतसिंघजी रौ
- (६) गीत माघोसिंघ अमरसिंघोत रौ (जगा कत)
- (७) उदावत जगरामजी रौ गीत (जगा कृत)
- (८) कवित्त राजसिंघ जगतसिंघ रौ (कमो नाई)
- (९) गीत राव बखतसिंघ रौ
- (१०) गीत अरजन गौड रौ
- (११) गीत मेडतिया प्रतापसिंघ गोपीनाथोत रौ (जगा कत)
- (१२) कवित्त मेडतिया सूरसिंघ प्रतापसिंघात रा (जगा कत)
- (१३) मेडतिया मोहबमसिंह रौ कवित्त (जगा कत)
- (१४) गीत मेडतिया ग्यानसिंघ मानसिंघोत रौ
- (१५) गीत अजीतसिंह रौ (सावल डोली कत)
- (१६) गीत करनोत धीमकरन आसकरनोत रौ (जगा कत)
- (१७) गीत चापावत मुकनदास सुजाणसिंघोत रौ (जगा कत)

उपरोक्त गीता के अतिरिक्त ग्रन्थ में अनेक कवित्त दोहे गीत इत्यादि कतिया हैं इन कृतियों का कोई क्रम नहीं है।

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रन्थ पर गत्ता नहीं है, ग्रन्थ अपूर्ण है। ग्रन्थ के बीच में बहुत से पत्र जीएण होने के कारण फटे हुए हैं।

५२ वीर गीत सग्रह आदि

१ वीर गीत सग्रह आदि, भूपन आदि, २ पु० प्र०, ३ ३६ बन्द २,
४ १३ ५ × १२ सेमी०, ५ २२२ ६ १४-१६ ७ वि० स० १७६६, ई० सन्
१७३६, ८ पचोली नाथ जंशमोत, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत ग्रन्थ

५४ राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का संश्लेषण, भाग २

म विविध विषयों की अनेक कृतियाँ सम्ग्रहीत हैं, ऐतिहासिक कृतियों का विवरण क्रम इस प्रकार है—

- (१) श्री भाजी की गीत
- (२) महाराणा प्रतापसिंघजी की गीत
- (३) महाराणा चरणसिंघजी की गीत
- (४) महाराणा राजसिंघजी की एक कविता
- (५) महाराणा सप्रामसिंघजी की एक कविता
- (६) गिवाजी की कविता भूपन कृत

प्रस्तुत ग्रन्थों के निर्माण इत्यादि के बारे में प्रारम्भ में लिखा है—

‘महाराजा घिराज महाराणा श्री जगतसिंघजी आनेस तु सवत १७६६ ब्रज आसाज गुद १० की बढ रँ दिन पोधी बाधी कविता की महाराज श्री नायजी की हवेली में श्री महाराज की पायी त्रिधी पोयी पचोली नाय जरामोन गुमान की लिपि कृत पचोली नाय ।’

प्रस्तुत ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। उपरान्त महाराणाओं के गीत आदि बाद में लिखे गये हैं। बीच बीच में अनेक पत्र सानी पडे हैं। ग्रन्थ पर कपड का गत्ता चडा हुआ है।

५३ वीर गीत कविता संग्रह

१ वीर गीत कविता संग्रह, खिडिया सेवग तेजसिंह आढा गोयददास बारट सक्कर, कु० भगवनदास, मुक्कन मेहडू आदि, २ रा० गो० स०, ३ १४६६६, ४ २० × २८ सेमी०, ५ ६, ६ ६-११, ७ वि० स० १८०६ ई० सन् १७४६, ८ अनात ६ राजस्थानी देवनागरी, १० ग्रन्थ में लिपिबद्ध कृतिमा का विवरण क्रम इस प्रकार है—

- (१) कविता चालकनबीजी की अपता की खिडिया (सेवग तेजसिंह कृत)
- (२) गीत रा० जोधराज की राजा जैसीध की भेली
- (३) कविता ठाकुरा अइसीध प्रतापसिंघोत की देरवा की धणी की (आण गोयददास कृत)
- (४) कविता कछवाहा रामदास दरवारी की (बारट सक्कर कृत)
- (५) गीत दबडा जैसीधदे वणाउत की (आढा गोयददास कृत)
- (६) कविता मेडतिया विसनसिंघ की (आढा गोयददास कृत)
- (७) गीत ठाकुरा मोहकमसिंह की (कुवर भगवानदास कृत)

- (८) गीत राव बुधसिंह री (मुकन महडू कृत) -
 (९) गीत प्रभुजी री (भाडा गोयददास कृत) -

५४ वीर गीत संग्रह

१ वीर गीत संग्रह, भाडा गोयददास, २ रा० गो० सं० ३ १४६६७,
 ४ २० × २७ सेमी०, ५ ६, ६ ११, ७ वि० सं० १८०७, ई० मन् १७५०,
 ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रंथ में संकलित कृतियों का विवरण-
 क्रम इस प्रकार है—

- (१) गीत बुरगदासजी री सानगजी री भेळी
- (२) गीत महमाई हीगुलाजजी री (भाडा गोयददास कृत)
- (३) गीत ठाकुर भइ द्रसिधजी री (भाडा गोयददास कृत)
- (४) गीत ठाकुर मोकमसिध री
- (५) गीत देवडा हठीसिध लाडाउत री (भाडा गोयददास कृत)

५५ वीर गीत संग्रह आदि

१ वीर गीत संग्रह आदि, भोव वीठू आदि, ५ रा० प्रा० वि० प्र०,
 ३ १४८३७, ४ २८ ७ × २२ सेमी०, ५ ८४, ७ २७-२९, ७ वि० सं०
 १८१२, ई० मन् १७५५ ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत
 ग्रंथ में संग्रहित कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

- (१) गीत राज श्री जगरामजी री
- (२) श्री प्रियाजी के नाम
- (३) पावूजी रा छद
- (४) गीत ठाकुर केसरीसिध वपतसीघोत री (खिडिया केसर सरघरी कृत)
- (५) गीत कूपा मेहराजोत री (भोव विठू कृत)

इसके प्रतिरिक्त गीत 'हनुमानजी को', 'कागज री ओपमा' आदि कृतियाँ
 लिपिबद्ध हैं।

मूल ग्रंथ की प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति द्वारा हुई है। ग्रंथ कृतियाँ (१, ३,
 ४, ५) किन्हीं दूसरे व्यक्तियों के हाथ से बाद में लिखी हुई प्रतीत होती हैं।

ग्रंथ पर जीण बण्डे का गत्ता चढ़ा हुआ है। ग्रंथ की लिखावट
 सुंदर है।

५६ वीर गीत संग्रह

१ वीर गीत संग्रह खिडिया हुक्मीचंद, २ रा० शो० स०, ३ १६४८६
 ४ ११५ × १५५ समी० ५ ६८, ६ १०-१३, ७ वि० स० १८४१, ई०
 सन् १७८४, जालोर (चाचोडी), ८ सेवग सतोवराम, ९ राजस्थानी, देवनागरी
 १० महत्वपूर्ण कृतियों का विवरण इस प्रकार है—

प्रारम्भ में समय सुप्यार मतमई' कृति अंकित है (पत्र-३६) जो प्रारम्भ के
 ४ पत्र चुप्त होने से अपूर्ण है। पुष्पिका इस प्रकार दी है—

'इति श्री समे सुप्यार सतसेई संपूरण समाप्त सवन १८४१ रा मिति
 फागुण सुद १३ वार सोम लिपतु सेवग सतोवराम दौलतराम कृत वास जालोर
 चाचोडी मध्ये लिपी छ मुता श्री चिमनीरामजी री पोधी मु लिपी छ श्री रस्तु।'

- (१) गीत जात सुपपरो महाराज श्री विजसिंह रौ (खिडिया हुक्मीचंद कृत)
- (२) गीत राजा उमदसिंघजी रौ (खिडिया हुक्मीचंद कृत)
- (३) गीत साह धनरूपमल रौ

इसके अतिरिक्त कुछ फुटकर गीत, सजया, पनर तिथि रा दूहा, आठ पोहर
 रा दूहा आदि कृतिया लिपिबद्ध हैं। ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है।
 प्रारम्भ के अंत में कुछ पत्र खाली पड़े हैं। ग्रंथ पर कपडे का गत्ता मढ़ा हुआ
 है। ग्रंथ अपूर्ण है।

५७ वीर गीत संग्रह

१ वीर गीत संग्रह माधोदास भाट, दौलतराम, जग खिडिया आदि,
 २ रा० शो० स०, ३ १६४६० ४ ११ × १४ समी० ५ १६४, ६ ८-१३
 ७ वि० स० १८४०, ई० सन् १७८३ जालोर, ८ सेवग सतावराम ९ सत
 स्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रंथ में मगहीत ऐतिहासिक कृतियों का विवरण
 इस प्रकार है—

१ कविस्त नवरस रा, माहाराज गजसिंघ रा (माधोदास भाट कृत) -

विविध ६ रसा के १२ छप्पय कविस्त जीधपुर के शामक गजसिंह की प्रणाली
 में अंकित है।

प्रारम्भ—

"गुन निधान गजसाह दान दरसन सुप दायक
 मडोवर महैयाळ मुरधर मूरत रति नायक आदि।"

पुष्पिका—

“इति श्री नव रस ग कवित भाट माधोदास क्त संपूरण श्री रस्तु सवत १८४१ मवे साय सुद मा वार सुक्र ।” इसके अतिरिक्त ये गीत लिपिवद्ध है—

- (२) महाराज गजसिंघजी की गीत (जालोर की चडाई पर)
- (३) महाराज जसवतसिंह की गीत
- (४) महाराज अजीतसिंह की गीत
- (५) महाराज अर्भसिंघ की गीत
- (६) गीत महाराज आणदसिंघ की
- (७) गीत बसंतसिंह की
- (८) गीत महाराज किसोरसिंघ की
- (९) गीत महाराज विजयसिंघ की
- (१०) गीत जात सणोर (सेवग दोलतराम कहे)
- (११) गीत महाराज विजयसिंह की
- (१२) गीत महाराज बादरसिंहजी का घात किसनगढ
- (१३) गीत महाराज गजसिंह महाराज कवर राजसिंह तकें बीकानेर
- (१४) गीत बीठलदावता का ठाकुर देवीसिंह की
- (१५) गीत चूक रै भाव की
- (१६) गीत कवर उदैराज तथा जीवराज का (उदैराज कत)
- (१७) अमल की कुण्डलिया

इन कृतियों के बाद नीमाज माताजी की छंद’ (सेवग हरिराम क्त) और गुण हरि रस’ (वारट ईसरदास क्त) लिपिवद्ध हैं, पुष्पिका इस प्रकार अंकित है—

‘इति श्री गुण हरि रस वारट ईसरदास क्त संपूरण सवत १८४० का काती सुद ११ वार बुध लपतु सेवग सतोपराम जालोर मध ।’

(१८) पवन पचीसी वृ दावन कत

(१९) गीत रामचंद्रजी की सेवग दोलतराम कहे

२० राठीड रतनसिंह की वचनिका (जगा खिडिया क्त) —

यह वही कृति है जो ग्रन्थक ६३४, रा० शो० स० में वर्णित है ।

पुष्पिका—

“इति श्री राजा रतन महेसदासोत की वचनिका पडीया जगा की कही संपूरण लिपतु सेवग सतोप राम दोलतराम उत सवत १८४२ मिति चेत्र सुद १५ ।” इसके अतिरिक्त ग्रन्थ में नासकेत की कथा, सजाय का कवित, बारमासो,

सजोगली नायका यमन (गवग अमराम पुत्र), इत्यादि कृतिया लिखिबद्ध हैं। मूल ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ में लिखा गया है, कुछ फुटकर गीत आदि दूसरे व्यक्ति के लिखे हुए हैं। लिखावट सुगम है। ग्रंथ पर कपड़े का गता मड़ा हुआ है।

५८ गीत रूपे सुरजमल री तथा राजा भीमसिंह री रूपक आदि

१ गीत रूपे सुरजमल री तथा राजा भीमसिंह री रूपक आदि, नायू निरभाराम आदि, २ रा० सो० स० ३ १४६८८, ४ २२५ × २५ सेमा०, ५ ८, ६ १६, ७ वि० स० १८४२, ई० मन् १७८५, ८ मुरता, चन्द्रभुज आदि ९ राजस्थानी देवनागरी १० काव्य कृतिया का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ गीत रूपे सुरजमलोत री -

प्रारम्भ—

“पाडण घण पळा मुजाळा रूपपत

अरीयदा ढाहण अवनानु ॥१॥”

२ महाराज भीमसिंह री रूपक (नायू निरभाराम कृत) -

प्रारम्भ—

प्रस्तुत काव्य जोधपुर महाराजा से सम्बन्धित है

अथ कवत

सिरीय राम सिव नाथ, आदि माता सुरसती

राजि यता रीता रीभीया ॥१॥

३ गीत सपखरो (महाराजा बखतसिंह) -

यह ११ दाला का गीत जोधपुर के शासक बखतसिंह का है—

‘कठठ फोज वेहु बड सडण कज्य कावलै

जेठ असाड री घटा जाणी ॥१॥

अन्तिम भाग—

धराघणी परमोध इण धीजीया राजयो इद वपतेस राजा ।

वधीया मे तुम्ह देसा पटा बघार वजावो लाडणु लाड बाजा ॥११॥

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में अनेक कृतिया लिखिबद्ध हैं स्याही उड़ जाने व लिपि अशुद्ध होने के कारण ठीक से पढ़ने में नहीं आती है। कुछ पत्र लुप्त होने से ग्रंथ अपूर्ण है। पत्र हाथ से बने हुए हैं।

५६ वीर गीत सग्रह

१ वीर गीत सग्रह झाडा पाहड खान नयावन आदि, ० रा० शो० स०,
३ ६१५१, ४ १६ × ११५ सेमी०, ५ १६, ६ १२-१८, ७ १८ वी
शताब्दी का उत्तरार्ध ८ अनात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० प्रारम्भ के
पत्र लुप्त होने से ग्रन्थ अपूर्ण है, अधिकांश गीत बुधालसिंह व शेरसिंह के युद्ध में भाग
लेने वाले सरदारों से सम्बन्धित है। गीतों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ गीत मेडतिया सुगनसिंह कीसोरसिंहोत रो -

प्रारम्भ—

‘सुगनस कहै सुगजो सिरदारो अडिया कटक मेडते आण
घणी काम लडणौ पग धारो आज मती चूकौ अक्साण ॥१॥’

२ गीत सबलसिंह देवोसिंहोत रो -

प्रारम्भ—

‘हुवो चूक जिण वार इम वचन देव कहा,
सुवो राजा विजा सु सहि साथ,
श्रवण आ वात सब लै साभली,
हमे जोएजो वूदी पावे हाथ ॥१॥’

३ गीत मेडतिये जालमसिंह कीसोरसिंहोत रो -

प्रारम्भ—

‘जालमसिंह कहै सुगजा,
मुरघर हर न धरो मन माहि,
मो जीव रो इती छै मालम
जोधाणो राम सु जाय ॥१॥’

४ गीत सेरसिंह रो -

प्रारम्भ—

कहै एम सेरो कमध सुण बुसलो कथन
अधिक बोली मती लोग आगा ॥१॥’

५ गीत चापावत देवोसिंह महारसिंहोत रो -

प्रारम्भ—

मुरघर रो थभ मिसल रो भाभी
लीया मुज पत्रवाट लजा

दरामिष जिमी भड उगणा
श्रया किम मारजे विजा ॥१॥

६ गीत चापावत कुसातसिध न सरसिध री -
प्रारम्भ—

बडा बालतो बोल याता धणी बणातो
जोम छत्र धारतो ठगक जाभी
सदा री बकारै सेर ऊभो समरि
मुदा रा हरा रा आव माभी ॥१॥'

७ गीत मेडतिया सेरसिध^१ तिरदारसियोन री (प्राडा पहाडखान कत) -

इस गीत में रामसिंह और बखतसिंह के बीच वि० स० १८०७ माग गाय
सुदि ६ की हुए मठते के युद्ध का वृत्तांत है, पर गीत वाला पत्र लुप्त है।

आगे महाराजा बखतसिंह और मा० रामसिंह के बीच हुए युद्ध सम्बन्धी प्रथम
गीत दिये गये हैं। यह प्रथम दो व्यक्तियों के हाथ से लिखित हुआ है। पत्र नीचे
जाने से वही कहीं पठना असंभव है। प्रथम पर गता नहीं है।

६० वीर गीत दूहा संग्रह

१ वीर गीत दूहा संग्रह खिडिया तेजमी वृ दावनदास आदि, २ रा०
प्रा० वि० प्र० ३ ४०७१४ ४ १३२ × १४ ६ सेमी० ५ ८४ ६ १०
१३, ७ वि० स० १८३८ ६८, ई० सन् १७८१ १८११, जोधपुर, ८ नडारी
तेजमल आदि, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ जोधपुर महाराजाओं की जन्म कुण्डलिया -

प्रथम के प्रारम्भ में महाराजा अर्जुनसिंह, बखतसिंह, विजैसिंह, भीमसिंह तथा
मानसिंह, कुंवर छत्रसिंह, कुंवर सिवदान, तखतसिंह की जन्म कुण्डलिया अंकित हैं।

२ गीत आवेर रा धणी राजा रामसिधजी री -
प्रारम्भ—

“गस गहै आगमण नमी जैसिध रा रामसा
कूरम इसा वदवायो, बडो केवाण ॥१॥”

१ रेल के अन्तर्गत महाराजा रामसिंह की ओर से रीवा के ठाकुर शरसिंह और राजधिराज बखत
सिंह की ओर से आउवा के ठाकुर कुशलसिंह के बीच बड़ी वीरता से युद्ध हुआ दोनों घोड़े
आपस में सडकर वीर गति को पहुँचे। (मारवाड का इतिहास पृ० ३६३)

३ भाव पचासका (धू दावन दास) -

इस कवि से सम्बन्धित ५७ दोहे सवये लिपिवद्ध हैं ।

प्रारम्भ—

‘अमृत भूत अमित अनिति अति अगम अपार अनूप
व्यापक दृश्य मय, जय जय जीत सरूप ॥१॥’

पुष्पिका—

‘इति श्री कवि व दावनिदास विरचिताया भाव पचासिका संपूर्णम् सवत
१८३७ रा वर्षे मिति भाद्रवा शुक्ल पक्षे एकादशमी ॥ वा १ बुधवासरे दिने लिपित
महारी तेजमल पठनाय श्री नगर जोधपुर मध्य ।’ (पत्र-१४३)

४ गीत महाराजा विजसिंघजी रौ -

प्रारम्भ—

‘रैणा जमायो अमल रूका घना जी अगजी
राजा सदा जत रत वीया भोमिया मरज ॥१॥’

५ दुरगदास आसकरणीत रा दूहा (लिडिया तेजसो कृत) -

दुर्गादास की प्रशंसा में १५ दाहे अंकित हैं जिनमें उनके वीरतापूर्ण वायों
का वर्णन है—

प्रारम्भ—

‘श्री आरग अवीयार जात मिट राजा जासा
तु हुवी दुरगा त्यार अथा लकडी आसउत ॥१॥’

पुष्पिका—

‘दूहा ४७ छै पिण इताई उतारीया १८६८ रा मा सुद १२ ।’

इसके अनिर्दिष्ट ग्रन्थ में राठौड़ों की शालाभा रा कवित महलोतो की २४
शाखा, देवीदास रा कवित आदि कविया लिपिवद्ध ह ।

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है । ग्रन्थ पर गत्ता
नहीं है ।

६१ राठौड़ देवीसिंह रौ गीत आदि

१ राठौड़ देवीसिंह रौ गीत आदि, २ रा० शो० स०, ३ ४६६३,
४ १४५ × १७५ सेमा० ५ २३१, ६ १४२०, ७ १८७० ८३, ई० सन्
१८१३-२६, आसाढा, पाडलाउ ८ बेलचद, ९ लपमीचद ६ राजस्थानी,
देवनागरी, १० ग्रन्थ के प्रारम्भ में ३६ कुला का उल्लेख हुआ है—

प्रारम्भ—

‘ धारा नगरी पमार १ नाडूरगढ चहुवाए २, ब्राह्मणनगर गहतीन ३, साहलेगढ दहीमा ४, ५ ।

१ राठीड देवीसिंहजी रो गीत -

यह प्रगति गीत पोकरण के राठीड देवीसिंह चापावत का है जिसे महाराजा विजयसिंह ने घोले से सन् १७६० म बंद कर मरवा दिया था ।

प्रारम्भ—

भाण घायो नी तमासो दप कदे रो उमायो मूर,
डळा गणे छायो निवु घू-आधो रं आज
इळा गेणे छायो नि राग ताहरे उपरे देवा
आप रुद जाओ नही करतो आराणा ॥१॥”

अंतिम भाग—

‘ राका पाण बलाकारी वाकारती तोनु राजा
मगळा करती दूक चापा हदा मोड
माण रो दुजोधरण भूप घूक सो विधात माह
रुव धारें चूक न को वडाळा राठीड ॥४॥”

(पत्र-१)

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है लिपि सुवाच्य है । ग्रन्थ म कुछ पत्र नुटित हैं और कुछ खाली दडे हैं । ग्रन्थ म अय अनेक कृतिया लिपिबद्ध हैं जिनका क्रम इस प्रकार है—पुरुष रो बहतर कळा, रात्रि भोजन सिभाय, मानतुग मानवती चौपाई, घन्नो सालिभद्र चौपाई, गज सुकमाल चोडालियो गोडीजी रो चोडालियो विरम भूपति चौपाई चद्रलेहा चौपाई जिनसार इत्यादि ।

६२ वीर गीत कवित्त सग्रह

१ वीर गीत कवित्त सग्रह सिडिया हुकमीचद डूगरसी बाम्नी, उत्तम राव रतन, देवीदास गिरधर, २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ १८३ (इद्र गढ सग्रह), ४ ३० ५ × २३ ५ सेमी० ५ ३४४, ६ १५, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० यह ग्रन्थ महत्वपूर्ण एतिहासिक गीतो, दोहो और कविताओं का समग्र सग्रह है प्रारम्भ एक दोह से हुआ है—
इहा—श्री गणेशायै नमः ॥

कोयला पैरवत चड कुप कणीयर सरण कपाट
हरदा म हिशुल रो बाल्ही लागै वाट ॥१॥

कृतियों का विवरण क्रम इस प्रकार है—

१	कवित्त हीमलाल का	२८	गीत महाराजा इन्द्रसालजी को
२	कवित्त श्रीजगन्निजी को	२९	गीत महाराजा सरदारसिंघजी का
३	गीत नरसिंघजी का	३०	गीत महाराजा भर्षसिंघजी को
४	निसाली मीराछन्दनतन की	३१	गीत महाराजा छत्रसिंघजी का
५	गीत हामाजी को	३२	गीत महाराजा देवसिंघजी को
६	गीत चित्तमलाल हनुमतजी (हनुमान) का	३३	गीत वेतियो साणोर
७	गीत गोप डाढो देवजी का	३४	गीत श्रीकुट वध
८	कवित्त धवाणा (चाहान) की उत्पत्ति	३५	रूपक महाराजा जी भगत रामजी का कवित्त
९	गीत गोपा चवहाण को	३६	गीत मुक्ताग्रह
१०	गीत राव कोलण को	३७	गीत चौसर
११	गीत हालुजी का	३८	गीत त्रिकुटवध
१२	गीत राव अरजनजी का	३९	गीत भाखडी (साथ म स्फुट कवित्त भी है)
१३	गीत लाला हाडा को	४०	साखी महाराजा सरदारसिंघजी को कही
१४	गीत भापा पशु बाल को	४१	रूपक कवरजी सुनमानसिंघजी को गीत पचसर
१५	गीत राव सुरजन का	४२	गीत मुक्ताग्रह सुनमानसिंह को
१६	गीत राव सुरजमलजी का	४३	गीत सुपसरा गुमानसिंह को
१७	निसालण राव सुरजन की	४४	गीत त्रिकुटवध सुनमानसिंह की
१८	निसालणी दादूजी की	४५	गीत (क) वरजी अमानसिंघजी का
१९	निसालणी राव दूदा की	४६	गीत प्रतापसिंघजी को
२०	गीत दादूजी की	४७	गीत राव अजीतसिंघ को
२१	गीत राव भोज को	४८	रूपक महाराजा अमरसिंघजी को गीत वेतियो
२२	गीत पाडगति	४९	गीत महाराजा फकीरसिंघजी को
२३	राव भारसिंघजी का गीत	५०	गीत महाराजा जोगीरामजी को
२४	गीत भगीतसिंह को	५१	गीत महाराजा सालसिंघजी को
२५	गीत राव उमेदसिंघजी को		
२६	गीत (जोध) सिंघजी लार सती हुई जीकी		
२७	गीत राव छत्रसालजी को		

- ५२ गीत घासीरामजी को
 ५३ गीत महाराजा प्रतापसिंघजी को
 ५४ गीत दत्तेशसिंघजी को
 ५५ गीत महाराजा मरजादसिंघजी को
 ५६ गीत गवर फतेसिंघजी मुजाण-
 सिंघजी इद्रसालोत को
 ५७ गीत बेरीसालोवता को
 ५८ कवित रूपजी महारसिंघजी को
 ५९ गीत कवित माधोसिंघजी का
 ६० गीत मुकनसिंघजी का सायभडो
 ६१ श्रीजी किसोरसिंघजी का गीत
 ६२ गीत रामसिंघजी का
 ६३ गीत भीरवसिंघजी का
 ६४ गीत स्यामसिंघजी का
 ६५ गीत दुरजनसाल जी का
 ६६ गीत जेराम वीयास (व्यास) को
 ६७ गीत मोहणसिंघजी का
 ६८ गीत गोरघनसिंघजी का
 ६९ गीत अजीतनिंघजी को
 ७० माहाराज छत्रसालजी का कवित
 ७१ गीत प्रथीसिंघजी को
 ७२ गीत नाहरसिंघजी को
 ७३ गीत नाथजी को
 ७४ गीत हरदेनारायण को
 ७५ गीत दोलतसिंघ हरदावत को
 ७६ गीत भीवसी हरदावत का
 ७७ गीत जतसिंघ हरदावत का कवित
 ७८ छत्रसिंघजी नेवाडता को गीत
 ७९ फतेसिंघ जेतसिंघजी को कवित
 ८० कमुबा वाम को गीत
 ८१ गीत हाडा भीरवसिंघजी को
- ८२ कवित राव हमीर को
 ८३ प्रथीराज का छप्पे
 ८४ गीत गोख डोडो बरडोड को
 राणा भोजराज चहुवाण का
 ८५ कवित टोडरमल चहुवान नीम
 राणा को राजा
 ८६ गीत वेदला ठाकुर बखतसिंघ
 चहुवाण को मुपखरो चोटी बघ
 ८७ गीत चहुवाणा को
 ८८ गीत स-साल दवडा का
 ८९ गीत अखसिंघ देवडा को
 ९० गीत सुरताण देवडा को
 ९१ गीत (बी) रमद सानगरा को
 ९२ गीत राणगदे सोनगरा का
 ९३ गीत जसा सानगरा को
 ९४ गीत कूभा खीची को
 ९५ धीरतसिंघ खीची को
 ९६ गीत नगा खीची को
 ९७ गीत फतेसिंघ खीची को
 ९८ गीत धक्कर पारस्या को
 ९९ कवित साहिजादो दानसाह को
 १०० कवित खानखाना नबाब को
 १०१ कवित औरगजेब पातस्या को
 १०२ गीत सहीजादा का
 १०३ गीत दली को
 १०४ गीत राणा कुभा को
 १०५ गीत रायमल राणा को
 १०६ गीत राणा परतापसिंघ को
 १०७ गीत राणा अमरसिंघ को
 १०८ गीत राणा जगतसिंघ को
 १०९ गीत राणा राजसिंघ को

- ११० गीत राणा परतापसीधजी का
 १११ गीत राणा सगरामसिधजी को
 ११२ गीत राणा सागा को
 ११३ गीत जैमल पता को
 ११४ गीत रावळजी को
 ११५ गीत रावळ को
 ११६ गीत अमरसिध रावळ को
 ११७ गीत नैतसी रावळ का
 ११८ गीत सालमसीध देवळ को
 ११९ कवित सेवो रावल को
 १२० कवित कावडया खेडी को भारत
 मीधजी को
 १२१ गीत राणा भीव को
 १२२ गीत उडणा प्रथीराज को
 १२३ गीत सागा मोणा को
 १२४ गीत चाडा लाखा का
 १२५ गीत सीहचलो रावळ खुमाण रो
 १२६ गीत देवीसीध बगू का ठाकुर को
 १२७ गीत दवारिकादास चाडावत को
 १२८ गीत जसोतसीध चोडावत को
 १२९ गीत नरायणदास सगतावत को
 १३० गीत गजगति नरायणदास
 सगतावत का
 १३१ गीत अठतालो
 १३२ गीत गोकलदास सगतावत को
 १३३ गीत परतापसीध सगतावत को
 १३४ गीत जगतसिंह सगतावत को
 १३५ गीत लालसीध सगावत को
 १३६ गीत सगतसीध सगतावत को
 (त्रिबुटबध)
 १३७ गीत सुरतसीध सगतावत को
 १३८ गीत सगतावत को
 १३९ गीत राणा सगरामसीधजी को
 १४० रूपक (म्होकमसी) चद्रावत को
 १४१ गीत अमरसीध चद्रावत को
 १४२ गीत भारतसीध साहपुरा का
 १४३ गीत उमेदसोध माहपुरा को
 १४४ गीत उदोतसीध का
 १४५ गीत रामानद नागाको
 १४६ गीत केसरीसिध सीसोदा को
 १४७ गीत सावलदास डाबर को
 १४८ गीत अचलसीध राणाउत को
 १४९ गीत जगमाल जाजपुरा को ठाकर
 (त्रीबकडौ)
 १५० गीत दबला का ठाकुर को
 (खटिया हुक्मचद वृत)
 १५१ गीत जगखाडो बधु का रावत
 हरीमीध जी को
 १५२ गीत बिहारीदास गलात का
 १५३ गीत आनु गेलोत को
 १५४ गीत मूलराज सोलखी को
 १५५ कवित नाहारसिध सोलखी को
 १५६ कवित नाहरखाजी का
 १५७ कवित हरीजी को
 १५८ गीत किसनसिधजी को
 १५९ गीत लालसिध सालकी को
 १६० गीत वीरमदे सोलखी को
 १६१ गीत सीधराव जसीध को
 १६२ गीत मूलराज सोलखी को
 १६३ कवित नाथावता को
 १६४ गीत देवीसिध नाथावत का
 १६५ कवित करण नाथावत को

१६६ गीत गोयदास सराडा का	सौध नागौर का ठाकुर व भ्रातृ
१६७ गीत अमरसिंह भाटी जसलमेर को	काम आधो को
१६८ गीत सख्खा भाटी का	१६३ गीत जैतसिंह राठौड मुमीयाण को ठाकुर
१६९ गीत जानू का	१६४ गीत बैसरीसिंह उदावता का
१७० गीत विजा सरवैया का	१६५ गीत उदावता का
१७१ गीत करण सरवैया का	१६६ गीत मोहोबत राठौड का
१७२ दुहा जसा सरवैया का	१६७ गीत विजा राठौड को
१७३ गीत राठौडा को	१६८ गीत हठीसिंह राठौड को
१७४ गीत राजा गजसिंह का	१६९ गीत तजसिंह राठौड का
१७५ गीत राजा जसातसिंहजी को	२०० गीत कुसलसिंह चापावत को
१७६ गीत अमरसिंह राठौड का नागौर का राजा	२०१ गीत सेरसिंहजी कुसलसिंहजी का
१७७ गीत राजा अजीतसिंहजी को	२०२ गीत कुसलसिंह सेरसिंह का
१७८ गीत राजा अभयसिंहजी का	२०३ गीत सेरसिंहजी का
१७९ गीत बखतसिंह को	२०४ गीत दुरगादास राठौड का
१८० गीत जीवा भापा दखणी का	२०५ गीत गोपालसिंह मेडत्या का
१८१ गीत राजा विजसिंह रौ सपखरी	२०६ गीत अरधगोख किसनसिंह राठौड का
१८२ गीत राजसिंह रूपनगर को राजा को	२०७ गीत चतुरा राठौड का
१८३ गीत कूपा राठौड का	२०८ गीत परसा राठौड को
१८४ गीत नीव का	२०९ गीत करण राठौड को
१८५ गीत रतन का	२१० गीत साहबसिंह राठौड को
१८६ गीत बलू चापावत को	२११ गीत करण राठौड का
१८७ दोहा सानग बलू का बटा	२१२ गीत सैसमत राठौड का
१८८ गीत रामसिंह राठौड को	२१३ गीत माधोसिंह राठौड को
१८९ गीत दौलतसिंह राठौड का	२१४ गीत जसवतसिंहजी का उमरावा को
१९० गीत अमरसिंह गरडावा को	२१५ गीत अन्नसिंहजी का उमरावा को
१९१ गीत इन्द्रसिंह खैरवा का ठाकुर को	२१६ गीत परधीराज राठौड का
१९२ गीत गोकलदास राठौड को अमर	२१७ गीत जयसिंह राठौड को
	२१८ गीत सवा बाब्रिल को

- २१६ गीत घाणेराय की ठापुर पदम
मीघ का
- २२० गीत सगतसीघ राठौड की
- २२१ गीत मोकम चापाउत की
- २२२ गीत धर्मसिध राठौड की
- २२३ गीत कर्मो राठौड की
- २२४ कवित्त राव बीका की
- २२५ गीत कल्याणसीघजी की
- २२६ गीत प्राथोरज राठौड की
- २२७ गीत रायसीघ की
- २२८ गीत बीकानेर का माणमीघ का
बेटा का
- २२९ गीत साणार घाणवध देलीयो
रामसीघ की
- २३० गीत रायसीघ बीकानेर की
- २३१ कबीत बीकानेर का राजा
धनोपसिध की
- २३२ गीत बीकानेर पदमसीघ की
- २३३ गीत केसरीसीघ बीकानेर की
- २३४ कवित्त राजा गजसीघजी बीकानेर
की
- २३५ गीत भीष राठौड की
- २३६ गीत दुदा राठौड की
- २३७ गीत लखधीर दुदा का
- २३८ गीत एकअखरी करण बीकानेर
का राजा की
- २३९ गीत आणु की
- २४० गीत त्याग की
- २४१ छप्पय राव भारा जाडोचा की
- २४२ गीत चाडेचा की बीसर
- २४३ गीत हीरा मागळ्या की
- २४४ गीत महेड जाडेचा का
- २४५ गीत राव देसल की
- २४६ गीत दुरजनसाल सोडा की
- २४७ गीत भोज दाबा की
- २४८ गीत घामडी सोडा चवाड की
- २४९ गीत सोडा राठौड की चुक की
- २५० गीत सोडा भाटी की चुक की
- २५१ गीत राजा मान की
- २५२ कवित्त बडो जैसीघ का
- २५३ गीत बडो जसीघ की
- २५४ गीत जगतसीघ आमर का राजा
की लहचान गीत
- २५५ गीत राजा रामसीघजी की
- २५६ कवित्त राजा विसनसीघ की
- २५७ गीत राजा सब्राई जयसिध की
- २५८ गीत बडा जैसीघजी की
- २५९ गीत दुमल मनोहर साखली बडा
जैसीघ का उमराव का
- २६० गीत तलाकसीघ राजाउन की
- २६१ कवित्त कुशलसीघ नाथावत चामू
ठाकर की
- २६२ गीत गजसीघ नाथाउत की
- २६३ गीत सोरठियो उदयसीघ सेला
उत की
- २६४ गीत दीपसिधजी की
- २६५ गीत दीलतसिध की
- २६६ गीत सोसीघ सेलाउत की
- २६७ गीत कानसीघ बलभन्ते की
- २६८ गीत देवीसिध खगारोत की
- २६९ गीत अमरसीघ खगारोत की
- २७० गीत मोरघन कल्याणोत की

- २७१ गीत मानसिंघ कल्याणोत को
 २७२ गीत कमा करयाणोत को
 २७३ गीत जैचंद कल्याणोत को
 २७४ गीत फत्तेसीध नागा का
 २७५ गीत जैसीध नरुका को
 २७६ गीत जैसीध नरुका का
 २७७ गीत सुजाणसीध जगनाघोत को
 २७८ गीत साहेबखा भाखरात का
 २७९ कवित्त राजसीध भाखरात को
 २८० गीत राजसीध भाखरोत का
 २८१ गीत गुजरीका बेटा का नारायण दासजी को दैलतखा बंटो छै ती को गीत छै
 २८२ गीत जैतसीध मानसीधोन का
 २८३ दूहा वाकाउत को
 २८४ गीत सपूत का कवि हीमळाजदान
 २८५ गीत कपूत को
 २८६ गीत बँसर मानसीधोत को
 २८७ दुहा सवाई जसीधजी को
 २८८ गीत खगार कछवा का
 २८९ कवित्त नाथाउत कछवावा का
 २९० गीत जगखाडा राजा विठल्दास गोड को
 २९१ गीत राजा अनाद का
 २९२ कवित्त राजा बीठ को डूगरसी धामडीका कह्या
 २९३ गीत राजा अनरुद गोड का
 २९४ कवित्त सावभूठी
 २९५ गीत राजा नरसग का
 २९६ गीत जानि हसभग
 २९७ गीत अरट गोडा का
- २९८ गीत अदजन गोड का
 २९९ गीत सभुराम गोड को
 ३०० गीत राजा मनारदासजी का
 ३०१ गीत राजा उत्तमरामजी का
 ३०२ गीत वीरभद्र गाड को
 ३०३ गीत अरजन वीरभद्र का
 ३०४ गीत जारावरसिंघजी महाराजा छत्रसिंहजी का नावजी को
 ३०५ गीत उदयभाण हरभाण गोड का
 ३०६ गीत सगता गोड को
 ३०७ दूहो रासाणा सागा उतमराव रतन का कह्यो
 ३०८ गीत थानसीध सागावत को
 ३०९ गीत किनसीध गोड को
 ३१० गीत दला भाला का
 ३११ गीत राजा कीरतसीध सादडी का ठाकरा का
 ३१२ गीत नाथजी भालाताण को ठाकुर का
 ३१३ कुडल्या जसात भाला का
 ३१४ दूहो माधवसीध भाला को
 ३१५ दूहो मदनसीध भाला को
 ३१६ कवित्त हमतसिंघ भाला का
 ३१७ मत्र हिमतसीध भाला उपर
 ३१८ गीत जालमसिंघ भाला का
 ३१९ दूहो कवित्त पुवारा का
 ३२० गीत साडुळ पुवार को
 ३२१ गीत रायन मयण उमट का
 ३२२ गीत परसराम उमट को
 ३२३ दूहा मानघाना पुवार बीजोल्या का ठाकुर का

- | | |
|--------------------------------|-----------------------------------|
| ३२४ गीत नगा खाती की | ३३८ कवित्त प्रसताइक देवीदास की |
| ३२५ गीत नारगदे सती की | (नीति सम्बन्धी काव्य है) |
| ३२६ गीत राजपूता का गाढ की | ३३९ कवित्त कुडल्या गिरधर की कही |
| ३२७ गीत अनोपसीध कछवावो की | ३४० गीत अरठ छमरसीधजी खातोली |
| ३२८ गीत माधोसीध कछवावो अजब | का ठाकुर का |
| गढ मानगढ का ठाकुर की | ३४१ गीत महाराजा भगत रामजी की |
| ३२९ गीत गोयददास माधाणी का | चोसर, भीग्यारीदास बागडी की |
| कछवावो | कहया |
| ३३० गीत कमा माधाणी कछवावो | ३४२ गीत डोढो थठनाळा सदासिध का |
| ३३१ कवित्त सवाई जैसीध की | ३४३ गीत सावभडा |
| ३३२ कवित्त सतारा का राजा | ३४४ गीत जानि अठनालो श्री रामचंद्र |
| ३३३ कवित्त हरदसाह बुदेला का | जी रो |
| ३३४ कवित्त आतमाराम रूघनायसीध | ३४५ गीत पदमसीधजी रहणावत की |
| गोड भाखरोत की | ठाकुर ज्या की ठुकराण्या मथुरा |
| ३३५ कवित्त तवरसाह भाट का | मे काम आयी ज्या का |
| ३३६ कवित्त घरती चकुर्व हुवा का | ३४६ गीत दोढो बागा की |
| ३३७ कवित्त रुपमा की खोड (गीता | ३४७ निसाणी राव सोडा की |
| के दोष) को | (पत्र त्रुटित होने से अपूर्ण है) |

यह महत्वपूर्ण बृहदाकार ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से सुन्दर मोट अक्षरों में लिपिबद्ध किया गया है। पत्र सब चुले हैं, कागज जीरा होने के फलस्वरूप खण्डित हैं। पूर्वी राजस्थान के अनेक वीरों पर भी गीत हैं। यह सग्रह केवल ऐतिहासिक दृष्टि से ही नहीं डिगल गीता की रचना के अध्ययन हेतु भी उपयोगी है।

६३ वीर गीत सग्रह

१ वीर गीत सग्रह, सूरजमल, बारट दुर्गादत्त, खिडिया प्रताप आदि
२ रा० शो० स०, ३ ४८ ४ २६ ७ × १७ सेमी० ५ २९, ६ १६-२२,
७ १९ वी शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० विवरण
क्रम इस प्रकार है—

१ वंश नास्कर के छंद (सूरजमल कृत) -

इस प्रसिद्ध ग्रंथ वंश भास्कर क कुछ छंद है—

प्रारम्भ—

चडया मलार ले तुपार नी हजार नचचे

(पत्र-७)

७० राजस्थान के इतिहासिक गद्या का सर्वेक्षण, भाग २

२ गीत वीरमदेजी रो -

वीरमदे का प्रगस्ति गीत है ।

प्रारम्भ—

वरसे विरदेत कमध बाप बळ, लाह छनीस भुजा मडलेव
गणा राबळ मुरडता, दोयण हूठ कीया वीरम देव ॥१॥ (पत्र-३)

३ महाराजा बलवत्सिंह री निसांणी (धारट दुरगादत कृत) -

यह रतलाम के शासक बलवत्सिंह की निमानी (बाब्य का एक प्रकार) है ।
मिलावें प्रथाव १६२६३, रा० प्रा० वि० प्र० ।

प्रारम्भ—

‘वदन वर गुण नाथ दू जे पूत गवर था,
भुध बुध दे गज का वदन लया उदर का,
राजा बलवत् सीध ग्रप रतन नगर का
कोड समापी रतन सीध को जोड अवर का ।’

अन्तिम भाग—

विरदाता सिर बोलीया चुण काट बिबर का
मान महा बळ सारपा राजा जैपुर का
दान दीया पट कोड का डहे सायर का
वीरमदे राठाड था राजा रूडर का ।’ (पत्र-४)

४ गीत पृथ्वीसिंह री (खिडिया प्रतापजी कृत) -

प्रस्तुत गीत किसनगढ के महाराजा पृथ्वीसिंह की वीरता से संबंधित है ।

प्रारम्भ—

‘जरद भीडिया सुभट अस साभू जडका जडक,
लुळे फुण सेस रा थाय लडका लडक
बजे वाराह री डाढ बडका वडक
किसनगढ नाथ री कठी वडका कडक ॥१॥ (पत्र-३)

ग्रथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिखा हुआ है । लिखावट साधारण है जो पत्र के एक ओर ही है ।

६४ वीर गीत संग्रह आदि

१ वीर गीत संग्रह आदि, कविया दान कविया रामचंद्र मुरारीदास, दुरसा
आढा, खिडिया केसरीसिंह विठु जगराम, वारट भैरुदान आदि, २ रा० शो० स०
३ १०२६१, ४ २२ ५ × १५ सेमी०, ५ ११३ ६ १५-२५, ७ १६ वा

शताब्दी का मध्य, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रन्थ म सकलित कृतियों की सूची-क्रम इस प्रकार है—

- (१) गीत महाराजधिराज बाहदरसिंघजी रो
- (२) गीत महाराज कवर विडरसिंघजी रो (कविया दानजी कृत)
- (३) गीत सेरसिंघजी रो
- (४) गीत महाराज विजयसिंघजी रा (कविया दान जी कृत)
- (५) गीत सबळसिंघ रा
- (६) गीत (कविया रामचद्र कृत)
- (७) गीत (मुरारीदास वारट कृत)
- (८) गीत सावभडो अपाजी रो (दुरसा आडा कृत)
- (९) गीत महाराज विजेसिंघ रा (खिडिया केसरोसिंह कृत)
- (१०) गीत मोहकमसिंघ रूपावत (विठु जगराम कृत)
- (११) गीत बडूक को
- (१२) गीत महाराजा विजेसिंहजी रा (वारट भेरूदान कृत)
- (१३) गीत महाराजा विजेसिंह रो (वारट भेरूदान कृत)

इन गीतों के अतिरिक्त अनेक कवित्त दोहे आदि ग्रन्थ म सकलित है जो ऐतिहासिक महत्व के नहीं है।

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। लिपि सुवाच्य नहीं है। कुछ पत्र लुप्त होने म ग्रन्थ अपूरण है।

६५ वीर गीत कवित्त सग्रह

१ वीर गीत कवित्त सग्रह, बखता खिडिया, खिडिया देदाजी, लालस नवला खिडिया हुकमीचद वारट स्यामदान आदि, २ रा० शो० स० ३ १२७७२, ४ २५ × १६ सेमी० ५ १२५ ६ १८ २५ ७ १९वीं शताब्दी का मध्य, ८ नदराम आदि, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रारम्भ जीर अ त के कुछ पत्र लुप्त ह। ग्रन्थ की प्रथम काव्य कृति (बखता खिडिया कृत) महाराजा अभयसिंह के अहमदाबाद चढाई से संबंधित है जो अपूरण है। अय कृतिया का विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ कवत ठाफुरा द्वारकादासजी रो (खिडिया देदाजी कृत) - प्रारम्भ—

“रीझ हगम राठोड अमर रायण अपीयाता
कमध नाथ किरणाल, पाळ कीधी निज पाता ।”

२ गीत फुगलसिंघ री (लालस नयला कृत) -

प्रारम्भ—

नही पाडी सहर देखसा त्रभं तर
आउवै नही कुमलेस प्रापा”

३ गीत राजा उमेदासिंघ री (सिद्धिदा हृषीकेश कृत) -

प्रारम्भ—

बन्नी धाजता वरमा पीठ पनागा ऊधची बेत
मागा बाल घडी दत पडा आसमेद ॥१॥”

४ नोसाणी नसीत की -

प्रारम्भ—

किणही का विण जाए के बीमवास न बीजै,
गहणा गाठा बँच कै अन सूगा लीजै,
पड वाचा करणा नही विन मौत मरीजै,
ठाकुर सु हित राप के भेक दाम न दीजै ।”

५ नोसाणी -

प्रारम्भ—

आ माया जग मोहणी, अत हल गावत
क्या सीधा का साधका मुक्ता भरमावत,
पर गाडी पकडी तिका आडी नह आवत,
कर चाडी सो उवरी गाडी सम भावत आदि ।”

६ गीत (बारट स्यामदान कृत) -

प्रारम्भ—

‘समभर नह अवर सहर दन सरवर
रह थर चर पर नजर भर आदि ।”

इसके अतिरिक्त ‘भरव जप्टक’ फुटकर दूहे बवित और बिता गीपक के कुछ गीत भी ग्रन्थ में संकलित हैं। ग्रन्थ में एक अलग से पत्र पर महाराजा मानसिंह के जालोर घेरे से सम्बन्धित वृत्तांत लिपिबद्ध—

प्रारम्भ—

‘जालार रा घेरा म म् जुगताजी नै परची सारु मलीया परची मिळी नही
नरै लुगाई री गेणी ले प्राया नै हाजर कीना । तरै फुरमायो—कठासू लायो ? तर

कहो मारी लुगाईं री ह । फुरमायो कीकर दीनी ? अरज करी भाळी छै सा
पाटाय लायो द । फुरमायो—घू घिरै जावै जदी कही ।”

गीत—

मागण हूँ सदा मागणा मागण जाऊ जाचण वरन जठे

जाधाहर ढळवछ जोधाण इळ नवपड रा सक्क अट्टे आदि ॥१॥”

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है जो अपूर्ण है । इस पर गत्ता नहीं है कुछ पत्र पीठ भक्षित हैं । लिपि सुवाच्य नहीं है ।

६६ फुटकर वीर गीत संग्रह

१ फुटकर वीर गीत संग्रह २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ २८१०६,
४ १५५ × १८५ सेमी०, ५ ३८, ६ १५ १७, ७ १६वीं शताब्दी का
मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी दवनागरी १० प्रस्तुत ग्रंथ में राजपूत
योद्धाओं से सम्बन्धित अनेक फुटकर प्रशस्ति गीत मद्रहीत हैं । प्रारम्भ में उम्मेदसिंह
सिसोदिया का गीत^१ अस्ति है ।

प्रारम्भ—

श्री गणेशाय नम ॥ ग्रंथ फुटकर गीत लिप्यते ॥

कटी वाजता वरमा पीठ पीनामा उघडी कैंत,

मागा प्रभ्रागा लागे अडो आसमान छाया

उपडी वाजदा बागा यू आयो उमेद ॥१॥”

इस प्रकार इसमें ६२ गीत हैं पर सभी बिना शीर्षक के हैं तथा किसी के भी
माथ कर्ता का नाम नहीं है । ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया
है । लिखावट सुंदर व सुवाच्य है । पत्र सब खुले हैं और गत्ता नहीं है ।

६७ वीर गीत संग्रह

१ वीर गीत संग्रह, करणीदान, खिडिया तेजसी आदि, २ रा० प्रा०
वि० प्र०, ३ २६०८०, ४ १७५ × २५ सेमी०, ५ ६, ६ १६,
७ १६वीं शताब्दी का मध्य ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, दवनागरी, १०
प्रारम्भ का पत्र लुप्त होने से ग्रंथ अपूर्ण है, इसमें संकलित गीतों का विवरण क्रम
इस प्रकार है—

(१) गीत कटारी रा भाव री, साणोर

(२) गीत जात साणोर

- (३) गीत जात मांणार छोटो
- (४) गीत सरजुनद सू गट वीधी निण सम री
- (५) गीत महाराजा वगनमिषजी री (परणोशा)
- (६) गीत महाराजा अमनमिषजी री जात मावमढो
- (७) गीत अमनमिषजी री गट सम री
- (८) गीत महाराजा श्री अजीनमिषजी री जान सपपरी
- (९) गीत अजीनमिष री विडिया तेजसी री बही

इसके अनिश्चित कुछ बिना गीतों के गीत भी लिखित हैं। लिखित गीतों में पद्य नव गुण हैं। एक ही व्यक्ति के हाथ से ग्रन्थ लिखा गया है। पद्य एक ओर से कीट भक्षित हैं।

इन गीतों में उस समय के राजसूय-युग के प्रति जन भावनाओं का भी चित्रण हुआ है।

६८ वीर गीत सग्रह

१ वीर गीत सग्रह नवलजी, आढा गुमाण आदि, २ रा० गो० स०, ३ १४६७०, ४ २० x २८ सेमी०, १ ३, ६ १३, ७ १६वीं पनाली का मध्य, ८ अज्ञान, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत ग्रन्थ में अक्षर कृतियों का निवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ गीत चापावत कुशलमिष री (नवलजी कृत) -

प्रारम्भ—

“करा घनो कुसलेस लघु वंस मोटा कमध
तप मुरधर तणा बैर अजु ॥१॥

२ गीत मेडतिया भीममिष री (आढा गुमाण कृत) -

प्रारम्भ—

“है चाडण तोह पछाण हाथी सुकव नैवाजण हार तुज
मत्रं मजण सुरताण सागीमा ॥१॥”

३ गीत मेडतिया भीममिष री (ठा० गुमाण कृत) -

प्रारम्भ—

“माहावाहा चुत्रवाह पीज तणा मुहरी
सुकव रीज गुणा देष साव ॥१॥”

४ गीत माटी बोलतसिध री -

प्रारम्भ—

“आपाड अढी गजा ची अवीरच
धजा बधा बिहु पया सजाघ ॥१॥”

५ गीत महाराजा बखतसिध री -

प्रारम्भ—

“धैप नै अण साधण व अग जोधा धणी
तेज तप बदल गए तेज तप बूद गुण अजण अजण तेहो ॥१॥”
ग्रय के यह पत्र दो व्यक्तियों के हाथ में लिपिवद्ध किये गये हैं।

६६ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि

१ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि, सूयमल मिश्रण, मा० मानसिंह, सादू शकर आदि २ रा० शा० स०, ३ १४०२७, ४ ३३५४ २६५ सेमी०, ५ ५०, ६ १३ २६, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें अधिकांशत विभिन्न ठाकुरों के गीत लिपिवद्ध हैं, विवरण-क्रम इस प्रकार है—

- | | |
|---|--|
| १ गीत ठाकुर भगवतसिंह री
बूदी राज्य | १३ गीत सिवारण कलाजी री
(कील्याण कृत) |
| २ गीत ठाकुर जैतसिंह री | १४ गीत राव जोधा री |
| ३ गीत पुसालसिंह री (सूयमल
मिश्रण कृत) | १५ गीत हीमंतसिंह मेवाडा री |
| ४ गीत ठाकुर माघोसिंह री
(मा० मानसिंह कृत) | १६ गीत जैतसिंह री |
| ५ गीत ठाकुर कल्याणसिंह री | १७ गीत महाराजा मानसिंह री
(अग्नेजो के विरोध से सम्बन्धित) |
| ६ ठाकुर भगवतसिंह देवलोक हुवा
तिण भाव री मरसीयो | १८ गीत सीसोदिया अचलसिंह री |
| ७ गीत ठाकुर कल्याणसिंह री | १९ गीत हाडा प्रतापसिंह री |
| ८ गीत ठाकुर कल्याणसिंह री | २० गीत ठाकरा माघोसिंह री |
| ९ गीत ठाकुर गोपालदास चापावत री | २१ कवित्त बूदी रामसिंह री |
| १० कवित्त ठाकुर सुरताणसिंह री | २२ कवित्त महाराजा मानसिंह री |
| ११ गीत ठाकुर सुरताणसिंह री | २३ कवित्त ठाकुर वगतावरसिंह री |
| १२ कवित्त ठाकुर वगतावरसिध री | २४ कवित्त नव कोटा री विगत री |
| | २५ नीसाणी ठाकुर भोपतसिंह री |
| | २६ नीसाणी ठाकुर दलपतसिंह री |

२७ गीत गुरताणमिह रो	४१ गीत गण्डा अडमी रो
२८ गीत ठापुर इदरगिह बयनावरसिह, धनाडगिह रो	४२ गीत राजा नीमसिह रो
२९ गीत ठापुर गुनातगिह रो	४३ गीत महाराजा गजसिह रो
३० गीत ठापुर माधसिह रो	४४ गीत महाराजा धर्मसिह रो
३१ गीत ठापुर गुरताणसिह रो	४५ गीत बानरवा रा रामसिह भाग रो
३२ गीत ठापुरा बगनावरसिह रो (बिला रा भाव रो)	४६ गीत रतलाम बलतसिह रो
३३ गीत ठापुर बल्याणसिह रो	४७ गीत महाराजा मानसिह रो
३४ गीत ठापुर गुरताणसिह रो	४८ गीत ठापुर बगनावरसिह रो
३५ गीत महाराजा मानसिह रो	४९ गीत रतलाम बगवतसिह रो
३६ गीत राजाधिराज बगवतसिह रो	५० गीत महाराजा मानसिह रो
३७ गीत श्रायस लाडूना रो	५१ गीत महाराजा धजीतसिह रो
३८ गीत बोटे पृथ्वीसिह रो	५२ कवित्त मानसिह रा
३९ गीत उम्मदसिह सायपुर रो	५३ कवित्त रतलाम बलवतसिह रो
४० गीत आयस देवनाथ रो	५४ गीत ठावर कलाणमिह रो (माद शवर वृत)

इन गीतों के अतिरिक्त ६३ फुटकर दोह और कुछ बिना शीषक के गीत कवित्त भी ग्रथ में सम्प्रहीत हैं।

ग्रथ का व्यक्तिया के हाथ से लिखा गया है। ग्रथ पर रस्ता नहीं है।

७० वीर गीत कवित्त संग्रह

१ वीर गीत कवित्त संग्रह, आडा पहाडखान, आडा हिमता, माडू चना बखता खिडिया, हुकमीचद खिडिया, बद्रीनाथ, खिडिया मुजा मेहडू महापान खिडिया तैजमी, मोतीसर कोलाजी, करगोदान, डूगरजी, वारट दुर्गादत्त आदि, २ रा० शा० सं०, ३ १६०८३, ४ २९५ x २५ मेमी, ५ १३३, ६ १९२३ ७ वि० म० १५५२ ई० मन् १७९५ और १९वीं शताब्दी का मध्य, ८ माधव चद, आडा दोला ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रथ के प्रारम्भ में अवतार चरित्र (नरहरिदास वृत) लिपिवद्ध है पत्र लुप्त व त्रुटित होन में ग्रथ अपूर्ण है। पुष्पिका इस प्रकार अंकित है—

'संवत् १८५२ वर्षे मासोत्तम मास चत्र मास वृष्ण पक्षे 'एकदशी तिथी चद्रवारे शकल पडित शिरोमणो प्रवर पडित प० कर्नचद्रजी शिष्य प० रामचद शिष्य प० माधवचद लिपता ॥ श्री रस्तु ॥

इसके पश्चात् किसी अन्य व्यक्ति के हाथ से ऐतिहासिक गीत आदि कृतियाँ लिखी गई हैं। विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ गोगादेजी (राठौड़) री छद्म जोड़या दला न मारियो जिएण भाव री (पहाडखान कृत) -

अंकित है कि राव वीरमदे के पुत्र गोगाद ने जोड़िया दला का मार अपने पिता का वर लिया।

प्रारम्भ—गाहा—

'अत मत का अव सुयल उगती
सुप्रसन होय दीज सुरमती
पाहू राठौड़ गढ चत्रपती
कहु तै गोगा कीरती

अन्तिम—

सत मात तात बधव सैअण,
सध गोगा धारे मरण ।'

छद्म सरया नहीं दी है।

पुष्पिका—

'समापता, चद पुरास लपतु आढा दोला। कहियाँ आढा पाडपानजी रा,
फागुण सुध पाचम घोळीया मेहल म लपीया।' (पृ-१६)

(२) गीत ठाकुर सरसिधजी री (पहाडखान कृत)

(३) गीत बनसीध री (आढा हिमता कृत)

(४) गीत अटकुबध दीवाणजी री (आढा पहाडखान कृत)

(५) कवित्त ठाकुर सरसिधजी री (आढा पहाडखान कृत)

(६) गीत शिवसीधजी री (सादू बनजी कृत)

(७) कवित्त महाराजा बखतसिंह रा (बखता पिडिया कृत)

(८) नीसाणी प्रतापसिधजी जपुर रा धणी री (हुकमीचद कृत)

(९) गीत ठाकुर पुसालसिध, सेरसिध री (आढा पहाडखान कृत)

(१०) गीत मेडतीया सेरसिध, सूरजमल री (आढा पहाडखान कृत)

(११) गीत ठाकुरा कुसलसीधजी री (आढा पहाडखान कृत)

(१२) गीत जालसिधजी री (खिडिया हुकमीचद कृत)

(१३) गीत रायसीध री (हुकमीचद कृत)

(१४) गीत रावळ पृथ्वीसिधजी री (हुकमीचद कृत)

- (१५) छद महाराणा अरसी री (आढा पहाडखान कृत)
- (१६) छद ठाकुर सेरसिधजी री (आढा पहाडखान कृत)
- (१७) गीत उरजणसिधजी री (खिडिया बन्नीनाथ कृत)
- (१८) गीत गढ रा भाव री (खिडिया हुकमीचद कृत)
- (१९) गीत कालीगजी री (खिडिया मुजाजी कृत)
- (२०) गीत राघोन्जी री (खिडिया हुकमीचद कृत)
- (२१) डूहा राणा भीमसिध रा (महडू महादान कृत)
- (२२) गीत राणा भीमसिध री (महडू महादान कृत)
- (२३) गीत रायपुर घणी भापरसी हिरदेनारायणोत री (खिडिया तजसी कृत)
- (२४) गीत ठाकुर प्रतापसिधजी री
- (२५) गीत ठाकुर आनदसिधजी री (मोतीसर बोलाजी कृत)
- (२६) गीत महाराजा अमसिधजी री
- (२७) गीत महाराजा बखतसिधजी री (बरनीदान कृत)
- (२८) गीत ठाकुर चानणसिधजी री सागधसी रँ घणी री (आढा पहाडखान कृत)
- (२९) गीत ठाकुर आणदसीधजी री परवा रा घणी री (आढा पहाडखान कृत)
- (३०) गीत कवर नारपानजी री भुजनगर री घणी री (आढा पहाडपान कृत)
- (३१) गीत महाराजा अमसिधजी री (आढा पहाडखान कृत)
- (३२) गीत चहुआण जोधसिधजी री (खिडिया बन्नीदास कृत)
- (३३) गीत रावतजी जैतसिधजी री (आढा पहाडपान कृत)
- (३४) गीत राजा रायसिधजी री (आढा पहाडपान कृत)
- (३५) गीत हरीसिधजी री (चोटाला डूगरजी कृत)
- (३६) गीत राजा गभीरसिधजी री (आढा दीला कृत)
- (३७) दातारा री (बलवतसिह की) स्तुति निसाणी एक, बारठ दुरगादत्त री कही

इसमें राजस्थान के विविध दातार वीर राजाओं की प्रशंसा की गई है। अन्त के पत्र लुप्त होने से कृति अपूर्ण है।

अन्य अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिखित किया गया है। लिखावट साफ नहीं है। अन्त पर गत्ता नहीं है।

७१ गीत भाण सोनगरा री

१ गीत भाण सोनगरा री (गादडी के ठाकुर), २ रा० गो०, स०
३ १४६८३ ४ ४६ × १५ सेमी० ५ १ सरडा, ६, २६, ७ १६वीं
शताब्दी का मध्य, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० गीत का
विषय इस प्रकार प्रकृत है—

‘गीत सादरी री ठा० सोनीगरा भाण अपराजोत कुभलगड महाराणाजी श्री
प्रतापसिंघजी री वपत म साको कर काम आयी तिण री—

गीत प्रारम्भ—

जुग ब्यार न जावे नाम जद जम

वाहडद जालोर कर, भागूवी रतन जडायी भारव ॥१॥

अन्तिम भाग—

दूहा—

छत्र ज्यूही छाया प्रन छत्रपतीया उपरा

दस दिस दरमायो जस प्रनाप चारो जसा ॥३॥

प्रस्तुत पत्र एक ही व्यक्ति द्वारा लिखा गया है। पत्र हाथ का बना प्रतीत
होता है लिखावट साधारण है।

७२ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि

१ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि द्वारकादास, हिमता खिडीया आदि,
२ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ १३५१८ ४ २३ × १७ सेमी०, ५ १२,
६ १८ २१, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देव-
नागरी, १० निवरण क्रम इस प्रकार है—

(१) गीत जात सावभूने म्हाराजा मजसिंहजी री

(२) गीत सपपरा महाराज अजीनसिंघजी री (द्वारकादास कृत)

(३) गीत सावभूडो कूपावन हरीसिंघजी री, चूक रा भाव री

(४) गीत सावभूडो वीसनसिंघजी री (हिमता खिडीया कृत)

इसके अनिश्चित कुछ फुटकर कवित्त इत्यादि लिपिबद्ध हैं। लिखावट कहीं-
कहीं बहुत अनुद्ध है। पत्र सुप्त होने से ग्रन्थ अपूरा है। ग्रन्थ पर गत्ता नहीं है।
अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है।

७३ उदैभाण रौ गीत

१ उदैभाण रौ गीत, वामणसी, ० रा० शो० म०, ३ ३२६२,
४ २० × १० सेमी, ५ १ ६ १७, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य ८
अज्ञात ९ राजस्थानी देवनागरी, १० प्रस्तुत गीत जोधपुर के राव चंद्रसेन
का बसधर और श्यामसिंह के पुत्र उदैभाण का है।

प्रारम्भ—

अडण जोध चहुआन चीत्तीट थानि अडै
बटक दील्ली तणो न्हवाट कीधो
बाप रँ हुकम उदैभाण भरे बळ
टताळ पगा तलवाडी दीधो ॥१॥

अन्तिम भाग—

पते करी फोजा पण फेरी श्याम रा काम मुघारीया एम
असुर पछाड आवी उदौ राम रावण सीर माम्नीया जेम ।”
यह पत्र एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। लिपि साधारण है।

७४ महाराजा जसवतसिंह रौ गीत

१ महाराजा जसवतसिंह रौ गीत, २ रा० शो० स०, ३ ४०५६,
४ ४१ × १४ ३ केमी० ५ १, ६ २६, ७ वि० स० १६०७ ई० सव
१८५० ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत सदा गीत
महाराजा जसवतसिंह के धरभाट युद्ध से सम्बन्धित है।

प्रारम्भ—

‘करा पाकडै नै पेक द्याडे कमध बजाडै विचै पचै पच सचद बाजा ।
साह रा पुगजा जसो आपडसिध रमाड मकडा जेम राजा ॥१॥”

अन्तिम भाग—

“पाणा केवाण धममाण दळ पाखती दापीयो जीध ओघाणा हूजो
माणा कुळ जिसा करमाणा पगला भरै सरिखा मकउ १व राग सूजा । ७॥”
यह पत्र एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुव्याख्य

है।

७५ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि

१ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि, बखता खिडिया, ओपा आढा, मोतीसर
चत्रा आढा ओपा, मोतीसर प्रभुलाल खिडिया हुक्मीचद आढा किसना, आण

दुरसा, आढा जवान, ढोली तिलोका, सादू भोपालदान आदि, २ रा० शी० स०, ३ १२२६६ ४ २४×१७ सेमी० ५ १५८, ६ १८-२१, ७ वि० स० १६०७, ई० सन् १८५०, ८ कविया सेणीदान, ९ राजस्थानी, दवनागरी, १० ग्रन्थ में प्रारम्भ के ५ पत्र सुप्त हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ की प्रथम कृति राजनीत रा कवित्त' है—मिलाव ग्रन्थाक २३५ पु० प्र०।

पुष्पिका इस प्रकार अंकित है—

'इति श्री कवि दवीनाम कृत राजनीत रा कवित्त सपुरण लीपत कवीया सेणीदान नग्न जोधपुर वातासमद रा डेरा मडनीया कवर चत्रसालजी * डेरे समत् १६०७ का कानी वद बाचे सुराँ जासू राम राम है वाच जो।'

१ कवित्त राजा सिवराजजी का (भूपन कृत) -

इद्र जिम जभ पर बाडव जीम अब पर

रावन कुटब पर रधु कुल राज है ॥१॥

२ गीता री सूची -

इसमें १४६ गीतों की प्रथम पंक्तियाँ की सूची दी गई है। यथा—

१ नीलछा समज रै सगळी जग दायँ।

२ पडै नाग कोड धीक जावप प्रजळै।

३ कवित्त महाराजा अमरसिंहजी रा (बखता खिडिया कृत) -

महाराजा अमरसिंह के अहमदाबाद युद्ध आदि घटनाओं को लेकर १२० कवित्त छप्पय लिखे गये हैं। मिलावें ग्रन्थाक १३५१८, रा० प्रा० वि० प्र०।

४ गीतों की सूची -

फिर इसमें १७८ गीतों की सूची दी गई है।

- | | |
|---|--|
| ५ गीत भगती री (ओप आढा कृत) | १० गीत भगती री (आढा ओपजी कृत) |
| ६ गीत राजा भीम (सीसोदिया) को (मातीसरा चत्रा कृत) | ११ गीत साहुपुरा उम्मदसिंह री पीडीया हुकमीचद कृत) |
| ७ गीत रावत राधोदास माहाराजा माकमसिंहजी का (आढा जोपा कृत) | १२ गीत राठौड जमलजी को |
| ८ गीत राजा गोपालदास को (पिडीया बडदास कृत) | १३ गीत सेलार दोढो हीमरसिंहजी को |
| ९ गीत माडणोत हरनाथसीधजी गौव अल्लाय री (मोतीसर प्रभुलाल कृत) | १४ गीत भीमा घना री |
| | १५ गीत जालमसिंह किसोरसिंहजी री |
| | १६ छप्पय कवित्त राणा प्रतापसिंह का (आढा दुरसा कृत) |

- | | |
|--|---|
| १७ गीत राणा भीमसिंह री
(आढा किसना कृत) | २० गीत जयपुर राजा रामसिंहजी री
(सादू भोपालदान कृत) |
| १८, गीत राणा जवानसिंह री
(आढा जवान कृत) | २१ गीत झाला परीश्रीसिंह री
(सेणोदान कृत) |
| १९ गीत (ढोली तीलाक भदोरा
कृत) | २२ गीत महाराजा मानसिंह री
कैयों चारणा री |

इन गीतों के अतिरिक्त सतियों के नाम, नव कोटा के कवित्त, फुटकर कवित्त और कुछ बिना शीपक के गीत भी संकलित हैं।

प्रथम अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है।

७६ वीर गीत संग्रह

१ वीर गीत संग्रह नगजी खिडिया आदि, ० रा० गा० स० ३ ३४,
४ १२७ × २० सेमी०, ५ १८, ६ ८-१३, ७ वि० स० १६२० ई०
सन् १८६३, लछमणपुरा, ८ देव चारण, ९ राजस्थानी दवनागरी, १०
इसमें कुछ उमरावों से सम्बन्धित प्रशस्ति गीत संग्रहीत हैं, विवरण-क्रम इस प्रकार
है—

१ गीत खिडिया लक्ष्मण री कह्यो -

प्रथम प्रारम्भ के ३ पत्र लुप्त हैं। प्रस्तुत गीत अधूरा है।

“ बोल गाम घवा घोर तोपा सार वीर बागा
तीर बागा गात बळा असोम जग तार
बबीड अराड चडा होड हाक टाक बागा ॥६॥”

पुष्पिका इस प्रकार अंकित है—

गीत लिप्यो देव चारण जाति पिडिया लछमणपुरा मध सम्त १६२० जेठ
सुदि २ ।’ (पत्र-४३)

२ गीत हूकमसिंह री (नगजी खिडिया कृत) -

प्रारम्भ—

‘ करग झलि बँवाण देईवाण मचना बळट
पद आपाण धरै रोस पाठ आवीयो, रूप जमराण हुम मखल ॥१॥’
(पत्र-१३)

३ गीत बूझू ठाकर प्रतापसिंह री (खिडिया नगजी कृत)

प्रारम्भ—

"बागा त्रमाळा कराळा सदा हृदा वीर जागा घोम्ब
वोम गौम जागा गरढा असोम पखा पाण ॥१॥

(पद्य-१३)

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में ४५ गीत और लिपियद्ध ह पर गीता के शोषण नहीं है। लिपि माधारण है। प्रारम्भ में गलत स्थाही ग लिखावट है ग्रंथ दो व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है।

७७ वीर गीत, अवतार चरित्र आदि

१ वीर गीत अवतार चरित्र आदि, बारट नरहरदास आदि, २ रा० शो० म०, ३ १४०२५, ४ ३२ × २१ मेमी०, ५ २६५, ६ ३०-३२, ७ वि० स० १८४१ १९३५ ई० सन् १७८४ १८७८, ८ खिडिया बावनदान माधोसिंह आदि, ९ राजस्थानी देवागरी, १० ग्रंथ के प्रारम्भ में कुछ वीर गीत, आयुर्वेद नुसखे इत्यादि दिये हैं।

१ गीत बडलो सालसिंह री -

गीत में प्रथम पक्षिया पदमा सादू के गीत की है फिर लालसिंह का वृत्तांत आ जाता है।

प्रारम्भ—

'आटीला उठ सतारा वाळा तो उपर बागा त्रमाळा
नाह भाग जागो नीदाळा, कौईक कटक आविया ॥१॥'

अन्तिम भाग—

जुनी येह जाता हृद जूटी, पूनी सीह सावळा छूटी,
छूटा प्राण पछे हट छूटी सीस पछे गढ तूटी'

(२) कवित्त (अपात कवृक)

(३) विजय अवतार गीत (अवतार चरित्र) बारट नरहरदास कृत

४ राठोडां री पीढियाँ -

जाधपुर के शासक महाराजा सरदारसिंह से आदि नारायण तक की पीढियों का नामोल्लेख है।

(५) राठोडा री पीढियो

(६) गीत सावळडी

७८ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि

१ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि, २ रा० शो० स०, ३ ८२१६, ४ २६४ × ३१ समी, ५ १४१ ६ एवसी नहीं ७-२२, ७ १६वीं गताया वा उत्तराक्ष, ८ विविध एव अगात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें अधिकांश गीत जोधपुर के महाराजा मानसिंह के समयसाधक हैं। कई गीत अमर सिंह अजीतसिंह, दुर्गादास व लूणकरण सम्यन्धी प्राचीन हैं। कई गीत मारवाड़ के सामन्तों पर भी हैं।

१ गीत ठाकुरा श्री गोरवरधनजी रा -

यह प्रशस्ति गीत चडावल के ठाकुर गोरवरधनसिंह का है।

२ गीत उदायता रा, सोमडावत जोरजी कृत -

इसमें उदावत राठीडा की प्रशस्ति है।

३ कवित्त राणा कूमाजी रो -

प्रस्तुत कवित्त के बारे में ग्रन्थ में इस प्रकार उल्लेख है—

राणोजी कूमोजी श्री एकलोगजी र दरवार दरनण करण पदारिया न पाछा पदारता गड ताडी तद राणाजी भड परमाई काम धन काम धन ताठव कर' निरु रो समस्या पूरण तरण न चारण कवित्त वणायी—

धर उतर पूरव धारता निजर नागोर धरती

गोवत्री सग्रहे दप मन भाय डरती जादि ॥” (पत्र-३)

४ फुटकर गीत कवित्त -

इन गीत कवित्तों में (बोगसा मगाराम, बोगसा हररामजी, सरवडीया बोगसा रायसिंह कृत) क्षत्रिया का यश बरान है। (पत्र-२)

- | | |
|--|---|
| ५ गीत रास ठाकुर केमरीसिंह
(वासणी के कविया कृता राम कृत) | १० गीत भाद्रजण उदसिधजी रो
(बोगसा उकारसिंह कृत) |
| ६ गीत पालडी ठाकुर जवानसिध
रो (प्रमूदान कृत) | ११ गीत बाळ नारीगजी रो (बोगसा
रायसिंहजी कृत) |
| ७ गीत त्रकुटवध (रतनू वीरभाण) | १२ गीत पाचोटे वपतसीगजी रो
(पटावस रो कही) |
| ८ गीत तेना (ग्राम) रा गोगादे
सूदरदासजी रो (बोगसा राय
सिंह कृत) | १३ गीत कला रायमलोत सिवाणा रो |
| ९ गीत भाटी हरदासजी रो
(बोगसा रायसिंह कृत) | १४ गीत रतनसिध महसदासोत रो
(बोगसा भरमचद कृत) |
| | १५ गीत भायला रा |

- १६ गीत पाचोट रूपसिंगजी रौ (पिडिया केसर कृत)
- १७ गीत चामू ठाकुर लिछमणसिंघ (गाडण मगलजी कत) ३२ गीत ठा० दबीसिंघजी रौ
- १८ गीत रावळ सिंघसिंघजी रौ ३३ गीत करण सवाईसिंघ रौ (चूक से मारने का वृत्त)
- १९ गीत सेपावता रौ ३४ गीत चवाण बलूजी रौ
- २० गीत लाडपानीया रौ (छीला के वारठ भोजराज कृत) ३५ गीत राणा भीमसिंघजी रौ
- २१ गीत भरूदानजी रौ (रायपुरीया के आडा दौनजी लछमीरामजी के पुन का कहा) ३६ गीत चवाण जारावरसिंघजी मानसिंघोत रौ
- २२ गीत अजीतसिंघजी रौ (दमामी राम कृत) ३७ गीत ठाकुर दबीसिंह पाकरण रौ (ब्रमदास कत)
- २३ गीत तखनसिंघजी रौ (सुवर सावतसिंह कत) ३८ गीत ठा० जैतसिंघ रौ (ब्रमदास कृत)
- २४ गीत भरथपुर राजा रौ (आसिया वाकीदास कत) ३९ गीत चापावत बलूजी गोपाल-दासात रौ
- २५ गीत रामपुरा चद्रावत मोहकम सिंघजी रौ ४० गीत सलूबर राणा रौ
- २६ गीत कुचामण ठाकुर सिंघनाथ सिंघजी रा (चुरली के गगा राम कत) ४१ नीसाणी जैसलमर रावल रौ (बोगसा गगाराम कृत)
- २७ गीत कुडकी के वहादरसिंह रौ (गुमानपुरा के सूजा कविया कृत) ४२ निसाणी (श्रीरंगजेव रौ)
- २८ गीत रायपुर ठाकुर केसरीसिंघजी रौ ४३ निसाणी सेरसिंगजी कृसलीगजा रौ
- २९ गीत भाकत्सर (ग्राम) रा (बावसा रायसिंह कृत) ४४ गीत ठाकुर कुसलसिंघजी सेरसिंघजी रौ
- ३० गीत महाराजा मानसिंघजी रौ (देवल सदाराम कृत) ४५ गीत मानसिंघजी रौ (कविया वावनदान कृत)
- ३१ गीत सवाईसिंघजी रौ पावरण रा रौ चोवारी रौ राड रौ ४६ दूहा मारसिंहजी रा (भोसण भाना कृत)
- ४७ गीत राजाजा की दानशीलता का (वारट हरदान कृत)
- ४८ गीत ठा० जुगताजी रौ (सादू मोहवत कृत)

- ४६ गीत ठा० जुगताजी री
(वारठ गिरवरदान कृत)
- ५० गीत ठा० जुगताजी री
(साळस उमद कृत)
- ५१ गीत मा० मानसिधजी री
(सोवजावस के गाढण जोरजी कृत)
- ५२ गीत महाराजा मानसिध री
(वारठ सोभजी कृत)
- ५३ गीत महाराजा मानसिह री
(आसिया हररूपजी कृत)
- ५४ गीत महाराजा मानसिह री
(गाढण आइदान कृत)
- ५५ गीत महाराजा मानसिहजी री
(वारहठ विजैराम कृत)
- ५६ गीत महाराजा मानसिहजी री
(मोतीसर आवडदान कृत)
- ५७ गीत मा० मानसिह री (मीसण भोमजी कृत)
- ५८ गीत भरुदानजी री (सोजत के सेवग आसाराम कृत)
- ५९ गीत महाराजा मानसिहजी री
(वारहठ हरदान कृत)
- ६० गीत मानसिहजी री (आसिया दाना कृत)
- ६१ गीत ठाकुरा तेजाजी री
(मोतीसर प्रभूदानजी कृत)
- ६२ गीत ठाकुरा जुगताजी री
- ६३ गीत ठा० भरुदानजी री
(किसाजी कृत)
- ६४ गीत ठा० जुगताजी री
- ६५ गीत भैरदाजी री
- ६६ गीत हा० जुगताजी री
(मातीसर जगमाल कृत)
- ६७ गीत वणमूर गोयदजी री
(रायळ विसराम कृत)
- ६८ दूहा जुगताजी रा (मा० मानसिह कृत)
- ६९ मरसिया ठाकुर जुगताजी रा
- ७० गीत ठाकुरा भैरदानजी री
- ७१ गीत जुगताजी री
(रायळ विसनाजी कृत)
- ७२ गीत महाराज भजीतसिह री
(पिडिया तेजसिह कृत)
- ७३ गीत महाराज रायसिधजी री
- ७४ गीत नीवाज ठाकुर कल्याण सिधजी री (सादू उम्मेदसिह कृत)
- ७५ कवित्त उमादजी रा (वारठ आसा कृत)
- ७६ गीत कवित्त श्री लाहूनायजी रा
- ७७ गीत माधोराव व श्रीरगगाह री
- ७८ गीत महाराजा विजसिधजी री
(सादू उम्मेदसिह कृत)
- ७९ गीत विठ्ठलदास चापावत री
(रामजी कृत)
- ८० गीत पतडी रा
- ८१ गीत महाराजा विजसिहजी री
(जोरजी सादू कृत)
- ८२ गीत महाराजा विजसिधजी री
(उम्मेदसिह कृत)
- ८३ गीत देवीसिध री (उम्मेदसिह कृत)

- ८४ गीत जगरामजी रौ (सादू जोधजी कृत)
- ८५ गीत ठा० शिर्वासिधजी आउवा रौ (जोरजी कृत)
- ८६ गीत चारणो रँ मान रा (उम्मेदसिंह कृत)
- ८७ गीत उदसिध रौ (सादू लालजी कृत)
- ८८ गीत मा० विजयसिधजी रौ (सादू लाल कत)
- ८९ गीत बलू चापावत रौ (सादू उम्मेदसिंह कृत)
- ९० गीत विठ्ठलदास चापावत रौ (सादू राम कृत)
- ९१ गीत उदैभाण रौ (सादू उम्मेद कृत)
- ९२ गीत राव लूणकरन रौ (सादू उम्मेद कत)
- ९३ गीत राव हू पा रौ (सादू गगादान कृत)
- ९४ गीत भाटी उरजण रा (सादू जोधजी कत)
- ९५ गीत मा० अमरसिंह रौ (सादू सुरतानजी कत)
- ९६ गीत राव हू पाजी रौ (सादू प्रतापजी कत)
- ९७ गीत सेहसमल रौ (सादू उम्मेदसिंह कृत)
- ९८ गीत कुशालसिधजी रौ (सादू लालजी कृत)
- ९९ गीत महाराणा रँ कीर्ति रौ (सादू नाथूराम कत)
- १०० गीत मा० बरनसिंह रौ (सादू पृथ्वीराज कून)
- १०१ गीत अमरसिधजी रौ (कविया करणीदान कत)
- १०२ गीत कुशालसिध रौ (उम्मेदसिध कत)
- १०३ गीत मा० तख्तसिध रौ (सादू भोपालदान कृत)
- १०४ गीत मा० विजैसिधजी रौ (सादू सुरता कृत)
- १०५ गीत नारसिधजी रौ (नाथूरामजी लालस कत)
- १०६ गीत विजा सरवहोया रौ (वारठ ईसरदास कत)
- १०७ गीत छडावळ ठाकुर सेरसिधजी रौ (सादू जोरजी कृत)
- १०८ गीत युद्ध रौ भीषणता रौ (सादू जम्मेदसिंह कृत)
- १०९ गीत युद्ध रँ ताडव रौ हुकमीचद खिडिया)
- ११० गीत साणार (पृथ्वीराज सादू कत)
- १११ गीत युद्ध वीर रौ तक्लीफा रौ (सादू पृथ्वीराज कृत)
- ११२ गीत दुगदास रौ (सादू सबळा कत)
- ११३ गीत राठाड अमरसिंह रौ (आडा दुरमा कृत)

- ११४ गीत महाराजा विजयसिंघजी रो
(मातीसर प्रभुदान कृत)
- ११५ गीत राणाजी रो (सादू
उम्मदसिंह कृत)
- ११६ गीत महाराजा विजयसिंघजी रो
(मोनीमर प्रभुदान कृत)
- ११७ गीत वीर उम्मदसिंह रो
(मिडीया हुनमीचद कत)
- ११८ गीत राजपूतो रो वीरता रो
(सादू लालजी कृत)
- ११९ गीत कुशलसिंघ रो वीरता रो
(कविद्या करणीदान कृत)
- १२० गीत महाराजा अभयसिंह रो
(सादू पृथ्वीराज कृत)
- १२१ गीत (सादू राम कत)
- १२२ गीत बलू चापावत रो (आढा
दुरगा कृत)
- १२३ गीत बलू चापावत रो (सादू
सुरताजी कृत)
- १२४ गीत गारधन रो (बारठ
कातजी कृत)
- १२५ गीत (बारठ दलपत कत)
- १२६ गीत वीरता रो (बारठ
सतीदान कत)
- १२७ गीत (बारठ सतीदान)
- १२८ गीत (मिडीया वगता कृत)
- १२९ गीत गोवरघनजी रो (चुतराजी
बालण कृत)
- १३० गीत वीरता रो (चुतरजी
बालण कत)
- १३१ गीत महाराजा जसवतसिंह रो
(सादू राम कृत)
- १३२ गीत सीसोदिया रो (धववाडिया
पालाजी कत)
- १३३ गीत महाराजा विर्जसिंह रो
(सादू उम्मदसिंह कत)
- १३४ गीत कुशलसिंह रो (कविद्या
करनीदान कृत)
- १३५ गीत (पडीया सूजागी
कत)
- १३६ गीत मा० मानसिंह रो (बोगसा
गोरधन कत)
- १३७ गीत मा० मानसिंह रो (दवल
सदाराम कृत)
- १३८ गीत रावल बैरीसाल सामा
(सादू जोधाजी कत)
- १३९ गीत महाराजा जसवतसिंघ रो
(आढा गुलाबसिंह कत)
- १४० गीत महाराणा श्री समुसिंघजी
रो (आढा गुलाबसिंह कृत)
- १४१ गीत भींडर महाराज हमीरसिंघजी
रो (आढा गुलाबसिंह कत)
- १४२ गीत बहाली जालमसिंघ रो
(आढा गुलाबसिंह कत)
- १४३ गीत रामपुर ठाकुर माधोसिंघ रो
(आढा गुलाजी कत)
- १४४ गीत नीवाज ठाकुर छत्रसिंघ रो
(आढा गुलजी कत)
- १४५ हरियाडाणे ठाकुर हर्णात्मसिंघ
रो (आढा गुलजी कत)

१४६	गीत आउव ठाकुर बगतावरसिंह जो रो (भ्राडा गुलजी कृत)	१७३	राणा प्रताप रा सोरठा
१४७	गीत नारायणदासजी पीलवा वाळा रो (भ्राडा गुलजी कृत)	१७४	दूहा सोरठा राणागदेव रा
१४८	गीत आमोप ठाकुर सिवनाथमिष रो (भ्राडा गुलजी कृत)	१७५	दूहा सोरठा चुगलउत रा
१४९	गीत आउवे ठा० देवीमिष रो, आमोप ठाकुर चैनसिंहजी रो	१७६	दूहा सोरठा राणा सोनग रा
१५०	जैसे सरवैया रा सारठा	१७७	बाधा कोटडीया रा आसाजी वारठ रा बहीया सोरठा
१५१	चाप अमैउत रा दूहा	१७८	राव गागा रा सोरठा
१५२	हमीर गुलह रा दूहा सोरठा	१७९	बाछना रा सोरठा
१५३	चावेवोउत रा दूहा	१८०	राणा सागा रा सारठा
१५४	जबदल रा दोहा (विहरि कृत)	१८१	दूहा सोरठा राणा हमीर रा
१५५	उमवाला रा दूहा	१८२	तजसी डगरसीहात रा सोरठा
१५६	राउल जाम रा सोरठा	१८३	दूहा सोरठा गाग डूगरोत रा
१५७	महणसी मुरावत रा सोरठा	१८४	दूहा सोरठा अचलदास रायमनोन रा
१५८	माडण कूपावत रा दूहा मारठा	१८५	दूहा सेप सूजावत रा
१५९	दूहा नागराजण सारगोत रा	१८६	दूहा बीकमसी चहुवाण रा
१६०	घारुने आनलोत रा सोरठा	१८७	दूहा सोरठा पत सू डे रा
१६१	वाले घमळउत रा सोरठा	१८८	बीदा भाटी रा सोरठा
१६२	पीठवा रा सारठा	१८९	दूहा सोरठा रावळ तेजसीहोत रा
१६३	दादूवे पठाण रा सारठा	१९०	दूहा सोरठा बाधळ रा
१६४	दूहा उनड ग	१९१	दूहा सोरठा सागे नगराजोत रा
१६५	दूहा इले चावडे रा	१९२	दूहा सोरठा बीजाणद रा
१६६	मूर्जे वाडे रा सारठा	१९३	नग भारमलोत रा सोरठा
१६७	बगारउत रा सोरठा	१९४	दूहा सोरठा विजै देवडे रा
१६८	मूळवा रा सोरठा	१९५	दूहा सोरठा सावर चहुवाण रा
१६९	जपरै रा सोरठा	१९६	दूहा सोरठा अखेराज सोनगरा रा
१७०	राहू रा सोरठा	१९७	दूहा सोरठा मानसिंध सोनगरा रा
१७१	बाधरे रा सोरठा	१९८	दूहा सोरठा जसवत सोनगरा रा
१७२	ओढा रा सोरठा	१९९	दूहा सोरठा अचलदास सोनगरा रा (विसना बोहगुणोत कृत)

२००	डूहा, सोरठा जगमाल हिगोतोत रा	२२२	गीत जसूत कलावत री (राजसी अयावत कत)
२०१	सावेला रा डूहा सोरठा	२२३	गीत जगनाथ जसवतोत री (आढ किसना दुरसावत कृत)
२०२	डूहा सोरठा सूरे महाउत रा	२२४	गीत बछवाइजी री (गोवरधन बोगरा कृत)
२०३	डूहा सोरठा सकेला रा साधु रा	२२५	गीत राव केसरीसिध री (बारहट जसा कत)
२०४	डूहा सोरठा सूरजमल पीमावत रा	२२६	गीत राव केहरीसिध री
२०५	डूहा सोरठा जोधाजी रा	२२७	गीत सुजानसिंह जगनाथोत री (बोगसा करमचद कृत)
२०६	डूहा सोरठा पृथीराज जैतावत रा	२२८	गीत राव देईदास जैतावत रा
२०७	डूहा राव श्री रिडमल रा (चादण पढीया कत)	२२९	गीत सुजानसिंह जगनाथोत री (बोगसा करमचद कृत)
२०८	नीसाणी रतलाम महाराजा श्री बलवतसिध री (लोळावास दुरगादत कृत)	२३०	करमसी जोधावत री गीत
२१०	गीत कवत्त वरसिध जोधावत रा	२३१	गीत प्रतापसिध हरचदोत री
२११	गीत जैस सिहावत री	२३२	गीत महेसदास दलपतोत री
२१२	डूहा गीत भीम रामसिधोत रा	२३३	गीत ठाकुर हरिदास री (साडु ईसरदास मालावत कत)
२१३	गीत वरसिधोत केसोदासोत री	२३४	गीत जोगीदास भाटी न जगमाल रतनू कहै
२१४	गीत केसोदास भीमोन री	२३५	गीत जोगीदास भाटी री (केसोदास गाढण कत)
२१५	गीत राव चद्रसेन मालदेवोत री	२३६	गीत सुरजमल हाडा री
२१६	गीत राव चद्रसेन री (आसिया द्दाजी)	२३७	गीत सख उदेसिधोत री (भालण वरसडा कत)
२१७	गीत उप्रसेन चद्रसेनोत री (आसिया दलाजी कृत)	२३८	गीत राव कला रामोत री (दुरसा कृत)
२१८	गीत करमसेन उप्रसेनोत री	२३९	गीत आउवा रा ठाकुर हरनाथ सिधजी री
२१९	गीत रामसिध कमसेनोत री	२४०	गीत आउवा ठाकुर हरनार्थसिध री (सिधवी कुसलराज कत)
२२०	गीत रामसिध कमसेनोत री (भाडा केसोदास कत)	२४१	गीत राठीड दुरगादास री
२२१	गीता नरबद सूजावत री		

यह बृहदावार ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। इस ग्रन्थ में कुछ महत्वहीन अज्ञात कृतियाँ भी हैं, जिन का विवरण यहाँ नहीं दिया गया

है। ग्रन्थ में अनेक पत्र खाली पड़े हैं। ग्रन्थ के पत्र हाथ से बने हुए हैं। ग्रन्थ पर गत्ता मढ़ा हुआ है।

७६ वीर गीत कवित्त सग्रह

१ वीर गीत कवित्त सग्रह, पृथ्वीराज कनीराम, वारट रूपा, ओपा आढा, परमराम बोगसा गोरधन, नदलाल भादा, कनीराम, बद्रीदास खिडिया, भादाजी वाजी, मोतीसर चतरा खिडिया टुकमीचद, वल्लता खिडिया, जीवराम भादा, खिडिया तजसिंह, सोभा नदलाल कूपाराम, आढा महादान, आसिया भीम, वारट पदमसिंह, आढा दुरसो पहाडखान वारट बगसीराम कवि राव दाना, पनजी आढा, वारट हरसूर, वारट रामदान, भोजन वारट, वाकीदास, मेहडू महादान, सादू चंना, खिडिया केसर, आढा भोपालदान, लाळस नवला, लाळस नाथूराम, मेहडू रिवदान, सादू भोपालदान, बोगसा रतना, सादू हरिसिंह, वारट तिलोक, वारट चालकदान, रतनू जाला सायबोजी सुरताणिया, सादू अनोप, सादू पृथ्वीराज, सादू नाथा, धीरण माला, सादू उम्मेद, वारट जोधाजी मुहता रूपा, महाराजा मानसिंह सेवग धनजी, सेवग मगजी आदि २ रा० प्रा० वि० प्र० ३ २४४१६ ४ २६५ × १६५ सेमी०, ५ ६५ ६ २० ३५, ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ आढा भोपालदान आदि, ९ राजस्थानी, जेवनागरी, १० इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ में राजस्थान के विभिन्न राजाओं, मामलों तथा वृद्ध विशिष्ट व्यक्तियों के प्रशस्ति गीत लिखित हैं। इस में प्रारम्भ ८ गीत भक्ति सम्बन्धी हैं। राणा प्रताप के गीत से ऐतिहासिक गीत प्रारम्भ होते हैं। विवरण क्रम इस प्रकार है।

- | | |
|-------------------------------|----------------------------------|
| १ गीत वारट सायबदानजी के कही | ६ गीत राणा प्रतापसिंहजी के |
| २ गीत सावभडौं री | गोरधनजी कृत) |
| ३ गीत साणोर प्रधीराजजी के | १० गीत साणोर राणा अमरसिंह री |
| कही | ११ गीत महाराणा राजसिंह के |
| ४ गीत कनीराम री कही | १२ गीत महाराणा श्री सग्रामसिंहजी |
| ५ गीत वारट रूपजी री कही | का |
| ६ गीत ओपा आढा कृत | १३, गीत नदलाल भादा री कही |
| ७ गीत ब्रजतुला के | १४ गीत करणीदान कविया के कही |
| ८ गीत श्री हनुमाजी री कही बंद | १५ गीत बदरीदास पिडिया के कही |
| परसरामजी री सूरदास बलुदा | १६ गीत अरसीजी री भादाजी वाजी |
| वास | री कही |

- १७ गीत राणा श्री अरसीजी थी हाई
चूक कीदौ जणी उपर
- १८ गीत महाराणा भीमसिंघजी को
- १९ गीत साणोर आढा ओपाजा री
कह्यौ
- २० गीत राजा भीम का मोतीसर
चतरा री कह्यौ
- २१ गीत राजा माघोसिंघजी री
पडीया हुक्मीचद कत
- २२ गीत पृथ्वीसिंघ प्रतापसिंघजी को
बारट रूपा कृत
- २३ गीत राजा बपतसिंघजी का
बपताजी कृत
- २४ गीत राजा अमसिंघजी को
बपताजी री कह्यौ
- २५ गीत महाराजा विजैसिंघजी को
- २६ गीत राजा उमेदसिंघजी को
हुक्मीचद कत
- २७ गीत रावत श्री सग्रामसिंघजी को
- २८ गीत महारावत जसवतसिंघजी री
पिडिया बदरीदासजी कृत
- २९ गीत जीवराम भादा कृत
- ३० गीत रावत सावतसिंघजी को
पिडिया तेजसी कृत
- ३१ गीत रावत जसुनसिंघजी का
बारट रूपी कत
- ३२ गीत पिडिया हुक्मीचद कत
जसवतसिंह को
- ३३ गीत पिडिया बद्रादास कृत
- ३४ गीत छोटी साणोर रावत
दपोसिंघ का
- ३५ गीत नकुटबध रावत श्री राघो
दासजी को भादा नदलाल कृत
- ३६ गीत रावत राघोदासजी को
पडीया बद्रादास कृत
- ३७ गीत हुकमीचदजी कत (रावत
राघोदासजी का)
- ३८ गीत रावत राघोदास तथा
म्हाराज मोपमसिंघजी को आडा
ओपा को कह्यौ
- ३९ गीत साणोर राजा बाहादरजी
गोपालदासजी को
- ४० गीत राजा गोपालदासजी को
रामदान की कृत
- ४१ गोपालदासजी का गीत पडीया
बद्रादास कृत
- ४२ गोपालदासजी का गीत बारट
रूपजी कृत
- ४३ गोपालदासजी को गीत सोभा
नलालजी कत
- ४४ गीत राजा गोपालदासजी को
रूपजी कृत
- ४५ गीत राजा गोपालदासजी को
कृपाराम कृत
- ४६ गोपालदासजी को गीत प्राडा
महादान कृत
- ४७ गोपालदास को गीत आसिया
भीमजी कृत
- ४८ गीत गोपालदास को हुक्मीचद
कृत
- ४९ गीत गोपालदास को बारट
पदमसिंह कृत

- ५० गीत पातसाह अक्बर को आडा
दुरसा कृत
- ५१ गीत ठाकुर सेरसिंघजी को
पहाडखान कृत
- ५२ गीत मेडतिया सूरजमलजी को
- ५३ गीत वासवाला रावळ को
- ५४ गीत उम्मेदासिंघसिंघ सगतावत
को
- ५५ गीत राणा रजसिंघजी को
- ५६ गीत कुवर प्रथीराज को
- ५७ गीत मालदेव का
- ५८ गीत माराज नाथजी को बारट
वगसीराम कृत
- ५९ गीत किसोरसिंघ रावराजा दलेल
सिंघ को कविया करनीदान कृत
- ६० गीत राठीड सुरजमलजी को
- ६१ गीत उदावत अमरसिंघ को
- ६२ गीत बपताजी कृत
- ६३ गीत दीलतसिंघजी को पडिया
बखता कहे
- ६४ गीत जालमसिंघ केसरीसीधोत
को
- ६५ गीत बलूजी चापावत को
- ६६ गीत दरगादासजी को पडीया
तेजसिंघ कृत
- ६७ गीत भाडणोत हरनार्यसिंघजी को
मोतीसर प्रमुदान कृत
- ६८ गीत ठाकुर दुरजणसिंघजी
घाणोराव घणी को
- ६९ गीत चहुवाण उदसिंघजी को
हुक्मीचद कृत
- ७० गीत सावभडो सैलार दोढो
हिमतसीधजी को
- ७१ गीत सहसमल करणोत को
मोतीसर तुलछा कृत
- ७२ गीत रावराजा उम्मेद को
कविराव दानजी कृत
- ७३ गीत सावभडो घाडायता को
- ७४ गीत बीकानेर राजा रायसिंघ री
दातारी री
- ७५ गीत स्वामिंघम के भाव का
पनजी आडा कृत
- ७६ गीत भाटी गुलाबसिंघ को बारट
रूपाजी कृत
- ७७ गीत साणोर कुवर बपतावरसिंघ
जी राजावत को
- ७८ गीत भीमा धना को
- ७९ गीत कुवर अजीतसिंघजी को
- ८० गीत मूळवा का हरसूजी
बारहट कृत
- ८१ गीत रायसिंघ गोयल को छोटी
साणोर
- ८२ गीत हरद्वार की राड को
बपताजी कृत
- ८३ गीत कमालपा बीहारी को
- ८४ गीत डूगा देवडा लपावत को
- ८५ गीत त्रबकडो बडा चहुवाण को
- ८६ गीत राणा दीपसिंघजी को बारट
रामदान कृत
- ८७ गीत सुपखरो राजा बाहादरजी
गोपालदासजी को बारट
रूपाजी कृत

- | | |
|---|---|
| ८८ गीत राजा वपतसिध को | १०८ गीत मेहडू खिबदान कृत |
| ८९ गीत सपखरो बलुजी चापावत री | १०९ महाराजा मानसिंहजी री गीत सादू चनजी कृत |
| ९० गीत रागा बाहादुरसिध को | ११० गीत महाराजा मानसिंह री सादू भोपालदान कृत |
| ९१ गीत अमल री भ्राढा भोपजी कृत | १११ गीत मा० मानसिंह री बाकीदास कृत |
| ९२ गीत छला का | ११२ गीत महाराजा मानसिंह री मेहडू महादान कृत |
| ९३ गीत राजा राघोदेवजी को | ११३ गीत महाराजा मानसिंह री पिडीया बेंसरजी री कल्या |
| ९४ गीत राठौडो को | ११४ गीत महाराजा मानसिंह बागसा रतनजी मेवाड री कह्यो |
| ९५ कवित्त सोलपी जीवराजजी रा सतिमा रा कवित्त भोजन का कल्या | ११५ गीत महाराजा मानसिंह री सादू हरीसिधजी गाव मिरगोसर री कह्यो |
| ९६ कवित्त भाटियाणीजी उमादेजी रा | ११६ गीत महाराजा मानसिंह री बारट तिलोक गाव मोरटहुका री कह्यो |
| ९७ भाहकससिधजी रा कवित्त छापम बारट भोजन रा कल्या | ११७ गीत महाराजा मानसिंह री बारट चालकदान गाव मोरटहुका री कह्यो |
| ९८ घबळ पच्चीमी रा दहा बाकीदास कृत | ११८ गीत मा० मानसिंह री बिसुरप रा सादू भोलेदान कृत |
| ९९ वचन विवेक पच्चीसी बाकीदास कृत | ११९ गीत महाराजा मानसिंह री रतन जालजी कृत |
| १०० महाराजा मानसिधजी रा गीत मेहडू महादान कृत | १२० गीत महाराजा विजयसिधजी री सपपरी |
| १०१ गीत महाराजा मानसिंह री सादू चैनजी कृत | १२१ गीत बिजेसिंह री सायबोजी सुरताणीया रा कह्यो |
| १०२ गीत महाराजा मानसिंह री पिडीया बेंसरजी कृत | १२२ गीत महाराजा वपतसिंहजी री पिडीया वपताजी री कह्यो |
| १०३ गीत धायस देवनाथजी को मेहडू महादान कृत | |
| १०४ गीत देवनाथ री भ्राढा भोपाळ-दानजी पाचेटीया री कल्या | |
| १०५ गीत देवनाथ री लाळस नवल कृत | |
| १०६ गीत देवनाथ री नदलाल कृत | |
| १०७ गीत देवनाथ री लाळस नाथूराम कृत | |

- १२३ गीत महाराजा बलसिंह रौ सादू
अनूपजी रौ बह्यो
- १२४ गीत महाराजा भ्रमसिंघजी रौ
- १२५ गीत भ्रमसिंघ रौ सादू प्रयोराज
गाव खीउरा रौ बह्यो
- १२६ गीत महाराजा अजीतसिंघ रौ
- १२७ गीत महाराजा अजीतसिंह रौ
याकीदास कृत
- १२८ गीत सादू नायाजी कृत
- १२९ गीत महाराजा गजसिंघजी रौ
- १३० गीत जसवतसिंघजी रौ उर्जण रौ
लडाई रौ धोरण मालाजी कृत
- १३१ गीत महाराजा सूरसिंघजी रौ
गुजरात सोवो हुवो निण ममे रौ
- १३२ गीत माटाराजा उदयसिंघजी रौ
सादू मालाजी कृत
- १३३ गीत महाराज (जयपुर) माघो
सिंघजी रौ हुकमीचद कृत
- १३४ गीत महाराज बहादुरसिंह किसन
गढ रा हुकमीचद कृत
- १३५ गीत महाराजा प्रतार्पसिंघजी रौ
- १३६ गीत महाराजा राजसिंघजी रौ
- १३७ गीत महाराजा बहादुरसिंघजी रौ
- १३८ गीत राणा भीरुसिंघजी रौ महदू
महादान कृत
- १३९, गीत राणा अडसीजी रौ
- १४० गीत राणा राजसिंघ रौ
- १४१ गीत राणा प्रतार्पसिंघजी रौ
- १४२ गीत सूरतसिंघ हरीसिंघोत चापा-
वत हरसोळाव रा ठाकुर रौ सादू
उम्मेद कृत
- १४३ गीत सेरसिंघ प्रयोसिंघात चडावळ
रा ठाकुर रौ
- १४४ गीत महेशदास दल्पतोत कू पा-
वत आसोप ठाकुर रौ सादू उमेद
कृत
- १४५ गीत महेशदास रौ मेहड महादान
कृत
- १४६ गीत महेशदास रौ मोलीसर प्रभू
दान रौ बह्यो
- १४७ गीत सामसिंघ भ्रमसिंघोत चादा-
वत बलू दा रा ठाकुर रौ
- १४८ गीत जैतसिंघ कुसलसिंघोत चापा
वत आउवा ठाकुर रौ
- १४९ गीत सवाईसिंघ सबळसिंघोत
चापावत पोकरण ठाकुर नै रा०
सिभुसिंघ दौतसिंघोत उदावत
नोबाज रा ठाकुर रौ भेळो (सादू
उम्मेद कृत)
- १५० गीत बेसरीसिंघोत जोधा रौ
उमेदसिंघ कृत)
- १५१ गीत रा० कनीरामसिंघोत कू पा
वत आसोप रा ठाकर रौ
- १५२ गीत सरसिंघ सिरदारसिंघोत रौ
- १५३ गीत हरीसिंघ सेरसिंघात रौ
कू पावत चडावळ ठाकुर वारट
जोधाजी कृत
- १५४ गीत मुहणसिंघ सत्रसालोत कू पा-
वत चादेळाव रा ठाकुर रौ
- १५५ गीत विसनसिंघ हरीसिंघोत
चडावळ ठाकुर रौ बाकीदास कृत
- १५६ गीत भाटी जैतसिंघ उदभाणोत
बालरवा रा ठाकुर रौ
- १५७ गीत भिलाय रा बखतावरसिंघ रौ

- १५८ गीत पीरतसिंघ भौलाय री
हुवमीचद कृत
- १५९ गीत पन्नी हरसाहजी जपर फोज
मुसाहब री हुवमीचद कृत
- १६० गीत सेपावत भोपालसिंघ री
हुवमीचद कृत
- १६१ गीत सेन्नावत चार्दासिंघ सीकर री
हुकमीचद कृत
- १६२ गीत भरतपुर री कविराज वाकी-
दाम कृत
- १६३ गीत दादू पयिया री भडेच सू
लडाई कीवी जिण री सादू
उम्मेर्दासिंह कृत
- १६४ गीत सायपुरा रा राजा उम्मेद
सिंह री हुवमीचद कृत
- १६५ गीत सिर्वासिंघजी जूनीया रा री
कविया करनीदान कृत
- १६६ गीत जोधा सेसमलजी री
- १६७ गीत राव राजा बुधसिंघ बू दी
रा री
- १६८ गीत राव राजा अजीतसिंघजी
बू दी रा री हुवमीचद कृत
- १६९ गीत राजा जालसिंघ भाला री
महदू महादान कृत
- १७० गीत धारोराव ठा० बीरमदेजी री
सुरताणीया सायबजी री कहणी
- १७१ गीत सायबाजी नै जीपजी री
कहणी
- १७२ गीत लाळस नवलाजी कृत
- १७३ गीत पडोया इदरदासजी मेडता
री राड मे काम आया जिण री
महादानजी कृत
- १७४ गीत पीची गोरपनजी री हुवमी
चद कृत
- १७५ गीत राव इदरसिंघजी री
- १७६ गीत रावत परतापसिंघजी चूडा
वत आघेर रा री
- १७७ गीत रावत फतसिंघजी जावर रा
री पडिया बदरीदास कृत
- १७८ गीत रावत जसवतसिंघजी देवगड
रा पयिया बदरीदास कृत
- १७९ गीत चूडावत उरजनसिंघजी रा
पडिया बदरीदास कृत
- १८० गीत सायपुरा रा रैणसिंघजी रा
हुकमीचद कृत
- १८१ गीत राव श्री बीबाजी री
- १८२ गीत रायसिंघ बीकानेर रा री
- १८३ गीत राव श्री अमरसिंघजी री
- १८४ गीत चहुवाण उमेदसिंघ री
हुकमीचद कृत
- १८५ गीत भाटी दुरजणसिंघजी राव
ळोत मवाड रा री महादानजी
कृत
- १८६ गीत रिणछोडदास जगतापोद
चापावत आहोर रा ठाकर री
- १८७ गीत भाटी रामसिंघ मुकतनासोत
वालखा ठा० री मु० रूप्या री
कहणी
- १८८ गीत भाटी सबळसिंघ आसकरणोत
गाव महेव रा री
- १८९ गीत बलू गोपालदास चापावत री
- १९० गीत महेशदाम सूरजमलोन
चापावत आउवा रा ठाकुर री

- १६१ गीत ब्यारा रो भेळी (हल्दी घाट रो राड रो)
- १६२ गीत गोपाळदास सुरताणात मंडतिमा रो
- १६३ गीत बघनोर रा ठा० जंतसिधजी रो मेहडू महादान कृत
- १६४ गीत अमल रो मडू महान्त कृत
- १६५ गीत उरजणसिधजी रामपुर ठा० रो बाकीदास कृत
- १६६ गीत दिपणी आवा ईगतिमा सू गाव पीरीया लडाई हुई निण समे रो लाळस रामदान कहै
- १६७ गीत ठाकुरा बीठलदास गोपाळदाम बापावत रो
- १६८ गीत ठाकुर जालसिध भादराजण रो सादू हरोसिध मृगेशर रो कह्यौ
- १६९ गीत ठाकुरा बपतावरसिधजी भादराजण रो मेहडू खिदान कृत
- २०० गीत ठाकुर सुरतसिधजी हरसोळाय रो सादू उम्मद कृत
- २०१ गीत ठाकुर जालसिधजी कुचामण लुडावास रो लडाइ में वाम आया जिण समे रो हुकमीचद कृत
- २०२ गीत रावळ प्रथीसिधजी रो हुकमीचद कृत
- २०३ गीत राव प्रतापसिधजी माचोडी रा रो हुकमीचद कृत
- २०४ गीत सेखावत भोपाळसिधजी पेतडी रा रो हुकमीचद कृत
- २०५ गीत सालसिधजी मेवाड रा रो हुकमीचद कृत
- २०६ गीत भूरसिधजी दुडाड रा हुकमीचद कृत
- २०७ गीत सिधवी भीवराज रो तुगे पटेल माधाजी सु राड बीवी न पतै हुई तिण रो सादू उमेद सिह रो कह्यौ
- २०८ गीत सिधवी अखराज रो सादू चैनजी कृत तळाव अपमागर बाग बरायो तिण रो
- २०९ गीत सायबजी सुरताण रो कह्यौ
- २१० गीत अपराजजी रो भगदत्तजी धनजी रो कह्यौ
- २११ गीत सिधवी इद्रराज रा हजूर सायबा (महाराजा मानसिह) मुप सू पुरमायो घेरा धका
- २१२ गीत महाराजा मानसिह रो सादू चनजी कृत
- २१३ गीत महाराजा मानसिह रो सादू प्रथीराज रो कह्यौ
- २१४ गीत भादा दीलजी मेवाड रा कह्यौ
- २१५ गीत सेवग मधदत्तजी तथा धनजी रो कह्यौ
- २१६ गीत सिधवी गुलराज रो लाळस नाथूराम कृत
- २१७ गीत सिधवी वनराज रा जाळोर हमलो बीनो १८६० रा सावण बद ७ परभातरा ने बायम कीनो ने काम प्राया जिण समा रा सेवग धनजी रा कह्यौ गाव बडसू रा

६८ राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रंथों का सर्वेक्षण, भाग-२

२१८ कवच मालवा रा दवल नै माडणोता मारीयो तिण री

२१९ कवच गढ जोधपुर घेरा मे कवि लोक हाजर रेया तिणा रा सेवग
मगजी कृत

२२० कवच प्रियागराजजी री गोपाल कृत

८० वीर गीत कवच आदि सग्रह

१ वीर गीत कवच आदि सग्रह, २ रा० शो० स०, ३ ८२२७,
४ १५५ × १० × सेमी०, ५ १६७, ६ १४-१५, ७ १६ वी गताब्दी का
उत्तरार्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रंथ के प्रारम्भ में भक्ति,
नीति सबधी अनेक कृतियाँ संकलित हैं, आगे जोधपुर महाराजाओं की वशावली
राव कमधज से मानसिंह तक तथा बीकानेर की वशावली बीकाजी से सूरतसिंह तक
अंकित है। काव्य कृतियाँ का विवरण क्रम इस प्रकार है—

- | | |
|--|---------------------------|
| १ गीत बलूजी री | २ गीत रतनू वीरभाण कृत |
| ३ गीत महाराजा विजैसिध री | ४ गीत महाराजा धगतसिधजी री |
| ५ गीत भक्ति सबधी (जोपे आडे कृत) | ६ गीत अमरसिध री |
| ७ गीत महाराजा विजैसिध री | ८ गीत आयस देवनाथ री |
| ९ गीत महाराजा मानसिंह री | १० गीत कवच अमरसिध री |
| ११ गीत महाराजा विजयसिंह री (आढा ओपा कृत) | |

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में कबीर री साखी, सकुन विचार, स्फुट कुण्डलिया,
गूढाय रा दूहा, छंद सुलसीदासजी रा और गोरखनाथजी रा, स्वामजी रा कवच,
शनीश्चरजी री कथा, कागलो चिरल करे तिण री विगत इत्यादि कृतियाँ संकलित
हैं। यह ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। पत्र जीए
हाने के कारण झुटित हैं। कुछ पत्र कीट भक्षित हैं। ग्रंथ में अनेक पत्र खाली
पडे हैं। ग्रंथ अपूर्ण है। प्रारम्भ के ९ पत्र लुप्त हैं।

८१, वीर गीत कवच सग्रह

१ वीर गीत कवच सग्रह नवला आदि, २ रा० प्रा० वि० प्र०,
३ १६२६३, ४ १८ × १३ × सेमी०, ५ ११६, ६ १२ ७ १६ वी गताब्दी
का उत्तरार्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रंथ में सग्रहीत
कृतियाँ का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

- | | |
|--|--|
| १ निसाणी रतलाम बलवतसिंहजी की | १६ गीत रावत प्रतापसिंहजी को |
| २ कवित्त ओसवाळा की उत्पत्त रा | २० गीत ठाकुर नाथजी जीलोला वाळा की |
| ३ गीत अमरसी की ओदलवाडा वाळा को सावभडो | २१ गीत केळवे ठाकुर मोखमसिंह की |
| ४ गीत मेहता मोतीरामजी की | २२ गीत ठाकुर जतसिंह की |
| ५ गीत मेहता अमरजी को | २३ गीत देवले दीवाणजी की |
| ६ गीत सेठजी फतैचदजी को | २४ गीत रावत प्रतापसिंहजी की |
| ७ सेठ जोरावरमलजी को सवीयो | २५ गीत बदनोर ठाकुर जैतसिंहजी को पाग रा भाव की |
| ८ गीत सेठ जोरावरमलजी को | २६ गीत प्रतापसिंहजी जैपुर वाळा को सायता विजसिंहजी जोधपुर वाळा की जो भाव की |
| ९ गीत मेहता सेरसिंहजी का | २७ गीत जालमसिंह भाला को |
| १० गीत किसनमल सोगवी को | २८ गीत राणा सागा की |
| ११ कवित्त देलवारे राज वैरीसाल की | २९ गीत दरबार प्रतापसिंहजी की |
| १२ गीत नाडोल राज माहासीमजी का | ३० गीत अमरसिंहजी को |
| १३ गीत भरपुर रावजी गुमानसिंह की | ३१ गीत राणा राजसिंह की |
| १४ गीत दरबार जवानसिंहजी का व्याद का भाव का | ३२ गीत दरबार भीमसिंहजी की, बीवाह रा भाव की |
| १५ गीत रावजी माघोसिंहजी की दासजी की | ३३ गीत दरबार सरूपसिंहजी को |
| १६ गीत रावत फतेसिंहजी को | |
| १७ गीत रावतजी प्रतापसिंहजी की | |
| १८ गीत रावत पृथ्वीसिंहजी को (नवला कृत) | |

इनके अतिरिक्त बिना शीघक के अनेक कवित्त, गीत दोहे आदि लिपिबद्ध हैं। ग्रंथ एक से अधिक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। लिपि सुवाच्य नहीं है। ग्रंथ पर जीण गत्ता मढा हुआ है।

८२ फुटकर गीत कवित्त इत्यादि

१ फुटकर गीत कवित्त इत्यादि २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ १३५१६, ४ २२ x १७ सेमी०, ५ १८, ६ १८-२२ ७ १६ वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रंथ में अंकित सभी कृतिया अज्ञात कतक हैं। विवरण ब्रम इस प्रकार है—

१ गीत मडारी भवानीदास दीवाण की

१०० राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रंथों का सर्वेक्षण, भाग-२

- २ कवत्त भडारी किलाणदास री
- ३ गीत सपपरो देवीसिंघ सामसिंघोत री
- ४ गीत सपपरो माधोसिंघ री
- ५ गीत साणोर देवीसिंघ सामसिंघोत री सावभ्त्ता

इन कृतियों के अतिरिक्त फुटकर कवित्त, बिना शीपक के गीत, सहर बत्तीसी, ऋतु सवधी दोहे इत्यादि सग्रहीत हैं ।

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है । लिखावट असुद्ध है । प्रारम्भ व अन्त के अधिकांश पत्र गायब होने के फलस्वरूप ग्रंथ अपूर्ण है । ग्रंथ पर गत्ता नहीं है ।

८३ वीर गीत सग्रह

१ वीर गीत सग्रह, २ रा० शो० स०, ३ ६५००, ४ १६×२३ सेमी०, ५ ४८, ६ ७-१४, ७ १९ वी शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रंथ में सग्रहीत ऐतिहासिक महत्व की कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

- | | |
|---------------------------|-----------------------------|
| १ महाराजा भीमसिंह री गीत | २ रावळ जतमाल री गीत |
| ३ गीत पनजी री | ४ गीत महाराजा अजीतसिंह री |
| ५ गीत महाराजा जसवतसिंह री | ६ महाराजा गर्जसिंह री गीत |
| ७ गीत महाराजा जसवतसिंह री | ८ गीत राणा राजसिंघ री |
| ९ गीत राणा रायसिंघ री | १० गीत रावजी श्री वीरमदे री |
| ११ गीत राणा जगतसिंह री | १२ गीत सीसोदिया सालमसिंघ री |
| १३ गीत सीसो जेठमलजी री | |

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों द्वारा लिपिवद्ध किया गया है, लिपि सुवाच्य नहीं है, पाठ छोट अधिभ है । प्रारम्भ व अन्त के पत्र लुप्त होने से ग्रंथ अपूर्ण है ।

८४ वीर गीत कवित्त सग्रह

१ वीर गीत कवित्त सग्रह आडा गोयददास, आडा सगता, साडू माला चुतरा राव बुधसिंह बल्याणदास, बलता खिडिया आदि, २ रा० शो० स०, ३ १४६७१, ४ २०×२८ सेमी०, ५ २८, ६ ११-१४, ७ १९ वी शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० ग्रंथ में सग्रहित कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

- | | |
|--|--|
| १ कवच मेढतीया प्रतापसिंघ री
भाडा गोयददास कृत) | ८ गीत राजा भीम री (चुतरा कृत) |
| २ गीत रावन जैसीध री | ९ गीत राजा कीरतसिंघ री (राव
बुधसिंह कृत) |
| ३ गीत भ्रमरसीध री (भाडा सगता
कृत) | १० गीत मेढतीया पदमसिंह री
(कल्याणदास कृत) |
| ४ गीत महाराजा वपतसिंघ री (भाडा
गोयददास कृत) | ११ गीत राव मुरताणजी री |
| ५ गीत राठौड किसनदासजी री
(भाडा गोयददास कृत) | १२ कवच जैतावत केसरीसीध कहै |
| ६ गीत प्रसतावीर राज श्री हीमोलोत
री | १३ गीत विजेसिंघ री |
| ७ गीत राव मुरताण री (साडू माला
कृत) | १४ गीत मानसिंघ री (भाडा गोयददास
कृत) |
| | १५ गीत महाराज अर्जसिंह री (बखता
खिडिया कृत) |
| | १६ गीत राठौड पदमसिंघ री (भाडा
गोयददास कृत) |

इसके अतिरिक्त ग्रन्थ में बिना क्षीयक के गीत कवच भी लिपिबद्ध हैं।
ग्रन्थ के पत्र खुले हैं। पत्र लुप्त होने से अपूर्ण है।

८५ वीर गीत दोहा सग्रह

१ वीर गीत दोहा सग्रह, सगराम, नगजी, डुरसा आडा महावत आदि,
२ २० श्लो० स०, ३ ६६६, ४ २७५ × २० सेमी० ५ ७१, ६ २३,
७ १६ बी शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ नाथूराम लाडस ९, राजस्थानी, देवनागरी,
१० ऐतिहासिक कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ गीत दोहा नाथों रा -

महाराजा मानसिंह के गुरु देवनाथ और जलधर नाथ से संबंधित गीत
लिपिबद्ध हैं।

प्रारम्भ—

“ पोरसा पारस्त कळी बृथ उगे प्रभात रे
तेणा री सुद्विष्टी रे साथ रे हरे ताप ।” (पत्र-८)

२ गीत वीरमदे सोनगरे री -

यह जालोर के शासक काहडडे के पुत्र वीरमदे सोनगरे की वीरता से
संबंधित प्रशस्ति गीत है।

प्रारम्भ—

‘सर सेल बटारी पट न सक्वियो, डरे पयोहर अहर दुप ।
फुरत इसी धीरमदे फिरियो, पिढ विण सीस पराड मुप ॥१॥”

३ गीत राय गागे रौ -

जोषपुर के राय भूजा के पौत्र और बाघाजी के द्वितीय पुत्र गागे का प्रशस्ति गीत है ।

प्रारम्भ—

“लापा सात लहर अयाहा लोहडा, लडे पत ताय माहि लिया ।
राय समद रुठे रबदायण, बटव लाप जळवोळ किया ॥१॥”

४ गीत भालदेवी रौ -

यह गागा के पुत्र भालदेव का प्रशस्ति गीत है ।

प्रारम्भ—

“बळह यौट नित पाळट कमघ बटवे किये
दूद सुत काढि पग भाट देना ॥१॥”

५ राजान राजावत रौ घात बरणाव -

प्रस्तुत वार्ता आवू के शासक राजेसर के राजकुमार राजान की है ।

प्रारम्भ—

“आ उकार महादेव परमात्मा परम सिव परम सक्ति अचलेसर अचळ
आसण कीयो । तिण थान करी ठोड नदी गिर हेमाचळ रौ वेटी भेरगिर अठार
गिर रौ राजा आवू गिरद वहीजे, तिणरै वैमणे उपर ईसराव अवतार महाराज
राजेस राज करै आदि ।”

६ गीत राय करमसेण रौ (आढा बुरसा कृत) -

प्रारम्भ—

‘करे फौज पारम हेजम्म लसकर बहर
छिले रज गयण लग भाण छायो ।
मागवा रायसिध अभिनमो मालदे
उठि सुरताण कमसेण आयो ॥१॥”

(पत्र-४)

७ गीत राजा बहादुरसिधजी रौ -

प्रारम्भ—

“धम पायोद परखा नीम सीम जे पताळ बडे
भूमडे पुरजा जाळ पवे माळ भाव ॥१॥”

मध्य काल के संगीत कला, रीति रिवाज, खान-पान, वेप भूषा, शृंगार इत्यादि के अध्ययन हेतु उपयोगी है।

मूल ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य है। प्रत्येक पृष्ठ पर लाल स्याही से दोहरी लाइन खींच कर दोनों ओर पर्याप्त मार्जिन छोड़ा गया है। लिखावट में लाल स्याही का भी प्रयोग किया गया है। ग्रन्थ बेसिला लाल कपड़े के सुन्दर गत्ते में सुरक्षित है। ग्रन्थ में अधिकांश पत्र खाली पड़े हुए हैं। पत्र मोटे, हाथ के बने हुए हैं। ग्रन्थ अपूर्ण है। पहले के कुछ पत्र गायब हैं।

८६ वीर गीत कवित्त सग्रह

१ वीर गीत कवित्त सग्रह सादू चैनजी आदि २ रा० शो० स०, ३ ८२३४ ४ ३१ × २१ ५ सेमी०, ५ १५७, ६ २१-२८, ७ १६ वी शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० यद्यपि सग्रहीत कृतियाँ का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

- | | |
|---|--|
| १ कवित्त व्यास कचरदास रा सादू चैनजी कृत | १३ गीत उम्मेदसोग सीसोदिया री |
| २ गीत गोरधनजी धाधल री | १४ गीत गुलराज सिधवी री सादू चैनजी कृत |
| ३ गीत सीरोपाव कुरव कामदा री सादू चैनजी कृत | १५ गीत पाबू री विवाह री |
| ४ कवित्त ठा० बलतावरसिधजी भादराजुण री सादू चैनजी कृत | १६ गीत महाराजा मानसिंहजी री फुरमायाडा |
| ५ गीत महाराजा मानसिधजी री | १७ गीत सादू नचैजी कृत |
| ६ गीत बरस गाठ री सादू चैनजी कृत | १८ गीत कूपावत हरीसिगजी रा सादू चैनजी कृत |
| ७ गीत दासारा री | १९ गीत जगमालीत कृत |
| ८ गीत नागौर री हाकम री | २० दूहा कटाळीयारा ढोली धोळा कृत |
| ९ गीत नाथजी री सादू चैनजी कृत | २१ गीत भगती री जगमाल कृत |
| १० गीत मानसिंहजी री सादू चैनजी कृत | २२ कवित्त महाराजा भीमसिधजी री सादू चैनजी कृत |
| ११ कवित्त पीडिया री रायपुर ठाकुर रूपसिधजी री सादू चैनजी कृत | २३ गीत धीवसर ठाकुर वपताथर सिग जी री सादू चैनजी कृत |
| १२ कवित्त कवरजी दलपतजी री खीवराज कृत | २४ कवित्त राजनीत रा धवीदास |

- २५ गीत सादू चैनजी कृत
- २६ गीत बोगसा मनहरजी रौ रावळ
बिसलराम कृत
- २७ गीत भगती रौ औपाजी आढा कृत
- २८ गीत जोसी सिमजी रौ सादू चैनजी
कृत
- २९ गीत सादू चैनजी कृत
- ३० गीत वासली सेखावत जगतसिंघ रौ
रतनू मंरूदास कृत
- ३१ फुटकर जूना गीत (बिना शीपक के
करीब ६० गीत हैं)
- ३२ कवत्त अर्पेसिंघ मेडतिया व वधनोर
अमरसिंह महीया कृत
- ३३ फुटकर गीत
- ३४ गीत चैनजी कृत
- ३५ दूहा जेहा भाराणी जाडेजा रौ
ठकुराणीया रा वहीया
- ३६ गीत घाय भाई देवजी रौ सादू
चैनजी कृत
- ३७ गीत सादू चैनजी कृत
- ३८ कवत्त बीरभाण रतनू कृत
- ३९ गीत कुचामण ठाकुर रणजीतसिंघ
जी रौ सादू चैनजी कृत
- ४० गीत ठाकुर केसरीसिंघ लारं सती
पातर चौथा हुई जिण भाव रौ
गीत सादू चैनजी कृत
- ४१ गीत - डोली रामा कृत
- ४२ गीत महाराजा मानसिंघ रौ सादू
चैनजी कृत
- ४३ गीत मोहताजी हरपचदजी रौ सादू
चैनजी कृत
- ४४ कवित्त जोसी भूराराम कृत
- ४५ कवित्त महामाया रा सादू चनजी
कृत
- ४६ गीत जगा कृत
- ४७ गीत मानसिंहजी रौ चिमना कृत
- ४८ गीत मसूदा ठाकुर देवीसिंघ रौ
घोडी रा भाव रौ
- ४९ गीत कवित्त भादराजण ठाकुर रौ
सादू चैनजी कृत
- ५० भाटिया रौ साप रा कवित्त
- ५१ गीन जैमलजी रौ
- ५२ भूमाळ विरमदे दूदावत नू
- ५३ कवत्त राठोडा रौ तेरे साप रा
- ५४ गीत करणीजी रौ सादू चनजी कृत
- ५५ गीत रूपमा सतीजी रा सादू चनजी
कृत
- ५६ गीत महाराजा मानसिंघजी रौ
व्याव रौ भाव रौ सादू चैनजी कृत
- ५७ कवत्त राव मालदेजी रा आसा
वारहठ कृत
- ५८ गीत गिरवरदानजी रौ कह्यो
- ५९ गीत महाराजा मानसिंघजी रा
सादू चैनजी कृत

अलावदीन पातसा गढ लिमा व अन्य घटनाओं रौ विगत

इसमे अलाउद्दीन बादशाह द्वारा विजय किये गये दुर्गों के नाम सबत इत्यादि
दिये गये हैं। आगे विभिन्न नगर कब किसने वसाये वर्णित हैं।

‘गवत १३५१ जैसलमेर उपर कमलदेव नै विदा कीयी घेरो बरस १२ रह न

पद्य गद्य हाथ आयी । समत १३५० पागण वद ८ दीलतावाद लीयो । दीपण म
सवन १३५३ गुजरात लीवी गहलोत वरण काम आयी । समत १३५५ गद्य
चीतीड लीयो, राणा रतनसेन न पकडीयो तपमणगी वेटा १२ स काम आयी ।
समत १३५८ जेठ वद ८ गद्य रीणयभाण लीयो । राव हमीर जैतमिधोत काम
आयो । समत १३६४ गद्य श्रवेणी लीयो, चहुवाण मातल सोम काम आया ।
समत १३६५ मडावर लीयो । समत १३६५ अजमर लीयो । समत १३६८
जाळार लीयो । वैमाप सुद ५ काने जल परवेस लीयो बीरमद काम आयी ।
समत १३७१ अलावदीन मुवी समत १६०४ मीगसर उद २ नै पातसाह लागी
चैत वद ११ तुटौ । समत ११७० राणो रतनसी जुहर करन काम आयी ।
समत १५६० चापनर मुगल जाया राव प्रतापसिध चहुवाण जुहर लीयो । सवत
१६०० जोधपुर पालटोया पातसाह सरसाह आयी । सवत १५७० राव लूणकरण
जसलमर सवत १७८१ राव लूणकरणजी डासी काम आया । समत १६०६
राव कित्तासमलजी जोधपुर लीयो, समत १७०० बाती सुद २ सिहाजी द्वारवाजी
री जात्रा कर पूठा फिरता लाप फूनाणी जाडोजा न मारीयो समत १६२६ असाड
सुद ११ राज श्री रायसिधजी महतो वरमचद बछावत बीवानेर आया, समत
१६३३ सीरोही अक्बर पातसाह लीयो महाराज रायसीधजी गाधे हुता प्रतमा
(जन मूर्ती) ५०००० हुती जैन री सु लेने सीकर फतेपुर पहोचती कराई । समत
८०६ टीली मडाणी वसाख सुद १३ समत १११५ नागीर मडाणी । ११८१ फलोदी
पारसनाथजी री प्रतमा थपी ।

१२६३ वसतपाल तेजपाल यात्रुजी वहरा कराया । समत १६६८
बीमनगढ मडाणी ।”

- ६१ गीत महाराजा मानसिधजी री (साद्रू चैनजी कृत)
- ६२ गीत महाराजा उदयसिध री (माला कृत)
- ६३ गीत अक्बर बादशाह रा (साद्रू माला कृत)
- ६४ गीत (बदनजी मिसरण कृत)
- ६५ गीत महाराजा मानसिध रा (साद्रू चैनजी कृत)

प्रस्तुत ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । लिपि
सुवाच्य है । ग्रन्थ में कुछ पत्र गायत्र हैं, ग्रन्थ अपूर्ण है, ऊपर गत्ता नहीं चढ़ा है ।
ग्रन्थ के दोनो ओर कहीं-कहीं पर एक ओर लिखावट है । इसमें बहुत
दुबारा लिख दी गई है जिन्हें यहाँ नहीं लिया गया है । इन ७१

अतिरिक्त भी बहुत स दोह, कवित्त ग्रन्थ में संकलित हैं। जिनका विशेष एतिहासिक महत्व नहीं है।

८७ महाराजा मानसिंह रा गीत कवित्त आदि

१ महाराजा मानसिंह रा गीत कवित्त आदि, वारट सीसराराम, सेवगजी वणराम, कविया हणूतराम, वगमूर जुगता, ओपा आडा आदि, २ पु० प्र०, ३ ३३ ४ २६ × १६ सेमी०, १ २९ ६ २३, ७ १६वीं गतांगी का उत्तराद्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रन्थ का प्रारम्भ में गोरखनाथजी के पद आदि अतिहासिक कृतिया लिपिवद्ध हैं तत्पश्चात् जोधपुर के शासक महाराजा मानसिंह के प्रशस्ति गीत कवित्त (विविध कविया द्वारा रचित) संग्रहित हैं। विवरण क्रम इस प्रकार है—

- १ गीत मानसिंह री (अज्ञात वृत्त)
- २ गीत सादूजी री कहियौ
- ३ गीत वारट सीसराराम री कह्यौ
- ४ गीत वारट सीसराम री कह्यौ
- ५ सेवग जीवणराम रा कह्या कवित्त
- ६ गीत कविया हणूतराम री कह्यौ
- ७ दोहा वणमूर जुगता रा कह्या
- ८ गीत छोटो सावभडी ओपा आडा री कह्यौ

इसके अतिरिक्त गोरखनाथ के पद 'गर्भावली काफरबोध योग ग्रन्थ आदि कृतिया लिपिवद्ध हैं। प्रारम्भ का काफी पत्र सुप्त है। ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है लिपि सुवाच्य है। अन्त में काफी पत्र रिक्त पडे है। ग्रन्थ पर कपडे का गत्ता मडा है।

८८ वीर गीत संग्रह

१ वीर गीत संग्रह उमेदसिंह सादू, ओपा आडा और नवलौ साळस, २ रा० गो० स० ३ १८७ ४ ३२ × २४ ५ ममी०, ५ ३, ६ २१, ७ १६वीं गतांगी का उत्तराद्ध ८ अज्ञात ९ राजस्थानी देवनागरी, १० इत्तम चित्तौड के शासक राणा प्रतापसिंह, अमरसिंह तथा जोधपुर के महाराजा मानसिंह विजयसिंह आदि के प्रशस्ति गीत अंकित हैं। विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ गीत राणा प्रताप रौ -

प्रारम्भ—

'पटवै पित बध सदा पहडनी, दळपत तपती पग दाव
अकबर साह तण उदावा राण हियै चरणे अन राव ॥१॥'

२ गीत राणा अमरसिंघ रौ -

प्रारम्भ—

' गयद मान रामहर उभौ हुती दुरत गत,
सिलहपासा तण जूथ साव ।
तद बाही म्व अणचूक पातल तथा
मुगल वहनालपा तण मायै ॥१॥'

३ गीत मानसिंघ रौ -

प्रारम्भ—

(पत्र खण्डित हैं)
नगारा थू स फरहर घना लाग नभ
बोलता जासाळा गजा बैसै
नृपन गुमना सुतन तथा चारण निरण
पुर पना छोड पह दुरग पैसै ॥१॥'

४ गीत महाराजा विजसिंघ रौ (उमेदासह सादू कृत) -

प्रारम्भ—

'आले रापिया हीदुवा वस आगेई अजीत आजा
लिधा जिका वळा लाजा मना रा लकाळ ॥१॥'

५ गीत प्रसताबीक छोटी साणोर (नवला लालस कृत) -

प्रारम्भ—

कउवै नै हस मिनाई कीधी
जळ सघणा तर दप जठै
वेहू मिळे परसपर बैठा,
तरला तरवर छाह तठै ॥१॥

६ गीत आबूजी रौ ओपो आढो नवलो लाळस भेळो वहे -

'बाबहिया भोर कीथला बोलै, मद आमी गिर हेक मनो
दू का गळ काठळ लपटाणी, वणिया अरबद नवल बनी ॥१॥'

यह किसी ग्रन्थ से अलग हुए तीन पत्र हैं। लिपि मोटे अक्षरों में मुद्रित है। पत्र हाथ के बने हुए हैं।

८६ वीर गीत संग्रह

१ वीर गीत संग्रह, गाडण गोपीनाथ, सादू जालम, सादू जोधा, सादू चैनजी पालावत आईदान, बाकीराम आसिया ओर हुक्मीचंद खिडिया आदि, २ रा० शो० स०, ३ १२१६७, ४ २३५ × १६ सेमी०, ५ ६८, ६ १४-२६, ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रन्थ में अधिकांशतः महाराजा मानसिंह सम्बन्धी गीत संकलित हैं। कुछ गीत सामान्यतः से सम्बंधित भी हैं। गीतों का विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ गीत महाराजा मानसिंह री	१७ नीसाणी उपदस री (स्तनू जालम कृत)
२ गीत घाय भाईजी री	१८ गीत ठाकुरा प्रतापसिंघजी री (सादू जोधजी कृत)
३ गीत गाडण गोपीनाथ री कह्यौ	१९ गीत राव कल्याणमलजी री
४ गीत (अज्ञात कृत क)	२० गीत दुरगादासजी आसकरनोत री
५ गीत (अज्ञात कृत क)	२१ गीत महाराव जगतसिंघजी री (पालावन आईदान कृत)
६ गीत सादू जालम री कह्यौ	२२ गीत कुसलेस का
७ गीत जोधा री कह्यौ	२३ गीत (अज्ञात कृत क)
८ गीत सादा री कह्यौ	२४ गीत सगतीदान भाटी री (बाकीदास आसिया कृत)
९ गीत जुभारसिंघ चनसिंघोत पीची गाघाणी री	२५ गीत सादू अमेदसिंघ री कयो
१० गीत रायमल मालदेवात री	२६ गीत हुक्मीचंद री कयो
११ गीत भाद्राजण ठाकुर री	२७ गीत रावजी हणवतसिंघजी री (सादू जोधजी कृत)
१२ गीत प्रतापसिंघजी लाडणू रा	२८ गीत अमेदसिंघजी री (हुक्मीचंद खिडिया कृत)
१३ गीत गोरधनजी उदेरामोत री	
१४ केहरीसिंघ घायल री गीत	
१५ गीत अज्ञात कृत क	
१६ गीत बयत ठाकुर मंगलसिंघजी रा (सादू चनजी कृत)	

इनके अतिरिक्त कुछ बिना गीतों के अन्य गीत भी संकलित हैं जिनके कर्ता का नाम भी नहीं दिया है।

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों क हाथ स लिपिबद्ध किया गया है। बीच-बीच मे बहुत से पत्र खाली पड़े है। ग्रन्थ पर गत्ता मढ़ा हुआ है।

६० वीर गीत कवित्त सग्रह

१ वीर गीत कवित्त सग्रह, महडू हरदान, अलू महा, हरसूर बारट, लाखा, नरहरदास, आसीया पीरा दलावत, रामा साडू दूदा बीठू, हरिसूर बारट, हेमराज सामोर बारट राजसिंघ, साडू काला बारट सतीदान याडण खुमाण, खिडिया भैरवदास, सादू अनोपसिंह साडू जगराम, आसीया थीराम, मेहडू हरदान लाळस माला, साहिवदान रतनू, मोतीसर प्रभूदान, साडू भानीदास आदि, २ रा०शो०स०, ३ १ ४ २१ ५ × २३ सेमी० ५ ५१, ६ १७ २२, ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ हरदान आदि, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस लम्बे पत्र के प्रारम्भ मे वीकानेर के महाराजा मूरतसिंह की प्रशंसा मे अनेक दोहे कवित्त इत्यादि सकलित है।

प्रारम्भ—

‘श्री इष्टदेव्याय नम श्री गणाधिपतये नम श्री सरस्वतिय नम अथ छंद
ग्रन्थ महाराजा श्री धिराज श्री मूरतसिंघजी रौ महडू हरदान कहै—
दोहा—

आइजो सु प्रसन हुवै दे आपर उपदस
कीरत तो वरणण करू निज बीकाण नरेस ॥१॥”

अथ कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ कवित्त पौंव ऊदावत रौ (अलूजी कृत) -

प्रारम्भ—

‘लहे मति गुणपती सकति सिर मेर प्रकासै
चले मग गैराग सहस पकज विवासै ॥१॥”

२ कवित्त भीम गोपालदासोत रौ -

प्रारम्भ—

‘ गै घटा ऊपडै गाज नीसाण गरजे,
वणै वाज वादळा वाव सूरत सवजै ॥१॥”

३ गीत भगवानदास बाघोत रौ -

प्रारम्भ—

‘ क्रमीया नमि विमूह तीया सू कोपै
आपाणा लागै असमान सारा ॥१॥”

११० राजस्थान के इतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-२

४ गीत भोपति युवसौंधोत री -

सादूल पवार द्वारा भोपत इस युद्ध में मारा गया था उस सम्भ का यह गीत है।

प्रारम्भ—

‘पिष्ट चढे निवड भट सरस पमारा, अग जैडग तणी पग जावि
भागा दळा वभ भूपाली ॥१॥’

५ गीत कूया महाराजोत री (मेहाजी कृत) -

प्रारम्भ—

‘सुरा राय सिव ससधर सूर नारद सहू
वदे वापाण ब्रन नमी हाथ वावू ॥१॥’

६ गीत जोधाजी री (हरसूरजी कृत) -

प्रारम्भ—

“राव जोधो विडे वर रावा के नवे विहाणै नवी पटि
हणवत तणा फिरतै हणवत ॥१॥”

७ गीत वाघा सीहावत री -

प्रारम्भ—

‘अन चेले कनक हूवो जिण औसरि सीह तणी दिव राव सादे
मोट तपत ऊबेलण माणण वाघडे ॥१॥’

८ गीत सीहा सेतरामोत री -

प्रारम्भ—

“मूधे मनि तू चालियो सीहा,
सेतराम सुत लीध साथ, मूलराज नाळेर मेलीयो ॥१॥”

९ गीत सोमत सलपावत री -

प्रारम्भ—

परदेस थकी छळ अरव पाहणी मूरा हेव एहडी समय
सेहला हपी रुदेती सोमत हूवी ॥१॥’

१० गीत सावळदास भोजराजोत री (बारट लया कृत) -

प्रारम्भ—

‘सूरा तन मूर दापता मूरा भम वाग पेय भाराय
मिटते साथ जेम पगि मडीया ॥१॥’

११ गीत नारायणदास पगारोत रौ -

प्रारम्भ—

“अकबर के काम दपिण दळ उपर असमर उद्यजीयं आराणि
मुहुरी हवी नरो घाय मिळना ॥१॥”

१२ गीत सूरजमल जमलोत रौ -

प्रारम्भ—

“जुध मरिमात अभिनमा जैसा वयर भयकर सूरजमाल
वागड तणो दाप बीट्टडियो ॥१॥”

१३ गीत राजा मानसिध रौ -

प्रारम्भ—

“जुजिठळ वजि ज्याग इळा वजि अकबर
बधव भोच परठीया वय जुडि चहू ॥१॥”

१४ गीत पतिसाह अकर रौ -

प्रारम्भ—

‘ महि माडे आदि हूत लीला मन साह वीपी अकबर ततसार
भागा त घडवा वजि भूधर ॥१॥ ’

१५ गीत सामळदास भोजरापोत रौ -

प्रारम्भ—

“राघव छळि हूणू विज रामायण आणे कपिराय जडाव पडि
सामळ धाय मीगळ सभरा ॥१॥”

१६ गीत सूरजमल हाडा रौ (कविया अलू हूत) -

प्रारम्भ—

“बहुवाण तणा पुरसातम चौरग तिभवण
सुजडी सूरजमाल रतनसी पाडीयो ॥१॥”

१७ गीत श्री नारायण रौ (नरहरदास हूत) -

प्रारम्भ—

“गरभ आदि जावण तरण जरा तगि गिरधरण
साकई सग सासे वसी ॥१॥”

१८ गीत राणा प्रतापसिध रौ (आसीया पीरा दत्तावत हूत) -

प्रारम्भ—

“आलाडै जाइ गरड अकबर दे पैतीस असट कुळ दाव
राण सेस बहुधा पत रापण ॥१॥”

११२ राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्था का सर्वेक्षण, भाग-२

१६ गीत राणा प्रताप रौ (रामा सांद्र कृत) -

प्रारम्भ—

“किलव लाप केवाण गज भाण छेडै वमव
वाव रै पप वळ दपि वळीयो
आभ पूमाण चा माय उछाडत ॥१॥”

२० गीत राजसिंघ विसनदासोत रौ -

प्रारम्भ—

‘ किलव सातुळ वळवळै सार वळाह कळै
वळ वळ दले दिपण धवाण वाजुवा चडि भड ॥१॥”

२१ गीत कचरा जसराजोत रौ -

प्रारम्भ—

“केवाणा हूत पारथी कटका, लोभि लागे भागलीया
कचरा तणा वमळ चा किरचा ॥१॥”

२२ गीत सुरताण मानावत रौ -

प्रारम्भ—

‘पापतीया बिहु सिराती पगती पडीया भड घड आप प्रमाण,
समहर कहर अजर जरि मूती ॥१॥”

२३ गीत ईसरजी रौ -

प्रारम्भ—

‘काहे वेग चढ न कूजर आपे साह जलाल अकबर
भारथ भीम मुजाळ भयकर ॥१॥”

२४ गीत जगनाथ कल्याणदासोत रौ -

प्रारम्भ—

‘मछर कोट मन मोट राठोड सेहधा मूहा वाजीया लोह तै हूत वहळी
वाघ भरती पळा आवीयी ॥१॥

२५ गीत आसकरन देईदासोत रौ (बारट लखा कृत) -

प्रारम्भ—

‘सबळ वेळ पुरसाण असमान लागि सम जडै
घडकीया धोरडा घरे नह धीर,
वरन अणयाग है लाज सघण करै ॥१॥”

२६ गीत प्रथीराज कल्याणमल्लोत्तरी (लाखा कृत) -

प्रारम्भ—

“वधि वार्धे नितू विराजं अविच भले विहु विध हर नवळी भाति,
प्रभू मू जेतो हेंत प्रथीमल ॥१॥”

२७ गीत सूरसिंघ भगवानदासोत्तरी (बारठ लला कृत) -

प्रारम्भ—

“रामायण भारथ इळा तरुं रसि पेपीया अनि अनि वळह सपूर
पिड भूम नायक महोर पादका मूर ॥१॥”

२८ कवित्त साळवदास वदसिघोत्तरी (अलूजी कृत) -

प्रारम्भ—

“महा अद्र मेटते अउव घातस अहरि सरफदीन जेमाल
उमै जमराव पचारे पाणे जारावना ॥१॥”

२९ गीत प्रथीराज जमलोत्तरी (डूवा बीठू कृत) -

प्रारम्भ—

“विमर रतन चर विचारन विसहर वृजर वचुहर काळ,
पीथल मेहतीया सु प्रवधो ॥१॥”

३० कवित्त खीठलदास री -

प्रारम्भ—

“ग घटा उपड डका वजै नीसाणा
मारका मारका रूक वाहै जमराणा ॥१॥”

३१ कवित्त गोपालदासजी री -

प्रारम्भ—

“जिण वेळा दोय फीज हूर्व आटा हयीहरा
उर फटी कायरा फजल कमळा भूमारा ॥१॥”

३२ गीत हरिसूर बारठ री कहीयो -

प्रारम्भ—

“अबी पूरव पछिम अबी उत्तराधा कर दखयण अबी,
नायक सिर तूटते नरम मिळी ॥१॥”

३३ नीसाणी भोजराज मनोहरदासोत्तरी (बारठ नरहरदास कृत) -

प्रारम्भ—

“साहिजादा पतिसाह सू चित्त पडै विराडे
मूजा मेल न मानही उखेल वगाडै ॥१॥”

११४ राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-२

अन्तिम भाग—

“जीवत रूपम मुजस का नीसाण वजाडै
जीता भोज अजानवाह घोळे दीहाडै ॥११॥”

३४ नीसाणी राणा जगसिंगजी री (हेमराज सामेरे कृत) -
प्रारम्भ—

“दीहे देवळ पाळट चेजा चेजारा
कोट गिरदा वाप वृप होए हेवारा ॥”

अन्तिम भाग—

‘काची माया माणता साचा सिरदारा
जरा न जोपो जगतसाह सरीपा दातारा ॥११॥”

३५ भूलणा महाराजा श्री गजसिंह रा (बारट राजसिंह कृत) -

१७ भूलणा छंदों की इस रचना में जोधपुर के राजा गजसिंह की वीरता
पूर्ण उपलब्धिया का वृत्तान्त अंकित है।

प्रारम्भ—

गाथा—

“सूडा डड प्रचड मात तात सिव अमर
अगेवाण सुराण पय लग मागि गुणपती ॥१॥
पय लगा गुण पति हु ती अगेवाणा
अगे अगे रैहू ॥

अन्तिम भाग—

गजण पराक्रम ताहरा तिभ कटै न जाणा
जतो कीय सरसति पमाई मत सार वपाणा ॥१७॥”

३६ भूलणा अचळा तिलोक कछवाह रा (साठू माला कृत) -

इन २१ भूलणा छंदा की कविता में अचळा तिलोकसी कछवाह की प्रशंसा
है। प्रारम्भ में एक दूहा अंकित है।

दूहा—

‘आग आहूडता गया घर उपर वरीयाम
पडे तुरका पाडिया परो करारी वाम ॥१॥

भूलणा—

“अवबर साह निवाजिया चाकर आपाणा
सहर वळा धी वित्त ले दे हाथि प्रमाणा ॥१॥

अंतिम भाग—

“जिए घर दीनी अपणी मिरसी चापाणा
तूळ सिधाणा रयणसाह थानव राणा ॥२१”

३७ गीत भगवर्तसिध रौ (बारट सतीदान कृत) -

प्रारम्भ—

‘करै प्रथी चापाण राव राण धिन धिन कहै
पळी लेयण दस दोय पापा ॥१॥”

३८ गीत जतसौंध रौ (बारट सतीदान कृत) -

प्रारम्भ—

“महै माल छळ वध पतिसाह सू मामले
वीया साह जगन सुणीया सहू काज ॥१॥”

३९ गीत मेडतीया रौ साणोर -

प्रारम्भ—

‘मगज उफणा सदा मुप मोसरा
खुळ गया वीया मूखया तथा लोर
पळटनै जाधपुर जमला तणी पर ॥१॥”

४० कवत ठाकुरा भोर्तसिध रौ (गाडण खुमाण कृत) -

प्रारम्भ—

‘ब्रवे वाज गजराज साज सोबन सहैता
कइ ढकै कुण आज ताज सारा तत वता ॥१॥”

४१ गीत केसरीसिध सेखावत रौ -

प्रारम्भ—

“मरसे जिए दाढ हजार मारीया पागा रत वहा खळळ
कूरम सरग वीया गो केहर ॥१॥”

४२ गीत सृजाजी रौ -

प्रारम्भ—

“घरहर घूघरा पापरा धम धम घरहरे
अरि चाट साम ताला राव सृजो विदै वैर वैराट ॥१॥”

४३ गीत महाराज सुजाणसिंह रौ -

प्रारम्भ—

“मना मज उतारीया महल सुप माळीया
मछर मछरीक घट मे लप त्रमाण ॥१॥”

४४ गीत महाराजा श्री गजसिंह रौ -

प्रारम्भ—

‘ कटक आय कुरपत हीदू तुरक वळहीया
दूसर माल गज माल दीयी ॥१॥”

४५ गीत पिडिया भैरदास रौ कह्यौ -

प्रारम्भ—

‘गज बध वहै उपगार पत्रीगुर बदन सहै सुज अक बीया
अँ उबर बडफरा ओटा ॥१॥”

४६ गीत ठाकुर उदसिंह रौ (सादू अनोपसिंह कृत) -

प्रारम्भ—

“अडे मुजा ब्रहमड जरदा कडा उबडै
गड गडै त्रमागळ भडि गुरजा ॥”

४७ गीत ठाकुरा हरनाथसिंह रौ -

प्रारम्भ—

“मृत जमवत तरणँ मामलँ माट साह पेपीयी मडावर साध
उळट पळट हुवा अनेरा ॥१॥”

४८ गीत ठाकुर जोरावरसिंह रौ (सादू जगराम कृत) -

प्रारम्भ—

“यधक बदैपुर हूत बहदा पडे अमामो सूतघर विलूधा नको साधो
बोहळा बोळ थमँ नही महाबळ ॥१॥”

४९ गीत ठाकुर हरनाथसिंह रौ -

प्रारम्भ—

“जुग साह पळटीयी जसवत जोययी
अवरग पापर आयँ हरनाथ ॥१॥”

५० गीत राव करमसी रौ -

प्रारम्भ—

‘ वाजता विपम वाढळै बस छतीस अठार वन
कटवा भागा थका करमसी मर ॥१॥”

५१ गीत ठाकुर भोमसिंघ रौ (आसीया सीराम कृत) -

प्रारम्भ—

“भिडज हाकले भलाळे साथि सक्जा भडा पाट वज वज सरस पायी,
अरी दळ जिने मेगळ घडा घेरखा ॥१॥”

५२ गीत ठाकुर जोरावरसिंघ रौ -

प्रारम्भ—

‘ गजा धमरा लास भिडजा भडा थट गरट भीपण
आवास दरगह सतौरा,
पत्री वड चीत राजस करे पीवसर ॥१॥”

५३ गीत ठाकुर भोमसिंघ नू (महडू हरदान कृत) -

उदयसिंह के पुत्र भोमसिंह राठौड की प्रशंसा में दोहा, सोरठे आदि संकलित हैं।

प्रारम्भ—

गाथा— ‘श्री देवा ससार सार बुधि दीयण सारदा ।

दोहा सोरठा— सूरज वस सवाज प्रतप भामो अज प्रगट
तरह सय सिरताज ॥३॥

अन्तिम भाग—

तुम्ह चपा रातौड रौ भोमा अदभुन भाति
असह अमू भै ईपीया कामणि वाच काति ॥३॥”

५४ गीत कुसळसिंघ हरनाथोत रौ -

प्रारम्भ—

‘ रती भळाहळ सूर दातार हरनाथ रौ सुरपती तराजै दीह साजै
अभयती तण भड कुसलसी ॥१॥”

५५ गीत ठाकुर भोमसिंघ रौ (लाळस माला कृत) -

प्रारम्भ—

‘ नरपति नर वराबर नाडा, ओछा जळ आचार इहो
जुग आचार ससार जोवता ” ॥१॥”

५६ गीत ठाकुरा हरीसिंह रौ (साहिबदान रतनू कृत) -

प्रारम्भ—

“करती तोह कोड जिमातो काठ साभ दीह जतना करि सार
घटिया नह धिरत अन धलता ॥१॥”

११८ राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-२

५७ गीत मोतीसर प्रमूदान कहे -

प्रारम्भ—

“विहू अग जोध रा थभ सिरा रा अजानवाह
तेगा विहू आडा जीत रिमा जडी ॥११”

५८ गीत हरनाथ री (साङ्ग भानीदास कृत) -

प्रारम्भ—

“दळा नाथ हरनाथ धिन करमसी दूसरा
हाथ बळ वधे भाराय बळ हूत ॥११”

५९ गीत ठाकुर कुसाळसिध री -

प्रारम्भ—

“नहक नूर डव अबव भळ तोप भरळव तठे
जठे जोगण ब्रह्म वीर जागे हुवे ॥११”

ग्रन्थ एक में अधिक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रन्थ पर यत्ना नहीं है। कुछ पत्र पानी से भीगे हुए हैं। कुछ बिना शीपक के गीत कवित्त भी लिपिबद्ध हैं।

६१ वीर गीत संग्रह

१ वीर गीत संग्रह, जाला, करनीदान, बखता खिडिया, बाकीदास, महर्षू महादान, ईसर, रूपा, दुर्सा, सखता लाळस, आसा वारट, २ रा० गो० स०, ३ ६०४५, ४ ३०५ × २३ सेमी०, ५ ६६, ६ १७-२१, ७ १६वां शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अघात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० महत्वपूर्ण गीतों का विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ गीत सलूवर मीर्मासिधजी री -

प्रारम्भ—

भारय रा पाथ वाण वागियो व इमो भालो,
भालो जिसो जागियो वकाळ सूळा भूप ।

२ गीत कुचामण ठाकुर शिवनार्थासिधजी री -

प्रारम्भ—

‘दिस उजळ सिवा भभनभा दूदा,
बढपण आर्य धीस विसा ॥११”

३ गीत जसोल बंरीसाल री (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

कीधा बरिया दहवाट कोपे दुभल्ल घीळे दीह,
कमर बाध जोम बरडै सघर भूरी सीह ।

४ गीत जसोल भोमजी री (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

इळा फैलिया बळु आसत धरम उथापै,
सको नर बर थीया दान सादू ।

५ गीत सोढा सिवदासजी री (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

अडर भोक आकाय सिवदास आपायत
कीया थै मीढ रा माण वानै ।

६ गीत अमभररा राजा बगतारसिधजी री (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

हाथ सोद री सावळा बाज हाथिया नागळे होदा,
लीधा सेघणा मीढ रा सालिया भडा लार ।

७ गीत ठाकुर तगर्तसिध री (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

अई भौव आकाय फतमाल रा अगोअम
सत्रा उर साल रा विरद सावा ।

८ गीत चापायता रा (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

आचा दातार कमथ अंधळा,
पार गुणा नह पाव सुजस तणी वाता चुतराणी ।

९ गीत होटलु रामसिध री (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

हाथो रो करन सुभावा हेलम,
बर दायक बाको तरवार ११११

१२० राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-२

१० गीत मा० अभयसिंह रौ (करणीदान कृत) -

प्रारम्भ—

लग सउ पटा फौज गज थटा मुजल गलहर,
सुरत न ठहर जळ महर माजा,
पृथी पत अभौ आयी उलट छत्रपती ॥१॥

११ वाव रा राणा सरदारसिंघजी रौ कविस (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

करै जगत कीरती न कसर हत दीसे काई
रहै सदा एक रग वहै कुळ वाट वडाई ।

१२ गीत अभैसिंघ रौ (बखता खिडिया) -

प्रारम्भ—

कळळ माचल अकळ वाठळ सबळ कुजरा
चचळ उछळ सरळ धसळ चालो ।

१३ गीत अजीतसिंघ रौ -

प्रारम्भ—

बलवत साह सु अगजीत बराबर
चक्रवत पूठ न चालै
नाळ बिने बहता दोनाळी
हेकण नाळ न हालै ॥१॥

१४ गीत बखतसिंघ रौ -

प्रारम्भ—

अई तूठ आवाय बपतेस छत्रधर अभग
वजाडै तबागळ समुप वाजा । १॥

१५ गीत (शाकीदास कृत) -

प्रारम्भ—

अनल क्रोध घडहडी जमदठ अभर
किर पडी वीचला परप नासी ॥१॥

१६ गीत (मेहडू महादान कृत) -

प्रारम्भ—

आपी अघायी नुरमानाय जगापार आटी पण
सापी फौजा माटीपण हगामी सघीठा ॥१॥

१७ गीत (बाकीदास कृत) -

प्रारम्भ—

ढाबी रीत की ईसी अमरावा
लोक नर फरी छाड लज ॥१॥

१८ गीत मोकलसर घुतरासिघ रौ (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

वाका भड जठ अनड पण वाको
साको ने गोट राह सरै ॥१॥

१९ गीत दूगरपुर रौ (बाकीदास कृत) -

प्रारम्भ—

हुवो कपाटा रौ पोल वोनो फिरगी घाटा रौ हली
मत्र पोटा घाटा रौ उपायो पाप भाग ॥१॥

२० गीत सरूपसिग रौ (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

करै ब्रौत दुनियाण रा बरियाम धिन
वही दहै उर अदावा तणा दावी

२१ गीत बामा सिवनार्यासिग रौ (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

माया उधमै आचार माडे घरै वडपण धाव
हाथा चाडवा हलियी ॥१॥

२२ गीत काणायो ठाकुर केरसींग रौ (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

सजै पैली धमसाण घोडा भडा मावळा
धडा जग वाधरै रूप घावै ॥१॥

२३ गीत (जाला कृत ३ गीत) -

प्रारम्भ—

(अ) कहै जालमी पात सुणजो कमध ठाकुरा
चपावौ मती जस तणी चेली ॥१॥

(ब) इसा रह्या सिरंगार जोजो इळ उपरै
जका रा कहू कथ साच जोडै ॥१॥

(स) बडौ सामळै नाम जाचण थन आविया
धू भ्रान पायी पाबमा घरेदू सुजस घारी ॥१॥

२४ गीत भाटी हरदासजी रो -

प्रारम्भ—

रूपा धारडी नवगड रेल, चन् नामा चाड
हरदास आवै पड हुता, मह जूठी माड ॥१॥

२५ गीत (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

भलपण त्यागीयो मुपग पारवत
गधा मरय म्यान ॥१॥

२६ गीत सरवीया जंसाजी रो -

प्रारम्भ—

करिमरि वरि डड जरद म वया
म्यान सुरत निघरै न नीद ॥१॥

२७ गीत मालगड रामसिंग रो (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

आई भाक आकाय बडचीत उवावरा
धरा यभ जस मुजा धारु ॥१॥

२८ गीत सरवईया भभूतसिंग रो (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

दे औरगणा दान आचार विधिया दुना
पार बडपण तणौ न कू पावै ॥१॥

२९ गीत सरवईया विजाजी रो (ईसरजी कृत) -

प्रारम्भ—

रगि राती चीत कैवट हर राजा
अवरा हुता उतरीया ॥१॥

३० गीत रायपुर माधोसिंग रो (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

सकळ धरा दूढाड मवाड दीठी सुक्क
लेयण गुण पार पारपत को लाधा ॥१॥

३१ गीत रतताम वत्तुसिंग रो (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

पाजा उजळै सात ही सध मर ही अजादा पळै
भल आग सिभू रै चपा मे प्रळै भाळ ॥१॥

३२ गीत किशनसिंघ पोंवावत रौ -

प्रारम्भ—

कर पोति जिणसाल जयमाल धाराळ करि,
वहसि जसि तीर विरदैत वैठी ॥१॥

३३ गीत राव देसल भुजपती रौ (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

डोलत राजे ममद्र रूपी कीरती वपाणा चायी
पाणा मुरनद थायी दान रौ अपार ॥१॥

३४ गीत कुमा खीची रौ -

प्रारम्भ—

घणा असुर पाडे घण घाय
कूमडा चे कूट के ब्रमदे अती ॥१॥

३५ गीत गोपाळदास सुरताणोत रौ -

प्रारम्भ—

कीया जिम बीर समसेर चर भाणो बळहि
छिनँ जैमाल मृत छतर वात ॥१॥

३६ गीत भुज राव देसल रौ (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

पूबी धारिया जस वात पळ रचावँ आचार
भाज वग सँकडा मोती ॥१॥

३७ गीत महिषा पमार रौ -

प्रारम्भ—

सेदे मुदि देस सादा ब्रद सबळा,
भिडता जरघळ है भाराणि ॥१॥

३८ गीत गगे सीहाउत रौ -

प्रारम्भ—

बढी दातार भूभार निणगार वरसिंघ वस
थाट सँ गळै तणी अणी धार ॥१॥

३९ गीत उद जतसिंघोत रौ (रूप्या कृत) -

प्रारम्भ—

भड सेज त्रिभु विचि मार तणी भरि
आपँ कर जोडे अछर ॥१॥

४० गीत (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

मचियी अत रोग मरी री जग म
विपमी ओगट वार वणी ॥१॥

४१ गीत माडण कूपवत री (दुरसा कृत) -

प्रारम्भ—

वडौ वर विड वाळीयी मयक सीहा वहै
विसहरे नरे मानी सुरे वात ॥१॥

४२ गीत सात्तिमासिघ कूपवत रा (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

कमध न पावै पार गुण तूक सोभा करे
प्रकट जुध पाय ज्यू जत पावै ॥१॥

४३ गीत वडगाव मोकमासिघ री (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

हाकले हैमरा भडा प्रवाड धारिया हूस
गवाड सिधुओ राग वीरियो मगज ॥१॥

४४ गीत रावळ जाम री (सखता लाळस कृत) -

प्रारम्भ—

साहीयी बकवाद विधाता सरिसी
साख उयी रसुण ममाथ ॥१॥

४५ गीत वडगाव मोकमासिघ न अमराव मूता री (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

मालकदार जिसोई ज मुहतो
वडपण विरदावै ॥१॥

४६ गीत गडडे सोदा घना री (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

वडम सुणी डीह आण राव राण वपाणियो
गुणीजन कितोइक सुजम गावै

४७ गीत रावळ जाम री (ईसर कृत) -

प्रारम्भ—

बहिम्या तो मूक भलो करणावर
वधि एकण सोह घर विचार ॥१॥

४८ गीत रावळ जाम रौ (आसा बुरसा कृत) -

प्रारम्भ—

नरनाह निवाण नबळ दाई नावै
सदा बस तट जिके समद ॥१॥

४९ गीत रामपुर माघोसींगजी रौ (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

रहणी एक रग सुपाता राजी
भलपण रा लीघा भुज भार ॥१॥

५० गीत टापरे गुला रौ (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

बड दातार आथ सुपाता वाट
जोषा इद तराजं मारु गुला तण जग माहे ॥१॥

५१ गीत टापरे बाघरा रौ (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

माया कधमै दातार महचौ
जोषा इद तराजं ॥१॥

५२ गीत मा० तगतसिंह रौ (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

मोजा धारती सुजा मैपला मारती धरा रौ मार्व
सूरमौ बरारै जोस आप्राजतो सही ॥१॥

५३ गीत जसोल उमजी रौ (जाला कृत) -

प्रारम्भ—

बजे नगारा जंत इळ सीस चहुंभ
बळा पागडै वीरवर फतै पाव ॥१॥

५४ अथ रस रतन -

प्रारम्भ—

इसमें काव्य रीति शृंगार रस और अय रसा के दोहे और उनके अर्थ लिखे गये हैं ।

प्रारम्भ—

कसल नयन कमल बदन, कमल नाभि कमलाप
चरन कमल तिन के रहो, मो मन गुन जुत जाप ॥१॥

१२६ राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-२

५५ ऋषाल ठापुर रूपसिंघरी री (बांकीदास कृत) -

यह रायपुर ठापुर रूपसिंह से सम्बन्धित एक वाच्य भ्रमाल छंद में लिखित है।

प्रारम्भ—

पुण्डलिया— श्री गुणपत दीज सुमत, नमू पगा सिपनद
रूपो बमरज रायपुर धीरातन जगवद ।

क्यु हिक होता मत्र कर मीरतान दळ मल
रोस घणै उर रायपुर, आयी करण उपल ॥२॥

प्रस्तुत ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिखित हुआ है। लिपि सुवाच्य नहीं है। इन कृतियों के अतिरिक्त कुछ-कर दोहे कुछ अज्ञात गीत आदि संकलित हैं। य पर गता नहीं है। प्रारम्भ व अन्तिम कुछ पत्र सुम हैं।

६२ धीर गीत सग्रह

१ धीर गीत सग्रह, मेहडु मुकान, आढा महेशदास, आसिया रामा, आडा पहाडखान, जैतावत केसरीसिंह मोतीसर चतुरमुज आदि २ रा० शो० स०, ३ १४६७^० ४ १६५ × २६५ सेमी०, ५ १०, ६ ११-१४, ७ १६ वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रन्थ में सन्निविष्ट कृतियों का विवरण इस प्रकार है—

१ गीत राव रतनसिंघ री (मेहडु मुकन कृत) -

प्रारम्भ—

गरक गोल फौज कर गजन अथर
डोल सावल सवत मधरो डाव ॥१॥

२ गीत राव अखराज री (आढा महेशदास कृत) -

प्रारम्भ—

रण वण गड उघड पुडी रैणा तै चडीऔ राव अयो तई
वडगे मु हे बैरीआ वन ॥१॥

३ गीत मानसिंघ री (आसिया रामा कृत) -

प्रारम्भ—

सुरिति अति भलि भलु सुरातन
लगि पूगा दरिआनी ॥१॥

४ कवित्त अचल माडणसीघोत रौ (श्राढा पहाडपान कृत) -

प्रारम्भ—

आज सत हीय दुचत आज कीरत राडाणी
आज हूओ उतपात आज दन होय ॥१॥

५ गीत जाडेचा मोहड रौ (श्राढा पहाडपान कृत) -

प्रारम्भ—

वाली धुधल भुयण पल धुहड विचाली वष
सिधाली कधाली भाक ॥१॥

६ कवित्त स्याळ रा (जैतावत केसरीसह कृत) -

प्रारम्भ—

वह्वर बुबदी माणसा जबन री गत जोम
पाहरे पाहरे रैण के द टहुका दोअ ॥१॥

७ गीत गोकळदास भाणावत रौ (मोतीसर चतुरभुज कृत) -

प्रारम्भ—

भीमाजळ मुहर भेलीआ भारथ
घूण पेस गज बोळण ॥१॥

ग्रन्थ व मह खुले पत्र जनेक व्यक्तिया के हाथ से लिपिबद्ध किये गये है ।
लिपि साधारण है ।

६३ वीर गीत सग्रह

१ वीर गीत सग्रह, गाडण गोकलदास, गाडण आईदान, साडू उम्मेदसिह,
साडू पृथ्वीराज, साडू जालम साडू प्रताप सूजा कविद्या, खिडिया बखता, दवाजी
रतनु आदि, २ रा० शो० स०, ३ ११२६०, ४ १८५ × १८ सेमी०,
५ १६४, ६ १८-२१, ७ १६वीं शताब्दी का रत्तराज ८ अज्ञात,
९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रन्थ मे अंकित कृतियों का विवरण-क्रम इस
प्रकार है—

१ परमेश्वरी की नीसानी -

प्रारम्भ—

गुण विवेकवार लिपत, थी परमेशवर री निसानी गाडण नेसादासजी
कही—

ओम उकार अरूप निरगुण निरवाण,
नाथ निरालब निराकार प्राण हदा प्राण आदि ।

२ गीत महाराजा श्री अनोपसिंघजी रौ (गाडण गोकुलदास कृत) -
प्रारम्भ—

यळाचो लग्न वळ त्रमळ हमथण थग अडर,
रिप रिधा ग्राहा उड सरज जग रूप ॥१॥

३ गीत महाराजा अनोपसिंघजी रौ (गाडण आईवान कृत) -
प्रारम्भ—

समद रूप आनुप रायहर सैघणी
विरद पतसा मुजस मोड बाघै ॥१॥

४ निसाणी गोगाजी रौ -
प्रारम्भ—

उतर देस सु गोरप चल्या
दिखण देस देपण वु मल्या आदि ।

५ गीत महाराज विरदसिंगजी रौ -
प्रारम्भ—

मगज धरै पवास चज वहर पहर कर मठा
तिका न बदै कवर उधरी ताण ॥

६ गीत महाराज प्रतापसिंग रौ -
प्रारम्भ—

फसै बाटवा भगरा गिरा फरा घेसाहरा फेरै
केता भाण उगा हेरै थाहरा सकाज ॥१॥

७ गीत पहाडसिंघ करमसोत रौ -
प्रारम्भ—

अनड अद करै अडर वाकारता उठीयो
जठै पडियो भडा जाडो ॥१॥

८ गीत राजा बसुतसिंघ रौ -
प्रारम्भ—

तुरा साज कीधा फिरै पडा गज त्यारिया
साप रा चढी सिलहै गरक सारीया ॥१॥

९ गीत महाराजा विजसिंघ रौ (सादू उमेदसिंघ कृत) -
प्रारम्भ—

पढै वेद नित विदुप करके घजा प्रसादा
बडो मुप प्रजा हरचद वारा ॥१॥

१० गीत महाराजा बपतसिंह रौ (सादू पृथ्वीराज कृत) -

प्रारम्भ—

अई तुम्ह आकाय बपतेस छत्रधर अमग
वजाड प्रवागळ ममुप वाजा ॥१॥

११ गीत जगराम उदावत रौ -

प्रारम्भ—

दिली भगणा पडे मन आगरी कर डर
पावडे जेण पतसाह पायो, जगा भव जोधपुर ॥१॥

१२ गीत महाराजा नीर्वासिधजी रौ -

एहो धोनप उधरौ श्रीवा प्रमाण ढाल सो उरा
जवाहरा सुवना सापती सोह जेण ॥१॥

१३ गीत महाराजा सूरतसिध (बीकानेर) रौ (सादू जालम कृत) -

प्रारम्भ—

गाजे साकळा गयद बाधा सारीप अद्र जसा
गात वार्ज डका नीवती छतीस राग वस ॥१॥

१४ गीत ठाकुर सिवसिधजी रौ -

प्रारम्भ—

केहा बापाण चवीजं वेहा हुवे निकमी करा
दे हाता हैराय अगा डाण जेहा दौड सनेहा ॥१॥

१५ गीत अमरसिध बगसीरामीत रौ (सादू जालम कृत) -

प्रारम्भ—

बुलु पोहीर ठती पमत म अद्रत तिस अकारी
सुजस दरपत सिधळ ॥१॥

१६ गीत भाटी जसवर्तसिध वेईदानोत वेजडले रौ -

प्रारम्भ—

अण भग भोनाड पछ अरदा
दुत विभाड जु धाम गज दत आदि ।

१७ गीत जवानसिध वनेसिगोत रौ (रास ठाकुर) -

प्रारम्भ—

अगा भोकवे नतीठा वाज उपळो साजवा जूध
भला दळा अमघा सुपाता ॥१॥

१३० राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-२

१८ गीत केसरीसिंघ रतनसिंघोत आसोप रा ठाकुरा रौ -
प्रारम्भ—

छाजै आधीया बविदा मायत राजे मह री छौळ
पग जै करै वासना देह री आपारा ॥१॥

१९ गीत जोधराज रौ (जालम कृत) -
प्रारम्भ—

तोये मैवास अनमी तेगा सु मत्री उदार ताळा
सौ गुण रमाला वधै । १॥

२० गीत नवलसिंघ सिवसिंघोत रौ (जालम कृत) -
प्रारम्भ—

जुधा अडर अणचाल नग सेस मायं जडे
पगा सघन जुडे चापडै पैन ॥१॥

२१ गीत कोटा रा महाराजजी रौ -
प्रारम्भ—

उरड थाट भड छमा गज पटा मद उफणै
भरण आसीस चारण अनै भाट ॥१॥

२२ गीत गुमानसिंघ रौ -
प्रारम्भ—

छाळा उपटै रूपगा मुणै सदा ओछाह छाजै
सुपाता निवाजै सची नाह रै समान ॥१॥

२३ गीत बगडौ रा ठाकुरा रौ -
प्रारम्भ—

सदा जगत साधार कव ज्या धोर्न मुजस
घार ब्रद मुज वळ दहु विध धीग ॥१॥

२४ गीत सेखावता रौ (स दू उमेद कृत) -
प्रारम्भ—

मगज उपटत वीर रस चय चसत मुमाला
पग दसत तोलतौ जास पायै ॥१॥

२५ गीत समरपसिंघ सिवसिंघोत रौ -
प्रारम्भ—

मुरा औठभरण मर हसा मानसर
प्राग तर तर्क औठभ पपाळा ॥१॥

(४ गीत)

२६ गीत सिर्वांसिघ रौ -

प्रारम्भ—

उजाळ घठ नरुका भाराय धान रसा
सोहै गढा सीस हकाया ॥१॥

२७ गीत नवळींसिघ सादुळींसिघोत रौ -

प्रारम्भ—

सधा जुध चलया भिडज खोल कीज सिलह
घहण करि भारया जास पाथ ॥१॥

२८ गीत नरसिघदास नवळींसिघोत रौ -

प्रारम्भ—

कळह घरीयो जैनगर वात सुण कुरस रौ
घट अगर तुरस रीत रह घायी ॥१॥

२९ गीत हणुतसौंग केसरीसौंगोत रौ -

प्रारम्भ—

तोपा अवाज गाजती बजाडती सुड भाट तंगा
मुरजा पाडती भाला दातुमुला भाव ॥१॥

३० गीत मुजाणसिघ केसरीसिघोत रौ -

प्रारम्भ—

सीधु जमाव माढणी धु मर सावरा मुरा
उछाव वाच रा पुरा परी हुरा ईस ॥१॥

३१ गीत बाधसिघ कित्तनसिघोत रौ -

प्रारम्भ—

चमु साज नर चहु बळ सीस महण हु चढै
समर बह गयद सह अरिद ॥१॥

३२ गीत अरजनसौंग वपतसिघोत रौ -

प्रारम्भ—

महण सभावा कुळ मुघट मुमर दावा मळै
काम बा मुजस जग मिर क्हावै ॥१॥

३३ गीत जौगोराम हाडीका रौ -

प्रारम्भ—

मार बैरीया अणुटी आव मुपाळा पाडीयो माण
तेग धारै नको पाण छाडीयो तमाम ॥१॥

१३२ राजस्थान के ऐतिहासिक प्राच्यो मा मर्वेक्षण, भाग-२

३४ गीत दलजी हाडीका री -

प्रारम्भ—

मरद वालीयी भ्रम पग ताल आप हमली
मन अडर यसी पव^{नै} पली मीच ॥१॥

३५ गीत नारयसिंध उरजनसिंधोत री -

प्रारम्भ—

उर्म अरावा आग भळ गाज तोपा उरठ
निरप रथ पाच रहीयो ग्रहानाम ॥१॥

३६ गीत अमसिंध बागसिंधोत री (साङ्ग प्रताप कृत) -

प्रारम्भ—

ब्रवण वित महुराण छनरी धाळा विलद
मधर जुघ जीत असहा हीर्य साल ॥१॥

३७ गीत जगतसिंध उमर री राजगढ -

प्रारम्भ—

खवण तोल वाट वरण रूप कव मुप सचो
काव टकसाल धरु चउ सुवुध वेस ॥१॥

३८ गीत लक्ष्मणसिंध नाहरसिंधोत री (साङ्ग जालम कृत) -

प्रारम्भ—

हुजड धूण भारण यवो आमय उतालीये
हेडवै लाप घड विचग चाड हीर्य ॥३॥

६६ गीत दुर्वासिंध लाडखानो री -

प्रारम्भ—

दायै भाक भोक प्रयी सारी तोपारा ओरणा देण
धुपला आचारा छळा दहु वारा घोग ॥१॥

४० गीत ठाकर सिर्वासिंध री -

प्रारम्भ—

घड दोहु लई उई पग धावा, जोव सो ।

४१ गीत जालिम री कहुँ -

प्रारम्भ—

अडरपान मत्र विम भुपाळ गड ओपीयो
वरग नाराज वज्य सत्रा कोपै ॥१॥

४२ गीत दौलतसिंघ नौबाज रौ -

प्रारम्भ—

पलौ भालीया सपत पहड नही बिरदपत
बीदगा गला गिडगा वरीस ॥१॥

४२ गीत कल्याणसिंघ रौ

प्रारम्भ—

करता प्रपत अत हासा समै
काज सुरपत तणौ चारणा कामु ।

४४ गीत खरवा रा ठाकुर रौ -

प्रारम्भ—

भूछा सुधारै भाटके नळा मैमता गयदा मारै
जून धान होवार अकारै वर जोस ॥१॥

४५ गीत हरीसिंघजी चूरू रा ठाकुर कौ -

प्रारम्भ—

विजो भुपती बहादर गजण आउसी वळे
नाथ दरसण मिळ हीदवा नाथ ॥१॥

४६ गीत हिदूसिंघ प्रतापसिंघोत रौ -

प्रारम्भ—

साज दिहाडे करीजै सदा होकवा हगाम सादी
नामजादी थान राज छाजै सुरा नाथ ॥१॥

४७ गीत सूजा कविया रौ कहीयो -

प्रारम्भ—

अगा नित रौ सदा ही पती सीत रा उपासा प्रापा
जुगादु रीत राजगा जीत रा जोधार ॥१॥

४८ गीत कुसळसिंघ रौ -

प्रारम्भ—

करीबान रै धकै चढीया किलव,
मिळै असमान रै तिकै मध माग ॥१॥

४९ नीसाणी साडू उमेदजी रौ षही -

प्रारम्भ—

माता दे सारसत मनै सद आपिर भाळा
गणपत सकर सुत गहीर त्रव उकत विसाळा ।

५० गीत किशनगढ़ रा -

प्रारम्भ—

हला करता तबना वाजि घेरीयो गिरदा हीदू
जगायो अणादु जाण अपाई जटेत ॥१॥

५१ गीत नीवा नीवडी रा -

प्रारम्भ—

मुगलपान सिर विलद जैसीध रं मामलं
भेळ केकाणु अणसाणु लार्ध भळं ॥१॥

(गीत-६)

५२ गीत सावळदास राणावत रौ डायर वौ ठायर -

प्रारम्भ—

मगा ज्यारि फौजा लगा जगा वीराण मह
धु गीहली सगत ज्यार चहूर्व ॥१॥

५३ गीत मेढतीयो रौ -

प्रारम्भ—

धुरै बवाळा कराळा सदा सीधु नवा घोर
दहु आर होदा नेजा परकै दताळ ॥१॥

५४ गीत सेरसिध रौ -

प्रारम्भ—

धणी नाहिये सिरा रौ वामे घणी
राडि हावल अणी मिळै चडि रास ॥१॥

५५ गीत महाराज विजसिध रौ (स्वामी परसराम कृत) -

प्रारम्भ—

गाहे अरिदा अनडा ओया नरिदा सदोपा गहे
नीसाणा निघात घोया गरजै निहुग ॥१॥

५६ गीत चढावळ रा -

कळह वील पर मिलेस बलेस ल्यायी वटक
अघायी सीधला जुसा अरडीग ॥१॥

५७ कवच महाराजा अमर्यासिधजी रा (विडिया बलता कृत) -

प्रारम्भ—

घाद सगत ईसरी मगळकागी चितामण
कामपन पोरती तुहीज पारस सिव आमण ॥१॥

५८ गीत नींबाज रा ठाकुर री -

प्रारम्भ—

साजा सुचगा सुरगा भ्रगा सारगा बछेक साभै
पातरी त्रत गाजै भग्र ग भ्रगा पाव ॥१॥

५९ गीत खगारसिंघजो लाडयानी री (देवाजी रतनू कृत) -

प्रारम्भ—

बका फाटी बादगरा हुवा सह हकचाका
रतन तणा जस हाका अमर रहीया ॥१॥

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में अनेक बिना शीपक के गीत संकलित हैं, जिनके कर्ता का नाम भी नहीं दिया गया है। गीतों के अतिरिक्त राजनीति के कवित्त (देवीदास कृत), मान मजरी (नन्ददास कृत) तथा अम्बाजी की स्तुति आदि भी लिपिबद्ध हैं।

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य नहीं है।

६४ वीर गीत सग्रह

१ वीर गीत सग्रह, गाडण केसोदास, महाराजा मानसिंह, गाडण मैतापदान, लाडस, रामदान आदि, २ रा० शो० स०, ३ १२२२७ ४ १७ × २७ सेमी०, ५ १७६, ६ ६-१४, ७ १९वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रारम्भ में कुछ बिना शीपक के गीत लिपिबद्ध हैं जिनके कर्ता का नाम भी नहीं दिया गया है। अन्य वृत्तियों का विवरण ब्रह्म इस प्रकार है—

१ गीत कटाळीया ठाकुरा रा -

प्रारम्भ—

हरक उठाई बढगी धार माथै हुकम
अजमल अचल हुय भार जुपौ रजु कर थावीयो ॥१॥

२ गीत ब्रूहा पदमसिंघ (चीहान) रा -

प्रारम्भ—

सुरसती सुप्रसन सदा, गाउ गुण गलेस
प्रभता कर ने पदम री दरसाठ दस देस ॥२॥

१३६ राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रंथों का सर्वेक्षण, भाग-२

३ भुरजाळ भूयण (बाकीदास कृत) -

चित्तौड गढ का णणान करते हुए महाराणा हमीर इत्यादि बहा के शासका का यश-वर्णन किया गया है। प्रारम्भ में एक दूहा इस प्रकार प्रकृत है—

दूहा— साह तणा पूनी सबळ, भ्राय वचै इण ठोड
श्री आठू अकीलीण मे, चावो गढ चित्तौड ॥१॥

४ गीत ठाकुर अमरसिंगजी री -
प्रारम्भ—

ईराद ममद नेसाह हैदरकुळी, बगस पजै लागे न की दाव
अक अमराव अगजीत रै अटकीया ॥१॥

५ महाराज सबळासिध री गीत -
प्रारम्भ—

पडे उपडे केके बाजु घलन पोचै,
तडफडे अडे अदवा पडे ताप आदि।
गाडण केसोदासजी री कही -

६ नीतारणी
प्रारम्भ—

अजकार अरूप रूप निरगुण नीरवाण,
नाथ नीरजण निराकार प्राणी हवा प्राण।

७ गीत कीलीयाणपुर राव दुरजणसिध री महाराजा मानसिच री फुरमायोडो -
प्रारम्भ—

जद पडियौ क्राट जोदपुर जैपुर, चाट पलट धम लोभ थायो
वण वण रण करवा कछवाहा, दुरजण भोका पवो दीयो ॥१॥

८ गीत सोकर रा राव माघोसिगजी री (गाडण मैतापदान कृत) -
प्रारम्भ—

पीडी पाच सु पड्या छा पाव पडा छा राज की प्रमा
पावा पीवा बठ ही न कीदो कदे प्यास आदि।

९ सुरजगढ़ ठाकुर साहब री गीत -
प्रारम्भ—

अई सरमुत तान लागे पलक उनमुनी
तोडतो पळ कसु मोह त्यागै ।

१० गीत ठाकुर उरजर्णसिग री (लाळस रामदान कृत) -

प्रारम्भ—

लापा बहुत प्रलस प्रत जग लीघो
कव अमरी कीघो कर काड, जगत तरणा आदि ।

११ गीत आढा पाडयान री कयो -

प्रारम्भ—

धर गार्जं पगा धकाव धीगा, ज समद राम जीम
सकजा भीडज सभा म साजा आदि ।

१२ गीत जसलमेर वरोताल री -

प्रारम्भ—

अघट आवीयो जळ कळ समद अत उभेळा
फैल दुव्रत निगत सेत फाटी प्रभत प्रपती रापण -

प्रस्तुत ग्रन्थ अनक व्यक्तियों के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य नहीं है। ग्रन्थ के कुछ पत्र लुप्त हैं और कुछ पत्र फटे हुए हैं। ग्रन्थ पर कपड़े का गता चढ़ा हुआ है।

६५ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि

१ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि बारट अजनजी, मालीसर लछमण, चावडदान दधवाडिया भीकाजी दधवाडीया, कविया सालुजी, उम्मेदसिध सादू, बडीदास सादू, सादू लालसिंह, मोतीसर कुसलाजी, आसिया जंतरूप, सैणीदान करणीदान, बारट मरूदान हुक्मीचद, बारट चतुमुज, मेहडू रामकरण, सादू गिरवरदान केसोदास गाडण आदि, २ रा० शो० स०, ३ १२२८६ ४ १७ × २४ ५ सेमी०, ५ १३२, ६ ११-१३ ७ १६वीं गताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रन्थ में संकलित कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ कवित्त मोकर्मासिध जतमलात रा (बारट अजनजी कृत) -

प्रारम्भ—

उपासरा पहल सीमरू गणपती
पछै मोहकम न सीमरा
बाया री विमाह कीयो जसाड नम री
जान परीदे जीकै कुरब मोटा ॥१॥

२ गीत मसूदे ठाकुर भँरुसिंघ रौ -

प्रारम्भ—

बलजुग रौ करन दान रौ वीकम
बडो अकल रौ समद तोवा रौ भँरव मडतीया ॥१॥

३ गीत पिपळिया ठाकुर रौ (मोतीसर लछमण कृत) -

प्रारम्भ—

मावै पापा म नयी रौ रही पळटा देर रा भूछा
कैका पुणो फँर रा भ्रमावे धके क्रोध ॥१॥

४ गीत (भीकजी दधवाडिया कृत) -

प्रारम्भ—

जिका बेवतड ज झाली परीती चीती जेम भूप
तीप चोषा जाणी ब्रीत रौ गाली ॥१॥

५ गीत (दधवाडिया चावडदान कृत) -

प्रारम्भ—

गुण परगट कर छिपाडै अवगुण
घण वित बगसै घणु घणी ॥१॥

६ गीत (सालूजी कृत) -

प्रारम्भ—

ऊचा अर नीचा उमै गत आदु
हळपै पोवर अकल हजार ॥१॥

७ गीत (उम्मेदासिंघ सादू कृत) -

प्रारम्भ—

अई आगमण दपत धर गयद घड उपरा
भोम पर दपत पोरस मयद भेस ॥१॥

८ गीत (दधवाडिया भीकजी कृत) -

प्रारम्भ—

भदा भूता गजा हाथळा झोटकै कूभायला माथै
काटळै सामह घूता समावा बरूप ॥१॥

९ गीत (सादू बद्रीदास कृत) -

प्रारम्भ—

ताता तुरा तेज दाधा वहै फौज रा लडग तूट
अरी वहै पाघा घाज भासै साज घान ॥१॥

१० गीत (सादू उम्मेद कृत) -
 प्रारम्भ—
 घावा बाण साति तिलका घुमावळा गगा धोक
 वील पता बटारा अपगा गोळी बाण ॥१॥

११ गीत (मोतीसर लक्ष्मी कृत) -
 प्रारम्भ—
 थट भडारा पुरसो मान अणबाग रा
 खुटावण नाग रा सुजस लीषो ॥१॥

१२ गीत (खिडिया टुकमीचद कृत) -
 प्रारम्भ—
 छोळा उपटें रातगा जुही पतगा छुट
 तारा गैण भगा खुटें उमगा तैसीग ॥१॥

१३ गीत (सादू लालसिंह कृत) -
 प्रारम्भ—
 मुगलपान सिरविलद जैसीग रै मामले
 भेळ केकाण अवसाण लाधै भळै
 अत कियो हरै गुजरात आप हमळै ॥१॥

१४ गीत (कुसलाजी कृत) -
 प्रारम्भ—
 सुवर नगाडै धरा नवारी कमध सीलामा
 अभा माहाराज हुता कर एम ॥१॥

१५ गीत महाराज रतनासिंह री (आसिया जैतरुप कृत) -
 प्रारम्भ—
 अगां साहोया जुगादु बाल रा सापणै भासै अिळा
 कविदा किरादु जोग न रापै के कळेस ॥१॥

१६ गीत (सैणोदान कृत) -
 प्रारम्भ—
 वधीयी चित हेत दयण दत वारण
 चारण वरण वधारण चाव ॥१॥

१४० राजस्थान के एतिहासिक ग्रंथों का सर्वेक्षण, भाग-२

१७ गीत रोया ठाकुर सेरसिंह आउवा कुशलसिंघ री (करणीदान कृत) -
प्रारम्भ—

घणी दाहणै मीरै री मीरै वामे घणी
राड हरवळ धीके यप रीस ॥१॥

१८ गीत महाराजा विजसिंघजी री -
प्रारम्भ—

पछै उठाय हणु जु चाह भूमी जेम सीघ पराँ
वियो वास भाये मही घड जु वाराह ॥१॥

१९ गीत पेमजी री (वारहठ भेरू दान कृत)

२० गीत महाराज अभयसिंहजी री (करनीदान कृत)

२१ गीत उदेसिंह री (हुक्मीचद कृत)

२२ गीत आईजी री (पृथ्वीराज कृत)

२३ गीत सलूबर राव बेहरीसिंघ री (बारट चतुमुज कृत)

२४ गीत सलूबर रावळजी री (महडू रामकरण कृत)

२५ गीत बीकानर राजा रतनसिंघ री (सादू गिरधरदास कृत)

२६ गीत बलूजी चापावत री (केसोदास गाडण कृत)

ग्रंथ में अधिकांश गीत बिना शीपक से लिपिबद्ध हुए हैं। ग्रंथ पर गता मढा हुआ है। कुछ पंने लुप्त हैं।

६६ वीर गीत संग्रह

१ वीर गीत संग्रह, मुया र्वा, बारट वनसिंघ मोतीसर चुतरा, मोतीसर सेणीदान, खिडिया हुक्मीचद, भीमण भान, बारट नवलजी आदि, २ रा० शो० सं०, ३ १२८०३ ४ २५५×१७ सेमी०, ५ ४३, ६ १८-२६, ७ २० वी गताब्दी का प्रारम्भ, ८ अनात ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रंथ में अधिकतर जोधपुर राजाआ एव राजवशा के गीत सक्लित हैं। विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ गीत महाराज विजयसिंघजी री (दधवाडिया नवला कृत)

२ गीत सुरतसिंघ री

३ गीत महाराज अभयसिंह री

४ गीत बडा महाराज वपनसिंघ री

५ गीत महाराज अभयसिंह री सपखरी

६ गीत महाराज अजीतसिंघजी री

- ७ गीत महाराज अजीतसिंह रौ
- ८ गीत जसवतसिंह रौ (मुधा रूपा कृत)
- ९ गीत अमरसिंह रौ (घारट एजन कृत)
- १० गीत नीवाज ठाकुर सुरताणसिंह रौ
- ११ गीत महाराज गर्जसिंह रौ (मोतीसर चुतरा कृत)
- १२ दूहा ठाकुर अनाडसिंह रौ (मोतीसर सखीदान कृत)
- १३ गीत महाराजा माधोसिंह जयपुर रौ (खिटिया हुक्मीचद कृत)
- १४ दूहा ठाकुरा बपतावरसिंह रौ (मीमण भान कृत)
- १५ गीत ठाकर बपतावरसिंहजी रौ
- १६ गीत आसोप ठाकुर मेसदान कूपावत रौ
- १७ गीत महाराज बगतसिंह रौ (वारठ बनसिंह कृत)
- १८ गीत अमल रौ भाव रौ
- १९ गीत माधोसिंह चापावत रौ (लाळस नवलजी कृत)
- २० गीत महाराजा प्रतापसिंह जयपुर वाला रौ (लपवा सु भगडो हुवौ जिण भाव रौ, स० १८५६ वरस, ठाकुरा श्री किशनसिंहजी वणायौ)
- २१ गीत महाराज तगतसिंह रौ (वारठ बनसिंह कृत)

६७ नाहरपान राजसिंघोत रौ गीत

१ नाहरपान राजसिंघात रौ गीत, २ पु० प्र०, ३ ३६ बंद २, ४ १० × २२ ५ समो० ५ १, ६ १५, ७ २० वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८ अनात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० यह १२ द्वालो का गीत आसोप ठाकुर मुकनदास (नाहरपान) कूपावत की प्रशंसा में है। महाराजा जसवतसिंह ने जब हाथी, घोड़े आदि सरदारों को उपहार में दिये तब मुकनदास ने कुछ बचे हुए घोड़े चारण भाटा को दिलवाये।

उपना पुरमाप जडा पाणी पधा पापर होडा ।

अेराकी आरवी सजोडा नाहरपान समापइ घोडा ॥१॥

गीत—

पडतात पयाल प्रमकिण्ट घो पुडि नापिय मकड फाल तुरी,
असराल विसाल धराक जचगल पयग उडापी आदि

अन्तिम भाग—

बड कवीयणा त्यागी बपहर सेर बई

समीपीया पान राजान र कूप क्रन अभिनव ॥२॥

इति घोडा रौ गीत संपूर्ण ।

एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध है। इस गीत में घाडा की विशेषताओं और सामंता की वदायता का अच्छा परिचय मिलता है।

६८ मानसिंह रा कवित्त गीत

१ मानसिंह रा कवित्त गीत, सेवग मगा, वारठ तीलाक, सादू चना, चालकदान, गिरवरदान आदि, २ पु० प्र०, ३ ३६ वष ० ४ २७ × १८ सेमी०, ५ १५, ६ २१, ७ २० वीं शताब्दी का प्रारंभ, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० महाराजा मानसिंहजी पर रचे कुछ गीत, कवित्त विविध कवियों के अंकित हैं।^१

- १ गीत सेवग मगा, वास बडसू
- २ रूपक वारठ तीलाक रा कीया
- ३ चना रा कहुआ दूहा गीत
- ४ गीत चालकदान रा कीया
- ५ गीत गीरवरदान रा कहुआ

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। पत्र व सिले, गते रहित हैं। अन्त के आधे पत्र रिक्त पडे हैं।

महाराज मानसिंह के समय की साहित्यिक व सांस्कृतिक गतिविधियों को समझने में इनका उपयोग लिया जा सकता है।

६९ वीर गीत संग्रह

१ वीर गीत संग्रह, भादा गोरखदास आदि, २ रा० प्रा० वि० प्र० ३ २२ × ३, ४ १० × २३ सेमी० ५ २, ६ १०-११, ७ २० वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रन्थ के प्रारंभ में एक बिना शीपक का गीत लिपिबद्ध है।

प्रारंभ—

कगई ससी ब्रजाग राम कसी सधोमक कया,
पाराथ भारथ री ससीस आपरँ सजोस ॥१॥

- १ गीत सपपरौ उदैसिध मेडत्या री
- २ गीत राणा भीमसिध रँ तरवार री

३ गीत सपथरी प्रतापसिंह रौ (भादा गोरखदासजी कृत)

४ गीत कल्याणसिंह रौ

उपरोक्त गीत एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किये गये हैं। लिपि सुवाच्य नहीं है।

१०० गीत कवित्त सग्रह आदि

१ गीत कवित्त सग्रह आदि, २ पु० प्र०, ३ ३६ वद २, ४ २७४ × १६५ सेमी० ५ ७६ ६ २७-२८ ७ वि० स० २००२, ई० सन् १९४५, जोधपुर, ८ बालाराम आदि, ९ राजस्थानी दवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रन्थ में संग्रहित कृतिया का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ जयपुर महाराजा आ आदि रा कवित्त प्रारम्भ म जयपुर महाराजा के गीत राग सहित - (सवाई रामसिंह, माधोसिंह आदि) लिपिबद्ध ह।

२ पावूजी रौ छद

३ गीत महाराज मानसिंहजी रौ (साहबदान कृत)

४ गीत महाराज भीमसिंहजी रौ (सेवग राम कृत)

५ गीत महाराज भीमसिंहजी रौ (गरीबदाग कृत)

६ गीत महाराज विजयसिंहजी रौ (खिडिया केसर कृत)

७ गीत महाराज बीजयसिंह रौ (बारट दलपत कृत)

८ गीत महाराज विजयसिंह रौ (सेवग पिराग कृत)

९ गीत महाराज विजयसिंह रौ (बारट उम्मदासिंह कृत)

१० गीत महाराज विजयसिंह (सीराही के भाकर आडा कृत)

११ गीत महाराज विजयसिंह रौ (साहब सुरतान कृत)

१२ गीत महाराज विजयसिंह (पिडिया हुधमीचद कृत)

१३ महाराज बखतसिंह रौ गीत (रतनू लाला कृत)

१४ महाराज बपतसिंह रौ गीत

१५ गीत बपतसिंह रौ लघु साणोर (बखता पिडिया कृत)

१६ गीत बपतसिंह रौ (सादू अनोपसिंह कृत)

१७ गीत बपतसिंह रौ (कविया करणीदान कृत)

१८ गीत महाराज अमसिंहजी रौ (आसीया द्वारकादास कृत)

१९ गीत अमसिंह रौ (पिडिया बखना कृत)

- २० गीत अमरसिंह री (मादू प्रवीराज कृत)
 २१ गीत अमरसिंह री (वरणीदान कृत)
 २२ गीत अमरसिंह री (वारट सुभराम कृत)
 २३ गीत अमरसिंह री (श्रविया सावलदान कृत)
 २४ गीत अमरसिंह री (वपता पिडिमा कृत)
 २५ गीत अमरसिंह री (वरणीदान कृत)
 २६ गीत अमरसिंह री (दपवाडिया द्वारवादास कृत)
 २७ महाराजा वपतसिंहजी रा कवित्त (अनात कृतक)

पथ लुप्त होने से प्रथम अप्रपूण है। इसमें ४५ छप्पय, दोह सक्लित हैं जिसमें वृष याम वरण, जस वरण, कीर्ति वरण, अश्व वरण, गज वरण, रथ वरण, सना वरण, मुजदड वरण चवर वरण, धनुष वरण, भाला वरण, राज नायक वरण सब वरण आशीर्वाद वरण इत्यादि अध्याय हैं।

२८ गुण रूपक (हेम कवि कृत)

२९ महाराजा मानसिंह री रूपक (मादू चैनजी री कहियौ)

यह ४२ कमाळ छंदा का रचना जोधपुर महाराजा मानसिंह की प्रसास म रची गई है।

३० गीत मानसिंहजी री (भूपाचदान कृत)

३१ वपतसिंहजी री गीत सर्वैया

३२ उमेदसिंह हाडा री कवित्त

३३ गीत सेरसिंह री (जाडा पहाडपान कृत)

३४ महाराजा मानसिंहजी री गीत

३५ गीत मानसिंहजी री (सादू चैना कृत)

३६ गीत मानसिंहजी री

३७ मानसिंहजी रा कवित्त छप्पय

३८ महाराजा मानसिंह के कवित्त (विभिन्न कवियों द्वारा रचित)

३९ गीत मानसिंह री (गू गा उदराम कृत)

४० गीत सावभूडी कमरबध रा आटा री सीतामऊ राजा री कवर रत्न

सिंह री कह्यौ

४१ नीसाणी जाळोर रा गढ रा भाव री (भापाळदान कृत)

४२ हजूर रा कवित्त (वाकीदास कृत)

४३ छद जळधरनाथ री भडू महादान री कहियौ

४४ महादान रं बेटा मोडाराम री क्यौ तरवार री गीत

महादान कृत कुछ दोहे सोरठे भी दिये ह, तत्पश्चात् ५ गीत देकर फिर दाहे लिखे गये ह, जा कि उक्त महाराजा से संबंधित हैं। (पत्र-५)

इसके अतिरिक्त तपससिंह के फुटकर कवित्त राठोडा की वशावली आदि संग्रहीत हैं। ग्रंथ पर सुन्दर गत्ता चढा हुआ है। ग्रंथ के वागज सब जिल्द से अलग ह, कुछ पत्र इस ग्रंथ के नही है जो इसमें डाल दिये गये ह। ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य है। कुछ पत्र खाली पड़े ह।

१०१ राठोड इन्द्रसिंह री भमाल

१ राठोड इन्द्रसिंह री भमाल, २ जो० क० संग्रह, ३ ६६ ४ १४५ १६ सेमी०, ५ २१, ६ १३, ७ १६ वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इन १०७ भमाल छद्म में नागौर के राठोड इन्द्र सिंह का इतिवृत्त है। ग्रंथांक ६७२२, रा० शा० सं० में केवल १०३ भमाल छद्म लिपिबद्ध हैं।^१

प्रारम्भ—

“श्री गणेशायनम अथ महाराजा श्री इन्द्रसिंहजी री भमाल लिपते—

सरसति गणपति ह्य प्रसन दीज सत वरदान,
गाड इंदराजा गुणै राजा पति राजान
राजापति राजान बडे वस अवतरे
सहज जुठल भोधासि वरस ममत धरै
दिल उजल दातार पत्री ध्रम सहिया
रायमिह मुजाव पै सिंह राईया ॥१॥

अंत—

देपन ओ सापक दोपी द्रव्बीया

बळे सवाडा दीय प्रवाडा फव्बीया ॥१०७॥

यह वृत्ति एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध की गई है, लिपि सुवाच्य है। अंत में काफी पत्र रिक्त पड हैं। लाल कपडे का गत्ता चढा हुआ है। ग्रंथ फथकशियर कालीन राजनैतिक हलचलों के प्रति जनता की प्रतिक्रिया को जानने के लिये उपयोगी है।

१ प्रकाशित सम्पादक डा० नारायणसिंह भाटी रा० शो० सं० जोधपुर

१०२ मरुधर क्षत्रिय वंश प्रकाश

१ मरुधर क्षत्रिय वंश प्रकाश, २ एम० डी० एम० सग्रह, ३
 ४ १६ × ८ सेमी० ५ १४४, ६ ३४, ७ वि० स० १६३०, ई० स० १८७३,
 जोधपुर ८ अज्ञात, ९ डिगल ध्याख्या हिन्दी में, दवनागरी, १० मारवाड के
 राठीड जागीरदारों की विभिन्न खाणा (चापावत, चद्रसनता, कूपावत) का विस्तृत
 इतिहास दिया गया है।

ग्रन्थ इन सरदारों के इतिहास अध्ययन हेतु उपयोगी है।

१०२ जगत विनोद

१ जगत विनोद, कवि पद्माकर, २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ १०१८५,
 ४ १३ × १६ × सेमी०, ५ १४३, ६ ६-११, ७ वि० स० १६०६, ई० स०
 १८४६, रत्नावती, ८ नागर भट्ट कुबेर, ९ पिगल, दवनागरी, १० प्रस्तुत
 रसालकार सबधी ग्रन्थ का निर्माण जयपुर नरेश सवाई जगतसिंह की आज्ञा से
 पद्माकर ने किया। नायक नायिका का भेद लक्षण बतलाकर विविध ६ रसा का
 विवरण दिया गया है।

प्रारम्भ—

“श्री गणेशाय नमः ॥ अथ जगत विनोद लिपयतः ॥

रूहा—

सिधि सदा सुन्दर वदन, नदनद सुद मूल ।

रसिक सिरोमनि सामेर, सदा रहू अनुकूल ॥१॥

जय जय सकति सिलमयी, जय जय गढ आमर ।

जय जयपुर सुरपुर सहस, जो जाहिर चहुफेर ॥२॥

जय जग जगतपति जगतसिंह नर नाह ।

श्री प्रताप नदन बली, रवि वसी बद्धवाह ॥३॥”

जयपुर राजाशा की प्रशंसा एक वीरता सबधी काव्य अंश उदाहरण स्वरूप
 प्रस्तुत है—

“जाहा और सौरप र धीर धन ताहि और जोर जग
 जालिम को जाहि रही यात है ।

कह पदमाकर अरिन के अवाई परसाही दुखस
 वाई को ललाई लहरात है ।

परधी प्रचड चमूह रपित हायी पर देपत वनत
 सोध माधव की गात है ।

उदत प्रसिद्ध जुद्ध जीत ही कीसी दाहित री दारन का
 रतन होदी भ समात है ॥८३॥
 वगसि विनुड दय भुडन क मुटगिपु मुडन को
 मानिका इन् इयो त्रिपुरारी को ।
 वहे पदमाकर करारन के बीस तय पाट राहु दी है
 महादान अधिकारी को ।
 ग्राम दय धाम दा उदक उराम दये ग्रन जल दी है
 जगनी के जीवधारी को ।
 गता जयसिंह दोड यात तान दी ही कटू बेरीन को पीठ
 और न पीठ पर नारी को ॥९१॥”

अन्तिम भाग—

‘ जगतसिंह नृप हूवमर्त पदमाकर लहि माद ।
 रमियन क वस करन को कीही जगत विनोत् ॥२३॥”

पुष्पिका—

‘ सिद्धि वूमवमावनस श्री म-माहाराजा
 धिराजेन्द्र श्री विरचित जगत विनोद नाम काव्य
 सुपूर्ण । श्रुम समत १६०६ प्रवतमाय मासीत
 मामे मागसिर मामे श्रुक्ल पम्नो तिथी १२
 भोमवामर निखित रत्नावती मध्य, नागर भट्ट
 कुबेर हस्ताशर श्रुभ भवतु । कल्याणमस्तु । श्री रस्तु ।”

(पत्र-१०५)

ग्रन्थ साहित्यिक धारा के अध्ययन की दृष्टि से उपयोगी है ।

ग्रन्थ म कुछ स्फुट वक्तव्य आदि ग्रन्थ निर्माण के बाद में ग्रन्थ व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किए गये हैं, लिपि मुवाच्य है, पत्र हाथ के बने प्रतीत होते हैं । ग्रन्थ पर जोए कपडे का गत्ता मटा हुआ है ।

१०४ सांभर युद्ध

१ सभरि युद्ध आदि, कवि कलानिधि कृष्ण भट्ट, २ रा० प्रा० वि० प्र०,
 ३ ९८८९, ४ १०×१६ ८ सेमी०, ५ २०, ६ ८, ७ १६ वीं शताब्दी का
 उत्तरार्ध, ८ अनात, ९ पिगल, देवनागरी, १० प्रस्तुत लघु काव्य-कृति म
 जोधपुर महाराजा अजीतसिंह तय आमेर नरेश सवाई जयसिंह द्वारा सम्मिलित रूप

से शाही सना पर किय गय आक्रमण वा इतिवृत्त है । ई० सन् १७०८ म यह युद्ध साभर म हुग्रा जिसम राजपूत सनिका की विजय हुई ।

प्रारम्भ—

“श्री गणेशायनम । अथ सभरि जुद्ध लिप्यत ।

दोहा—

गुरु गुविन्द गनपति गिरा, गवरि गिरीस मनाय ।
गावत गुन जयसाह कौ सु कवि कलानिधिराय ॥१॥
हुकम बहादुर साहि की आयो सद हुसन ।
हुते भूप जयसाह जय, सभरि सर सजि सैन ॥२॥”

अन्तिम भाग—

“पिय महाकाल की बाल निजि, वाली परम पुस्याल तर ।
बिसनेस लाल भुवपाल जह, फले लहिय कर बाल कर ॥१॥”

पुष्पिका—

‘ इति श्री कवि कलानिधि श्री कृष्ण भट्ट
विरचित सभरि जुद्ध बरण सपुणन ॥१॥’ (पत्र-८)

इसके अतिरिक्त ग्रन्थ मे एक बिना शीपक की अपूर्ण काव्य-कृति अत म लिपिबद्ध है । अथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है । लिखावट सुवाच्य है । अन्त के कुछ पत्र लुप्त होने से ग्रन्थ अपूर्ण है ।

१०५ वीर गीत कवित्त सग्रह

१ वीर गीत कवित्त सग्रह आसिया बुद्धा आदि २ जो० क० सग्रह,
३ ५८, ४ १७५ × २४ सेमी० ५ ४५३, ६ १३-१४, ७ १६ वी शताब्दी
का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात ९ राजस्थानो देवनागरी, १० इसमे अधिकांश गीत,
कवित्त आसिया बुद्धा कृत ह जो वीर पुरुषा इत्यादि से सम्बन्धित हैं ।

गीत जलधरनाथ रौ (आसिया बुद्धा कृत) -

प्रारम्भ—

“सुकव पीर भीमोक दला कौन सबळी सरस
प्रगट जग ताढीया पाछा पाता
रेण कर भरथ रौ योगरामी गने ॥१॥

आसिया बुद्धा की कृतिया एव राठीड सरदारो की जीवन-घटनाओ इत्यादि क लिये सामग्री उपयोगी है ।

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। कपड़े का गत्ता चढ़ा हुआ है। प्रारम्भ के पत्र किनारों से खंडित हैं। लिखावट साधारण है।

१०६ गीत कवित्त दूहा बात सग्रह

१ गीत कवित्त दूहा बात सग्रह, बाकीदास सतिदान आदि, २ जो० क० सग्रह, ३ ७४, ८ १५ ५ × २१ ५ सेमी०, ५ २६६, ६ १०-११, ७ १६वीं शताब्दी का प्रारम्भ ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें बाकीदास सतिदान इत्यादि चारण कवियों द्वारा रचित अनेक प्रशस्ति गीत कवित्त आदि संकलित है। प्रारम्भ में राजकीय कपड़ा की विगत दी है।

प्रारम्भ—

“सवत १८७१ रा माघ सुदि १४ कपडा रो मौजूदायत लीवी—
वागो १ आदरसा रा वागा होय सेलारा
या माहे १७ कळिया रो फेर राज
वाळी ने श्री हजर इनायत कीयी जीवी
कळिया १७३ रो नै वागो एक गुलाबी
आदि।”

प्रसिद्ध व्यक्तियों से सम्बन्धित कुछ ऐतिहासिक फुटकर बातें भी दी हैं। जो उनके इतिहास अध्ययन हेतु उपयोगी हैं।

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों द्वारा लिपिबद्ध है, कुछ पत्र कीटभक्षित हैं, चमड़े का गत्ता चढ़ा हुआ है।

१०७ सिपर वसोत्पत्ति पीढी वार्ता

१ सिपर वसोत्पत्ति पीढी वार्ता, चारण कविया गोपाल, २ जो० क० सग्रह, ३ ११० ४ ३१ × २० सेमी०, ५ ६०, ६ १५, ७ २०वीं शताब्दी का उत्तरार्ध (रचनाकाल वि० स० १६२३, ई० सन् १८६६), ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत ग्रन्थ में शेखावती के भूल पुरुष शेखाजी (मोकलजी के पुत्र) व उनके सति का विवरण दिया है।^१

प्रारम्भ—

“श्री गणेशायनम अथ सिपर वसति पीढी वार्ता चारण कविया गोपाल कृत लिपिते वार्ता—

राजा उदयराजजी आमर जा री बेटा ३ नरसिंहजी १ बरसिंह २, बालाजी ३ । नरसिंहजी आमर की गान्धी, बरसिंहजी मान्जानि, बालाजी बरवाट ।

बालाजी के पातावार पाटी ध्याति जाका बछेरा आमर का राजा माम्पा बछेरा म्यानी छा बछेरी ध्याव गा थ रापो—धाम्पू मामतो चावरी माथ । बालाजी बछेरा निया । बालाजी क बटा तीत परथ, पीयराजजी, मोरनजी । परमजी पीयराजजी नै गाय एक गीतू जाका बाने पाता मोरनजी बरवाट गाँगे बँठा, बरवाटै मू दाय कास ऊपर पाटाँ को परवान आद आदि ।”

इस प्रकार एक पक्षीर की कृपा न नेमा के उत्पन्न होन, इस वीर पुरुष द्वारा अपनी घोड़िया के बछेरे आमर के अघोरद्वर चद्रमेा कछत्राह का नहीं दन तदुपरान्त मुद्द होने इत्यादि, दोस्ताजी को मृत्यु, उपनिषया का बतान देवर दोस्तावता को शामाम्पा उपजापामो के विभिन्न विनिष्ट व्यक्तिया का विवरण निया है जो दोस्तावता की अत्य भ्यातों में कुछ भिन्न है ।

अन्तिम भाग—

‘पालट साहब भादरजी फुरमाई—पीडा का प्रवाडा का प्रथ लावो साबक पीडा का प्रवाडा का प्रथ बागे कोई यण्पी छा नहीं यदि पालट साहब भादर चारण गोपाल नै फुरमाई—पीडा का प्रवाडा का बारताई प्रथ बणावो, ठाकर साहब मुखनसिधजी नै फुरमाई, पालट साहब भादरजी बगा वणबावो जाड नहीं करणो बात की रीति बणावणा जमू छप्पे, छत्र, दाहा नहीं वणया बारतीव वणावो है ।

इति थी चारण कविया गापात्र कृत सिपर बसात्पति पीडी बातीक गुन संप्रणं ।”

प्रस्तुत ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा सुन्दर लिपि में लिखा गया है । ऊपर कपडे का गत्ता चढा हुआ है । कुछ पत्र रिक्त पडे हैं ।

ग्रंथ दोस्तावता के इतिहास अध्ययन हेतु उपयोगी है । पाउलेट ने राजस्थान की रियासतों के गजेटियर लिखते समय स्थानीय साधनों को किस प्रकार संकलित करवाकर उनको महत्व दिया इसकी जानकारी इस ग्रंथ के निर्माण से मिलती है ।

१०८ वीर गीत कवित्त संग्रह

१ वीर गीत कवित्त संग्रह २ जो० व० संग्रह, ३ ६५, ४ २५×
१७ सेमी०, ५ ५७६, ३ २० २५, ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध,
८ अज्ञात ९ राजस्थानी, देवनागरी १० यह विभिन्न प्रशस्ति गीतों का

बड़ा ही ममृद्ध सग्रह है जिनका सम्बन्ध प्रसिद्ध राजपूत सरदारा के ऐतिहासिक और परम्पराभूत कार्यों से है। कुछ भपवादा को छोड़ अधिकांश रचनाएँ अनात कतृ क हैं।

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है, सिखावट साफ नहीं है। ग्रन्थ पर गत्ता नहीं है अनेक पत्र खाली पड़े हैं।

इस ग्रन्थ का देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि कविराजा के यहाँ आने वाले चारण कविता से इस ग्रन्थ में जो जहाँ याद थे वे गीत समय-समय पर लिखवा लिये गये थे।

१०९ वीर गीत छप्पय कवित्त सग्रह

१ वीर गीत छप्पय कवित्त सग्रह २ जो० ब० सग्रह, ३ ६५, ४ २४ × १७ सेमी०, ५ ५७६ ६ २०-२४, ७ १९वीं शताब्दी का मध्य, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत ग्रन्थ में अनेकानेक योद्धाओं के प्राप्ति गीत कवित्त इत्यादि लिपिबद्ध हैं। कुछेक भपवादों को छोड़कर प्रायः सभी गीत चारणा द्वारा रचित हैं।

यह ग्रन्थ वीर गीता का भण्डार हाने के कारण अनेक अनात वीरों और छोटी बड़ी घटनाओं पर प्रकाश पड़ता है।

११० राधा-कृष्ण दोहे और ऐतिहासिक बातें

१ राधा कृष्ण दोहे कवित्त और ऐतिहासिक बातें, २ जो० क० सग्रह, ३ ६४, ४ २७ × १८ सेमी०, ५ १४०, ६ २७ ३०, ७ वि० सं० १८८३, ई० सन् १८२६, सुभटपुर, ८ दान विजय, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रारम्भ में कृष्ण-राधा सम्बन्धी कृति के पश्चात् राठीड दुर्गादास द्वारा नयी समदडी ब्रसाने की वार्ता, चापावत विठलदास का कवित्त, 'याम यथा विषयक' तथा कुछ ऐतिहासिक बातें भी दी है, जिनके शीषक नहीं है।

प्रारम्भ—

“श्री राधा कृष्ण विजये सेतगाम ॥ दूहा ॥

श्री राधा पद कृष्ण के चरन चित्त लगाय ।

करी ग्रथ जह उलसयो वास गंग सुलपाय ॥

पुष्पिका—

“इति श्री म-महाराज कुमार इन्द्रजिधिर

बिताया रसिक प्रियया अंतरस धराने

पीडण प्रभाव ॥१६॥ सवत १८८३ रा यों

मिति आसाढ कृष्ण पक्ष तिसी ३

गुरुवार सर लि० दानविजय मुभटपुर मध्ये ।”

ग्रन्थ से अनेक प्रकार की स्पुट जानकारी मिलती है।

इसकी लिखावट सुन्दर है, ग्रन्थ कृतिया किसी अथ व्यक्ति के हाथ से बाद में लिखी गई हैं। ग्रन्थ पर गत्ता चढ़ा हुआ है।

१११ गीत कवित्त वात सग्रह

१ गीत कवित्त वात सग्रह, २ जो० व० सग्रह, ३ १३०, ४ १७५ २३ सेमी०, ५ १६४, ६ ८-११, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, जणीयण ग्राम (जोधपुर), ८ आसिया बुधा आदि, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रारम्भ में गोरखनाथ के कवित्त (गाढण केसवदास कृत) दिये हैं। पत्र खण्डित होने से यहाँ दूसरी कृति का प्रारम्भिक अंश दिया जा रहा है—

गीत ध्यास तेजकरण री -

‘ सिरै अक्ल अणधाम दरीयाव जोडे सदा

प्रगट जग जणइ चहु पासा ॥१॥”

ग्रन्थ में सग्रहीत अथ कृतिया निम्नलिखित क्रम से लिपिबद्ध हैं—

- (१) निसाणी रायपुर सरदारो री
- (२) गीत बगडी रा सिरदारा री
- (३) गीत ठाकुर भमुतसिध री बुधजी री कह्यो
- (४) छद सूरजजी री मोतीसर कानाजी री कह्यो
- (५) रूपदीप छद
- (६) रतना हमीर री वात
(प्रारम्भ—कुसम तथा सरपाच कर, जग जिण लिनो जीत)
- (७) गीत ठाकुर देवीसिंह री
- (८) गीत आढा बनजी री
- (९) गीत चामू रा सिरदार लछमणसिध री ब्याव रा भाव री, बुधजी कहै
- (१०) गीत कविराज वाकीदास री
- (११) गीत साढेराव रा सिरदारा री
- (१२) गीत बारठ केशरीसिध रा कह्यो
- (१३) गीत आसोप रा घणी री बुधजी कृत
- (१४) गीत आलणीयावास री सिरदार मजीतसिंह री

- (१५) गीत बलवतसिंघ री
 (१६) निसाणी जमलमेर री अघूरी अठं लिपी
 (१७) रनना हमीर री बात लिपतु बुधा ग्रामिया गाम जाणीयाणा मे
 (१८) गीत मोतीसर प्रभुदान री
 (१९) गीत मवाईसिंघ री
 (२०) गीत बलवतसिंघजी महाराज री ग्रामिया युधा वही

बाकीदास के भाई युधा की अनक टृतिया इसम है। महाराजा भानसिंह कालीन राजस्थानी साहित्य और विगिष्ट व्यक्तियों के अध्ययन के लिये ग्रथ विशेष उपयोगी है।

इसके अतिरिक्त कुछ त्रिना गीपक के गीत, कवित्त आदि कृतिया लिपिवद्ध हैं। ग्रथ अनेक व्यक्तियों द्वारा लिया गया है। ग्रथ पर गता नहीं है।

११२ फुटकर रयात बात सग्रह

१ फुटकर रयात बात सग्रह, २ जो० क० सग्रह, ३ ७७, ४ ३० ५ × २१ सेमो०, ५ ३७४ ६ १६-१९ ७ १९वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत ग्रथ म उदयपुर, जोधपुर, जसलमेर इत्यादि राजस्थान के राजवाडा के ज्ञानका एव सरदारों के अतिरिक्त दिल्ली के बागहा की अनेकानक फुटकर बात लिखी हुई हैं।

प्रारम्भ—

‘ श्री गणेशायनम जूनी बात हिंदुआ री लिपी
 हिंदुआ का देव गगा सुरज, जसवतसिंघ कही
 गारघन कही, दरबारी काणी जाय आदि ।’

बाता के अतिरिक्त कुछ कवित्त दोहे भी न्थि है। इस सामग्री से अनेक प्रकार की उपयोगी जानकारी मिलती है।

ग्रथ अनेक व्यक्तियों द्वारा लिपिवद्ध है, लिपि असुद्ध है, कपटे का गता चडा हुआ हैं।

११३ रयात बात वीर गीत सग्रह

१ रयात बात वीर गीत सग्रह, २ जा० क० सग्रह, ३ ४४, ४ ३१ × २३ ५ सेमो०, ५ २१४, ६ १३-१५, ७ १९वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० इस रयात मे राजस्थान के

राजाओं एवं सरदारों से सम्बन्धित अन्यान्य ऐतिहासिक छोटी-मोटी बातें लिपिबद्ध की गई हैं। ग्रन्थ का प्रारम्भ चापावत दत्तपत गोपालदास के प्रस्तावित गीत से हुआ है।

गीत चापावत दत्तपत गोपालदासोंत री -

प्रारम्भ—

“माहवतपा सू छळ मार व माभी

भार सार आवरै भनै

दलसिध वली आरियो दुजडा

दोमभ वाज जिहाज दल ॥१॥

ऐतिहासिक बातों के अतिरिक्त विविध सरदारों के वीर गीत, रतौ पीगलसी के नई सर्वेय, बाकीदास कृत ‘मान जसो भइए’, रावळ हरराज के कवित्त इत्यादि कृतिया संग्रहीत हैं। इस ग्रन्थ में अनेक प्रकार की उपयोगी जानकारी मिलती है।

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। अक्षर मोट हैं पर सुन्दर नहीं हैं। बहुत से पत्र खाली पड़े हैं।

११४ छद प्रबध

१ छद प्रबध, उदैचद २ जो० क० संग्रह ३ १२, ४ ३३×
२४ नेमी०, ५ ४२, ६ १८ २०, ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध ८ अज्ञात,
९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रारम्भ में बिना शीपक की कुछ कृतिया छ
शास्त्र व यथ-मत्र सम्बन्धी है। बीच में छद शास्त्र से सम्बन्धित कृति छद प्रबध
(उदैचद कृत) लिपिबद्ध है। इस विषय की जनक तालिकाएँ भी दी हैं।

प्रारम्भ—

“श्री गणेशायनम श्री सरसत्यनम अथ भडारी जी श्री उदैचदजी कृत यथ
छद प्रबध री सिलुज लिपित अथ पुलताद मात्र सजा दाहा ।”

यह कवि महाराजा मानसिंह जाधपुर का समकालीन व आश्रित राज्याधि-
कारी था। तत्कालीन काव्य शास्त्रीय परम्परा का इससे बोध होता है।

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। लिपि साधारण है।
गता नहीं है।

११५ दूहा सग्रह आदि

१ दूहा सग्रह आदि, नखद, रतनू डूगरसी आदि, २ जा० क० सग्रह, ३ ५०, ४ ३२×२३ सेमी०, ५ ३१, ६ २०-२२, ७ १८वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, पटनागरी, १० प्रस्तु प्रथ में जोधपुर के कुछ विविष्ट व्यक्तियों की प्रणाम में दाहे संग्रहित है। विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ दूहा गजसिंघ रा पडोया नखद रा कह्या -

प्रारम्भ—

सरसति वारणी मुवणि रम उवति दीयो अनबध
ज्या मत सार वरणावी मूर तणी गज वध ॥१॥

२ दूहा दूपा महेराजोत रा रतनू डूगरसी रा कह्या -

प्रारम्भ—

मूर न असुर ससार जुग च्यू ह लगै पैठा जुघै
जैत दूध णकड ।

(१३१ दोहे)

६ जमल बीरमदेउत रा रतनू डूगरसी देवाउत रा कह्या -

प्रारम्भ—

मुभृत मुल तणह उगते हीदूरी तण
वळीया मुहपानै वपत ॥१॥

(१६८ दोहे)

४ बीरमदे दूदावत रो गीत -

प्रारम्भ—

धर वेध नवे गढ बीरम घूरा अणै मेछ अकारा
मानीमौ ज्यार थी मुप मालै ॥१॥

इसके अतिरिक्त राव सलखा, राव चूडा, राव टीडा आदि के प्रचलित गीत लिपिबद्ध हैं।

मूल ग्रन्थ की लिपि सुन्दर है। पत्र काफी जीरा है पत्र क्षुप्त होने से ग्रन्थ अपूरा है। इसकी काव्य-वृत्तियाँ प्राचीन हैं जो कि राजस्थानी साहित्य के इतिहास के अध्ययन के लिए बड़ी उपयोगी ह।

११६ वीर गीत कवित्त संग्रह

१ वीर गीत कवित्त संग्रह २ जो० व० संग्रह ३ १४, ४ २६×
१८ सेमी०, ५ १२४, ६ २०-२३, ७ १९वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८
अज्ञात, ९ राजस्थानी, दवागरी, १० प्रारम्भ म रायपुर क ठाकुर रूपसिंह
की १२ भूमाल छदा की कविता उनकी प्रशंसा मे प्रकित है ।

भूमाल ठाकुर रूपसिंह (रायपुर) की -

प्रारम्भ—

॥ श्री माताजी सत छै ॥

श्री गुरोसायनम ग्रथ भूमाल ठाकुरा श्री रूपसिंहजी री लिखत—

श्री गुरूपत दीजौ सुमत, नमू पगा सिवाव,

रूपो कमधज रायपुर, वीरातन जग वद ।

॥१॥

इसके अतिरिक्त खेड क राठौड शासक मल्लीनाथ, रामदव तवर, पाबूजा व
भेरुजी इत्यादि विशिष्ट व्यक्तियों की नीसाणिया व भूमाल गीत दिये हैं । एतिहासिक
प्रशस्ति गीता का भी अच्छा संग्रह है । यह ग्रथ देवोपम पूज्य व्यक्तियों के प्रति
भावनाओं की जानकारी देता है । इन व्यक्तियों ने अनहित के अनर्थ काय किये थ ।

ग्रथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है, लिखावट साधारण है । अत
मे कुछ पत्र रिक्त पड़े ह ।

दूसरा अध्याय
भक्ति व दर्शन

११७ पद मुक्तावली

१ पद मुक्तावली, २ रा० प्रा० वि० प्र० ३ १८८२, ४ २६५
१६५ सेमी०, ५ १२२, ६ २१-२२, ७ वि० स० १८१६, ई० सन् १७६२,
जयपुर, ८ नाथुराम, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० भक्ति सम्बन्धी अनेक
पद (राग सहित) इत्यादि लिपिबद्ध है। प्रारम्भ के १६ पत्र सुप्त है।

प्रारम्भ—

॥ राग सारंग ॥ जय लिपत सग हरि जननि
अल्हाद कर परम रिष्यात त्रे लोके राजे ॥१॥

प्रस्तुत ग्रंथ जयपुर नरेश माधोसिंह के राज्यकाल में लिपिबद्ध किया गया।

पुष्पिका—

इति श्री पद मुक्तावलि संपूर्ण ॥ सवत १८१६ का शके १६८४ प्रवतमाने
मासोत्तम मासे फालगुन मासे कृष्ण पंचे तिथी ॥ भोमवातरे

लिप्यक्रता महामा नाथुराम ॥

लिप्यायत ठाकुर श्री सोभागसिंहजी ॥ सवाई जयपुर मध्य ॥ माधोसिंह राजे ।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के द्वारा लिखा गया है, लिखावट सुन्दर है। लिखावट में
लाल स्याही का भी प्रयोग किया है। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है। पत्र सुप्त होने से ग्रंथ
अपूर्ण है। मध्यकालीन संगीत के अध्ययन हेतु उपयोगी है।

११८ भक्त माल

१ भक्त माल, नाभाजी (नारायणदास) २ पु० प्र०, ३ २-
४ २२५ × १८५ सेमी०, ५ १८०, ६ १८, ७ वि० स० १८३५

सन् १७७८ ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें अनपानेक भक्ता सम्बन्धी जानकारी दी गई है।

प्रारम्भ—

“श्री वृष्णयनम श्री गुरुवेनम अथ भक्तमाल टीका सहित लिप्यते टीका करता को मंगलाचरण तथा आग्या सिस्यन ॥ कवित्त ॥

महा प्रभु वृष्ण चैतय मन हरण जू के चरण को घ्यान मरे नाम मुप गाइये ताही समय नाभाजू ने आगा दर्ई लई धारि टीका विस्तरि भक्तमाल की सुनाइये”

भक्तमाल म अजामल, हनुमान विभिषण, सवरी गणपति, जटाय, अक्षरीक, विदुर, सुदामा, चंद्रहास, समुदाय, कुन्ती, द्रौपदी, बालमोक, रुक्मागद, विध्याबलि, रतदेव, गुहराम, परीक्षित, सुखदेव, प्रह्लाद, निवादित्य, रगदेव, गणानिदेव, तिलोचन, श्री वल्लभाचाय, कुल सखर, पुरपोतम करमावाई, उमवाई, मुवन चौहान, कमधुज, जमल, श्रीधर, निह किचन, गोपाल, रामदास, हृददास, जसू स्वामी, अलूजी, वार मुषी, नित्यानद, प्रभु चैत य महा प्रभु, गोपाल, भट्ट गुसाई, अलि भगवान, वीठल विपुलजी, लोकनाथ गुसाई, मधु कासीचूवर, श्रीजी, राका पति, बाका, लडु भक्त, तीलोक सुनार, प्रताप रुद्र, गजपति, गोविन्द स्वामी, गुजामाली, नगेस देरानी, नरवाहन गोपाल भेला, करता नेद, नारायणदास प्रवाधानद सरस्वती इत्यादि अनेक भक्ता का वक्तात दिया है।

अन्तिम भाग—

काहू केवल जाग जिग, कुल करनी की आस
भक्त माला अजर उर वसो नारायणदास ॥२१४॥

॥ इति श्री भक्तमाल श्री नारायणदास कृत मूल समाप्त ॥

पुष्पिका—

इति श्री भक्तमाल भक्ति रस बोधनी टीका संपूरण
सवत १८३५ वरस सावण वदि । भृगुदासरे लिपित्वा मिद पुस्तक ॥शुभ॥

अथ एक ही व्यक्ति के हाथ से सुन्दर अक्षरों में लिखा गया है। कागज हाथ के बने प्रतीत होते हैं। अथ पर कपड़े का गत्ता मटा हुआ है।

मध्यकालीन भक्ति साहित्य तथा धार्मिक आन्दोलन के इतिहास के लिए अथ बहुत उपयोगी है।

११६ भक्त माल^१

१ भक्तमाल, राधादास, १ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ २८०००, ४ १३ × ३० ५ सेमी०, ५ १७१, ६ १३, ७ वि० स० १६०४, ई० सन् १८४७, रामगढ़, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत भक्त माल के रचयिता दादू पथी राघोदास है। इसमें वैष्णव भक्तों के पश्चात् सयासी, जोगी, जैनी, बौद्ध, यवन, फकीर, नानकपथी, कबीर दादू निरजन आदि सम्प्रदायों के भक्तों का उल्लेख है।

प्रारम्भ—

“श्री रामजी सत्य श्री दादूदयालुजी सवाई श्री सत भक्तय नम ।

ग्रन्थ श्री भक्त माल टीका सहित लिपत श्री राघवदास कृत टीका करता के मंगलाचरण सायी—

गुर न सजन सारदा होर कवि सब दिन पूजि
भक्त माल टीका करी, मटिहू दिल को दूजि ॥१॥

पुष्पिका—

इति श्री भक्तमाल की टीका संपूरण समाप्त ।

लिपत सुभ सधान रामगढ़ मध्ये

मुकल पक्षे तिथ भादव सुधि पंचमी मंगलवार । सवत १६ ॥४॥

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है। लिखावट सुन्दर है पत्र सब खुले हैं।

यह ग्रन्थ भारत के भक्ति आन्दोलन तथा दशन व साहित्य आदि के अध्ययन के लिए उपयोगी है।

१२० अवतार चरित्र

१ अवतार चरित्र, बारट नरहरदास, २ रा० शो० स०, ३ ४६, ४ ३८ × ३३ सेमी०, ५ २१६, ६ ३८, ७ वि० स० १६११, ई० सन् १८५४, ८ सुबचद, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत बृहदाकार ग्रन्थ २८ अवतारों से सम्बन्धित है। इसमें विभिन्न अवतारों की कथाएँ काव्य-रूप में

१ प्रकाशित स० अमरचम नाहटा रा० प्रा० वि० प्र० जाधपुर

वर्णित है। इस ग्रन्थ का किसी समय राजस्थान में बहुत प्रचलन रहा है या कि यहाँ धार्मिक आस्थाओं के अध्ययन के लिए उपयोगी है।

प्रारम्भ—

उत्तम श्री सरमवन्द्य श्री सन्मुख्यात्म, नमः, श्री महतेनमः, धृद सात्त्व
मुदाट्ट प्रचट

या धवलगिरि याम वेय बरणी हसवर वाहिनी

या धवल अयतस प्रस अमल कर धीन वाणी वरा ॥१॥

पुष्पिका—

'इति श्री चौबीस अवतार चरित्रे महा मुक्ति मार्गो भाषा भारत नरहरदामेन
विरचित श्री विजय अवतार गीता संपूर्ण सवत १९११ वर्षे सात्रे १७६५ फाल्गुन
मास कृष्ण पक्ष त्रितीये अष्टमी = शनीवासरे लीपित माहत्तमा परतर गद्य १०
पुष्पचद लिपि ठाकुर राज श्री १०८ श्री होमतमिधजी पाठनाय पाप भाटी
उरजनात पाट गाव पजडली ।'

ग्रन्थ एव ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है, लिपि सुंदर है।
लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। पत्र कुछ चिपके हुए हैं। ग्रन्थ पर बपड़े का
गत्ता चढ़ा हुआ है कुछ पत्र रिक्त पड़े हैं।

१२१ परची संग्रह

१ परची संग्रह अनंतदास, सुखराम, परमानंद, २, रा० प्रा० वि० प्र०,
३ १२५८५ ४ १९५ × १५ सेमी०, ५ ३६०, ६ ११-१३ ७ वि०
स० १९२७, ई० मन् १८७० बदतौर = धारतराम, शिष्य सुलभगम, ९
राजस्थानी देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रन्थ में अनेक सता का जीवन वक्त सकलित है
जिनमें भक्तों की जीवनी इत्यादि पर प्रकाश डाला गया है। परचिया का विवरण
क्रम इस प्रकार है—

- (१) पीपाजी की परची (अनंतदास कृत)
- (२) बबीरदासजी की परची (अनंतदास कृत)
- (३) रैदासजी की परची (अनंतदास कृत)
- (४) तिलाकचंदजी की परची (अनंतदास कृत)
- (५) नामदेव की परची (अनंतदास कृत)
- (६) मलुकदासजी की परची (परमानंद कृत)
- (७) उदैगिरजी की तथा किस्तुरा बाई की परची (सुपसागर कृत)
- (८) राता बाई की परची (सुपसागर कृत)

- (६) फूली बाई री परची (सुपसारण)
 (१०) करमेती बाई री परची (सुपसारण कृत)
 (११) करमा बाई री परची (सुपसारण कृत)
 (१२) सिवरी बाई री परची (सुपसारण कृत)
 (१३) मीरा बाई री परची (सुपसारण कृत)
 (१४) मुगता बाई री परची (सुपसारण कृत)
 (१५) मेउ समन री परची (अनतदास कृत)

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति व हाथ से लिखा गया है, लिपि सुवाच्य है। ग्रन्थ पर सुन्दर कपड़े का गत्ता चढ़ा हुआ है। अतः म कुछ पत्र रिक्त पड़े हैं, पत्र बारीक व पीले रंग के हैं। कुछ पत्र चिपके हुए हैं।

यह मध्यकालीन धार्मिक सम्प्रदायों के प्रचार तथा भक्तों के जीवन के अध्ययन के लिए उपयोगी है।

१२२ श्री कृष्णजी की बारे मासा पोशाकें

१ श्री कृष्ण की बारे मासा पोशाकें, २ रा० शो० स० ३ ७३२२, ४ २० × १६ सेमी०, ५ २५ ६ २४-२८ ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अनात, ९ व्रज मिश्रित राजस्थानी देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रन्थ म भगवान् श्री कृष्ण के प्रत्येक मास और प्रत्येक दिन की पोशाकों के वृत्तांत के साथ विशेष उत्सव के दिन पोशाक आभूषणों इत्यादि का वृत्तांत है। ग्रन्थ अपूर्ण है। ग्रन्थ का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ है—

॥ गडील उ दाहरी एक पला की एक मोती की।

आगे माघ वदी ६ के दिन पोशाक आभूषण इत्यादि का वृत्तांत इस प्रकार दिया गया है—

॥वागा बनारसी पीले रूपे री बूटी को घेरदार। पटका लाल दुरगी बेलदार पाग पीली छाजेदार। ता पर कलगी पर चद्र का लीलम के डाक को डोरा मोती की लडी को करन फूल अकेरे। आभरन को जोड लीलम की। सीगार हलको मोजा वागा जैसे। गदल पचरगी बेलदार बलहमजी के टोप पीले अतलस की।

अन्तिम भाग—

‘काति सुद १० वागा गुलाबी तास के घेरदार पटका पीले तास को चीरा गुलाबी तास। कलगी पर चद्र का डोरा पन्ना के बडे। करन फूल अकेरे आभरन पन्ना के हार १ माला १ पदम केठी काके लोल कदी।’

ग्रन्थ के पत्र लुप्त होने से अपूर्ण हैं। एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध है। लिखावट साधारण है। वस्त्र व अलंकरण सम्बन्धी जानकारी हेतु उपयोगी है।

तीसरा अध्याय

अश्व एव गज चिकित्सा

१२३ गज चिकित्सा

१ गज चिकित्सा, मीरा बुला ० रा० प्रा० वि० प्र०, ३ ३७०३५,
४ १८ × १७ ५ सेमी० ५ २११, ६ १० ११, ७ वि० स० १७७५, ई०
सन् १७१६, ८ मीरा बुला, ९ गजस्थानी दवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ
हाथिया के विविध रागा व चिकित्सा सस्त्र धी है।

प्रारम्भ—

‘सवत १७७५ मीती असाठ सुदी १२ मंगलवार श्री फरकसर प्रवीन दीली
सुर ठाले ॥’

प्रारम्भ म लिखा है कि यह ग्रथ बादशाह फरकशियर क समय लिखा गया।
उस समय बूदी मे रावराजा बुधसिंह ये तथा तत्कालीन सैयद अहमदफौलजाह
हाथियो क पीर के नुस्खे मीरा सहवाज जाति भाटी के शिष्य मीरा बुला ने लिखे हैं।

प्रस्तुत ग्रथ मे हाथिया क विविध रागा उनके देशी औषधियो हाथिया को
लडाते समय उनको मस्त करने तथा मद उतारन की विधियाँ दी गई हैं। इसमे
एक विशेष बात यह है कि तत्र मात्रा स हाथिया क रोगा के इलाज इत्यादि का
वृत्तात भी है।

मूल ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रथ पर
गता नही है। पशु चिकित्सा शास्त्र की दृष्टि स यह बडा महत्वपूर्ण है।

१२४ घोडो री सालोत्र, कवित्त दोहा आदि

१ घोडा री सालोत्र, कवित्त दोहा आदि गोविंददास, २ रा० घो० स०,
३ २६७५ ४ १४ × १० ५ सेमी०, ५ ११६, ६ १८ १७ ७ वि० स०

१७७८, ई० सन् १८१७ ८ अनाम, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० विवरण
क्रम इस प्रकार है—

घोड़ों की सालोत्र -

प्रस्तुत ग्रन्थ घाणा की चिकित्सा से प्रारम्भ हुआ है। मत्र प्रथम बतनाया
गया है कि पहले घोड़े आकाश में उड़ते थे उनके पर होते थे—

प्रारम्भ—

“श्री गणेशाय नमः श्री गुरुभ्ये नमः ग्रन्थ मानोत्तर सास्त्र लिप्यत।
पहिला घोड़ा र पास हूती आकास उच्यता इन्द्र र हुक्म मे सालोहात्र रिप स्वेल री
पास काटी तरं बर दीघी नोका माहि वारी पूजा होसी, पहिली पगे लागसी पछे
उपर चरमी। तठा ती सालह हजार ग्रन्थ अस्व चिकित्सा नकुल पाडव प्रगट कीया।”

इस प्रकार आग के बत्तान म घोड़ा की चार जातिया ब्राह्मण क्षत्रीय, वैश्य,
और मुद्गर बतलाय है। प्रच्छ घोड़े व खराब घोड़ा के लक्षण बतलाये हैं, तत्पश्चात्
घोड़े के रंग (मफेद, लाल, पीला मृगवरण, कतीला नीला और काला) बतलाये
जिनमें सफेद रंग का घोड़ा सबसे उत्तम माना गया। घोड़े की बनावट (कान,
पिंड, मुप, दांत, पूछ) पर प्रमाण डालते हुए भवर की स्थिति का भी ज्ञान
करवाया गया है। आग बत्तान म दांता का देखकर घोड़े की उम्र का पता लगाने का ज्ञान
करवाया गया है। आग यह भी लिखा है कि घोड़े की देखभाल किस प्रकार करनी
चाहिये और जतन म घोड़े की विभिन्न रीमारिया और उसकी चिकित्सा का
उल्लेख है।

‘घोड़ा री चिकित्सा कही। घोड़ा रा जाकार कहा। बले भमरा साप
जाणवी। भली बुरी पिछाण लीज इति श्री घोड़ा री सालोत्र सपरण म० १८७४
रा द्वितीयक श्रावण वद ५ दिने-भूय वामर।’ (पत्र-८)

प्रारम्भ—

“जोघाणा जसवत हूती राजा अबतारी।
श्रेह वात ठाकुरा लपी, लीपी सो हुई परारी।।”

अन्तिम भाग—

‘हिरणाकुस भवरग, इता दुप दीयो अबतर
सकट भगता सयी प्रजा पहीला जस तपी पर।
अजीर्तसिध भगत तारण अबै वमघ कीर्ज विलब किम
भला धम पाड प्रगट भयो तु साही बनर सघ तिम।’

(पत्र-३३)

इसके अतिरिक्त ग्रन्थ में श्वेत शास्त्र, फसल पंदावार विचार, मंत्र-तंत्र, विहारी के दोहे, श्रौचदा का नुसपा इत्यादि कृतियाँ संकलित हैं। ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथों से लिपिबद्ध किया गया है, ग्रन्थ पर गता नहीं है। वहीं-कहीं पर अक्षरा की स्याही उड़ गई है। लिपि सुवाच्य नहीं है।

१२५ ईलाज हाथी की

१ ईलाज हाथी का, २ रा० शो० स०, ३ १४०८२, ४ १६८५
१४ सेमी० ५ १११, ६ १५-१७, ७ वि० स० १८७६, ई० सन् १८२२,
८ धारता राम, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रन्थ हाथियों की चिकित्सा सम्बन्धी है।

प्रारम्भ—

“श्री गणेशसाह नम ईलाज हाथी की आविद बाल पर हुई गरमी का डलका बेहता तो प्रतीक जोपिद—

बबुल का पात टाक अढाई २॥, अफीम टाक २॥, हलदी टाक अढाई २॥, अजु टाक अढाई २॥, पोसत टाक अढाई २॥, जीरो टाक अढाई २॥, आदि।’

इस प्रकार हाथी के अनेक अवयवों के रागा एवं उनकी चिकित्सा का विवरण दिया गया है।

पुष्पिका में लिखा है—

“इति श्री पोथी हाथियों के इलाज की सम्पूर्ण श्रुत्य दसपत धारतरोम पीडु का मिति प्र० आसोज सुदि ६ स० १८७६।”

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रन्थ पर गता नहीं है।

१२६ शालि होत्र

१ शालि होत्र, पाठक नकुल, २ रा० शो० स० ३ ६१६२, ४ ११५
× २४५ सेमी० ५ ३६, ६ ११ ७ १६ वी शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात,
९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रन्थ अश्व चिकित्सा सम्बन्धी है।

प्रारम्भ—

“॥शालिहोत्र रहस्य ॥ जे घोडउ अगु ताणो तो गोपक नु मूल दूध सिउ दीजे भलु हूइजे, घोडा ने भमहि मुजह अग मोडे चू मृगावत सुभ लक्षण जाणवो तो पीपर वेसण घृत सु दीजई ।’

इस प्रकार घोडों के विभिन्न रोग और उनकी चिकित्सा हेतु किमे जाने वाले उपायों व औषधियों का वृत्त है।

पुष्पिका—

“इति श्री नुक्ले पाठव कृत (सालहोत्रा)”

यह ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है।

१२७ घोडों की चिकित्सा तथा अश्व पिछाण आदि

१ घोडों की चिकित्सा तथा अश्व पिछाण आदि २ रा० शो० स०, ३ २८७, ४ १५५ × २० सेमी०, ५ १२२, ६ १५ ७ १६ वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रन्थ के अधिकांश पत्र खुले हैं, प्रारम्भ में हितोपदेश सब धी क्रियायें वर्णित हैं। अतः में घोडों की चिकित्सा सब धी कुछ नुस्खा के अतिरिक्त अच्छे बुर घोडों की पहिचान सब धी वृत्त दिया है। (घोडों के रंग के अनुसार नाम व पहिचान)

प्रारम्भ—

“घवळो वरण सपरौ हसरान कहीज, वरण पीळो पग धारै घवळो सफेद नैत्र तिको घीडो चक्रवाळ कहीजो। राजा जोप उत्तम मुप चद्र काति वरण जाबू सारीपी पग ज्यारे सफेद तिको घोडो भमर राक्षस कहीजै। उत्तम जाडी घवळो कान पग काळा ता जमदूत कहीजै। हसो बूरा आदि।”

अन्तिम भाग—

‘ घोडा की त्रिकला कही घोडा रा आकार कह्या, वळे भमरा सोप जाणवी ओपद देणा, भलो बुरो पिछाण लिजे। इति श्री यसता गम तू सत। अश्व पिछाण पुस्तक संपूर्ण श्री ।’ (पत्र-२२)

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य है। कुछ पत्र किनारों से खडित हैं।

१२८ हाथियों की सालिहोत्र

१ हाथियों की सालिहोत्र, २ रा० शो० स०, ३ १४० × ३, ४ १४ × ११५ सेमी०, ५ ८७, ६ ६-१२, ७ १६ वीं शताब्दी का मध्य, ८, अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रन्थ हाथियों की चिकित्सा सब धी है।

प्रारम्भ—

‘इलाजी हाथी मोटा बरवा का हीगोटा की छाल कूट कर घोडा के पेसाब में छोडे, पीछु पीलाव, बडा हाथी कु पेसाब पीलावे रोज तो मोटा होई आदि।’



इस प्रकार हाथियों के इलाज सम्बन्धी १२८ नुस्खे संग्रहीत हैं।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है। ग्रंथ में बीच के ८ पत्र लुप्त हैं। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता मढ़ा हुआ है।

१२९ घोड़ा री सालोतरी

१ घोड़ा री सालोतरी, २ रा० शो० स०, ३ २८२, ४ १५ × १० ५ सेमी०, ५ १४, ६ १४-१६, ७ १६ वीं शताब्दी का मध्य, ८ अनात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रंथ में घोड़े की चिकित्सा सम्बन्धी वर्तित है। प्रारम्भ में घोड़े के शुभ अशुभ भवरे का ज्ञान कराया गया है।

प्रारम्भ—

“॥ अथ घोड़ा री सालोतरी लप्यते ॥ श्री ईश्वरी जी सहाय छ जी ॥ भमरे री पोट जाण जी। जिण घोड़ा री निलाडी १ भमरो हुवे त अश्व घषा सुभ। जिण घोड़ा री निलाडे दोय भमरा हुवे जाडे रा तो चद्र मुरज कहीजे तो सुभ करे जिण घोड़ा री निलाडे तीन भमरा हुवे ते त्रिकुट बहीजे ते घोडो सदा दुप दोये असुभ। जिण घोड़ा री निलाडे च्यार पाच भमरा हुवे तो सुपदायक कहीजे पुत्रे परिवार सुप करे। सग्राम माहे जस करे आदि।”

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध हुआ है। लिपि सुवाच्य है। अंतिम कुछ पत्र खंडित व लुप्त होने से ग्रंथ अपूर्ण है।

१३० शालीहोत्र, वीर गीत संग्रह

१ शालीहोत्र, वीर गीत संग्रह, आसीया भुमान लाळस सबळा आदि, २ रा० शो० स०, ३ ८१८९, ४ १२ × १५ ५ सेमी०, ५ ९२, ६ १०-१२, ७ वि० स० १८९१-१९०२, ई० सन् १८१६-१८४५ आगोलाई, बाघावाग, ८ विनेचद ९ राजस्थानी देवनागरी, १० विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ शालीहोत्र -

प्रस्तुत ग्रंथ की यह प्रथम रचना है इसमें घोड़ा के चिकित्सा सम्बन्धी वर्तित है, जसा प्रथाक २९७५ में है। इसका प्रारम्भ भिन्न है।

प्रारम्भ—

“प्रथम रवतजी री उत्पत्त कहै छै, आदि ब्रह्मा। तिणरी चूडो तिको पोत दिन प्रतै जप होम कर एक दिन री समै होम करता आदि।”
(पत्र-२३)

२ चूडा री गीत

३ गीत राणा अजयसीधजी रो (आसिया गुमान कृत)

४ गीत राणा अजयसीध रो (लाळस सबला कृत)

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है। ग्रन्थ के बहुत से पत्र खाली पड़े हैं, कुछ पत्रों में लिखावट पेनसिल से है, जो पढ़ने में नहीं आती। ग्रन्थ में इसके अतिरिक्त हरीरस का एक दशक व रामायण और भागवत इत्यादि कृतियाँ संकलित हैं। पत्र संख्या २ के पश्चात् ५ पत्र गायब हैं।

१३१ हाथी की सालोतर

१ हाथी की सालोतर २ रा० शो० सं०, ३ १४०८१, ४ २६ × १६५ सेमी०, ५ ३८, ६ २१-२६, ७ २० वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रन्थ में हाथी के विविध रोगों और उसकी चिकित्सा का वृत्तान्त दिया गया है। प्रारम्भ एक दूह से हुआ है।

प्रारम्भ—

‘श्री गणेशायनम अथ हाथ्या की सालोतर लीपत—

दूहा—

दाणा चारा पेटहई, माटी पाय चुरयत साप।

पसुधन रस उपावता, चगा कर जुदाय ॥१॥

हाथी पाव फेरै, दात नोटू (नख) फाट तो यह ईलाज करें—

कुटक पावडा मकर चीणी पावडा या दो या को कूचा करो पीलाव तो रस मुता नाव, पावे फेर ही, दात फाट नहीं, नटू फाटे नहीं आदि।”

हाथी की स्वस्थ रखने व माटा करने के लिये औषधियाँ आदि का उल्लेख किया गया है। अतः में विषय सूची भी अंकित है।

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से सुन्दर लिपि में लिखा गया है। लिपि में लाल स्याही का भी प्रयोग किया है। ग्रन्थ पर गत्ता नहीं है।

१३२ सालिहोन (प्रतिलिपि)

१ सालिहोन (प्रतिलिपि), येशफखानि, पंडित हरनाम द्वारा अनुवाद, २ पु० प्र०, ३ १३४३, ४ २१ × १६५ सेमी० (पु० तुमा), ५ ७६, ६ १७ ७ २० वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८ अज्ञात, ९ हिंदी मिश्रित राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत ग्रन्थ घोड़ों की चिकित्सा से संबंधित है। प्रारम्भ में बतलाया है कि अश्व चिकित्सा ग्रन्थ निर्माण की आवश्यकता किस प्रकार हुई—

“श्री गणेशायनम ॥दोहा॥

अल्प निरजन आप है और दूजा नहीं कोय ।

अपने आप उपाये से उन कीना सब कोय ॥१॥

॥ अथ सालात्र ग्रंथ अस्व वेध जाग सास्त्र लीपते ॥

अला ताला ने वही भेजी हजरत मुलेमान कू आप कासमीर सहेर बसावो तुमारे उपर पगवरि की मोहरवान हुई, जद हजरत मुलेमान बोले वहा की जमीन अच्छी नहीं है जद अलाताला न हुकम दिया के मरे दोस्त के वास्त फिलसतलेन की जमीन ले जावो जोसमे केसर पैदा होवेगी सबके बादसाह तुमेकू कीये और अस्य एक जोडा सवारी के वास्ते भेजा है अश्या ने हजरत मुलेमान से अरज करी जमीन के उपर राग बहुत सा है जद हजरत मुलेमान ने अश्य शानि कू बूलाये तीन किताब सालोत्र की बनाई हजरत मुलेमान ने हुकम दिया के घोडा की परा काटो जीससे उडा न जावे और बदी नहीं करे, जद अश्य शानि ने परा काटी और घाव आछा किया ।”

प्रारम्भ मे घोडो की ११० जानियो के नामोलिख, घोडो के रग, शुभ असुभ घोडे के लक्षण तथा विभिन्न रोग व उमके निवारण हतु अनेक औषधियो का विवरण दिया गया है ।

पुष्पिका—

‘येसफशानि जो ने कासमीर म ग्रंथ कीदा हजरत मुलेमान पगबर के बरत मे ग्रंथ बना छै ॥ ईति श्री पडित हरनाम आप की भासा म करके लिपा है राजा विक्रमजीत के पहिले कासमीर मे पडित हरनाम हुवा है ॥ ईति श्री सालोत्र ग्रंथ सपुरण ।”

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति द्वारा की गई है । ग्रंथ पुस्तकनुमा है ।

चौथा अध्याय

वैद्यक

१३३ वैद्य रत्न

१ वैद्य रत्न गोस्वामी जनादन भट्ट २ १० गा० म० ३ १०३७२
८ ११ × २६,३ सेमी०, ५ २७ ८ २०, ७ वि० म० १८६१ १० मन् १८०४,
८ कस्तूर चद ९ राजस्थानी चवनागरी, १० प्रस्तुत आयुर्वेदिक ग्रंथ दोहा तथा
छापया म वर्णित है ।

प्रारम्भ—

श्री गणेशाय नमः श्री सरस्वततनमः ग्रंथ निरूपित वैद्यरत्न

द्वारा—

नारदा विमे ठत जिन पारल विमद प्रकास ।

मारद विध वदन वने हिय मारदा वाम ॥१॥

अथ नाडी परीक्षा

द्वारा—

हाथ अगूठा निकट की नाडी जीवन मूल ।

तासु पडित नेह को जानो सुप दुप मूल ॥४॥

प्रारम्भ मे नाडी परीक्षा से विविध रोगा की जाच करने, फिर रोगा के
निवारण हेतु देशी औषधिया का प्रयोग करने का विवरण दिया है ।

पुष्पिका—

“इति श्री गोस्वामी जनादन भट्ट विरचिते भाषा वैद्य रत्ने सप्तम प्रकास ७

इति श्री वैद्य रत्न संपूर्ण ॥ स० १८६१ माह बदि ३ लि०प० कस्तूर चद
बिलाडा मध्ये ॥”

अथ एक ही व्यक्ति के द्वारा लिपिबद्ध किया गया है । पत्र सब खुले हैं ।

१३४ अमृत सागर

१ अमृत सागर सवाई प्रतापसिंह, २ रा० दा० स०, ३ ८६०६,
४ ८१५४ २८५ समी० ५ २४० ६ २३ ७ वि० स० १६१५ इ० स०
१८५८, जोधपुर ८ रघनाथ, ९ राजस्थानी, दक्कनागरी १० प्रस्तुत महत्वपूर्ण
आयुर्वेदिक ग्रन्थ जयपुर नरेश सवाई प्रतापसिंह द्वारा रचा गया है। इस बह्मणवार
ग्रन्थ का प्रथम पत्र च्युटित है।

प्रारम्भ—

“महाराज धिराज महा श्री सवाई प्रतापसिंह जी विचार करि मनुष्य
का रोग करिवावे वास्त परम करुणा करिवे आदि।”

सर्वप्रथम नाटी परीक्षा किम प्रकार की जाती है उस पर प्रकाश डाला
गया है। आगे विभिन्न रोगों और उनके निवारण हेतु किये गये उपाय, औषधियाँ
आदि का बखत विस्तार म है जिन्का विवरण—क्रम इस प्रकार है—

मूत्र परीक्षा, सुप्त परीक्षा, दूत परीक्षा (बन्ध को बुलाने वाला कसा व्यक्ति
हो), काल ज्ञान, औषधि विचार, देह विचार, कम विचार अग्नि बल विचार,
रोग की असाध्य परीक्षा, मन का रोग छोके रोकवा के राग, भूल रोकवा का रोग,
मीद रोकवा का रोग, सास रोकवा का रोग, उबासी रोकवा के रोग मन रोकवा
को रोग कामदय रोकवा का रोग, आठ प्रकार के ज्वर-इलाज, अतिसार रोग से
उत्पत्ति, इलाज पित्त का रोग, इलाज, कफ की सप्रणी की उत्पत्ति इलाज, बवासाँर
रो रोग, इलाज रोगा से उत्पत्ति, रक्तपित्त रोग लक्षण इलाज, उन्माद रोग उत्पत्ति
लक्षण, मिरगी रोग उत्पत्ति लक्षण जलन त्वचा सबंधी रोग, इसी प्रकार आगे को
और क्षय रोग जैसी अनेक विमारियों के विभिन्न लक्षण इलाज आदि दिये हैं।
अन्त म स्थियाँ के विभिन्न रोगों व उनके इलाज आदि का बखत है। इस प्रकार
अनेक विमारियाँ का विवरण दिया गया है।

पुष्पिका—

“इती श्री महाहाराजा धिराज महाराजा ज श्री सवाई प्रतापसिंहजा विर
चित्त नाम अमृत सागर नाम ग्रन्थ रीतु वसन रितु चर्या दिन चर्या ३ रात्रिचर्या
सरीर सब अंगा समुक्त वसन राम पंचवी सति मस्तरण २५ सपूर्ण अमृत सागर
ग्रन्थ सपूर्ण लिप्यन्त कुबार रघनाथ वास जोधपुर मध्य मोली रावणा से बात समत
१६१५ रा मिति अमाद सुद १०, बचनाथ पालाघत विरजा।”

यह ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य माट अक्षरा में है। ग्रंथ के पत्र मोटे हाथ के बने हुए प्रतीत होते हैं। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता चड़ा हुआ है। ग्रंथ के अन्त में सूची पत्र दिया गया है आगे कुछ पत्र खाली पड़े हैं। इस ग्रंथ में अनेक प्राचीन ग्रंथों का मार है।

१३५ अमृत सागर

१ अमृत सागर, सवाई प्रतापसिंह जयपुर २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ ६८३१, ४ २५ × १७ समी०, ५ ४६७ ६ २१ २४, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, दवनागरी १० यह ग्रामर नरेश सवाई प्रतापसिंह वृत्त आयुर्वेद से सर्व्या धन बन्ति रा० शो० स०, प्रथाक ८६०६ से मिलती जुलती है।

प्रारम्भ—

'श्री गणाधिपेयम अथ श्री ममहाराजा धिराज महाराज राज राजेन्द्र महाराज श्री सवाई प्रतापसिंहजी विचार करि मनुस्या का रोगा का हरि करि वाक् वास्ते परम कल्याण करि ।'

यह सवाई प्रतापसिंह वृत्त मूल ग्रंथ की प्रतिनिधि है। नवल पूरा न होने के कारण कृति अपूर्ण है।

अन्तिम भाग—

"इति लवगादिचूण अथवा मारवा अन्नक टका २। (सवा दो) भर भीमसनी कपूरमासा ४ दालचीनी मासा ४ दाल बिना का फूल मासा ४ पाव घाका फूल मासा च्यार ।'

मूल ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। प्रारम्भ में लिखावट महीन है फिर क्रमशः अक्षर माट होते गये हैं। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता चड़ा हुआ है। किसी दूसरे व्यक्ति के हाथ से सूची पत्र भी अंकित किया गया है।

१३६ वेद अमृत रस्य

१ वेद अमृत रस्य(रहस्य), २ रा० शो० स०, ३ ८३६८, ४ ३२ × २० ३ समी० (रजिस्टरनुमा), ५ ११२, ६ ३१ ३५, ७ वि० स० १९४५,

ई० सन् १८८८ में अत्रात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ में व्यक्ति की विभिन्न बीमारियाँ के निवारण हेतु देशी औषधियाँ का विवरण दिया गया है। वृत्तान्त गद्य पद्य में है। प्रारम्भ में नाडी परीक्षा का भाव कराया गया है—
प्रारम्भ—

अथ नाडी परीक्ष्या पुरमा दीपण हस्तस्य
सनीया वाम कान्तु अंगुष्ठा मुलगा नाडी,
परी पत भीषण्वर ।

औषधियों के अतिरिक्त अनेक बीमारियाँ के मन्त्रों के अतिरिक्त मन्त्र प्रत्येक मन आदि भी दिये गये हैं। यथा—

“दण्ड देस थी हनुमत आए सवा मण साकल ताडता आव, तर हणमत
वीर तरक से ना यहक, कारा वासिंग सार के पीछाण हनुमन की हाक भूत प्रेन
ज्याही गमडा रा मसाण रा चाटा रा समर रो पीर पगवर सलेमान सइ दइठाण
ससुभ चढाल्णी सुन जना कर उ ठ ठ ठ स्वाहा ॥ वार १०६ जाटा दीजे ।

अंतिम भाग—

“ सात जाड के पना फुल नागा कु चडाय पुजा कर, जल में उभा रहे
मन १०८ वर जप मीषा हाय । पीलसी धुप बतीसा पवणा ।”

यह ग्रथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। अन्त में कुछ पत्र रिक्त पड़े हैं। इसमें उस समय की मायताओं पर भी प्रकाश पड़ता है।

पाचवा अध्याय

ज्योतिष

१३७ मुहूर्ते मुक्तावलि

१ मुहूर्त मुक्तावलि, २ रा० गो० स० ३ १२६५ ४ ८४५
२४ ८ सेमी० ५ ६ ६ १२ ७ वि० स० १८१२, इ० सन् १७५५
८ दवेद्र, ९ सस्कृत, राजस्थानी, देवनागरी १० विवरण त्रम इम प्रकार
है—

प्रारम्भ—

‘श्री गणेशायनम श्री २१ श्री हर शारदा गणपति ॥१॥

टीका—श्री महा गणपतेयनम श्री गुरुयोग श्री कृष्णै श्री महादेव श्री
सम्बती नमस्कार कर गणेशान विधाता ३३ देवता प्रति ॥१॥’

दसम मुहूर्त सम्बन्धी सारी सामग्री है जिसमें विवाह, यज्ञोपवीत, गृहारभ,
ग्रहस्थापना, नवीन व्यापार, यात्रा आदि मुहूर्त के नक्षत्र, वार, तिथि, योग आदि
वृत्तत है। इस प्रसिद्ध ग्रन्थ की जनक प्रतिष्ठा मिलती है।

पुष्पिका—

‘इति श्री मुहूर्त मुक्तावलि संपूर्ण सवत १८१२ वर्षे मिति फागुण शुद्ध ६
दिन ।’

१३८ ताजिक सार

१ ताजिक सार हरिभद्र भट्ट २ रा० शा० म०, ३ १००२ ४ १०५
२६ ३ सेमी०, ५ ६८, ६ १५, ७ वि० स० १८३०, ई० सन् १७७३, जातार
८ अजीत विजय, ९ राजस्थानी, सस्कृत देवनागरी १० यह ग्रन्थ भी ज्यातिष
सम्बन्धी है।

प्रारम्भ—

“श्री गणेशायनम

श्री रामस्य पदारविद युगल नत्वाथ वागीश्वीरी हेरब तपना

दिक ग्रह ग्रण रुद्र

यशोदा सुत,

वक्षे ताजक सार मत्य सुगम रम्य सुबोध प्रद नाना

ताजिक तो विलोक्य रचित दैवक्ष ह्य प्रद ॥१॥”

इसमे मूल रूप से वषफल निकालने की विधि व ग्रहो का स्थान पर गुप्त फल देने वाला विचार प्रदर्शित किया गया है।

अन्तिम भाग—

‘ताजिक सार नाम वष फल ग्रथ कीधी हरि नामा

भट्टे विचित्र स्वध की बात कही मुगम प्रकार करी

ज्योतिपीया र अर्थत सापद्य श्लोक करी ॥३६॥”

पुष्पिका—

‘इति श्री हरि विरचितो ताजिक सारे दिन प्रवेश प्रकरण समाप्तम् सवत १८३० वर्षे शाके १६६५ प्रवत माने माघ मास कृष्ण पक्षे ३ त्रिज तिथी शनिवासरे श्री जालार गढ माहा दूरये श्री महावीर स्वामी प्रशादात् लिखिता अजित विजय ।”

प्रस्तुत ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुन्दर है। ग्रथ के पत्र खुले हैं।

१३६ रत्नमाला

१ रत्नमाला श्रीपति २ रा० शो० म० ३ ४४८ ४ १२८×
२४ सेमी०, ५ ४८ ६ १८२०, ७ वि० स० १८३७, ई० सन् १७८०,
८ किसनदास, ९ राजस्थानी देवनागरी १० प्रस्तुत ज्योतिष मन्त्रधा ग्रथ
काव्य रूप में है जिसकी टीका बाद में की गई है।

प्रारम्भ—

“श्री गणेशायनम

प्रभव विरति मध्या ज्ञान बध्या नितात विदित

परम तत्वा यत्र ते योगिनोपित्व ॥१॥

रत्ना माला की अथ मंगला नै समभूग रे काजै वात उण लियू छ तीर्य काल नू नमस्कार जाये काल रे उत्पत्ति विच नै हई कोई मागीश्वर तीन जाणै जिने योगीश्वर आत्मा रे तत्व जाणै छै पुण्य काल न ताणै इयँ ससार नौ निमित्त कारण छै ।”

इसमें यह बतलाया गया है कि शुभ अशुभ काय कब किस दिन, वार का करना चाहिये । यथा—

“इतरा काम भगलवार कीजे विही कामण सामाह भ्रसताप कीयी जाईज तां भगलवार कीजे, कूड रा काम कीजे विप रा काम कीजे, अग्नि रा काम विजे, हयोयार रे काम कीजे, कीणी रे घान कीजे सग्राम कपट कीज कटक रे मल्हाण कीज, पाणि रे काम सोना रूपा धातु रे काम, सानो घडाइजे, परबाली घडाइजे ए काम भगलवार कीजे इतरा काम बुधवारै कीज—चतुराई सीपीजे चौसठी कळा सीपीजे, घरा रा काम कीजे आदि ।”

अन्तिम भाग—

“श्री पति आचार्य मंगळी सभा माहि भला माणस हु कहै छै भाई कहना मिंग आज रा ग्राहण कीयी शास्त्र जाणै इति श्री जा० भापा टीका परम काडणिक दामोदर विरचित्ताया देव प्रनिष्ठा प्र० विसन म सपुण स० १८३७ फा० वद १३ वा० विसनदास लिपतु ।

अथ एक हा व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है । पत्र खुले ह ।

१४० मुहूर्त चिंतामणि

१ मुहूर्त चिंतामणि २ रा० घा० स०, ३ ११२३१, ४ १०५५
२१ सेमी० ५ ६४, ६ १०, ७ वि० स० १८५४ ई० सन् १७६७, जोधपुर
८ अनात, ९ सस्कृत, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रन्थ मे १२६ श्लोक मुहूर्त
सम्बन्धी सक्तित है । पहले गणपति व गौरी की स्तुति की गई है, फिर मूल कृति
का प्रारम्भ हुआ है—

श्री गणपत्ये नम

गौरी श्रव केतक पत्र भग माकृष्णव स्तन ददमुपाप्र

विघ्ने मुहूर्ता तल्लि द्वितीय देत प्ररो होहर तुहि पास्य ॥१॥

नदा च भद्रा च जया चरिक्ता पूर्णै तितिध्या श्लममघ्य

शामता

मित मित गमन समाप्त मास्यु सित भयोमार्कि गुरो

चमिघा ॥२॥

आजकल मुक्त आदि दखन का प्रचलन दिन दिन कम होना जा रहा है पर तुम यकाल में प्रत्येक कार्य मुक्त देख कर प्रारम्भ किया जाता था। अतः उन काल की मायताओं के अध्ययन की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है।

प्रस्तुत ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखित हुआ है। लिपि सुवाच्य है।

१४१ विवाह पडल

१ विवाह पडल, २ रा० गा० स०, ३ ६०१५, ४ १२५×
२७५ सेमी० ५ २१ ६ १८२१ ७ वि० स० १८६१ ८० मन् १८०५,
विलाडा, ९ उग्रचद, १० मन्वृत खनागरी १० विवरण राम इय प्रकार
है—

प्रारम्भ—

“श्री गणेशाय नमः ॐ ताराति पुरोहित हरि गते

मुझे मदे विता ॥१॥

ग्रथ—

श्री गणेश देव ने नमस्कार करी न विवाह पडल अर्थ ममन निपीये छ।
जभ कहता देख आरानि कहता उग्र तेहना पुरोहित व बृहस्पति हरि गत ॥१॥”

प्रस्तुत ग्रंथ में विवाह सम्बन्धी मुक्त आदि का उल्लेख है। इसमें ब्यापक
आठ वर पक्ष नाडी, दाप, पूजा गुण, ब्यापक का नेष्ट नक्षत्र आदि सभी प्रकार के
दापों का वृत्तान्त है।

पुष्पिका—

‘इति श्री कौल विचार संपूर्ण एत श्री विवाह पडल संपूर्ण सवत १८६१
रा मति फागुण यदि १२ उग्रचद विलाडा मध्ये संपूर्ण शुभ मवतु कल्याण स्तु
राशो ग्रह। मन् ॥”

ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। पत्र मुने हैं।

१४२ लग्न पत्र

१ लग्न पत्र, २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ ३१७३०, ४ १०५×
२५५ सेमी०, ५ २, ६ ८१० ७ वि० म० १८७६, ८० मन् १८२२,

८ रामदास, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० इन पत्रों में जोधपुर, जालोर, नागौर, पोकरण नगरों के अक्षांश पर लगन निकालने की प्रक्रिया अंकित है।

पुष्पिका—

‘स० १८७९ वर्षे वैशाख सुद १५ पूज्यजी श्री १०८ महा कू श्री मानजी जी साहिब तन् सिध्य व रामदास लिपत।’

एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध है।

१४३ नार चद्रिका

१ नार चद्रिका नार चद्र, २ रा० गो० स० ३ १००८८, ४ १६५× २५५ सेमी०, ५ ७९ ६ १७ १९ ७ वि० म० १९१५, ई० सन् १८५८, मोक्षन, ८ जोसी मालगराम, ९ राजस्थानी, मस्कृत, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रन्थ ज्योतिष सम्बन्धी है।

प्रारम्भ—

श्री गणेशायनम अथ नारचद्र लिप्यत
अहते श्री जिन नत्वा नरचद्रेण धीमता
सार मुद्रियते किञ्चि ज्योतिष श्रीर नीरध ॥१॥

इसमें चार प्रकरण हैं और सभी ग्रहों के राशि और नक्षत्र के आधार पर मुहूर्त आदि को लेते हुए सामान्य फला का निरूपण किया गया है। आवश्यकानुसार स्थान स्थान पर ज्योतिष सम्बन्धी तालिकाएँ इत्यादि अंकित की गई हैं।

पुष्पिका—

‘इति श्री नारचद्रे ज्योतिषशास्त्रे सामान्य फलानिरूपण चतुर्थो प्रकरणं संपूर्ण। सवत १९१५ वर्षे शक १७८० प्रवर्ति माने असाठ मासे शुभे कृष्ण पक्षे ४ तिथी बुधवामर लिपतु जोसी सालगराम मोक्षन मध्ये श्री सुभभवतु कल्याणस्तु दीधमायु कल्याणमस्तु।’

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। ग्रन्थ के पत्र खुले हैं।

१४४ विवाह पद्धति

१ विवाह पद्धति, २ रा० शो० म०, ३ १५०९ ४ ११५× १० सेमी० (गुठकानुमा), ५ ४३ ६ ११-१३ ७ १९वीं गताब्दी का उत्तरार्ध ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रन्थ में विवाह

के प्रारम्भ में विवाह सम्पूर्ण तब प्राचणा द्वारा किये जान वान विवाह-नृत्या का विवरण दिया गया है ।

प्रारम्भ—

बोध वीनणी वपड कर जानीवास जान पुषणी करजे । जानीवास जायन वारण उभी रास बोद की मा सीलन बने ।”

वरात प्रस्थान के समय वर-वधु की आर स की गई तयारिया, वर वधु के वावण डोर बाधने गुलवान के समय किये जान वाल दस्तूर का हाल दिया है । आग के वत्तात में पहल की सामग्री इस प्रकार दी है—

“पडला की वाळी ७ खापरा की वाटका ४ नारळ ४ खारका वा, मीनरी की गुड की डळी ४ दमी दाकी रूपीया वचा ४, टालम चुनडी, वीछावणी, रसम की पटोली, पगरखी जोडो छोटी डालम गणी कडी जाडी, रमभोळ जोडी माळ जोडी, छाक गाल्या वाका २ वेडला सोन का ७, वाडला साना वा १ मेंदी मजोठ की पुडी आदि ।”

इस प्रकार विवाह विधि, दुल्ह के द्वारा तारन पर तलवार मारन की विधि, दुल्ह को आमन्त्रित करन की विधि फिर फेरा खान की विधि, डोल इत्यादि बजान की, दुल्हन की ननिहाल से आये मामरा का वधाये जान की और दूल्हा-दुल्हन की और से की गई प्रतिनामा तथा विवाह से सम्बन्धित विधिया का वत्तात है ।

अत—

‘ मन सुध कर ध्याव भणत सिवानद स्वामि वाछिन फल पाव जय ॥१०॥

प्रथम अनेक व्यक्तिया के हाथ स लिपिबद्ध हुया है । अत मे अम्बाजी की प्रारती दी हुई है, अन्तिम कुछ पत्र खाली है । यह राजस्थान के वस्त्र, आभूषण विवाह सस्कार आदि को दृष्टि से महत्वपूर्ण है ।

छठा अध्याय

ख्यात, बात आदि

१४५ महाराजा मानसिंह री ख्यात

१ महाराजा मानसिंह री ख्यात, २ रा० शो० स०, ३ १०६१०, ४ ६६५ × २५५ सेमी०, ५ १२६, ६ ३५-४२ ७ २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८ अज्ञान, ९ राजस्थानी देवनागरी, १९ प्रस्तुत ख्यात मे जोधपुर के गसक महाराजा मानसिंह के पूर राज्य काल (वि० स० १८६०-१९००) का वृत्तांत दिया गया है।

प्रारम्भ—

‘महाराजधिराज महाराजा जी श्री १०८ श्री मानसिंहजी गुमानसिंघोत जालोर सु जाधपुर री राजगद्दी विराजीया। महाराज श्री भीरसिंहजी जोधपुर मे घाम समत १८६० रा मित्ती काती सुद ५ दवलोक हुवा, पछे सवत १८६० रा मिंगसर वदि पधारीया अर राज कीयो जितरै अवाल मुगतीयो देवीयो तथा काने सुणीयो तथा ख्यात मे लिपीयाडो तिणरी नकल उतारी—

महाराज श्री मानसिंहजी री जन्म समत १८३९ रा म्हा सुद ११ री समत १८४७ मे दिवणीया रा दगा मे छोटा धका पास्वानजी री मरजी सु जालार पधारीया आदि।”

१ भीरसिंह की मृत्यु का समाचार जालोर एक राइके द्वारा भिजवाने का उल्लेख इस प्रकार है—

‘कागद ले राइके जोधपुर मु भदर हुवोडी जालोर इदराजजी गगारामजी कन आयी। कागद वाच पुरा उदास हुवा, क आपाणी चाकरी कीयोडी हम कुए देपसी। पछे डेरा सु उठ पाणीवाडे आय भदर हुवोडा पोतीआ बदीयोडा डेरा मे अदायला बैस मामा भाणेजा आपस मे सना कीबी के भीरसिंहजी तो घाम प्राप्त

हुवा जाधपुर वाळा लिखियो थे जालोर दोळा माग्चा घालीया बठा रहीजो अर सवाईसिधजी पोकरण सु अठ आवै पछै अठा सू ज्यू कीजा हम सला आहीज है कै महाराज मानसिंह आपणा घणी गड मे चालो सो इ दरराज गगाराम भुजरो कियो आप (मानसिंह) फुरमाओ भदर क्यू ? जद इगा अरज करी भीरसिंहजी धाम पदारिया, जद सुग न महाराजा मानसिधजी पूरा कुद हुय गया अर फुरमायो क जीवता जीवा रा भगडा था हम मानु कुण लडसी नै मैं किए सू लडसा ।”

इ दरराज और गगाराम के आग्रह से मानसिंह का जालोर से जोधपुर जान और राजगढ़ी सम्भालने का उल्लेख है। आगे इ दरराज ने जोधपुर एक पत्र भेजा उसमें लिखा—

‘ जोधपुर री राजगढ़ी रा मालक महाराज मानसिंह है सा जाधपुर पघारे है थे किणी काचा आदमी री सला सु काची सला नु कान सरबधा दीजो मती ।’

२ महाराजा भीमसिंह के भरणोपरांत चादपाल आदि दरवाज बद करन सवाईसिंह चापावत के आग्रह पर दरवाजे नहीं खोलन आदि का उल्लेख इन प्रकार है—

‘ पोकरण सु सवाईसिंह भदर हुय जोधपुर चादपाल दरवाज आया सो दरवाजा सैर रा मगळ (बद) था अर मीठडी रा ठाकुंग री बंदोबस्त थो सवाईसिंह हुला पाडियो न दरवाजो खोला मीठडी वाळा कहा—“” मे घणी आवसी जद खुलसी, जद सवाईसिंह कह्यो तो राजाजी रा सामधरमो छा अर मैं हरामपोर छा निण सु मानु माह नहीं लेवी ।’

गगाराम द्वारा सवाईसिंह का मालावास तक मामन जाकर महाराजा न भेंट करने के लिए आग्रह किये जान पर सवाईसिंह द्वारा राय प्रकट करने का उल्लेख इस प्रकार है—

“वाणीया री बीवी राजा डुर्व नहीं राजा तो उमराव थापसी निवा हुगी ये जालोर सु लेन आया छा सा बिना विचारीया काम बीयो है मा पारा हव न चूटी होगी म्है तो जमीदार हा गो उंचा नीचा हाप निमरमा निण थ इज मामा भागोज घणा पिन्नावमा ।’

* भीमसिंह की गन्वती रानिया का भीषमनी गुगार् विठ्ठलराय न मरी से वापस तलटो के महुला म रणन का उल्लेख है।

४ महाराजा मानसिंह के राज्यांतरण के समय विभिन्न उमरावों आदि के ओहदे, गाव इत्यादि पट्टे में दिये उसका वृत्तान्त है।

५ महाराजा जालोर से आये उस समय सरदार साथ आये उनके नाम और महाराजा विजसिंह के समय जालोर में ओहदेदार इत्यादि नियुक्त थे उनका विस्तार से वर्णन किया गया है।

६, सर्वासिंह चापावत द्वारा भीमसिंह का नकली पुत्र धवलसिंह बनाकर विद्रोह करने का उल्लेख है।

७ महामंदिर की नींव दान और महाराजा विजसिंह के पुत्र सरसिंह और मूरसिंह को चूक से मारने वाला को मृत्यु-दण्ड दान का उल्लेख इस प्रकार है—

“गुलाबसागर की आधूणी तरफ नाथजी की मंदिर करायी नाम निजमदर दीयो, जिणरी सेवा आयस सुरतनाथजी नु भलाई अर नागोरी दरवाजा द्वारे नाथजी की मंदिर महामंदिर नीव दिराई ।

वीजसिंहजी रा कवर सरसिंहजी मूरसिंहजी नु मागज भीवसिंहजी चूक करायो था सो चूक करण में पास पासवान था तिणा नु सजा की हुकम पकड कद कर दीया घर लूट लीना पड़ कुमात मारीया। अहीर नगा तिण रै माथा में पील ठरोकाय मरायी।”

८ सबत् १८६१ में बंदी बनाये गये व्यक्तियों के नाम लिखे हैं।

९ महाराजा भीमसिंह के समय गच्छापुत्र ठाकुर भारथसिंह का आसोप का ठिकाना मिला, अब केशरीसिंह रतनसिंहों को वापस आसोप देने का उल्लेख है।

१० इसी प्रकार जवानसिंह को रास समुसिंह का नीवाज, भानसिंह को लाबीया, इन्दरसिंह को रोहट अनाडसिंह चापावत का मंडतिया का गाव कालु आसीया चारण बाकीदास को भाडलियावास ग्राम और कवीराज की पदवी तथा लाख पसाव रतनसिंह पहाडसिंहों को (जालोर के घेरे में था) परवतसर का गाव पीपळाद तथा सामपुरो आदि चौहान स्यामसिंह (मानसिंह के मामा) का गाव जोजावर, उहड जैतमाल को बीरणा गाव, मोकलसर ठाकुर को मिणली गाव, भाटी जोधसिंह युद्ध में मारा गया उसके पुत्र शक्तिदान को जालोर का गाव दुमडी पट्टे में और भाटियानी रानी (जैसलमेर रावळों की पुत्री) को गाव लावा और बाहाळो तथा १५ हजार का पट्टा लिख देने का वृत्तान्त है।

११ महाराजा विजसिंह के पुत्र सरसिंह की दो रानियाँ और २ पुत्रियाँ कद में थीं उनके मुक्त कर गाव आदि पट्टे में दिये जाने का उल्लेख है।

१८० राजस्थान के इतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण

हुवा जोधपुर वाळा लिखियो थ जाट
रहीजो अर मबाईसिंघजी पाकरण सु अठ आवै पछै
सला आहीज है कै महाराज मानसिंह आपर
इन्दराज गगाराम मुजरो कियो आप (मानसिंह
इया अरज करी भीरसिंहजी धाम पदारिया, ज
पूरा कुद हुय गया अर फुरमायो कै जीवता
कुण लडसी नै मैं किण सू लडसा ।'

इ दर्राज और गगाराम क आग्रह से मानसिंह
और राजगद्दी सम्भालन का उल्लेख है। आग्र इन्द
उमम लिखा—

' जोधपुर री राजगद्दी रा मालक म
पधार है थ किणी काचा आदमी री मला सु का
मती ।''

२ महाराजा भीमसिंह के मरणोपरांत च
सवाईसिंह चापावत के आग्रह पर दरवाजे नहीं
प्रकार है—

' पोकरण सु सवाईसिंह भदर
आया सो दरवाजा सैर रा मगळ (बद) था अर
थो सवाईसिंह हला पाडियो क दरवाजा खोल
मे घणी आवसी जद खुलसी, जद सवाईसिंह कही
अर मैं हरामपोर छा तिण सु मानु माह नहीं लेवौ २०

गगाराम द्वारा सवाईसिंह का सालावास
भेट करने के लिए आग्रह किये जान पर १७
उल्लेख इस प्रकार है—

"बाणीया री कीयो राजा हुवै नहीं, राज
थे जालोर सु लेन आया छा, सा विना री
भूडी होमी म्है ता जमीदार हा सा उवा नीचा
भाएज घणा पिस्तावसो ।'

३ भीमसिंह की गनवती रानिया का
से वापस तलेटी क महला म रक्षन का उल्लेख है।

“सवाईसिंहजी जयपुर बाळां नु बुतो दिघी क महाराज भीमसिंहजी रो माग है जिण रो तो निरदावो करा देसा न भीमसिंहजी रा कयर घाकनसिंहजी नु जायपुर रो राज ये मन्त कर तिराय दजा ।

घर उदयपुर बाळा नु सवाईसिंह कवाई के महाराजा भोवसिंहजी रो सगपण घापर उटे कियो थ्र मा मानसिंहजी नु ता परणायजो मनी नै । जयपुर माराजा जगतसिंहजी नु परणाय दा में इण माग रो टटा था मु करसा नहो ।

माराजा मानसिंहजी सु धरज कराई के घापाणी माग उदयपुर बाळा जैपुर राज जगतसिंहजी नु परणावे छे घर जगतसिंहजी परणोजण नु त्थार हुवा छे सा थो काम सही पड गयो तो इण म घापाणी घात राजस्थान म घाप न हल्लको घणो लागी इण ताछ रो बुचदा मवाईसिंहजा पोकरण बँठा चलाव ।’

२२ मानसिंह और घाकलसिंह ४ पक्षपातिया क बीच लडाई होना, जयवतराय हान्कर का महाराजा द्वारा बुलाया जाना और उस सम्मान नहीं दिय जान पर होल्कर का दक्षिण की तरफ जान का उल्लेख इस प्रकार है—

‘हुलकर जयवत राय नूच कर सावठी फौज मु श्री हजूर र बुलायाडो आयो जयवतराय रा डेरा नादर नाके हुवा होलकर रे सामी पधारिया नही नै बराबर बँसाणिया नही तिण नु पूरो बराजो हुवा ।’

नादर गाव इन्द्राजसिंहजी पर एक व्यक्ति द्वारा तलवार चलाय जाने का उल्लेख इस प्रकार है—

“फौज म एक परदमी तरवार म्याा वारे ले सिंघवी इ द्रराज रे वावण लागी । इ द्रराज नाडो त्वालतो था पछ आदमी बन उभा था तिणा पक्क लीयो पछे इ द्रराज रा आदमी तरवार वावण बाळा नु मारण लाया तर इ द्रराज मारण दोनी नहो श्री हजूर इ द्रराज रो सुप पूछण अस्वारी कर पधारिया, पाटो बघायी ।”

२३ महाराजा द्वारा नयकरण की पाकरण मवाईसिंह के बुलाय पर नही जान पर उसको कैद करन का उल्लेख है ।

२४ जयपुर महाराजा जगतसिंह और बीकानेर महाराजा सूरतसिंह का सेना सहित मारोठ आन और मानसिंह का भी सेना सहित मुकाबले मे जान का उल्लेख है । सरदारो का महाराजा की सेना मे भ्रमल होकर घाकलसिंह के महायका मे शामिल होने का उल्लेख इस प्रकार है—

१२ देवनाथ, हरनाथ, मुरतनाथ, ओपनाथ इत्यादि सभी नाथा को पट्टे आदि लिखने का उल्लेख है।

१३ जालोर के धरे में सिरौही के नामक उदयभाण द्वारा मानसिंह को मदद नहीं देने पर महाराजा के द्वारा सिरौही पर आक्रमण करने तथा युद्ध में लड़े योद्धाओं की सूची भी भ्रवित है।

१४ घाणेराम पर मेहता साहबचंद की अध्यक्षता में सेना भेज कर वहाँ महाराजा का अधिनियम होने का उल्लेख है।

१५ सिरौही और घाणेराम में विद्रोह होने के कारण महारी गगाराम और सिधवी गुलराज को सिरौही और इंदरराज को घाणेराम सेना सहित भेजे जाने का वृत्तांत।

१६ साजत की धार बखेडा हाने पर प्रबेमल को २०० घोड़े सहित वहाँ रखे जाने का उल्लेख है।

१७ वि० सं० १८६१ श्रावणी तीज के दिन बड़े अधिकाग्या के विशेष पोगाकें आदि बनवाई उसका विवरण इस प्रकार दिया है—

“समत् १८६१ रा सावण मुद ३ लोडी तीज नु श्री हजुर पिंढा रे ने सारा सिरदारा भुतसदी पास पासव ना रे फूल गुलाबी पौसाका कराई नै गिडदीकोट कन घोडा फेराया और आउवा रा ठा० भाघोमिघजी मर गया सो बेटा बसतावर सिधजी नु खातर तसली आछी तरं फुरमाई के मीसर आछी तरं कीजी।”

१८ नागौर में घावल उदयराम द्वारा जीतमल सूरजमल, इंदरमल, गभीरमल और घोरजमल को पकड़ कर सलेमकोट जोधपुर में और सित्रियों को नागौर के किले में ही रखने का उल्लेख है।

१९ सवत् १८६१ माघ सुदि ५ महामदिर की प्रतिष्ठा होने का उल्लेख, इस समय दुपट्टे आदि दिये जाने और चडावल ठाकुर विसनसिंह कूपावत के हृष्ट होने पर बक्सौराम को चडावल के काम पर नियुक्त किये जाने का वृत्तांत।

२० वि० सवत् १८६१ फाल्गुन में खेतड़ी जुजु नोलगड, सीकर आदि के सेखावता तथा भाटी छत्तरसिंह (धोक्लसिंह का पक्षपाती) डीडवाना में उपद्रव करने का उल्लेख है।

२२ उदयपुर राणा भीमसिंह की पुत्री कृष्णाकुमारी के विवाह के लिए जयपुर व जोधपुर राजाओं के बीच सवाईसिंह चापावत ने विवाद उत्पन्न किया इसका वृत्तांत इस प्रकार है—

“सवाईसिंहजी जयपुर बाळा नु बुतौ दियौ क महाराज भीमसिंहजी री माग है जिण रो ता निरदावा करा देसा नै भीमसिंघजी रा कवर धोकलसिंघजी नु जाघपुर री राज थे मदत कर दिराय दजो ।

अर उदयपुर बाळा नु मवाईसिंह कवाई क महाराजा भीमसिंघजी री सगपण आपरै उठै कियो उँ सो मानसिंहजी नु ता परणायजो मती न । जयपुर माराजा जगतसिंघजी नुं परणाय दो, मै इण माग रो टटा था सु करसा नही ।

माराज मानसिंघजी सु अरज कराई कै आपाणी माग उदयपुर बाळा जँपुर राज जगतसिंघजी नु परणावै छै अर जगतसिंघजी परणोजण नु तयार हुवा छै सा ओ काम सही पढ गयो तो इण मे आपोणी वात राजस्थान म घाप न हठकी घणी लागसी इण ताछ री कुबदा सवाईसिंघजी पोकरण बठा चलाव ।’

२२ मानसिंह और घोळलमिह क पक्षपातिया के बीच लडाई होना जसवतराव होल्कर का महाराजा द्वारा बुलाया जाना और उसे सम्मान नहीं दिये जाने पर हाल्कर का दक्षिण की तरफ जान का उल्लेख इस प्रकार है—

‘हुलकर जसवत राय कूच कर सावठी फौज सु श्री हजूर र बुलायाडो आयो जसवतराय रा डेर नादर नावे हुवा हानवर रे सामी पधारिया नही न वराबर बसाणिया नही तिण सु पूरी वराजी हुवो ।’

नादर गाव इन्द्रराजसिंघवी पर एक व्यक्ति द्वारा तलवार चलाय जाने का उल्लेख इस प्रकार है—

‘फौज मे एक परदेसी तरवार म्यान वारे ले सिंघवी इन्द्रराज रे वावण लागो । इन्द्रराज नाडो खालती था पछ आदमी कने उभा था तिरणा पकड लीयो पछे इन्द्रराज रा आदमी तरवार वावण बाळा नु मारण लाग तरे इन्द्रराज मारण दीनी नही श्री हजूर इन्द्रराज री सुप पूछण अस्वारी कर पधारिया, पाटो बघायो ।’

२३ महाराजा द्वारा नथकरण को पोकरण मवाईसिंह के बुलाने पर नहीं आने पर उसको कद करने का उल्लेख है ।

२४ जयपुर महाराजा जगतसिंह और बीकानेर महाराजा सूरतसिंह का सना सहित माराठ आने और मानसिंह का भी मेना महित मुकाबले मे जाने का उल्लेख है । सरदारा का महाराजा की मेना म अलग होकर धावनसिंह के महायका मे शामिल होने का उल्लेख इस प्रकार है—

१२ देवनाथ, हरनाथ, मुरतनाथ, ओपनाथ इत्यादि सभी नाथा को पट्टे आदि लिखने का उल्लेख है।

१३ जालोर के घरे में सिरोही के शासक उदयभाण द्वारा मानसिंह को मदद नहीं देने पर महाराजा के द्वारा सिरोही पर आक्रमण करने तथा युद्ध में लड़े योद्धाओं की सूची भी भ्रूंकित है।

१४ घाणेराम पर मेहता साहबचंद की अध्यक्षता में सेना भेज कर वहाँ महाराजा का अधिकार होने का उल्लेख है।

१५ सिरोही और घाणेराम में विद्रोह होने के कारण मडारी गगाराम और सिधवी गुलराज को सिरोही और इंदरराज को घाणेराम सेना सहित भेजे जाने का वृत्तांत।

१६ सोजत की धार बखेडा होने पर अमेमल को २०० घोडों सहित वहाँ रखे जाने का उल्लेख है।

१७ वि० सं० १८६१ श्रावणी तीज के दिन बड़े अधिकाग्रिया के विशेष पोसाकें आदि बनवाई उसका विवरण इस प्रकार दिया है—

‘समंत १८६१ रा सावण सुद ३ लोडी तीज नु श्री हजुर पिडा रे ने सारा सिरदारा मुतसदी पास पासव ना रे फूल गुलाबी पोसाका कराई नै गिडदीकोट कर्न घोडा फेराया और आउवा रा ठा० माधोमिधजी मर गया सो बेटा बखतावर-सिधजी नु खातर तसली आछी तरै फुरमाई कं मीसर आछी तरै कीजौ।’

१८ नागौर में धाधल उदयराम द्वारा जीतमल, सूरजमल, इंदरमल, गभीरमल और घोरजमल को पकड कर मलेमकोट जोधपुर में और स्थियों को नागौर के किले में ही रखने का उल्लेख है।

१९ सवत् १८६१ माघ सुदि ५ महामदिर की प्रतिष्ठा होने का उल्लेख, इस समय दुपट्टे आदि दिये जाने और चडावल ठाकुर विसनसिंह कूपावत के रूष्ट होने पर बकसीराम को चडावल के काम पर नियुक्त किये जाने का वृत्तांत।

२० वि० सवत् १८६१ फाल्गुन में खेतडी जुजणु नोलगढ सीकर आदि के सेखावतो तथा भाटी छत्तरसिंह (धोक्लसिंह का पक्षपाती) डीडवाना में उपद्रव करने का उल्लेख है।

२१ उदयपुर राणा भीमसिंह की पुत्री कृष्णाकुमारी के विवाह के लिए जयपुर व जोधपुर राजाओं के बीच सवाईसिंह चापावत ने विवाद उत्पन्न किया इसका वृत्तांत इस प्रकार है—

“सवाईसिंहजी जयपुर वाळा नु बुती दियो क महाराज भीमसिंहजी री माग हे जिण री ता निरदावा करा देसा नै भीमसिंघजी रा कवर धोकलसिंघजी नु जाघपुर री राज ये मदत कर दिराय देजो ।

अर उदयपुर वाळा नु सवाईसिंह कवाई के महाराजा भीमसिंघजी री सगपण आपर उठै कियो छ सा मानसिंहजी नु तो परणायजा मती नै । जयपुर माराजा जगतसिंघजी नु परणाय दो, मै इण माग री टटो था सु करसा नही ।

माराज मानसिंघजी सु अरज कराई के आपाणी माग उदयपुर वाळा जैपुर राज जगतसिंघजी नु परणावै छै अर जगतसिंघजी परणीजण नु त्यार हुवा छै सो ओ काम सही पड गयो तो इण मे आपोणी बात राजस्थान मे घाप नै हठकी घणी लागसी इण ताछ री कुवदा सवाईसिंघजी पोकरण बठा चलाव ।’

२२ मानसिंह और धोकलसिंह के पक्षपातिया के बीच लडाई होना, जसवतराव हाल्कर का महाराजा द्वारा बुलाया जाना और उस सम्मान नही दिय जाने पर हाल्कर का दक्षिण की तरफ जान का उल्लेख इस प्रकार है—

‘हुलकर जसवत राय कूच कर सावठी फौज सु श्री हूर र बुलायाडो आयो जसवतराय रा डेरा नादर नाके हुवा होनकर रे सामी पधारिया नही न वरोबर बसाणिया नही तिण सु पूरी वैराजी हुवा ।’

नादर गाव इन्द्रराजसिंघवी पर एक व्यक्ति द्वारा तलवार चलाय जान का उल्लेख इस प्रकार है—

“फौज मे एक परदसी तरवार म्यान बारे ल सिंघवी इन्द्रराज र वावण लागी । इन्द्रराज नाडी खोलती थो पछ आदमी वन उभा था तिणा पकड लीयो पछे इन्द्रराज रा आदमी तरवार वावण वाळा नु मारण लाग तर इन्द्रराज मारण दीनी नही श्री इज्जर इन्द्रराज री सुप पूछण अस्वारी कर पधारिया, पाटा बघायी ।”

२३ महाराजा द्वारा नथकरण को पाकरण सवाईसिंह के बुलान पर नही आने पर उसको कद करन का उल्लेख है ।

२४ जयपुर महागजा जगतसिंह और वीकानेर महाराजा सूरतसिंह का सना सहित मारोठ आन और मानसिंह का भी मेना महित मुकावले मे जान का उल्लेख है । सरदारो का महाराजा की सना म अलग हाकर धाकलसिंह के महायका मे शामिल होने का उल्लेख इस प्रकार है—

‘हरसोळाव री चापावत जानमसिंह अर मारोठ ठाकुर मेसदान गीघोली री घाटी मुजरी माराज श्री मानसिंहजी सु कौयो व मैं तो सवाईसिंघजी सामल जावा छा आप कर्न देवनाथजी माराज छै सो भगडा कर लेमी ।’

सिरदारा मे ठाकुर कुचामण सिवनाथसिंघ आउवा रा बखतावरसिंघजी आसाप रा केसरीसिंघजी रास रा जवानसिंघजी, नीवाज रा सुरताणसिंघजी लाविया रा भानीसिंघजी बुडसु रा मनाणो, बटु वगर सारा भ्राय हाजर हुवा ।’

आगे महाराजा मानसिंह के पक्ष मे सरदार रहे उनके नाम दिये हैं । बहुत मे सरदारो द्वारा धोकलसिंह का पक्ष लिये जाने पर मानसिंह ने युद्ध नहीं कर जालोर जान की इच्छा प्रकट की पर सामन्त ने महाराजा के विचार बदल दिये—

‘पद्य श्री हजूर फुरमायौ कै मैं तो जालोर पघार जासो जोधपुर र गढ री पूरी भरोमी मानु है नही अर जाळोर पघार री भरोसो पको है अर जनाना न जाळोर ले जासा तिण उपर मामघरमी सिरदार भुसदीया वगेरा अरज करी कै हजूर जाळोर नही पघारो जाळोर पघारिया जाळोर रा राजा वाजसो न जोधपुर गढ विराजिया जोधपुर रा राजा राज सो जोधपुर लारे जानोर है ।’

२६ वि० मवत् १८६३ मे होली के दिन नागौर महाराजा के हाथ से चने जाने का उल्लेख—

२७ इस प्रकार साभर नावो, डीडवाना, कोलीया नागौर, मेडता, सोजन और अतारण मे विरोधी सरदारों का अधिकार होने का उल्लेख है ।

२८ सवाई जगतसिंह के दीवान ने अब यह इच्छा प्रकट की कि उदयपुर चल कर कृष्णाकुमारी से विवाह करें पर सवाईसिंह ने जोधपुर पर अधिकार कर धाकलसिंह का राजगद्दी का हकदार बनाकर फिर उदयपुर जान को कहा, इसका उल्लेख इस प्रकार है—

‘जगतसिंघजी सु उणा रा दिवाण रायचंद मालम करी व माराज आपणी तो मोकळी मज गई सो हमे अठा सु परवारा उदपुर पघारा सा आपरा व्याव कर पछा जैपर दापल हुईजे ।’

सवाईसिंह कहता है—

‘उदयपुर व्याव श्वातर तो ईतरा धोक हुवा छै अर लाखा रुपया खरच लगाया उ आप पली जोधपुर पघारो अर धाकलसिंघनु जाधपुर र गढ चढाय राज दिरावो मारवाड रा कितराक सिरदारा भु साथे ले ह आपरी जान मे

उज्जयपुर चाल व्याज कराव बडे हगमे सु आप नु जेपुर दापल कराव इण बात मे राजस्थान मे आपको भर मारी नामुन हुय जासी ।”

२६ वि० सं० १८६३ चेत्र वदि ७ का प्रसादी बाग स्थान लेजाने का वृत्तात इस प्रकार दिया है—

‘सवत् १८६३ रा मीनि चेत वदि ७ सोलसातम नु सवाईसिंघ री फौज रा डेरा मडोर आसपास कीया मो उण तिन सोलसातम थी सो गढ उपर सु माताजी रो पुजापा मानसिंहजी री तरफ नु गढ उपर सु कामे गयो मरदा मरदी सु पाछो पुजापे बाळी जनानी डावडीया नु गढ चढाई ।”

३० जयपुर और बीकानेर की फौज द्वारा जोधपुर गढ के चारा आर घराव डालने, किले के पास मुरग खोदन का वृत्तात इस प्रकार है—

“पछ फतेपोळ री सफील रे नीचे मुरग पोदी अर सोर रा कूपा मुरग म गेरीया तिणरी पबर गढ मे हुय गई तरे फतेपोळ कन तन री कडाव तल उवाळ नासियो तिण सु बारली फौज रा आदमी चालीस तथा ५० ता उठे होज तेल सु सीजनै मर गया कितराव अदबळीया हुम नोसर गया ।”

३१ जोधपुर दुग से मोर्चे किस व्यवस्था स लगाव गये इसका वृत्तात इस प्रकार है—

‘मोहण कूड भापली तोप २ बारली फौज बाळा री मडी थी सो उण तोपा रा गोळा पादरा इमरती पोळ कन आय पडे मो लोक अठो उठी फिर सग नही दूसरी मोरची विरमपुरी बाळी तोप री सो पिण मोरचा पारी, तीसरी मोरची सीगोरीया री भापरी उपरलो बीकानेर बाळा री सो भापरी २पर तोप २ चढाई सो तोपा रा गोळा पादरा लाहपोळ तथा फतेपोळ पादरा तामे रान दिन गढ उपरली तथा बारली फौज बाळा री तोपपानो चालतो रहे सो रात दिन सर रा लोक वारे फिर सके नहो सो पूरी दुप सो लिपण ज्यू नही ।’

३२ इन्द्रराजसिंघवी द्वारा कुछ प्रलोभन मीरखा को देकर अपनी और मिला कर बडी सेना सहित जयपुर पर आक्रमण करने पर जोधपुर का घेराव खत्म होने, जयपुर जोधपुर के बीच दोना सेनाआ के घमासान युद्ध होने का वृत्तात है । उस समय सवाई जगतसिंह ने बहुत पश्चाताप किया उसके सबध मे गीत दिये हैं—

“जगो जेपुर गयो तिका बात मुपा जो जसुर हसे
बोहो नारीया कीध हासी ।”

३३ घेराव उठ जाने के पश्चात् महाराजा द्वारा विभिन्न व्यक्तियों को गाव, पद पट्टे आदि दिये गये उसका उल्लेख सविस्तार है ।

३४ सवाईसिंह को घोषे स मारन का उल्लेख इस प्रकार है-

पछ नवाय उठासु उठीया अर वहता के म्ह अवी पसाब कर आता हु
इण तर कह भट टेरे वार ग्राम आपरा जादमीया नु इसारो कीयो, जठा पली तवू
रो मया उखलता हुवा अर तवू री डोरीया काठी जिण नु तवु गिडनीज गयो जिणसु
सवाईसिंह वगेरा मीन्दार-मीरखा र भाणोजो भाग दवुचीज गया अर उपर
सु तोपखाना सरु हुय गया ।'

गनुआ क कट सिंग लेकर अनापराम क जाधपुर महाराजा क सामन लान
का उल्लेख इस प्रकार है-

"अनापराम माथा ले जोधपुर आयो श्री हजूर मानम हुवा, कुसी
मोकली कीवी फुरमाया (महाराजा) के इणा हगम पारा रा माथा पान म
मडाय वजार म डडा बना सु देडा रमावा ।'

३५ वि० सं० १८६४ भाद्रपद मे वीकानर पर चढाई करन का उल्लेख है ।

३६ लाडनू के सरदार पदमसिंह जो घोक्लसिंह क पक्ष म थे उनस ४०
हजार रुपय वसूल करा, जयपुर स सवध कर सधि करने और कृष्णाकुमारी का
जहर देकर मारन का उल्लेख है ।

३७ जाशी शमुदत्त का जिसन नाथ चद्रिका कृति लिखी ओर शिवपुरान
की कथा सुनाने पर देवनाथ बडे खुश हुए उसका वृत्तात इस प्रकार है-

'शिवपुराण री देवनाथजी माराज वन बाची पद्वे कथा सपूरण हुइ तर
दवनाथ सिमुदत्त नु पालपी म बसाण पालपी रे काधो द भेट कर सिरपाव र
घरे पीढायो ।'

३८ मुहना अपचद के पुत्र लिपमीचद का विवाह फलाघी हृद्या उमका
वत्तात इस प्रकार है-

जान जोधपुर सु वणाय चढोया पाळा दोय अढाइ हजार आसरे सु
फलोधी गया सो जान सारी नु घोरत भाव ज्यु पावायो पास जोधपुर रा ३६
पोण नु पाड रो सीरो कर जोमाया भोजका नु मुडके नीठ दोय दाय हपीया हाजर
था त्यानु दीया ।'

३९ ओसवाळा द्वारा मृत्युभाज दिय जाने का उल्लेख इस प्रकार है-

'मुते सूरजमल चापरो कारज कीयो साजत री ३६ पूण जिमाई अर चावड
माता सोभत मे निणरे पगत्या वदाया ।

मुता साहबचद चाप रो कारज कीया लाडुवो रा सो जाळोर रा ५२ गाव
जीमीया जस चापा आयो ।

सिधवी इन्द्रराज की मा मयत १८६८ म मुई तिण मारे सर सारणी रो जीमण हवा ३६ पुण नू जीमाई ।”

६० वि० सं० १८६८ म अकाल पडा उमका वृत्तान इस प्रकार दिया है—

‘महा भयानक काल पड गया सा मुलक सारो उचल गया, वित्त मुलक रा मर गया, मिनप मूपा भरता घणा गरीब छादमी मर गया घर पेट रा टाबरा नु बचे पण काळ म लेवाळ नही धान स्पीया १ रो जाधपुर २ तोल रो पुराणो तीन मर विव मो सोर साम मिले नही ।”

६१ महाराजा की जयपुर गादी हान की तयारिया का उल्लेख इस प्रकार है—

‘हजर मारा मुसदीया न बुनाय हुकम दीया के जपुर रे व्याव रो ताकीद आई है मा ३० कारमाना मु ताकीद कर काम मखरा कराया तर हुकम मुजत्र मारोमार यारी हुई ।’

फिर पहले मानसिंह का विवाह जगतसिंह की बहिन स और दूसर दिन मानसिंह की पुत्री का विवाह जगतसिंह के माथ हाने का उल्लेख है ।

४२ मिरोही के गामक उदयभाण के गया तीस याथा म लौट कर पाली म ठहरत हुए महाराजा की फाज द्वारा पकड कर जाधपुर लाने, उससे दण्ड स्वरूप रुपये वसूल करने आदि का उल्लेख है ।

४३ नवाब (मुहम्मदशाह) ५०० पठाना के माथ महाराजा से मितने और सिधवी इन्द्रराज द्वारा ३ लाख रुपय पाच दिन म न्ये जान का आवासन देकर उसे लौटाने का वृत्तांत है ।

४४ मीरखा द्वारा देवनाथ और इन्द्रराज का चूक से मरवान का उल्लेख इस प्रकार है—

‘सवत १८७२ आसोज मुद ८ नवाब मीरखा नु पवर लागी क आज देवनाथजी ने सिधवी इन्द्रराजजी गढ उपर गया है जद नवाब आपरा पठानो न बुलाय केयो के तुम गढ पर जाबो घर अपनी परची पिरणी रा चूकता रुपीया मागा, पूव तगादा करी तुम और तो किमी का नाम न लेणा न देवनाथ इन्द्रराज चूक कर काडजो, तुमारा नाम कोई नही लेवगा, जिसकी हमन जोधपुर के राज वाला से पकावट कर लीया है तुमनु र्नाम १० हजार दवंग ।”

पठानो द्वारा पैसे मागने पर इन्द्रराज ने कहा—

आज काल ने पीरसु भे तीन दिन मारे दसरावे रा नवा दीन है सो आज ते जावा जद कुतबदीन धगेरा महे हमनु तो नवाब का हुकम है आज का

आज ले जाणा हमता लेकर पीछे जावेंगे, जद वे उठण लागी कँ हजूर मे जाय मानम कर आवा जितरे थे ठहरा जद पठाणा करावीणा भाडता हीज हुवा सो भेके समचे छटी सा देवनाथ इन्द्रराजजी मर गया नै फेर तिवरी रो पिरोहित न मारीजियो ।'

देवनाथ और इन्द्रराज की अंतिम क्रिया की व्यवस्था करान और अमीरखा को रुपये दकर भागवाड से प्रस्थान करने का उल्लेख है ।

४५ सिधवी मूलराज को दीवान नियुक्त करन और महाराजा के उदासीन रहते हुए भीमनाथ व आप्रह पर कुवर छत्रसिंह को राज्याधिकार देने उस समय राज्य म नय अधिकारी आदि नियुक्त किये उसका वृत्तांत है

४६ आग गुलराज का चूक स मारन जोर उसके अंतिम सस्वार इत्यादि किये जाने का उल्लेख है ।

४७ छत्रसिंह व राज्य काय म रुचि न लेन का हाल इस प्रकार लिया है—
 भरोखा म विराजे हाथीया रो लडाईया करावे, आपो दिन पिलबत म रहै पिण राज र काम रो सुणवाइ कर नही, सोबत नादान आदमीया रो आसा पीवण र सभाव घाल दीना सो राज काज र काम उपर अमन नही, फर स्वाह म भगतण सजनी नू चाकर राप लीवी सा छान राप ।'

४८ छत्रसिंह व राज्य-काल म अग्नेजा के साथ सधि हुई उसका उल्लेख १० शर्तों का सधि पत्र लिखा गया उसके बारे लिखा है—

' तरै मसादा निली विसनराम अमेराम आसोना बन गयो तरै अहदनावा रो कालमा १० ठेरी । सिरकार अग्नेजो रो तरफ मु मिस्तर मटकलफ साहव बहातर अर जोषपुर रो तरफ मु उकील आसोपा व्यास विसनराम अमेराम रो मारफत कजमा ठेरी निणरी नकल तथा असल मिरकार रा दफनरा म दापल है ।

४९ सिधवा चनकरण का क्या और किस प्रकार ताप स उहाया उसका वृत्तांत इस प्रकार है—

ममत १८७४ म सारा मिरदार मुमदी छत्रसिंहजी मु मानम करो कँ सिधवी चनकरण भाटो हरामपार है भीमसिंहजी राज म (चनकरण) फोज ले गयो सा गाय माकण्डे जाय पाना मो हजूर रो फोज मु भगडी बीपी जर मुंडा माह मु हरामपारी रा पारर बाड़ीया या दिण इन्द्रराज रा मुलायजा म मभा निरीजी नही । परे हम गुनराज नू चूक हुवा पछ आप मू डरता बाणाणा रो हराओ म मग्गे जाय बडी पछ महागजकवर रिशो पधार बाणाणा रो हवमा

सू चैनकरण नु ले जाय सिवाणची दरवाज बारे ले जाय तोप रे सूढे दे मराय
नाथीयो उण मितो सु करणोता री पाँप री वात हळकी पड गई ।'

५० छत्रसिंह के दहान्त के बारे में लिखा है—

“पछे समत १८७४ रा मितो चैत वद ५ महाराज कवर श्री छत्रसिंघजी देवलोक माहला बाग मे हुवा । पाहा मोकळी हुई । श्री हजूर महाराजा मानसिंघजी र जीव नु तो आग ही दुप दवनाथजी ईदरराजजी रो थो हीज फेर महाराज कवार री आ हुई सो हुप रा पार नही सारा फौजी आप भदर हुवा पछे बाकी रा ही सिरदार भुतसदी तथा सर री नै परगने री रत सारी भदर ग्यानमल रा कणा सु हुय गया पछ मुलक री काम ता अपचद वगेर सारा सिरदारा री सला सु हुवै ।”

उस समय लूटमार की स्थिति के बारे में लिखा है—

‘चोरी घाडो लूट-पोस हुवे पिण जिण री बार सुणवाई कठई हुवै नही, मुलक म अघाघु घ भच गई । गर इलाका रा बापारी माल ले भारवाड मे आवे अर माल लूटीज जावे मत मत सारा भाच गया ।”

५१ छत्रसिंह की मृत्यु उपरान्त मानसिंह के मौन साध रहने किसी से बात न करन की खबर राजधानी पहुँचन पर अग्नेजा की आर म वक्तर अली का बातचीत करने के लिए भेजने का उल्लेख है । आगे वर्णित हे कि पहले महाराजा वक्तर अली से कुछ नहीं बोल पर दूसरे दिन उसके जान पर बातचीत हुई जिसम महाराजा न बताया कि मरे मौन साधे रहने का कारण देवनाथ, इन्द्रराज, भूलराज को चूक से मारे जान का हे । आग वक्तर अली के द्वारा पूरी हकीकत अग्नेजा को सुनान और अग्नेजों द्वारा मानसिंह को आदवासन दन पर कि हम आपके साथ हे प्रसन्नता से राज करें विरोधिया का सजा दें । इसस महाराजा के दिल म खुशी हुई और एकांतवास का परित्याग कर राज्य काय सम्भाला ।

५२ जोधपुर के कवि बाकीदास के भागन का वृत्त इस प्रकार है—

‘बारट आसीयो बाकीदाम उपर श्री हजूर रा मरजी मोकळी थी परत नारला दिना मे महाराज कवार छत्रसिंघजी कने जलधरनाथजी रा धरम री निंदा कीची के ‘मान का नद गोवि द रटै जब कन पटो फटै’, फेर गजल जोडी के जाये जलधर लाये दलदर,’ सब दुनीयन कु कोवी बलदर, ठोड ठोड बणाये मामदर । ईण ताछ रा माराज कवार नु राजी रापण वास्त कहता था । जिणरा समाचार हलकारा री फरद म मालुम हुवा जद बाकीदान नु गढ उपर

बुलायी बाकीदाम ने घुजणी टूट गई (महाराज) फुरमायो क चारण
सो सीप दा तरें बाकीदास उठा मु भागो सो गाळ रो घाटी मारण
होय पादरो भाद्रजण रा ठाकुर बपतावरसिधजी रै सरणो बेस गयी ।”

५३ मृत्युभोज के लिए चाकरा का पस दिये उसका उल्लेख इस प्रकार है—
पछ समन् १८७६ रा फागुण मे हुकम फुरमायो कै सारा चाकरा रै माईता
लारे कारज नही हुवा वे तो करी, सिरकार सुं रुपिया दिरोज जासी मो सारा चाकरा
नु पाच हजार, दोय हजार, हजार ।”

५४ महाराजा द्वारा अपने विरोधिया को पकडवाना और मरवान का उल्लेख इस प्रकार है ।

पछ सारा मुसाव भेळा दीळतपाना मे हुवा तर आप याद रो पाना १
बणायो था के ईतरी आमामीया नु कद करणा हजूर धावल गोरधन वगरा
मरजीदाना हुकम दियो के हरामपोर नु कैद करदो सो दीलतपाना रा चौक मे सारा
बैठा था सा तीजे पोर आमरे सारा नु पकड लीया नै सलेम कोट मे सारा नु धाल
दीना । बाबस्ता मुधा आदमी ८४ नु पकड लीना कैद किया त्रिणा रे घरे चौकिया
बेस गई असबाव सिरकार म ले आया, पछै अपेचद नु जिनसी रा डेरा सु रथ
म बैसाण ले आया ने बटा लीपमीचद पोतरो मुकनचद गुमास्तो रामचद
सारा नु सलेमगड मे दाखल किया नित तसतिया दिरीजै, रूपीया पण भरीजै
नहो (जब) भुतो अपचद नु जर रो प्यालो दीयो वेटा लिपमीचद पीतरो
मुकनचद ने कैद भे सावत रापीया । व्यास विनोदीराम नु प्यालो जर रो
दीयो ने वेटा गुमानीराम नु कैद म रापीयो सो तसती दीरीज । चडवाणी जोसी
भगतदत्त तो मर गयो भाई फत्ती ने बटो विठलदास नु पकडीया सो जहूर रो प्याला
मगदत्त र बैठा रै मेलीयो थो सो डरण लागो तरें मगदत्त र भाई फतेचद आप
पीयो तर मगदत्त रो बहु बाहु देवर फतजी लारे सत कर गई म्हारे क म्हारे
घणी रै नाव रा प्याला पीयो । किलेदार नेचराजोत नधकरण मुनसीजी
कराज जात पचोली नु प्यालो पाया सु मर गया ।”

खीची बीहारीदास जो सेजडता ठाकुर सादुलसिंह की हवली म घुस कर बठ
गया और महाराजा के बहन पर उसे नहीं मरिपे जान पर हवली का धराब करल
और भाटी मोढायो सहित बीहारीदास के भारे जान का उल्लेख है ।

इसी प्रकार नीवाज की हवली के धराब हालने और ठाकुर सुलतानसिंह के
बपने साधियो महित और गति प्राप्त की होन का उल्लेख है ।

५५ नीवाज पर फौज भेजन पट्टा जन्म होने आदि का उल्लेख है। इसके अनिरीक्त अय ठिकाना के पट्टे जन्म किये उनका वृत्तांत है।

५६ विराधियो स दण्ड स्वरूप पैसे वसूल करने और अपने पक्ष के व्यक्तियों को आहूत आदि देने का वृत्तांत है।

५७ वि० स० १८८० में अत्याचार पूर्ण व्यवहार से तंग आकर सरदारों का अजमेर में पालिटिकल एजेंट से मिलने और ठिकाने वापस किये जाने का उल्लेख है।

५८ फतेराज व्यास और कचरदान आदि हाकिमों द्वारा पैसे खा जाने पर उनमें अलग अलग रूप से वसूल किये उनका उल्लेख है।

५९ महाराजा की छोटी पुत्री स्वरूप कवरी का विवाह बूंदी के रावराजा रामसिंह के साथ होने का उल्लेख है। वरात में घोड़े, हाथी आदि अथवा उसकी सख्या इस प्रकार दी है—

‘बूंदी से जान विदा मासुद १ हुई सा जान में घाडा १२००, हाथी ३, ऊँट २०० छकड़ा १२५, भारविरदारों गाड़ी १०० ऊँट २००, पीनमा १०, पालपीया ४, रथ २५, सिपाया री साथ ५०० आदि।’

६० वि० स० १८६१ फाल्गुन सुदि १२ सिधवी फौजराज मेगराज और कुसलराज को समेलगढ में बंदी बनाने, भाद्राजूल ठाकुर बरनावर्गसिंह का अपनी हवेली से भागने और व्यापारियों से ३ लाख का माल लूटने पर महाराजा द्वारा अग्नेजा का शिकायत करने का उल्लेख इस प्रकार है—

‘महाराज अमरजी सिरफार में अरजी लगाई के म्हारी माल अजमेर जावता भाद्राजूल री ठाकुर तीन लाख री उतार लीयी ।’

६१ बाडमेर सरदारों के कच्छ भुज, सिंध में लूटमार करने पर अग्नेजा ने महाराजा को इसके बदोबस्त के लिए लिखा नहीं तो उसका हरजाना जाधपुर सरकार दंगी।

६२ जालोर की ओर भी लूट-खसोट अधिक होने के कारण १८६१ में अग्नेजा ने वहाँ की व्यवस्था सुधारने हेतु लिखा इस पर सिंभुदत्त का हाकिम नियुक्त होने पर स्थिति में सुधार होने, फिर १८६२ में सिंभुदत्त का कदम फतेराज को वहाँ हाकिम नियुक्त करने और फिर सचारी लूट-खसोट इत्यादि जालोर गाडवाड में होने का उल्लेख है।

६३ वि० स० १८६४ में मोसिया भठियानी रानी की कोख से बकर सिद्धानसिंह का जन्म और १८६५ वैशाख सुदि ७ को देहांत होने का उल्लेख है।

६४ चापावल चिमनसिंह और डाकुआ के हाथे रोकने के लिए अंग्रेजों की ओर से प्रयत्न ।

६५ जोधपुर परगन में लूटमार होने, नाथो द्वारा पठयत्र करने, सरकार के हक के रुपये महाराजा द्वारा नहीं भिजवाने तथा अंग्रेजों के प्रदत्त का उत्तर नहीं देने के कारण सदरलण्ड द्वारा महाराजा के विरुद्ध गिवायतें दज की गई उसका वृत्तांत है ।

६६ सदरलण्ड और कप्तान लडलो के महाराजा से बातचीत हुई इसमें अंग्रेजों ने महाराजा से कहा—

‘आपके मन में लडाई का ईगादो होवे तो हमारा जरगोलसा हाजर है नहीं ता सब काम मुनासब मुजब हो जायी जितरँ आपका किला में हमारी सिरकारी घाणा रहसी अर आपका गुरु नाथो का दपल राज के काम में बिलकुल नहीं रहेगा ।

जब श्री महाराज मानसिंह बचल अर मजूर कीयो ।

६७ लडलू पर एक करमसोन रादौड न तनवार चगाई उसका हाल इस प्रकार है—

‘गढ में एक करमसोत विरादरी में चाकर यो सो उण रँ मन में काई बस गई सो लडलू साहब रँ तरवार ल्याई तरँ लडलू साहब करमसोत रँ दाय तीन तरवार बाही चार दिना पछै करमसोत मरगी ।’

६८ मानसिंह और अंग्रेजों सरकार के बीच शर्तों का नया अहदनामा हुआ उसका वृत्तांत है ।

६९ महाराजा मानसिंह की ओर से ४८ शर्तों का नया अहदनामा हुआ उसका वृत्तांत है ।

७० १३ वच राज्य प्रबंध के लिए नियुक्त किये उनकी विगत दी गई है ।

७१ महाराजा को फिर राज्याधिकार मिलने, नाथो द्वारा उपद्रव किये जाने पर अंग्रेजों की आनानुसार नाथो को गिरफ्तार करने, जिस पर महाराजा द्वारा साधू का बेश धारण करने आदि का उल्लेख है ।

प्रस्तुत ब्यात एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध की गई है । इसमें महाराजा मानसिंह का ब्रह्मबद्ध इतिहास लिखा गया है । ग्रन्थ पर कपडे का रस्ता मढा हुआ है । राजस्थान के रजवाडों के अगत होने और अंग्रेजों का प्राधिपत्य होने का विस्तृत वर्णन इसमें मिलता है । साथ ही जागीरदारों के राजकीय सम्बन्धों और रीति रिवाजों पर भी इसमें पर्याप्त सामग्री है ।

१४५ अ शाहपुरा की ख्यात

१ शाहपुरा की ख्यात, २ रा० शो० स० ३ १६६५६, ४ २०५ × ३३२ ५ २४० ६ २०, ७ १६४०, ८ अनात, ९ उदू मिश्रित खड़ी बोली देवनागरी, १० इस ख्यात में शाहपुरा (मेवाड़) के शासका का विस्तृत वृत्तांत महाराजा सूरजमलजी से लेकर महाराजा उम्मेदसिंह तक का दिया गया है। शाहपुरा पहले मेवाड़ राज्य का ही एक हिस्सा था परन्तु बाद में उसने स्वतंत्र राज्य का अस्तित्व ग्रहण कर लिया था। इस प्रयास की भी विस्तृत भूमिका इसमें है। शाहपुरा के शासका की उपलब्धिया का वर्णन करने में फारसी परमानो शिला लेखा आदि का भी प्रयोग किया गया है। इसके अध्ययन में मेवाड़ राज्य के इतिहास के कई अनात तथ्य सामने आते हैं तथा मुगल कालीन इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। इसकी भाषा उदू मिश्रित होने से अटपटी सी है और वीर विनोद की लेखन शैली का स्मरण दिलाती है। इस ख्यात में निम्नलिखित शासका का वृत्तान्त दिया गया है—

महाराज श्री सूरजमलजी

महाराज श्री सुजानसिंहजी

महाराज श्री हिम्मतसिंहजी

महाराज दासतसिंहजी

महाराज भारतसिंहजी

महाराज उम्मेदसिंहजी

ख्यात का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ है—

‘महाराजा अमरसिंहजी साहब रहोस ऊदयपुर के तीन बहूए बडे कवर करणसिंहजी रियासत ऊदयपुर गही नशीन हुऐ। उनसे छोटे भीमसिंह टोडे पर काविज हुए और तीसरे महाराज सूरजमलजी मोरसमाला खानदान शाहपुर हुऐ। इनको पलाणा मय दीगरे देहात कि। जिनकी आमदनी करीब पचास हजार रुपये साल थी अता हुवा। चू उयह ऊमर भर उदयपुर ही में कयाम पजीर रहे। इनको तारीख पैदाइश दीगर हालात दरमियानी और बन्ठबासी होने की तारीख क्या पर पुरा हाल महा के कागजात में दर्ज नहीं। गालिबन ऊदयपुर के ही कागजात में हीगा बहा से देख लिया जावें।’

प्रत्येक शासक से सम्बन्धित कुछ ज्ञात तथ्य इस प्रकार है—

महाराजा सुजानसिंह

‘महाराजा सुजानसिंहजी चंद रोज के बाद बादशाह से रुखस्त होकर करने कब्जा पट्टे फूलिया और करने शहर आबाद दर कूच फूलिय की तरफ



किया। चंद रोज म फूलिय तशरीफ लाये। यह महाराज रियासत शाहपुरे की जड जमान वाले हुए और बहुत लायक थे। उम जमान म बसवे फूलिया वो परगणे फूलिया मे बिलकुल मूरत बद न जमी इलाके म नजर आई याने कोम रजपूत गोड वा घूडिया व सोले की वो मेरठिया व रतनमोन व देवडा व शेखावत व जाट गुजर मीना वगेरह हर एक कोम इलाके मे खुद मुखतार हो रह थे और देन हासिल म सरकसी रखते, जब महाराज साहिब न पशतर यह इन्तिजाम दखकर पशतर हाकिम फूलिया नजर खलीमरदान बग खालम की तरफ स रहता था उसको बुलवाया और जो इतिजाम इलाके मे खराब हो रहा था उसका हाल दरयाफ्त किया। जब वापिस अरज कि मरे पास फौज सिपाही तो है नही फक्त हुकम से काम ल रहा हू। यह अरज करके अपने धादमियो को सब पहले फूलिया म भेजकर सब कोम को वो जागिरदार वो भूमियो को फूलिया म बुलवाये और उन सबको हुकम सुना दिया कि महाराज सुजाणसिंहजी का यह फूलिया इनायत हुवा है। मुवाफिक हुकम महाराजा साहब सुजाणसिंहजी के हुकम की तामिल हमेशा करते रहा। इसी तरह से ही सब रियाया वा सरदारान वो जागिरदारान वो भूमियान को हुनम सुना दिया और महाराजे साहब से अपने जान की खस्त मागी। जब महाराजा सुजाणसिंहजी ने उनका खिलत वो नकदी बखस कर खस्त किया। चंद रोज क्याम फूलिय किया और जो हमराह महडू भीमजी ऊदयपुर स आय थे उनको अपना पोलपात करके नेग कर बखसा।

उज्जैन के युद्ध म (स० १७१५) मे सुजानसिंह के वीर गति पान तथा काम आने वाले तथा घायल योद्धाओं की सूची भी दी है।

महाराज दौलतसिंह के समय का वता त इस प्रकार प्रारम्भ होता है—

महाराज दौलतसिंहजी—

सम्बत १७२१ का आसोज सुदि ३ को गद्दी नशीन हुए जब इनकी ऊमर २६ साल की थी इ होने अपने राज का बदोबस्त बहुत ऊमदा किया और डूगाजी चेचाणी भी आदमी बहुत होसियार वो लायक वो सलाहकार था। उस कामदार को शाहपुरे रखकर आप दिल्ली का कूच किया। कूच दर कूच दहली पहुचे। दुसरे ही राज बादशाहा आलमगौर ने इन महाराजे साहिब का डेर म बुलवाये। उस जमाने म ठाकुर धोली ने बादशाह की हुकम ऊदूली का थी उन लोगो की चस्मनमाइ व जेरबारी व गिरफ्तार करने कु वास्ते महाराज दालतसिंहजी को हुकम दिया कि खुद मय फौज क जावें और किला छीनकर उन लोगो को गिरफ्तार करें। जब वापिस डेरे आकर अपनी फौज की हाजिरी लिया वा फरिस्त दफ्तर

से मिली वो दरज किया जाता है—अस्वार ५००, हाथी ४, पैदल सिपाही १६००, तोपें ३, सो बरबा की गाड़िया २ सुतर १३० छकडा २३। इतने तो अपने हमराह थे। चार हजार के करीब बादशाह की फोज के लोग साथ लेकर घोली भेजे गये। पहुंचन घोली कु एक कोस के फासले पर डेरा किया और घोली की खबर मगवाई तो मालुम हुवा कि ठाकुर घाली ने बहुत से लोग गट में इकट्ठे कर रखे हैं आदि आदि ।”

महाराज दोशतसिंह की मृत्यु गोल बूडा के युद्ध में सन् १७४२ में होना बताया गया है।

महाराज भारतसिंह—

महाराज भारतसिंह का वृत्त त इस प्रकार हुआ है—

‘महाराज भारतसिंह का जन्म महासुद १३ सम्बत १७२७ को हुआ और सम्बत १७४२ मंगल ता० १७ नवम्बर १६८५ ई० मगसर सुद १ को गद्दी नशीन हुए जब महाराज की उमर १५ साल की थी। यह रईस शियास्त शाहपुरे की बहतरी वो जड जमाने वाले हुए।’

भारतसिंह व अजीतसिंह द्वारा कालिंजर के किले पर कब्जा करने का वृत्त त इस प्रकार है—

इस सबब बादशाह औरगजेब मय फोज वो जोधपुर महाराज अजीतसिंहजी व महाराजे भारथसिंहजी हमराह लेकर दखन की तरफ रवाने हुए और कितनेक लाग हुक्म ऊदूली करते थे उन लागो को चस्मनमाई करने हमराह फोज लेते गये और जो कालिंजर का किला दखन में मशहूर है किले में सजे हुए करने भगडे के तैयार थे वहा बादशाह मय फोज के जाकर पहुँचे और दूसरे ही रोज किले को घेर लिया मगर उन रजपूता ने एसी बहादुरी के साथ बादशाहा की सब फोज को किले से भगडा करके हटा दिया और कितनेक रजपूत किले के बाहिर ही थे। जब बादशाह की फोज का वापिस हटो हुई देखकर इन महाराजे भारथसिंहजी ने अपना मोका पाकर जो फोज में निसरणिये थी वा मगवाकर किले के लगवा दी और किले में मय अपनी फोज के बूदना विचारा और इसी मोके पर एक किले में का आदमी अपने डेरे में आया और उससे किले का हाल दरियाफत किया तो कहा कि किले में और सामान तो मौजूद है मगर लकड़ी बलीते का तगी बहुत है। यह बात कहकर फोज के बाहिर चला गया। जब महाराज ने विचार कर अस्मी नब्बे अपने रजपूतो को हुक्म दिया कि—जो लकड़िये अपने डेरे में मौजूद हैं

इसकी मालिया बाघकर उन मालिया में अपनी अपनी तलवारें छिपाकर किले के दरवाजे पर बेचन के बहाने चले जायें और जा कि तुम्हारी मालियो किले के दरवाजे के माल लेवे और तुमको किले में घुस जाने देवे ता किला के पीछे से हम निसरणिया पर चढ़कर किले में दूद कर आत हैं । तुम भी वहा ही भागे पर अपनी तलवारे सम्हालना । जो जैसा चाहा वैसा ही भगवान न सब सामान बना दिया । य रजपूत मोलियों लेकर किले के दरवाजे पर जाकर सडे हात ही किले वाले ने इनका माल पूछा और दरवाजा खोलकर अदर लिया और जहा महाराजे साहिब न चाहा था उस काट व नजदीक उनका रसावडा था वहा ले जाकर मोलिया डाली और एक सखस मोली डालकर किले के ऊपर चढा और महाराजे साहब का इशारा किया । इतन में ही खुद महाराजे साहब मय अपनी फोज के निसरणियो पर चढ चढकर किले में दूदना शुरू किया और किले के सब रजपूता न तलवार चलाना शुरू किया । अब दुनरफा तलवार खूब चली और जो पेशतर मोलिया के बहाने से रजपूता को भीतर भेज दिय थे उहाने भा इस मोके पर काम बहूत ऊमदा किया और खूब भगडा किया और कितना ही को मार लिया और कितने ही अपने काम आये जिन सरदारो के नाम का पता नही मिल सका और किला पतह किया ।

भारथसिंह की राजनतिक उपलब्धियो युद्ध, जागीर आदि का विस्तार से बखान किया गया है । यह बडा शक्तिशाली शासक हुआ, एक दोहा इस प्रकार अंकित है—

दोहा—आटा घारा न रहे धरान तसा जाय ।

यारी बेला भारता, नोबत बाजी याय ॥

महाराजा उम्मेदसिंहजी—

महाराजा उम्मेदसिंह सवत १७५६ में गद्दी नशीन हुए थे पर सवत १७५५ में युवराज पद पर रहते हुए भी अपने पिता भारथसिंह का राज्यच्युत कर दिया था और स्वयं सब काय करन लग गये थे इसका बतात इस प्रकार प्रारम्भ होता है—

'सम्बत १७५४ में महाराज कबर उम्मेदसिंहजी न अपने वालीद भारथसिंहजी को रोआसत से अलेहद किये और मोती महल में रहना हुवा और सब लोगो का आना जाना महाराज भारथसिंहजी के पास से बंद करा दिया इसका कुल हाल महाराज भारथसिंहजी न हाल में दर्ज किया गया है—और कबर उम्मेदसिंहजी ने जुगराज ले लिया और कबर उम्मेदसिंहजी न अपन हुक्म का

डका रियासत में जारी किया और जो कवर पट धूल के जुगराज दा साल तक रहा जिसमें जो काम किये वो नीचे दर्ज किये जाते हैं ।”

उम्मेदसिंह जैसा वीर था वैसा ही इल्म का बद्रदान और साहित्य प्रेमी भी था, इसका उल्लेख इस प्रकार किया गया है—

“मैं रईस जवा मरद वो लियाकतदार या हिन्दी का इल्म भी पूरा पूरा था और राजपुत सिपाह को वैसा समझत था मुवाफक अपने भाई और वेढा के ओर इस मुवाफक राजपुत वो सिपाह का पालना करते थे ।”

उम्मेदसिंह का बचस्व दिल्ली तक स्वीकार किया जाना लगा जिससे महाराणा रुष्ट हुए इस प्रसंग का उल्लेख इस प्रकार है—

“भार इसी साल में बादशाह की तरफ से फरमान फारसी का तमाम रईस वो सरदार इलाक जेपुर वा रोघपुर वो हाडोनी वो मवाड के सरदारों के नाम लिखा गया—सीरदारी वा स्युजात क मुरतबे की महाराना जगतसिंह राजा उम्मेदसिंह बननदार भोजे साहापुरा भमले परगन फुलीया वो जमींदारी जहाजपुर-सबब नासुशी हाने का मैं हुवा क जिम वकत राजा उम्मेदसिंह दरबार बादशाह में इनायत मनसब जागीर वा खीलअत वो कासा वो जवाहीर बगेर पाकर पीछे साहापुर बु गए आर तमाम जागीरदार आसपास साहापुरे के इलाकेदार हाजर हाकर राजा उम्मेदसिंह की ताबेदारी इस्तीभार कर नजर निघरावळ गुजारी, वर वकत सुनने इस बात के महाराना नासुस हाकर तमाम फोज से इरादा लेन राज का किया आर वेदखल कर दना राजा उम्मेदसिंह का चाहा । तमाम फोज उदयपुर से वो तोपखाना लेकर इरादा लेने साहापुर का किया और सरदारी वो बहादुरी के मरतब के राजा जयसिंह वो महाराव दुरजन साल जमींदार कोटे और रावराजा दलेलसिंह जमींदार बु दी ओर राजा इन्दरसिंह सवाई स्योपुर बगरह के ही जमींदारा का महाराना ने अपनी कुमख कु बुलवाए वो चारों तरफ स साहापुरे को धर लिया पर तु राजा उम्मेदसिंह मजबुत दिल वो बहादुर था । किसी तरफ का ख्याल न करके मुसतद जग और लडाई फोज महाराना के हुवा ।”

जाधपुर महाराजा अभयसिंह तथा नागौर बख्तसिंह से मिलकर उम्मेदसिंह न महाराना को परेशान करना चाहा । इस पर महाराना की प्रतिक्रिया इस प्रकार ख्यात में प्रकृत है—

“श्री राजाजी भजमर पधारना इस बात से दोषाणजी बेराजी ज्यादा हुधा और भयों हुकम कियो राजाजी उम्मेदसिंहजी म्हाकी बात बिगाड गया भर

चित्तौड़ ने जोधपुर ने लड़ायी चारों छँ अर चित्तौड़ को राज उठाया चारों छँ मा राठोड तो सबल्ला छँ पण मानं भी श्री चित्तौड़ का गज श्री एर्कलिंगजी दियो छँ सो सारा को लिया जावे नही सो भली बात है ।”

उम्मेदसिंह और राजकुमार अदोतसिंह व बीच मनमुटाव का उल्लेख भी विस्तार से किया गया है ।

मल्हार राव होल्कर का राजस्थान में दखल और उम्मेदसिंह के सम्पर्क का उल्लेख एक स्थान पर इस प्रकार किया गया है—

“और इमो साल में गनीमा की फौज में एलची ऊदयराम को भेजा जिसकी भरजी भादवा सुद ११ क दीन में राव मलारजी मू मलो घर राव मलारजी कु श्री हजुर का कागज दीया जिस पर बहोत राजी हुवा और पीछा कागज लीछाई मोखलिया है और माहाराजा ईसरसिंहजी की तरफ से गनीमा को सोना हजार रुपीये रोजीना का कर दिया है और गनीमा की फौज राजा इसरसिंहजी के हुक्म की तामील करते हैं और कोटा बुंदी से कजोयो करके फौज ऊदयपुर जायो और वहा कजोया करेगा और ऊदयपुर से धापीस आकर जोधपुर ऊपर फौज बनी करसी और हाल में फौज साहपुरे होकर जावेगी । जिससे कोटा को बसेक जाबतो करवासी और राव मलारजी से अपनी तरफ की सब बात पकी कर ली गई है और राव मलार जी श्री हजुर के कहने मुवाफक काम देवेगे और इसी साल में पपलाज का डेरा से जोधपुर का पचौली रामकसन का कागज सारा समाचार

राव मलारजी श्री हजुर ने मालूम किया । आप गणा राजी हुवा अर आपका वकील लालाजी न करमायो के तु राजाजी ऊमेदसिंहजी न लखदो सो मैं अर ये दोनु आपका काम ने तैयार हा और आपके पास पंडित ऊतमरामजी ने भेज्या है सो सब हकीकत आपका काम की आप नू मालुम करेगा ।’

मरहठो के घातक से बचने के लिये उदयपुर और अन्य लोग भी उम्मेदसिंह के मुख्यापेक्षी थे इसकी एक भलक ख्यात में इस प्रकार है—

और इसी साल में कागज उदयपुर सु पचौली देवकरणजी लिख्यो अप्रभ पहली दखण्या रो फौज अठौन आब ही जणी थी श्री दीवाणजी रो खास दखलता रो रूको आपने बुलाया रो वा खच वास्ते रुपया की हुडी भेजी ही अर कागज सुदि २ फौज में से कागज आया अर मालुम हुमा जीमें दखण्या की फौज गुजरात की तरफ भुकी सबब नबाब फकरुद्दोला रँ हर बीन्या रे म्हावो म्हाय कजियो हुवो सो बीन्या रुपया तीन लाख देणा कर दखणिया ने वा मलारजी ने वा कानी

बुलाया सा गुजरात जायगा अस्या समाचार मानुम हुआ जीसु श्री दीवाणजी होकम दियो सो राजाजी सिताब आवेगा जीसु कागज लिखार साहियो राजाजी की हज़ूर बल्दो भेज्यो सो त्योहार रा दिन करेन पाछे पघारै । अठा मु पघारया भी दिन थाडा हुमा है और दखणी भी मास एक तई गुजरात कानी रहसी तावै घापरी हज़ूर कागज वा माहयो भज्या है । इ कागज क सिर प श्री दीवाणजी लिखा—राजाजी री हज़ूर म्हारो जुहार मानुम हो । होली आप घर कीज्यो फेर रुका घाव न पघारज्या और इसी मान म चत मुदि ६ कागज कोटा से अट बेणीरामजी लिख्यो घप्रच घवार म्हाको रोले हुवा जीम आपका कवरा ने देही घणी करी घर रजपूती घाछी टीखी सो आपका घर को परवाडा पीढया सु छ जीसोहीज हाडोती म जाहिर कीदो । कठा तइ कवरा की तारीफ लिखा । रजपूती का गाढा छ ।”

माधार्सिंह को जयपुर की गद्दी दिलवान क लिये महाराणा की सहायताथ उम्मेदसिंह को बुलाया गया था उसका उल्लेख भी विस्तार मे साथ म्थ्यात म है ।

शाहपुरा पर राजाधिराज बखतसिंह की चढाई का उल्लेख इस प्रकार किया गया है—

“और इसी साल म माहाराज बखतसिंहजी मय दखणीयो की फौज लेकर साहापुरे पर चढाव किया और मोजै भणाय मुकाम रहकर फतेगढ आकर डेरा किया और फतेगढ से काला बडी आकर मुकाम हुआ और किमनगढ से महाराज बाहादुरसिंहजी को भी माहाराज बखतसिंह ने बुलवाये सो आ मामिल हुये और माहाराज बाहादुरसिंहजी इन माहाराज साहब से बहुत दिला की दास्ती वो माहवत रखते ये । इस सबब माहाराज बाहादुरसिंहजी न न आन देने शाहपुरा कु वो न करने भगडा शाहपुरा क माहाराज बखतसिंहजी का अरज माइज किया मगर माहाराज बखतसिंहजी ने सफा ये ही हुकम माहाराज बाहादुरसिंहजी का दिया जो के मैं शाहपुरं जाकर भगडा करुना । मेरे दिल पै बहुत दिना से उम्मेद हा रही है । जब माहाराज बाहदुरसिंहजी ने फिर अरज किया जो कि माहाराज उम्मेदसिंहजी काम आया बिना शाहपुरे पर कभी कब्जा आपका न होने देंगे और सोचना चाहिय आपकी सब फौज मारी जावेगी और कई बाता का बुखसान पदा होगा मगर माहाराज बखतसिंहजी ने एक नहीं मानी । जब एक दो रोज के बाद माहाराज बखतसिंहजी कु जहर हुमा और बकुठ चले गये और सब सामान वो इरादा बहा का बहा ही धरा रहा । सच कहते हैं ससार रूपी बाग म तमाशा तो अजब है मगर फूल जब खिलेगा उसका मुरभाना भी

साथ ही है। महाराज बख्तसिंहजी के बँकूठवास होने से सब लश्कर आया था वा ही राह वापिस ली और महाराज बाहदुरसिंहजी का भी जाना परवाड हुआ।'

महाराणा अडसी के विरुद्ध स्थानीय जागीरदारों ने पडयत्र किया, उसमें उम्मेदसिंह को साथ लेने का प्रयास किया पर उम्मेदसिंह ने मजूर नहीं किया, यह बात तभी पस ख्यात में है।

रतनसिंह के विरुद्ध उम्मेदसिंह ने युद्ध में जाते समय शाह नारायण दास के निवेदन पर अपने बारिस की बात पत्र पर स्पष्टतया लिख दी—

“जब शाह नारायण दासजी ने अरज किया के पिछला क्या हुकम बखसते हैं जब दवान बलम मगाकर खास दमखता रूका लिख बखसा कि मैं काम आ जाऊ जिसके बाद मौजू कौटिया से रणसिंह को बुलवा कर तख्त नसीन कर देना। इसमें ज्यो सामिल रहेंगे वो मेरे स्यामखार हैं यह रूका लिखकर नारायणदासजी को बखसा और ज्यो ऊपर दरज किए दोए सरदारों को पीछे सिरदार सिपाह रखे थे उनको यह हुकम दिया जो के हमारे काम आने के बाद साह नारायणदासजी कहे वो मेरा खास रूका देखकर जिसको मैंने लिख दिया है उसको तख्त नसीन करना।’

क्षिप्रा नदी के किनारे उम्मेदसिंह का युद्ध में वीर गति पाने का शब्द चित्र रयातकार ने इस प्रकार अंकित किया है—

“इन महाराज साहब के ५३ तलवार वो पांच वास लगे और गनीमी ने शिक्स्त खायो और गनीम मय फतूर को बहा से भगना पडा। जब यह महाराज साहब अपने घोडे से जमीन पे आये। जमीन पे आकर अपने खून से मट्टी के महादेव बीस २० तो बनाया और रूकीसबा २१ बना रहे थे जिस वखत एक मरठा सिपाई ने वास की दकर के बहा के चीतोड अपने सिर के बधी हुई बताते थे वो कहा है? इस पर महाराज ने कहा के वो चीतोड हम अपने सिर के नीचे देकर सोते हैं।’

अत में उम्मेदसिंह के साथ काम आने वाले योद्धाओं की सूची तथा गीत दिया गया है। उम्मेदसिंह के परिवार, सत्तति आदि की विगत तथा उसके द्वारा करवाये गये निर्माण कार्यों का भी विस्तार से उल्लेख किया गया है।

पूरी ख्यात में उम्मेदसिंह का वणन बहुत विस्तार में है। मेवाड के सदम में १८वीं शताब्दी में जागीरदारों का आतरिक विग्रह और पूरे राजस्थान में मरहटों के दखल के सम्बन्ध में इसमें बहुत उपयोगी सामग्री संकलित की गई है। ख्यात एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखी गई है। भाषा काफी प्रगुड है।

१४६ राजाओं की पीढ़ियों तथा परधानगी दीवानगी की विगत

१ राजाआ की पीढ़ियों तथा परधानगी, दीवानगी की विगत, ० रा० शो० स०, ३ १३५०२ ४ ३१ × २४५ सेमी०, १ १०६, ६ २१ ३२ ७ अनुमानत २० वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध ८ अनात, ६ हिंदी, राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रंथ में सकलित कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ राठौड़ राजाओं का दूहा -

राठौड़ राजाओं के सम्बन्धित दूहे कवित्त निम्नलिखित हैं —

प्रारम्भ—

आसथान सोनग अज सीहा तणा सवाज

मुग्घर ईडर दवारका रिध घणा दिन राज ॥१॥ (पत्र-३)

२ मडौर में राजाओं का देवल है तीण रो विगत -

मडौर में स्थित राव मालदेव राजा उदैसिंह, राजा सुरसिंह, राजा गजसिंह, महाराजा जसवतसिंह और महाराजा अजीतसिंह के देवलों का निर्माण कब किसने करवाया, जानकारी दी गई है। मडौर में मरूजी की जावडी पर देवताओं (१८) की मूर्तियाँ विद्यमान उनकी सूची दी गई है।

३ राठौड़ों की पीढ़ियों में राजा हुवा, राजाओं की जन्म तथा पाटखी बिराजीया तथा धाम पधारिया तिला रो याद -

मारवाड के शासकों (राव सीहा से महाराजा सरदार सिंह के जन्म, गद्दीन-शीन, सतति और मृत्यु के सबत तिथियाँ आदि दी गई हैं। यथा—

रावजी सीहाजी संतरामजी का वेटा जन्म स० ११६६ रा मीती काती सुद ३ रो पाट कनोज में बैठा स० ११६७ मीती माघ सुदि ५ धाम पधारिया कनोज सु गोयदाणे गढ करायो जठे सबत १२३१ रा मीती ।” (पत्र-१५)

४ परधानगियों ईनायत हुई जोधपुर में मुसापबा में तिला रो विगत -

जोधपुर में ओसाबल तथा राजपूत जाति के लोग प्रधान नियुक्त हुए, उनको गाव इत्यादि दिये गये उसका विवरण दिया गया है। यथा—

१ मडारो नारमल समरावत पालसे कीयो समत १५१५ रा असाड सुद ३ ताई ।

२ बट बरजाग भीषोत ने समत १५१६ में ही इनायत कीयो न गाव १४० सु रोयट दीवी पट सु तागीरायत हुई समत १५३१ रा ।



अन्तिम—

“४२ महाराजा श्री जसवतसिंघजी (द्वितीय) सवत १६२६ रा मीती असाठ सुद ५ ने रात रा राईकावाग मे सीरावाव सवत १८६७ रे उजव दीयी पोकरन ठाकुरा ने ईनायत ।” (पत्र-३)

५ दीवाणगीया ईनायत हुई जोधपुर मे उए री विगत -

जोधपुर मे दीवानगी आदि इनायत की गई उसका विवरण दिया गया है ।

प्रारम्भ—

१ भडारी नारमल अमरावत मुलक रो काम कीयो राव श्री जोधाजी री वक्त मे ।

अन्तिम—

१३७ मेतो बीजेमल रा घेटा सीरदारमल र दीवाणगी १६४६ रा मीता भादरवा सुद १३ ने राईकावाग मे हुई । (पत्र-७)

६ बगसीयां ईनायत हुई जोधपुर मे तिएरी विगत -

जोधपुर मे बक्सी आहदे आदि दिये उसका विवरण दिया गया है ।

प्रारम्भ—

१ पचोली हरीकिसन रामचदोत चमरीया ने स० १७६५ रा मीती सावण सुद १३ ।

अन्तिम—

२८ सीधवी करनराज सुरज रै स० १६३१ रा मीती चैत वद ६ ने समरत राज री सीरज हुवी । (पत्र-११)

७ बीकानेर रे महाराजा साहब री विगत -

इसमे बीकानेर के राजाआ (राव बीका से गगार्सिंह) के जन्म, राज्यरोहण सतति मृत्यु के सवत इत्यादि के अतिरिक्त कुछ घटनाआ पर भी बहुत सक्षेप मे प्रकाश डाला गया है । (पत्र-६)

८ किशनगढ के महाराजा साहब री विगत -

मोटा राजा उदयसिंह के पुत्र किशनसिंह से महाराजा सादूलसिंह (किशनगढ दरवार) के जन्म, राज्यरोहण, सतति, मृत्यु के सवत इत्यादि कुछ घटनायें विणित हैं । (पत्र-४)

९ जयपुर उदयपुर के राजाओ री विगत -

दुलहराव से राजा कुतल तक बशावली दी है फिर राजा कुतल से महाराजा माधोसिंह (जयपुर) तक के राजाओ की सतति आदि का उल्लेख है । इसके अतिरिक्त चित्तौड के शासक बापा रावळ से महाराणा फतेसिंह तक बशावली अंकित है । (पत्र-४३)

१० अलवर के राजाओं की पीढ़ियाँ -

अलवर के शासकों के पू्वज उदयवरन से महाराजा मंगलसिंह तक की पीढ़ियाँ और कुछ राजाओं की सतति आदि का विवरण है। (पत्र-१)

११ बूंदी की त्वारीय -

बूंदी के हाडा राजाओं की वशावली राव विष्णुसिंह तक की है कुछ राजाओं की सतति व कुछ घटनाओं का वृत्तान्त भी दिया है। (पत्र-८)

प्रारम्भ—

‘बूंदी वाले चुहान कोम की हाडा साप म अजमेर के राजा भाण्णवन्द के पोते असीतपाल की औलाद ।’

१२ राठीडों की वृत्तान्त -

इसमें भारवाड के राठीडों के राज्य के संस्थापक राव सीहा से जसवंतसिंह प्रथम तक राठीड राजाओं के जन्म, राज्यारोहण, मृत्यु के सवत, सतति आदि कुछ घटनाओं का विवरण संक्षेप में दिया गया है।

प्रारम्भ—

‘कनवज सु सीहोजी स० १२१२ रा काती सुद १२ ने द्वारकाजी की जातरा वरण नु पदारिया आसोज सुद ७ चैत रा कीवी पाछे पाटण पदारि ने गुजरात की सोळखी मूलराज मदत कर लापा फुलाणी उपर गया काती सुद ६, लापा फुलाणी ने आदमी ५०० सु मारिया ।’ (पत्र-३८)

ग्रन्थ में मुलाम वंश और खिलजी वंश के शासकों का विवरण भी संक्षेप में दिया गया है।

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। बहुत से पत्र खाली पड़े हैं, ग्रन्थ पर गत्ता है।

राजस्थान के राजवंशों और प्रशासनिक प्रमुख अधिकारियों की जानकारी के लिये यह ग्रन्थ उपयोगी है।

१४७ गुणसार (गुणसागर) महाराजा अजीतसिंह जोधपुर

१ गुणसार (गुणसागर) महाराजा अजीतसिंह जोधपुर, २ पु० प्र०,
३ १५ तथा १६, ४ ३३×२५ ५ सेमी, ५ १६०, ६ २५-२७ ७

२०८ राजस्थान का साहित्यिक प्रश्न का मूल्यांकन, भाग-०

वि० स० १७६६ ई० मन् १७१२ ८ अनात, ९ राजस्थानी, दवनागरी,
१० प्रस्तुत ग्रंथ 'गुणसार' में अनेक रचनाएँ संग्रहित हैं।'

प्रारम्भ—

'श्री परमात्मन नमः श्री गणेशाय नमः श्री महामाया हीगुलाजजी सदा सहाय
ग्रंथ इलाक नवा महाराजाधिराज महाराजा श्री अजीतसिंह कृत गुणसार ग्रंथ
लिप्यने ॥ ग्रंथ गाथा ॥

गणपति गौरी सुतन लाल वरण तुम्ह लबावर ।
सिधा बुध प्रमन सुग्यान, नागदेव तुम्हे नम ॥१॥
तव गज वदन गणेश दान मेव प्रमन लबावर ।
रिषसिध देव सुग्यान जै जै देव तुम्ह नम ॥२॥

अंतिम पुष्पिका का अर्थ—

वह चह श्रवणन मुने वलि देव करि माय ।
नहचे उण मानव तणा पाप दूर होय जाय ॥१॥
प्रथम वरण शृंगार को राजनीत निरधार ।
जोग जुगति या मे सब, ग्रंथ नाम गुणसार ॥२॥

पुष्पिका—

संवत् १७६६ वर्ष फागुण वदि त्रयोदशी दिने गुणसार ग्रंथ श्री महाराज
धिराज महाराज श्री अजीतसिंहजी कृत गुणसार ग्रंथ संपूर्णम् ॥”

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से सुन्दर लिपि में लिखा गया है। पत्र बारीक
काम में लाये गये हैं, ग्रंथ में बारीक अक्षरों के आधे पत्र रिक्त पड़े हैं। ग्रंथ पर जीए
बपड़े का गत्ता मढ़ा हुआ है। अनुच्छेद पर पत्र सरपा अंकित है।

महाराजा अजीतसिंह की साहित्यिक कृतियों के परिचय हेतु देखें परम्परा
रा० शो० स० अजीत विलास अंक २७ पृष्ठ १२३ पर गोपालसिंह का लेख। उस
समय की साहित्यिक परम्परा और सामाजिक मायताओं के अध्ययन के लिये ये
कृतियाँ उपयोगी हैं।

१ देखें परम्परा रा० शो० स० अजीत विलास अंक २७ (पृ० १२) सम्पादकीय डॉ० नाथपण
सिंह भाटी।

१४८ वीसलदेव चहुभाण रास^१

१ वीसलदेव चहुभाण राम कवि नाह २ रा० प्रा० वि० प्र० ३
२४४८५, ४ ११ × २५ ५ सेमी० ५ २५, ६ १२-१३, ७ वि० स०
१७७३, ई० सन् १७१६ ८ अभयधम, ८ राजस्थानी देवनागरी, १० यह
राजस्थानी का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें अजमेर के शासक चौहान वीसलदेव का
इतिवृत्त अंकित है।

श्री गणेशाय नमः

गवरि का नद त्रिभुवन सार, नादभेदई धारड उदर भडार
एक दत्त उमुणि क्लहलइ, मूसका बाहण तिलक सिंदर,
कर जोडो नरपति भणइ जाणि करि राहणी ज्यु तावड सूर ॥१॥

रचनाकाल के बारे में लिखा है^२ —

सवत सहस्र सतहतरड जाणि, नाह्ववी सर सिरसईय वाणि,
गुण गु था चउहाण का, मुक्ल पक्ष पचमी सावण मास
रोहिणी नभत्र सोहामणउ, सुदिन गिणीजो इमी जोडिउ रास ॥६०॥

पुष्पिका—

“इति श्री वीसलदेव चउहाण रास मती रास पूण समाप्त ॥ सवत १७७३
वर्षे मीती काती वदि ११ दिने वार अदीत पूरी लीपी तीज रास री चौमासे म
लीपी प० श्री महिमासारजी तत् शिष्य अभय धम लिपत ॥ वाचे भणे मुणे तिन
ने वदना धरम लाभ ॥ श्री श्री श्री ।”

प्रस्तुत ग्रन्थ एक ही ब्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। लिपि सुवाच्य है।
पत्र सब गुल हैं, प्रत्येक पत्र पर पत्र सरया अंकित है।

१४९ अजातोदय

१ अजातोदय (भट्ट जगजीवन), २ पु० प्र०, ३ ४६४ (मस्वृत सूची),
४ १३ × २७ ४ सेमी०, ५ ३१२, ६ ८, ७ १६ वीं शताब्दी का मध्य,
८ अज्ञात ९ सस्कृत, देवनागरी, १० इस बृहदाकार ग्रन्थ में जाधपुर के

१ प्रकाशित नागरी प्रचारी मन्ना।

२ रचनाकाल के बारे में इतिहासकारों में मतभेद है सर्वे राजस्थानी शासक चौहान प्रथम चण्ड
पृ० ६४-१००।

शासक अजीतसिंह के जीवनकाल की मूल्य ऐतिहासिक घटनाओं का विस्तृत विवरण दिया गया है।

प्रारम्भ—

श्री नाथायनम श्री सार मेवदता ॥ गार्हूल विज्ञीम्ति छद् ॥ प्रोष-नूनन
यौयनाधितमया, पृक्त सप्त राधया ।

श्री कृष्ण जलद छवि वरुणापादगच्छटा मज्जुल ।

वृन्दारण्यनिष्ठम धाम निरत गोपीगणाराधित ॥१॥

अन्तिम भाग व पुष्पिका—

तत्रोपित्वा त्रिरात्र तदनु सभधि गर्भैव राधारण्यकुण्ड स्नात्वा

गौवधनाद्रि विधि वदपि तथा पश्य दिल्ली भागात्समगान् ॥४०॥

“इति श्री मद जितादय महाकाव्य भट्ट जगजीवनि कृते मय नृपोद्गाहो नाम
द्वा त्रिंशत्तम मग ३२ समाप्तोयम् ।”

यह एक बृहदाकार ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिखा गया है, लिखावट साफ सुथरी है। प्रत्येक पत्र पर पत्र सख्या अंकित है। पत्र सब खुले हैं तथा काफी जीण है। घटनाओं के विस्तृत वर्णन होना तथा पद्य उक्त महाराजा के समय में ही लिखे जाने से तत्कालीन इतिहास अध्ययन के लिये तथा उस युग की मान्यताओं, विचारधाराओं एवं संस्कारों को समझने हेतु उपयोगी है। रेऊ तथा भोन्ना ने अपने इतिहास में इसका उपयोग किया है। अब यह ग्रंथ महाराजा मारुसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर द्वारा अग्नेजी साराश सहित प्रकाशित कर दिया गया है। इसमें समस्त नामानुक्रमिकाएँ तथा विस्तृत भूमिका भी है।

ऐतिहासिक बहियें

१५० महाराजा श्री अजीतसिंह के समय कपडा रा कोठार री बही

१ क्रम सख्या—१, २ बही का नाम—महाराजा श्री अजीतसिंह के समय कपडा रा कोठार री बही, ३ प्राप्त स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—२८०, ५ लिपि समय—सवत् १७७७, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत बही मे महाराजा अजीतसिंह व काल मे कपडा के काठार एव उनकी खरीद म खच हुए रुपयो का विस्तृत विवरण है।

इस बही से उस समय म प्रचलित विभिन्न वस्त्रो व कपडो के बारे मे तो जानकारी मिलती ही है, साथ ही साथ राजघरान के रीति रिवाजो विभिन्न अवसरो पर दिय जाने वाले वस्त्रो प्रसिद्ध स्थानो के कपडे रखन वाले दुकानदारो वस्त्रा को रगने वाले रगरेजो कीर सुनहरी (गोटा) लगाने वाले कारीगरो कपडो के मूल्य कपडो के नामा, कपडा को खरीदने के लिए प्रचलित मुद्रा आदि के बारे मे भी पर्याप्त जानकारी मिलता है।

इसमे कई प्रकार के कपडो का विस्तृत विवरण आया है। पाघ कीमखाव पातिया, दुपट्टा, बाला चुदरी आसावरी, कीरमची घाघरा, काचली चोली, पाट जामा, सरेजन, बागा के रूप म उल्लेख है। मलमल, छोट मखमल लटठा रेशम आदि का कपडो के रूप मे बयान है। कीर सुनहरी गोटे का भी उल्लेख है। कपडो को नापने के लिए 'गज' का उल्लेख आया है। मुद्रा के रूप मे रुपया, आना पैसा, पाई आदि का उल्लेख है।

यत्र

पाघ -

इस वही में विभिन्न प्रकार की पाघों का उल्लेख आया है, जैसे—पाघ मुकनी, पाघ पट्टी, पाघ सफेद मुकनी, पाघ लाल, पाघ मुलमुल, पाघ बसूमल, पाघ कोमली, पाघ छोट की पाघ ऋठठे की पाघ बादलाई आदि ।

ये पाघों राजघराने के रीति रिवाजों के अनुसार विभिन्न अवसरों पर राजघराने से सम्बन्धित लोगों व अन्य लोगों को वधवाई जाती थी । विवाह, सगाई वप गाठ व अन्य अनेक अवसरों पर पाघें भेंट की जाती थी । यहाँ तक कि महाराजा साहब को भी कुछ विगिष्ट व्यक्ति नजराने के रूप में जरी की पाघ भेंट करते थे । इसी भी उल्लेख इस वही में आया है ।

कुछ विभिन्न प्रकार की पाघों उनकी खरीद के स्थानों तथा विभिन्न अवसरों पर भेंट किये जाने का उल्लेख इस प्रकार है, यथा—

१ पाघ बादलाई सत्रजवा खरीद घरम चन्द ११)

पत्र सरया—१ ए

८१" पाघ बादलाई कसुमल गुजरात सू अनोपसिंह मेलिया—

२१७॥) पाघ २६ ७॥)

१३५) पाघ १६ ८॥)

४१) पाघ ४ १०॥)

७४१॥ -) पाघ ७ १०॥ ३)

पत्र सरया—१ व

वप गाठ के अवसर पर पाघें भेंट करने का उल्लेख द्रष्टव्य है—

' १ पाघ बादलाई लपादार खरीद मु० जोधपुर

सामीदास नागौरी

१ कवर श्री रतनसीधजी रे वसर गाठ रा सीरपाव"

पत्र सख्या—३ व

कुछ रस्मों पर राजघराने के कमचारियों को भी पाघें इनायत की जाती थी यथा—

५ पाघ बादलाई कसुमल बगसीस

१ जैतसिंह

२ नाजर माहाराम

१ ध्यास भीखो

१ पीरागदास रोजवाई”

पत्र सख्या—४ व

कुछ अवसरों पर किलेदार, किलेदार के सम्बन्धित मनसबदार, सहीवाल (घोडा सम्हालने वाला) आदि का भी पाघें भेंट की जाती थी। विदाई के अवसर पर सवामुक्त चौधरी को पाघ बाधकर उसका यथोचित सम्मान किया जाता था, यथा—

“१ महा सुद ५ सनवार मुकाम मेडता
पाघ १ छोट री, खरीद गुलाबचन्द
१ गाव भावी रो चौधरी धीज उतरियो
तरे सीकदार दयालदास बघाई”

पत्र सख्या—२१ व

सम्मान के लिए राजपूतों को कपडा इनायत होता था यथा—

“६० कपडो मोजुदान श्री मोहन साहय ने इनायत हुयो तीण
६० कवर साहबा ने

१० कवर श्री अर्भेसिध जी
१० कवर श्री बखतसिध जी
१० कवर श्री आनदसिध जी
१० कवर श्री जोरसिध जी
१० कवर श्री रायसिध जी
१० कवर श्री परतापसिध जी
१० कवर श्री रतनसिध जी
१० कवर श्री रूपसिध जी
१० कवर श्री मुलतानसिध जी

पत्र सख्या—२२ व

कीमखाव -

वही मे कीमखाव वस्त्र का भी उल्लेख है। यह कीमती वस्त्र होता था और किसी विशेष अवसर पर विशिष्ट व्यक्तियों को इनायत किया जाता था। एक उदाहरण द्रष्टव्य है, यथा—

२०८ २

३३१ महात्मान के निर्दोष होने का प्रमाण, यथा -

वस्त्र)

पाद्य -)

मुकनी, य
कोमली,

ये

घगने से :

वय गाठ

महाराजा

करते थे

बु

पर सेंटि

१) चमड़ा का -

२) चमड़ा के मत ?

३) चमड़ा के मत ?

इत इत

बहुत से काम करने वाले गवयों को भी अपना सेंटि देने जान

गवय ? -

१) गवय गुर ६ बुधन कीरनपी वग

२) गवय ?

३) गवय के गाने

४) गवय भावना में

पत्र सत्या -

होना -

इसके सोचने (साक्षी) का भी उल्लेख है। पातिये कई तरह कहें

६४

१) गवय, पोतिया मुहरारी, पोतिया कमुमल, पोतिया कील

२) गवय पोतिया देवनी साय बेवदार भाति। पोतिया के खेले

३) गवय ?

४) गवय तरीर मुहरारा भव,

चा

५) गवय ?

६) गवय ?

७) गवय ?

८) गवय ?

९) गवय ?

१०) गवय ?

११) गवय ?

१२) गवय ?

वय

इत

कुछ

धी यथा -

बालाबंदी साफा (चुदडी) का उल्लेख द्रष्टव्य है—

“१ बालाबंदी कीरमजी बेलदार

वग सीरपाव राव खीवसी राजा रो

१ तोर रावल बुधसीध जैसलमेर रे मेलावो’

पत्र सख्या—७६ अ

दुपट्टा -

किसी विशेष खुशी के अवसर पर दुपट्टा इनायत किया जाता था ये कई प्रकार के होते थे, जैसे—जरी का दुपट्टा, मसुमल दुपट्टा, दुसालो आदि। जरी के दुपट्टे का एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

“२ भगसर सुद ३ ब्रसपतवार भुकाम मेडता

२ दुपटा जरी श्री हजूर मगाया

१ दुपटो १ चीगणाखानी श्री दुपटा

१ गावणीया ने इनायत

१ नदलाल ने भाव रो इनायत”

पत्र सख्या—१०८ अ

वप गाठ के अवसर पर कपडे वितरित किये जाते थे, यथा—

“१ आसावरी कीरमजी मसुमल वग

खरीद करमचंद गज ६। ३ ६२।। ३

२४।)

१ कवर श्री रायसीध रे बरसगाठ रा बागा ने”

पत्र सरया—८३ अ

वप गाठ पर बागा भी भेंट किया जाता था, यथा—

१२।। कवर श्री आनदसीधजी रे बागो १

पत्र सख्या—८८ अ

वही मे लहगा व साफो का उल्लेख द्रष्टव्य है—

४६ खालसा रो वकारण ४६ अरगीया

४६ घाधरा ४६ फेटीया

पत्र सख्या—४५ अ

उस समय बादलाई साडी का प्रचलन था, यथा—

४ बादलाई साडी

२ राजाजी रे बहण ने

१ साडी रूपेदार

१ साडी मेहताबी

पत्र सरया—१०४ अ

वही मे काचली, कुरती आदि का भी यथास्थान उल्लेख है।

“कीमखाव खरच—

६ सहेलीया ने, नग १

२) पडदायतीया ने, नग १”

दत्र सख्या—४५ ब

कमठे के काम करने वाले गजधरो को भी कपडा नेंट किये जाने का उल्लेख द्रष्टव्य है—

“मगसर सुद ६ जुगल कीरमची बग

१ अमीन ने

१ गजधर केसा ने

१ गजधर आफाय ने”

पत्र सख्या—४८ ब

पोतिया -

इसमें पोतियों (साफो) का भी उल्लेख है। पोतिये कई तरह के होते थे, जैसे—पोतिया लछेगार, पोतिया गुजराती, पोतिया कसुमल, पोतिया कीरमची, पातिया जरीबेल, पोतिया रेशमी लाल बेलदार आदि। पोतिया के खरीदने का उल्लेख द्रष्टव्य है—

“१०४ पोतीया खरीद गुजरात भग, अनोपसीधजी मेलीया

२ पोतीया लछेदार

५६॥) पोतीयो) १ गज ५

४८) पोतीयो १ गज ५”

पत्र सख्या—५५ अ

पोतिये इनायत किये जाने का जिक्र इस प्रकार है, यथा—

“पोतीये इनायत

१ सावण वद ४ मुकाम जोधपुर

१ पोतीयो कसुबल बग सीरपाव ४०

अजवसीध रे सीरपाव

१ नाजर अणदराम ने इनायत”

पत्र सख्या—५८ ब

रेशमी पोतिया व उसकी कीमत का उल्लेख द्रष्टव्य है—

‘घासोज सुद १२ मुकाम मण्डोवर

२ बग खरीद सोमीदास

२ पोतीया रेशमी लाल

बेलदार ३॥)”

पत्र सख्या—७४ अ

बालाबन्दी साफा (चुन्दड़ी) का उल्लेख द्रष्टव्य है—

“१ बालाबन्दी कीरमजी बेलदार
बग सीरपाव राव खीवसी राजा रो

१ तोर रावल बुधसीध जेसलमेर रे मेलावो”

पत्र सख्या—७६ अ

दुपट्टा -

किसी विशेष खुशी के अवसर पर दुपट्टा इनायत किया जाता था ये कई प्रकार के होते थे, जैसे—जरी का दुपट्टा, कसुमल दुपट्टा, दुसालो आदि। जरी के दुपट्टे का एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

“२ मगसर सुद ३ ब्रसपतवार मुकाम मेडता

२ दुपटा जरी श्री हजूर मगाया

१ दुपटो १ खीगणाखानी श्री दुपटा

१ गावणीया ने इनायत

१ नदलाल ने भाव रो इनायत”

पत्र सख्या—१०८ अ

बप गाठ के अवसर पर बपठ वितरित किये जाते थे, यथा—

“१ आसावरी कीरमची कसुमल बग

खरीद करमच-द गज १। ३ ६२।।। ३

२४।)

१ कवर श्री रायसीध रे बरसगाठ रा बागा ने”

पत्र सख्या—८३ अ

बप गाठ पर बागा भी भेंट किया जाता था, यथा—

१२।। कवर श्री भानदसीधजी रे बागा १

पत्र सख्या—८८ अ

बही मे लहगा व साफो का उल्लेख द्रष्टव्य है—

४६ खालसा री बकारण ४६ भरगीया

४६ घाघरा ४६ फेटीया

पत्र सख्या—४५ ब

उस समय बादलाई साडी का प्रचलन था, यथा—

४ बादलाई साडी

२ राजाजी रे बहण ने

१ साडी लपेदार

१ साडी मेहताबी

पत्र सख्या—१०४ अ

बही में काचली, कुरती आदि का भी यथास्थान उल्लेख है।

कपडे

मलमल -

वही म दो रगा की मलमल का उल्लेख आया है ।

१ मलमल वसुमल

२ मलमल सफेद

वही मे वसुमल का उल्लेख इस प्रकार है—

'७। मलमल १ वसुमल गज १५॥ =

वर ॥ ३ ॥

७।। कवर श्री आनदसीधजी रे दूपटा जरी सेद-

नोमा आणे वरस गाठ रा बागा वा ७।।। वाम ६ ३ पत्र सरया— ६४ व

राजघराने की तरफ से छोटे इनायत करने के लिए खरीदी जाती थी ।

वही म विभिन्न प्रकार की छोटा का उल्लेख आया है । कुछ छोटो के नाम इस

प्रकार है—केसरिया छोट मोलाखी छोट, लाल छोट, सफेद छोट, सुदामी छोट,

बदरी छोट, गुजराती छोट, मुलतानी छोट, बिदामी छोट, गुलाबी छोट आदि-आदि ।

इनमे मुलतानी छोट प्रसिद्ध थी ।

वही के अनुसार छोट इनायत किये जाने का उदाहरण दृष्टव्य है—

“१ छोट पो केसरिया

२ दफ्तरी देवराज बीकानेर रा ने इनायत

वग अमीनन १५॥ =)”

पत्र सख्या—१५४ व

इस वही मे मखमल का भी उल्लेख है । यह ठाकुरजी के सिंहासन को

सजाने के लिए, तख्तवार की म्यान पर लगाने के लिए घासिये तथा रजाइया बनाने

के लिए, बठने की जाजम बनाने के लिए काम मे ली जाती थी ।

ठाकुरजी (कृष्ण भगवान) के सिंहासन को सजाने के लिए मखमल काम मे ली जाती थी यथा—

“५।। श्री ठाकुर जी रे सिंघासण रे

५।। मुखमल कासानी

२।। देवजुलणी इग्यारस री डोलीरी ,

पत्र सख्या १६६ अ

वपगाठ के अक्षर पर ब्राह्मणो, डोलियो वेश्याओ, गरीबो आदि को बपडा

इनायत किये जाने का उल्लेख भी इस वही मे है ।

कपडो को नापने के लिए 'गज' का उपयोग किया जाता था ।

मुद्रा में रूपयो, जानो, पैसो एव पाइया का प्रयोग होता था ।

इस बही से विभिन्न प्रकार के कपडा के महत्व के बारे में जानकारी हैं, इसके साथ ही राजधरान के रीति रिवाजों से हम राजस्थानी संस्कृति के वसिष्ठ्य को भी जान सकते हैं ।

१५१ महाराजा तख्तसिंह री राणी राणावत रँ मंदिर तालके री बही

१ सग्रह क्रम सरया—५१६, २ बही का नाम—महाराजा तख्तसिंह री राणी राणावत रँ मंदिर तालके री बही ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र० ४ पत्र सरया—५६४, ५ लिपि समय—वि० सवत् १६२६, ५ विशेष विवरण—प्रस्तुत बही में महाराजा तख्तसिंह की रानी राणावत द्वारा मंदिरा में भेजी गई सामग्री का विवरण दिया गया है । यत्र-तत्र ब्राह्मण भोज का भी उल्लेख है । मंदिरों में भेजी गई सामग्री एवं ब्राह्मण भोज पर खर्च हुए रूपया का वरण मुख्य रूप से हुआ है ।

इस बही से प्रतीत होता है कि राणावत रानी ने अपने गृहस्थ जीवन के साथ साथ धार्मिक जीवन में भी रुची ली है । समय ममय पर मंदिर, में पुजापा, कपडे, आभूषण व अन्य सामग्री भेजने एवं ब्राह्मणों का भोजन करवाने से प्रतीत है कि राणावत रानी ने धर्म पुण्य में विशेष ध्यान दिया है ।

इस बही में विभिन्न देवी देवताओं के मंदिरों में विभिन्न अवसरों पर भेजी गई सामग्री भेंट किये गये रूपये आदि का पर्याप्त आलेख है—

फागण मास में—

१) मादवजी गढ ऊपर राजसाल में वीराजे तीणारे सीवरात री भेंट रो दीयो, बद ६

१-), ॥ मादव जी श्री पारर्थेश्वर री पुजन ताई ' पत्र सख्या—१ व

बही में शरद पूर्णिमा के अवसर पर मंदिरों में भेंट किये रूपया का आलेख स्पष्ट है—

“१) आसोज रा मास में सुद १५ श्री नायजी गढ ऊपर राजसाल में वीराजे तीणारे सरद पुनमरा रा उद्धव री भेंट रो

१) गढ ऊपर उद्धव रो दीयो” पत्र सख्या—५ अ

मंदिरा में भेजी जाने वाली पोशाका का वरण भी भाया है । बही में पोशाकों की सिलाई का वरण इस प्रकार है यथा—

“॥) पोसाया सोवाई तीणरो मुकरडे रुपयो ॥) दीपो हस्ते सेवग पुनीयो पशानो पर कोर गोटा मो लगाया जाता था, यथा—

‘कपडो ने कोर गोटो लयो कपडा रा कोठार ऊ” पत्र सख्या—५ अ

पुजारी ब्राह्मणों को भेंट के रूपमें दिये जाने का उल्लेख भी है—

२) भादवा में सुद ३ गंजी श्री चतुर्भुज जी महते वीराजे तीणारे सेवग पईतरा भारसरा पईतरा ने राखीयो प्रसाद लेने ग्रामो तीणा ने भेंट रा

२) हस्ते सेवगा” पत्र सख्या—१५ अ

वही में मंदिरों में पुजापे की सामग्री मिठाई, देवी-देवताओं के आभूषण, वस्त्र, कपड़े आदि भेजने का यथा स्थान उल्लेख है। इसमें विभिन्न उत्सवों, पर्वों व त्यौहारों की भी जानकारी मिलती है। इन उत्सवों एवं पर्वों पर राजस्थान में सम्पन्न किये जाने वाले विभिन्न धार्मिक रीति रिवाजों के बारे में भी उल्लेख हुआ है।

वही में नवरात्रि के पक्ष पर रुपया की भेंट तथा मिठाई खरीद का उल्लेख थाया है, यथा—

१॥॥)। मीरसर रा माम में ग्रामोजी नवरता री थापना रे होम तातुके भीठाई खरीद कथोई कनीराम री तीणरा सुद ३” पत्र सख्या—१६ अ

वर्षाकाल में देवी दुर्गा की स्थापना का पाठ किया गया। उसमें खर्च हुए रुपयों का वृत्त इस प्रकार है—

२) जोसी बालकीसन दुर्गाजी री पाठ कीयो ताई तीणारे रोजगार पेटीया दीया हस्ते खुद वद १०

३)। वीरम जळ रा कळम मगाया” पत्र सख्या—२१ अ

सूय भगवान के ज्ञान में खर्च हुए रुपयों का विवरण द्रष्टव्य है—

१)।।। श्री लालजी मायवा री तरफ मु श्री सुरजजी री दान करायो, मीती वद १४ तीण तातुके

॥।।।। वद १४ में

॥) हेम री टीकडी १ नग मुनार अमरचंद री तीण री

१) वद मुपारी मुनार अमरचंद री

१) चनरा मुपेद खरीद तीणरी

२१।। =) अन रा कोठार मु चावल धी खीर

७।) ७

। कपडा रे कोठार मु लगे गज ॥ -)

इसी तरह से मगलजी, मुधाजी, कैंतजी, सनीसरजी, राहाजी आदि की दान की सामग्री भी दान में देने का यत्न है।

वही तत्कालीन धार्मिक मायताओं, खाद्य सामग्री, रीति रिवाज आदि की दृष्टि से उपयोगी है।

१५२. महाराजा तर्लसिंह की रानी राणावत की बहिन के विवाह की बही

१ सग्रह क्रम संख्या—७३७, २ बही का नाम—महाराजा तर्लसिंह की रानी राणावत की बहिन के विवाह की बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र संख्या—४५, ६ लिपि समय—वि० सं० १६२४ फाल्गुन बंद ८, ६ विशेष विवरण—महाराजा तर्लसिंह की रानी राणावत (भालामण्ड) की बहिन प्रताप कुंवर के विवाह के अवसर पर राणावत रानी ने राजधराने की ओर से विवाह की सम्पूर्ण सामग्री भेजी। आतोच्य बहो में भेजी गई वैवाहिक सामग्री के विस्तृत विवरण के साथ विवाह की सामग्री में खर्च हुए रुपये का उल्लेख है।

रानिया अपनी बहिनों के विवाह में राजधराने की ओर से सम्पूर्ण वैवाहिक सामग्री भेजती थी। ऐसा उल्लेख इस बही में है।

बही के अनुसार विवाह के अवसर पर प्रीतिभोज की सामग्री, आभूषण, वस्त्र व दहेज का अथ सामान भेजा गया।

प्रीतिभोज में भेजी गई सामग्री का एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

“फाल्गुन बंद ७

१३ आटा रा धेला

१ बेसन रा धेला रो कठा मेली ने आयो

१ सूण रो धेलो

१ चीणा री दाळ रो धेलो

१ मीरचा लाल रो धेलो लीखीयो आयो”

पत्र संख्या—२ व

राजधराने की ओर से दहेज के निम्न बतन व अथ वस्तुएं भेजे गये—
कलस, चरी, परात, धाल, बटोरदान लोटा, कासी के बाटके, चरी, झारा, डूकनिया, धालिया, कुडचिया, चरु, कुडी, लोटा, दीवडा, प्यालो, चालणी, चूला, तवा, बाजोट, डोरिया, चीपटा आदि।

सरकार की गाडी में भेजे गये वस्त्रों का उल्लेख इस प्रकार है, यथा—

“८ दुपटा बेसरिया चीलीदार

१ दुपटो वसुमल कीरण जवारा रो

२ साटिया २ कमुमल

१ युपटो सीयादार जाली रा लपो जवारा रो

१ वाचनी कमुमल कबीयादार गोटा रो

१ चमरी १ मोन रो छापा रो गोटा रो

२ मदी पागा २

१ लकीर नयरी १ हनकी लकीर टेसी

२ दुपटो कमुमल सीनवाप हलको

१ १

१२ पेच केसरिया २ २ सुफेद ५ गुलाबी

४ ३

६ चुदडिया नग वतीर रा छापा रो

पत्र सख्या—४ अ

भालामण्ड भेजे जाने वाले कुछ दहज के विस्तरा का उल्लेख इस प्रकार है,

यथा—

“१ बीटो १ मे पथरणो वीर डोरा सुधा

१ पथरणो खुमखी मीसरु रो हासीया रो खोळी सुधो

१ रजाई १ कमुमल खोळ सुधो”

पत्र सख्या—१२ अ

इनके अतिरिक्त जाजम, चानणीया पढदा आदि भी भेजे गये ।

वही म भालामण्ड व अय गावो से आई जीतस का भी उल्लेख है ।

राणावत रानी की ओर से अपनी बहिन की शादी म पर्याप्त वैवाहिक सामग्री भेजी गई । इस प्रकार वैवाहिक सामग्री भेजना राजघराने की परम्परा रही है ।

१५३ महाराजा तख्तसिंह री रानी राणावत री कमठा री बही

१ संग्रह क्रम सख्या—७४, २ बही का नाम—महाराजा तख्तसिंह री रानी राणावत री कमठा री बही ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—८१ ५ लिपि समय—१६१७ स १६१८, ६ विक्षेप विवरण—प्रस्तुत बही म महाराजा तख्तसिंह की रानी राणावत ने गोल मे नया नोहरा (परिवारिकाया के रहने का स्थान) बनवाया उसके कमठे का विवरण दिया गया है । इसम कमठे के उपयोग मे ली गई सामग्री का मूल्य, कारीगरो व मजदूरो की मजदूरी, चूना, पत्थर, इधन व कमठे की अय सामग्री का भी यथास्थान उल्लेख मिलता है ।

बही में मजदूरों को दी जाने वाली मजदूरी, कमठों में काम आने वाली सामग्री का पर्याप्त उल्लेख है। मू गीया नपवाने (छत पर कक्करी बिछवाने का नाप) को मजदूरों की जो मजदूरी दी गई उसका उल्लेख द्रष्टव्य है—

- “४॥ = मू गीयो नपायो भादवा वद २
 १ माली गीरदारी छबोलियो ४
 १ माली सीरामो मुधार छबोलिया ४
 १ माली बीरदीयो छबोलियो १॥
 १॥ माली जोरा री बरु छबालियो ६
 १॥ मालण ऊमेदी छबोलियो ३

१८॥

पत्र सख्या—१३ व

छत कूटने वाले मजदूरों को उस समय प्रतिदिन एक आना व कुछ पैसे मिलते थे। इसका प्रमाण बही में इस प्रकार ज्ञात होता है, यथा—

सावण सुद १४ छत कूटे तीणा ने हीसाब दीनो

१४) सगस १४ सावण सुद १४

१) सीताराम जोदा रो

१) मगनो भीया रो

× × × × × ×

१) चदो माला रो

१) फकीरो नानग रो

१) मोयतो मुला रो

१) छोगो लखा रो

१) रामवगस मोतीलाल रो”

पत्र सख्या—१० व

बही में पत्थरों की घडवाई की मजदूरी का भी उल्लेख है यथा—

“चैत में भाठो घडीयोडो

१३॥ कडाऊ ईकरवा घडीयोडा

५ वद ६ लवा गज ५॥ चोडा गज ॥ जाडा २

६॥ सुद १५ लवा गज १२॥ चोडा गज ॥ जाडा २

२१८ राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग २

यही में कबूरी, मुरड, चूना, खट्टी आदि का उल्लेख है। कट्टी को पकाने के लिए छाएँ (गोबर का ईंधन) उपयोग में लिये जाते थे।

वही के अनुमार पौन चमालीस रुपये में सत्तर छाएँ (पट्टिमें) आती थी, यथा—

४३।।) छोणा नग ७० मेलो चौंगरा दासा ओरो ऊपर

६७ २ १ पत्र सख्या—७ ब

वही में चूनगरा को प्रतिदिन सवा छाया मजदूरी के दिने जाने का उल्लेख है, यथा—

“चुनारा री हाजरी

अवदुल पीरवगस री

५ बद १४ बद ७ बद १ बद २ बद ३ बद १

१। १। १। १। ० १।

10978

914192

पत्र सख्या—३१ ब

तत्कालीन समय में पत्थर का मूल्य इस प्रकार था, यथा—

मेमदा री खान रो भाटो अणघड

=) चोको १ आयो

= ॥) नाल री ओरी री कवलीया २ नीचनी लबी गज ३ जाडी गज १ चबडी गज ॥

× × × × × ×

२१।।) ३) छोणा नग ४५ अणघडयोडी

।।) ३) नाल री ओरी री छोणा नग ३”

पत्र सख्या—७२ ब

इस वही में कमठे की सामग्री का अर्द्धा उल्लेख है। कमठे का काम करने वाले मजदूरों, कारीगरों, पानी लाने वाला की मजदूरी के साथ साथ कमठे के उपयोग में लिये जाने वाले पत्थर, चूना, कंकरी मुरड, खट्टी, छोणा आदि के मूल्यों के बारे में भी पर्याप्त जानकारी मिलती है। साथ ही रानियों की स्थापत्य कला में रुचि का भी आभास होता है।

१५४ महाराजा तल्लसिंह री रानी राणावत रे आभूषणों री बही

१ सग्रह क्रम सख्या—७५२, २ बही का नाम—महाराजा तल्लसिंह री रानी राणावत रे आभूषणों री बही, ३, प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—७८, ५ लिपि समय—वि० सवत् १६११, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत

वही मे महाराजा तख्तसिंह की रानी राणावत के आभूषणों के उल्लेख के साथ-साथ इन पर खच हुए रूपों का विवरण है। इसमें आभूषणों के प्रकार एवं उन्हें बनाने वाले सुनारों की मजदूरी उनके मूल्यों आदि के बारे में भी जानकारी मिलती है।

वही में कई प्रकार के आभूषणों का उल्लेख हुआ है जैसे —वाळिया, काटा, बेल, कडिया, पाने की मिण डोरा, भुजबद बीटिया मोतियों की लड्डें टोटिया, भूमरा, जुटणों की जोडिया, मोतिया का चोखडा, पानों की चुनिया, थेकडा, कातरियों की जोडिया, दावणा, काना की साकली टिकिया सिगोडा चूमपा, मोतिया हीरो की कठियें, बाजुबद, गुदा की जोडी चाकिया छल्ले, बडे सोने के फूल, टोडा, काठला, वगन, दुसी, सावळी, मादलिया साकलो की भोगरी तीमणिया, सोने की लड्डें आदि।

सोने के आभूषणों में हीरे जवाहर व मोतिया के व कई प्रकार के रंग के नग जडे जाते थे ऐसा उल्लेख भी वही में है।

वही उल्लिखित जुटणों की जोड़ी में मोती जडाये एवं जडने वाले की मजदूरी दी, उसका उल्लेख स्पष्ट है—

“१२॥—)। जुटणारी जोडी १ जडाउ मीना रा काम री मोतीयादार जपर मे १६११ रा बरस मे असवारी गगा जी पघारी तरे पाछा आवता नवी कराई तीण मे माती पुवाया तीण नग मीना रा तारा रा लगाया मेनतरा

११। =)। असल मीना रा तारा रा लागा तीण रा

१॥) मेनत मोती पुवाया तीण री सुनार ग्रमरा ने पत्र सख्या—८ अ हाथी दात के मूठिया पर सोने का काम होता था। वही में मूठिया पर

सोने की खोली चढाने का उल्लेख है।

सोने के फूल लोक देवी-देवताओं के नाम के राजघराने के लोग गले में धारण करते थे, यथा—

“रामदेवजी रो फूल १ नवो करायो वाती सुद १०” पत्र सख्या—२१ व उस समय एक सोने की चोकी की घडाई की मेहनत वही के अनुसार निम्न-

लिखित दी जाती थी—

॥)॥ चोकी १

पत्र सख्या—३२ अ

सोने के आभूषण बनाने वाले सुनारों को मेहनत की दी जाने वाली मुद्रा का उल्लेख भी हुआ है। एक सोने की चोकी व मादलिया बनाने वाले सुनार को छ आने की मजदूरी मिलती थी।

वही के अनुसार एक साने के तीमणिये की घडाई के वारह आन दिये जाते थे । यह उल्लेख दृष्टव्य है—

३ =) आसाज मे तीमणियो १ नवो करायो सु जडायो जडीया अगरेचद करन तीण रा दीया आसाज वद १

१॥ =) कुनण मोती ॥ ” रती १॥

१) पुखराज १ पीरो जगे १

॥) चुनीया आगली ३ नवी २ खरीद तीण रा

॥॥) मेनतरा

३ =

पत्र सख्या—४३ व

उस समय बनने वाले सोने के आभूषणों के प्रकार के वार म विस्तृत जानकारी तो मिलती ही है साथ ही साथ उन पर मोरी, जवाहर मीना की जडाई का काम एव आभूषण बनाने वाले सुनारों की मजदूरी पाने मोती मीना जवाहर आदि जडने वाले जोहरियों की मजदूरी आदि के बारे में भी पर्याप्त उल्लेख है ।

१५५ महाराजा तख्तसिंह के पुत्र माधोसिंह रे ज मोत्सव री बही

१ सग्रह क्रम सख्या—७७४, २ वही का नाम—महाराजा तख्तसिंह रे पुत्र माधोसिंह र ज मोत्सव री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र० ४ पत्र सरया—१६, ५ लिपि समय—वि० सवत् १६१३ आषाढ सुद १३, ६ विषय विवरण—प्रस्तुत वही में महाराजा तख्तसिंह के पुत्र माधोसिंह के जन्म के दस दिन पश्चात् मनाये जाने वाले दसोदण नामक उत्सव पर बटवाई गई लापसी (गेहूँ के दलिये से बनाया जाने वाला मारवाड का मिष्ठान) पर खच हुए रूपों का उल्लेख है ।

ज मोत्सव —

राजघराने में राजकुमारों के जन्म पर विशेष उत्सव मनाये जाते थे । यहाँ राजकुमार के जन्म के दस दिन पश्चात् लापसी बटवा कर खुशी मनाने की परम्परा रही है । यह लापसी देवस्थाना, घडा, पितरा के स्मारका, सतिया के स्मारका रानियों, पढदायती राजकुमारिया सामंत परिवारा डावडियो (दासिया) नौकर-चाकर व नौकरा को बाटी जाती थी ।

वही में इस भयसर पर बटवाई गई लापसी का उल्लेख इस प्रकार है—

देवस्थानों पर भेजी गई सापसी का उल्लेख दृष्टव्य है—

निम्नलिखित देवी-देवताओं के सापसी भेंट पढ़ाई गई—

देवी गणेश्वरी जी, देवी धावण्टा जी, देवी हिमनाज जी, श्री ज्वालामुखी जी, श्री नटियाल जी, गणेश जी, महादेव जी पंच देवता गणार क भेरजी, बाला-गोरा भेरुजी, गुसाईंजी, गागाजी रामदेव जी मन्त्रीनाथ जी आदि ।

यहां पर भेजी गई सापसी का उल्लेख इस प्रकार है, यथा—

“यहां गण—

श्री अज्ञोतसिंध जी, हस्ते—परभूदाग री बऊ २

श्री अमसिंध जी, हस्ते—गयताणी १

श्री वसन्तसिंध जी, हस्ते—रायनाणी ० ' पत्र सख्या—३ व

जनानी द्योड़ी म भेजी गई सापसी का उल्लेख दृष्टव्य है—

“राज साल म

दादाजी श्री दयडी जी सा १

हस्ते जुगता री बऊ १

दादा जी श्री धृवाण जी सा १

हस्ते पुणता री बऊ

दादी जी श्री माई नटियाणी १

हस्ते पुणता री बऊ”

पत्र सख्या—४ व

पितरा (जन धारणा के अनुसार परिवार के मृत व्यक्ति जो देव योनि में चले जाते हैं) के धारा पर भी सापसी भेजी गई, यथा—

“पीतर जेनासिंध जी १

पीतर जोरावरसिंध जी

हस्ते सोलकी सुपार दोईतारी बऊ १

गायर पीतर जी

हस्ते मुयरा—१ ' पत्र सख्या—४ व

रानिया को भेजी गई सापसी के धालो का उल्लेख दृष्टव्य है—

“श्री मेला रामवा

श्री बडा राणाधन जी सा ४

हस्ते मुमल

श्री बडा भटीयाणी जी सा १

हस्ते बडु बाई जी सारी

श्री धावडी जी सा १”

पत्र सख्या—५ व

महाराजा श्री नजराना उनके सामन्त निकट सम्बन्धी ठाकुर पडदायतें, नौकर एव रानिया को महाराजा की पडदायते, निकट सम्बन्धी एव दीवान आदि दिया करते थे। राजकुमारा व राजकुमारियों को भी उनकी वप गाठ एव विवाह पर नजर दी जाती थी।

महाराजा तर्कसिंह के समय हुई निछरावल का विवरण अग्र लिखित पक्तियों में दृष्टव्य है।

महाराजा तर्कसिंह की गनी भटियाणी को निछरावल हुए रुपया का विवरण इस प्रकार है, यथा—

“वीगत नीजर नोछावर री—

४७)) १३५५) श्री माजी सायबा रा श्री हजूर सायबा रे

नीछरावल कीया सुने बाकी रया सु—

४)) १३८) माजी श्री बडा भटियाणी जी सा

आया १ ————— बाकी

————— १ ————— १

४)) १०८) तीबारा रा ————— १०)) ५५२)

आया ————— बाकी

तीबारा रा बरस १ मे तीवार ४ हुब सु ५०४)

१४) दसरावा रा १४) दीवाली रा

१४)

१४) होली रा

२८) बरसगाठ रा पत्र सख्या—१ अ

इसी तरह पवों पर निछरावल हुए रुपया का विवरण इस प्रकार है—

४)) ५०) बछ बारस रा ओगडा रा ईगसग १०)) ८२)

सवत् १६०१ रा लगाई १६०८ रा सुधा—

बरस ८ रा गन ८)) १४) लेख सुधा—

१५)) ११२) सु आया तथा बाकी मे आया—

पत्र सख्या—अ

विभिन्न अवसरों पर महाराजा तर्कसिंह को दिये गये नजरान का विवरण

दृष्टव्य है—

“२८) सवत् १६०० बरस रा आया

७) काती सुद ६ अमदनगर सु पधारीया तरे माय मुजरो वरण मे पधारीया तरे कीया सु

मरदानी डोही में लापसी निम्न व्यक्तियों को भेजी गई—

“मरदानी डोही हस्ते

दीवाण १

खानसामा १

१ दोहीदार सेसकरण

१ खजाना रा ओदेदार

पत्र संख्या—१४ अ

वही में कमीशो (डोली नगरची, पिजारे, रगरेज सुधार आदि) को भी लापसी बाटने का यथा स्थान उल्लेख आया है।

सरकारी नौकरों को लापसी बाटी गई, यथा—

१ कामदार

१ चाधरी उत्तमचंद मनछाराम २ १ १

१ पनयालियो जैतराम—१—

चोपडो जीतमल—१

पत्र संख्या—१८ ब

जोधपुर राजघराने में बच्चे के जन्मात्सव के समय किस प्रकार रम्भों का आयोजन किया जाता था, इस विषय पर अच्छा प्रकाश पड़ा है।

१५६ महाराजा तर्तसिंह रे नजर निछरावल री बही

१ संग्रह क्रम संख्या—८२६, २ बही का नाम—महाराजा तर्तसिंह रे नजर निछरावल री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र संख्या—१३१ ५ लिपि समय—वि० संवत् १६०० के कार्तिक मास से १६२७ तक, ६ विशेष विवरण—इस बही में महाराजा तर्तसिंह के समय हुई नजर निछरावल का विवरण दिया गया है।

निछरावल -

राजघराने की एक परम्परा के अनुसार राजाओं, रानियों, राजकुमारों, राजकुमारियाँ आदि को महत्वपूर्ण अवसरों पर दी जाने वाली रूपों की भेंट (नजराना) बहलाती थी। उनका विशिष्ट सम्मान करने के लिए निछरावल भी की जाती थी (यह राशि नौबरो को बाट दी जाती थी)। यह विभिन्न अवसरों पर दी जाती थी जैसे—दीपावली, दशहरा, होली, वषगाठ, विवाह, पर्व, राजतिलक, युद्ध में जाते समय, युद्ध से लौटते समय, दुश्मन को पराजित करने के उपलक्ष्य में तीर्थ यात्रा जाने पर, किसी प्रमुख स्थान पर जाने पर, किसी विशिष्ट खुशी पर आदि।

महाराजा को नजराना उनके सामन्त निकट सम्बन्धी ठाकुर पडदायतें, नौकर एव रानियों को महाराजा की पडदायते निकट सम्बन्धी एव दीवान आदि दिया करते थे। राजकुमारा व राजकुमारियों को भी उनकी वप गाठ एव विवाह पर नजर दी जाती थी।

महाराजा तर्कसिंह के समय हुई निछरावल का विवरण अत्र लिखित पक्तियों में दृष्टव्य है।

महाराजा तर्कसिंह की रानी भटियाणी को निछरावल हुए रुपया का विवरण इस प्रकार है, यथा—

“धीगत नीजर नोछावर री—

४७)) १३५५) श्री माजी सायबा रा श्री हजूर सायबा रे

नीछरावल कीया सुने बाकी रया सु—

४)) १३८) माजी श्री बडा भटियाणी जी सा

आया १ ————— बाकी

————— १ ————— १

४)) १०८) तीबारा रा ————— १०)) ५५२)

आया ————— बाकी

तीबारा रा बरस १ में तीवार ४ हुव सु ५०४)

१४) दसरावा रा १४) दीवाली रा

१४)

१४) होली रा २८) बरसगाठ रा पत्र सख्या—१ अ

इसी तरह पर्वों पर निछरावल हुए रुपयो का विवरण इस प्रकार है—

४)) ५०) बद्ध बारस रा ओगडा रा ईगसग १०)) ८२)

सवत् १६०१ रा लगार्ई १६०८ रा सुधा—

बरस ८ रा गन ८)) १४) लेख सुधा—

१५)) ११२) सु आया तथा बाकी में आया— पत्र सख्या—अ

विभिन्न अवसरों पर महाराजा तर्कसिंह को दिये गये नजराने का विवरण

दृष्टव्य है—

“२८) सवत् १६०० बरस रा आया

७) कातो सुद ६ छेमदनगर सु पधारीया तरे माय मुजरो करण में पधारीया

तरे कीया सु

- ७) मीगसर बंद ५ रग पघरायो तीण रा
१४) मीगसर सुद १० राजतोलक बीराजोया तीण रा"

== २८

- "१४) सवन् १६०१ रा मा बंद १ मुजरो वरण पघारीया तरै बीया
१४) सवत १६०२ रा बरस मै आया
७) दुसमणा रे पीसती री खेद रा सपाडा री कुसी रा दीया
७) फागण सुद ३ फाग रा"

१४

पत्र सख्या—५ अ

महाराजा तक्षसिंह की पुत्री राजकुमारी फतह बर को त्यौहारा पर निद्व
राबळ हुए रुपया का विवरण द्रष्टव्य है—

'वाई जी श्री फतहबर वाईजीसा रा—५२

————— १ ————— १

तीवारा रा—————— ५२

- ४) दसरावा ४) दीवाली ४) होली ८) बरसगाठ रा
२०) सुदग १६२५ रा होनी १६२७ रा असाढ सुद १५ तीवार १० रा
जोड ५२" पत्र सख्या—५४ ब

रानी चावडी की विभिन्न खुशियो पर किये गये नजराने का विवरण इस
प्रकार है, यथा—

७) सवत १६०५ रा बरस रा—४२)

७) आया बारा जेठ सुद १३
१ बाकी माडा—४२)

७) हीडा रा

७) मायले बाग धोडा फैरीया तीण रा

७) बुडो पघरायो तीण रा

७) कायलाणा री कुसी रा

७) बालसमद री कुसी रा

७) खगेदि री कुसी रा ४२)

४२

पत्र सख्या—५६ ब

पठदायत बानराय द्वारा महाराजा तख्तसिंह व उसकी रानियों को दिये गये नजराने के रूपों का विवरण इस प्रकार है यथा—

“पठदायत बानरायजी रा—

१४५) तीवारा रा ईग १६०० रा होळी लग १६२७

रा बरसगाठ मुषा बरस २७ तीवारा रा जुग १० लेने मु २७५)

वीगत—

१६०० रा जुग ५) मागा मु बाकी ५)

२) १६०१ रा जुग १०) मे आया जठ मुद १३

× × × × × × × × बाकी ८ ८)

५) १६२७ रा जुग १०) मे प्राया असाठ म ४)

होळी ने वरसगाठरा जुग ५) बाकी

२) ४) ४)

पत्र सख्या—२५ व २७ अ

इस वही मे राजघराने के लोगो को उनके सम्मान मे दिये जाने वाले रूपों की भेंट का अछटा विवरण दिया गया है। उनको दिया जाने वाला नजराना और स्थानीय रीति रिवाजा के अध्ययन हेतु उपयोगी है।

१५७ जोधपुर राजघराने के विवाह की वही

१ सग्रह प्रम सख्या—८३२, २ वही का नाम—जोधपुर राजघराने के विवाह की वही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—१५६ ५ लिपि समय—वि० सवत् १७६६ से १६२६ तक, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही मे महाराजा सूरसिंह से लगाकर महाराजा तख्तसिंह के शासन काल तक हुए राजाभा एव महाराजकुमारों के विवाहों का विस्तृत विवरण दिया गया है।

इसमे तवारीख लेखा का भी उल्लेख है। मण्डोवर राव रिडमल से लगा कर महाराजा जसवर्तसिंह (द्वितीय) तक की वशावली अंकित है।

इस वही मे मुख्य विवरण महाराजा तख्तसिंह ने अपने विवाह के लिए खाण्डे (तलवार) की असवारी भेजी का है। उनके खाण्डे के साथ राजा रिडमल सिंह की पुत्री ने तीन फेरे (भावर) खाये, का विवरण एव खाण्डे की असवारी मे खच हुए रूपों का बणन है।

खाण्डे के साथ फेरे -

राजस्थान में राजपूत कन्या द्वारा खाण्डे के साथ फेरे (भावर) खाया या लेने की एक विशिष्ट परम्परा रही है। उस समय यह परम्परा थी कि राजा लोग छाटे ठिकाने में स्वयं न जाकर अपना खाण्डा (तलवार) भेजकर अमुक सामन्त की पुत्री से विवाह कर लेते थे। वर का प्रतीक खाण्डे की असवारी भेजी जाती। असवारी में राजघरान के लोग, सगे सम्बन्धी आदि पडव्या (वधु के वस्त्र, आभूषण मेवे, फल आदि) ले जाते थे।

राजपूत वधु वर के प्रतीक खाण्डे पर ही अपना पूरा विश्वास व्यक्त कर परिणय सूत्र में बध जाती। वह खाण्डे को ही अपने पति के प्रतीक रूप में मानती। उस समय एक राजपूत वधु का एक खाण्डे पर भी कितना दृढ़ विश्वास होता था, वह एक तरह से वर के प्रतीक खाण्डे के समान ही समर्पित हो जाती।

दूसरी तरफ वर को भी यह विश्वास होता था कि वधु उसके (वर) प्रतीक खाण्डे के साथ फेरे खा लेगी। इस प्रकार उस समय खाण्डे का विशेष महत्त्व था। यह खाण्डा ही वर-वधु को परिणय सूत्र में बध जाने की महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता था। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि खाण्डा वर-वधु को वैवाहिक बंधन में बाधन की कडी के रूप में प्रयुक्त होता था।

वधु द्वारा खाण्डे से भावर लेने की प्रक्रिया केवल राजघराने तक ही सीमित नहीं थी। यह प्रक्रिया छोटे राजपूत परिवारों में भी सम्पन्न होती थी जब अत्यधिक व्यस्तता के कारण निश्चित तिथि पर वर फेर खाने को उपस्थित नहीं हो सकता था। इतिहास में ऐसे कई उदाहरण मिल सकते हैं जबकि एक तरफ वधु वर के प्रतीक खाण्डे के साथ भावर ले रही है दूसरी तरफ उसका होने वाला पति युद्ध भूमि में लड़ता हुआ मारा गया है। तब नव वधु सती हो गई।

उल्लिखित वही में महाराजा तख्तसिंह ने जामनगर की राजकुमारी से विवाह करने के लिए अपना खाण्डा भेजा। बड़ी घूमघाम से खाण्डे की असवारी गई। सन् १६०७ चैत्र वद ४ (चतुर्थी) को जामनगर के राजा रिडमल सिंह की पुत्री ने महाराजा तख्तसिंह के प्रतीक खाण्डे के साथ तीन फेरे खाये। चौथा फेरा महाराजा तख्तसिंह ने अपने यहाँ गाव मोगडा में अपनी विवाहित जामनगर की राजकुमारी के साथ खाया।

वही में खाण्डे की असवारी भेजने व उसमें खच हुए रुपया का विवरण इस प्रकार है।

First main section of handwritten text, consisting of several lines.

Second section of handwritten text, appearing as a single line.

Third section of handwritten text, consisting of several lines.

Fourth section of handwritten text, appearing as a single line.

Fifth section of handwritten text, consisting of several lines.

Sixth section of handwritten text, consisting of several lines.

Seventh section of handwritten text, consisting of several lines.

Eighth section of handwritten text, appearing as a single line.

इसी तरह याजा वाला व श्रया को रुपये दन का उद्देश्य द्रष्टव्य है—

११ याजा ओछाटाया मीगण पुरवी मु मु का पत्र तहात १ भेव रो मु हाजर या तीणा ने

२ डोली रा १ नगारची न १ आळगु ने १ रवावी ने १ भाट ने १ ग मुन्तर ने १ तचसयदा १ सेरदार

१ जनानी दात्री १ भगतणीया १ नारा रो

नगारची

पत्र सख्या—३३ अ

गणदा जी की स्थापना की पूजा म निम्न सामग्री उपयोग म लाई गई,

यथा—

१ अन रा कोठार मु

१ घुट सारू गुळ घोरत

७५ ७५

७। नीत भोज मु लाडू

७१

७। जात सारू घोरत रोजीना

१)७ कुभ हट दण मु लागे

१)७

पत्र सख्या—३३ अ

विवाह के अवसर पर शराव की मनुहार की गई, यथा—

‘ (दारू—

(मीजमानी रा जामसायवा मेलीयो घो तीणा भाय मुणोट

काचरी खरच मे जनानी दोडी ग्रामो मु उपडीयो —२

१

(४।।।) रो मोल खरीद हुवा घो ।”

पत्र सख्या—३४ अ

विवाह क रात्रि जागरण की मिठाई बाटी गई यथा—

(रात्री जोगा री मीठाई बारली वीर बाटी चेत बंद ४

१ श्रो पत्र देवता रे थाल मे लाडू पापड चीणा रो घोबो

३ नाजर हरवरणजी रे दुणेटा रा लाडू पापड चीणा

२

१६ ४ २

घोबो अणदराम लग पग ची

१ १० २१

× × × ×

बाजदारा ने लाडू पापड चीणा दीया

पत्र सख्या—३४ अ

वही मे खाण्डे की असवारी के साथ भेजे गये बघू के लिए वस्त्र, आभूषण, मिठाई, मेवे, फल आदि के ढालों का पर्याप्त बणन आया है, यथा—

“पडळो ले ने चेत वद ४ लारलो दीन पोर १ आसरे रपा माजा बाजा सु माडे गया × × × × माडे जायने उठे जाजम बीछाई थी ने पछे उठे सु गरा भला आदमी आय बेग चीणा न खुम सभळाय्या सु पेली तो सरबसु वाग रो लगन माय चोकडायो १ ऊपर बूकुम रो सापीयो सु दीयो, पछे चुडो चुदड नथ तीमणीयो पछे मेहणो कपडा मवा वगरे—वीगत पडला री—

“२)३३ जरजर खाना सु

१ नथ १ हीरा री मोर मोरडा री

१ तीमणीयो हीरा रा मोती पोयोडो खानापूर

१ टीको हीरा रो अळोलख मोतीया रो

१ पायजेवा री जोडी १ जडाऊ

× × × × × ×

२ काकण डोरडा रा पोला २ सुपारा ।”

पत्र सख्या—३४ व

पडळे मे भेजे गये वस्त्रो का उल्लेख द्रष्टव्य है—

८५ कपडा रा कोठार सु—

२७ साडीया नग चोपेर लपा री ऊपर सीक दुपटा वणारसी, रेशमी नग

१०

२

श्रेक श्रेक दुपटो पसमारी छपयोडी चुदड कसुमल चोपेर

१५७। =)॥ ७० =)१

लपो दुपटा तास सोनेरी दुपटा फरकसाई काम तास सान री

१०

२

ओरण्णी पसमीना री काम री जरदोजी रो—२७

१

× × × × × ×

७ मोडा री जाडी अतर तोला ४) सीसीया पगरखीया रा

जोडा—२

पत्र सख्या—३५ अ

राजघराने मे विवाहिता लडकी के साथ दासिया भेजने की परम्परा रही है ।

इस वही के अनुसार जाडेची के साथ दो डावडिये (दासियों) भेजी गई, यथा—

“३० चत सुद ५—

जाम सायब रे सीरवार सु डावडीया २ आई अणदु ने रामु रधा मे वेठन सु
१ १

पेली तो नाजर हरकरण रे डेरे गई, सु अठामु डावडीया ने उठे मली ।”

पत्र सख्या—३७ अ

इस वही में विवाह के लिए खाण्डा (तलवार) भेजने की राजघराने की परम्परा का विशिष्ट उल्लेख हुआ है जिसका सांस्कृतिक दृष्टि से विशेष महत्त्व है। साथ ही जोधपुर के विभिन्न शासकों के वैवाहिक सम्बन्धों पर भी अच्छा प्रकाश इस वही में पड़ा है।

१५८ महाराजा अजीतसिंह एव महाराजा मानसिंह की बही (कुंवरीयों के विवाह की)

१ सग्रह क्रम सरया—८३३, २ बही का नाम—महाराजा अजीतसिंह एव महाराजा मानसिंह की बही (कुंवरीयों के विवाह की), ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सरया—१००, ५ लिपि समय—वि० सवत् १७७६ के ज्यष्ठ बदी ६ से १८८१ फाल्गुन बदी ६ तक, ६ विशेष विवरण—इस बही में महाराजा अजीतसिंह की पुत्री सूरज कवर, अभय कवर, महाराजा मानसिंह की पुत्री सिरिकवर उदयकवर स्वरूप कवर आदि के विवाह में खच हुए रूपयों तथा विवाह सस्कारों का विस्तृत विवरण दिया गया है।

बही से राजघराने में सम्पन्न होने वाले राजकुमारियों के विवाह के रस्म एव रीति रिवाजों के बारे में विशेष जानकारी मिलती है।

राजकुमारी के कवर होने पर पीहर वाला की तरफ से कड़ा (आभूषण) वस्त्र आदि भेजने की परम्परा का भी उल्लेख हुआ है।

विवाह में बारातियों के ठहरने की व्यवस्था, उनके सत्कार की तैयारी, सत्कार की रस्में वर व बधु पक्ष का आपस में मिलना, दुल्हे द्वारा तोरण बन्दना, तोरण बन्दना के समय सास द्वारा दस्तूर, कन्या पक्ष के यहाँ माया व गणेश की स्थापना, चवरी का निर्माण पुगोहित, व्यास आदि का कस्तव्य, हथलेबा जोड़कर दुल्हे व दुल्हन द्वारा भावर (फेर) लेना कन्या पक्ष की ओर से कन्यादान प्रीतिभोज वर-बधु द्वारा राजसी ठाट-बाट (बभ्रव) के साथ विभिन्न लोक-देवी-देवताओं की पूजा व उनके घरों व मंदिरों की परिक्रमा, प्रीति भोज में मिठाइयें, दहेज आभूषण, बतन, वस्त्र व अन्य वस्तुएँ राजघराने से सम्बन्धित लोगों द्वारा कन्या व जवाई की

आभूषण व वस्त्रों की भेंट विदाई, कन्या-पथ की आग से सगे-सम्बन्धी, देवस्थानों, आदि पर मिठाइयों के घाल एवं रूपया की भेंट, ब्राह्मणों को भूरसी दक्षिणा देना, अथ गरीबों को रुपये, मिठाइयाँ, वस्त्र आदि देना, डोलियों, कमीणों व अन्य लोगों को भी मिठाइयों व अन्य वस्तुओं से राजी करना आदि आदि बातों का इस वही में सागोपाग वर्णन हुआ है।

विवाह सस्कार -

भारतीय संस्कृति में सोलह सस्कार माने गये हैं। उनमें विवाह सस्कार का महत्त्वपूर्ण स्थान है। राजघरानों में यह सस्कार अत्यन्त ही हर्षोल्लास व खर्चिले ढंग से सम्पन्न किया जाता रहा है।

इस वही में महाराजा श्री अजीतसिंह जी की राजकुमारी सूरजकवर के विवाह का विस्तृत रूप से उल्लेख हुआ है। इनका विवाह सन् १७७६ की ज्येष्ठ वदी ६ का सवाई जयसिंह धामर नरेश के साथ हुआ तथा डेरा (वाराणसी व ठहरने का स्थान) सूरसागर के पास रखा गया।

राजस्थान में विवाह का मुहूर्त एवं सम्पन्न होने के पूर्व तक गुड बाटने की परम्परा रही है। सूरजकवर के विवाह के मुहूर्त पर भी गुड बाटा गया। गुड राजघरानों के निम्न सम्बन्धी, रानियाँ, पडदायता, राजकुमारियों, राजपूतों की विभिन्न खापों के विशिष्ट व्यक्तियों जैना व ब्राह्मणों को बाटा गया।

चौहान, चापावत, रावळोत, कृपावत भेडतिया, जोधा, जेतावत, करणोत करमसोत पातावत, याला, नहड, भीवोत, भाटी, सोनगरा तुवर, गहलोत आदि राजपूत जाति की खापा के लोगो को, सिधवी भण्डारी, मुहणोत, मुहता आदि जैन खापा के लोगो को, कोठारी, पचोली, पोकरणा ध्यास श्रीमाली आदि ब्राह्मणों की खापा के लोगो को, इनके अतिरिक्त खवास, पासवान, धाधला, पडियार, डोली, कमीण आदि को गुड बाटा गया।

मुहूर्त का गुड देवस्थानों में भी दिया गया, यथा—

“अतो सरच गुड तापुके

। श्री देवस्थान

७५ श्री अगददान जो गढ ऊपर बीराजे

श्री कीलाणराय जी गढ ऊपर बीराजे

श्री माता जी चावडा माता जी

श्री हीगलाज माताजी

श्री गुजार रा भेरू जी

श्री बाजरा भेरू जी'

पत्र सख्या—२ अ

इस शुभ अवसर पर राजघराने के नौकरो को भी गुड दिया गया, यथा—

७७ नाजर दोलतराम

१) खवास पासवान

७५) पासवान जी ७५ पवास नेणाखजी

१)

पत्र सख्या—२ ब

दरजणिया, नाईना, गीत गाने वाली स्त्रियो, डोलणियो का भी गुड बाटा

गया।

विवाह के मुहूर्त पर सवप्रथम विनायकजी (गरेश जी) की पूजा की जाती थी। कुम्हार के घर जाकर विनायकजी की मूर्ति लाई जाती। बहा उसकी चाक (मिट्टी के बतन बनाने का पत्थर) की भी पूजा होती थी। कुम्हार को नेक (विनायकजी की मूर्ति देने के बदले में दी जाने वाली वस्तुएँ) में गेहूँ का दळिया, चावल, कुकुम, मेदा (आटा), गुड, नारियल आदि दिये जाते थे।

उपयुक्त सभी प्रक्रियाएँ सूरजकवर के विवाह पर सम्पन्न की गईं।

विनायक जी की पूजा कर सूरजकवर के हाथों में काकण डोरे बांधे गए।

उन्हें पाटे पर बिठाकर घी पिलाने की रस्म पूरा की गई। तत्पश्चात् उनके तेल-पीठी चढाई गईं।

इस अवसर पर नव वधु को नीजर निछराबळ के रुपये भी भेंट किये गये।

नीजर निछराबळ देने का एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

'श्री राणावतजी बाईसा रे २५) नीठावर कीया ने पछे रू० २०) श्री बाईसा रे मासी छोटा भटियाणी जी कीया। रुपिया श्री दरवार माय ऊ ईनायत हुवा पछेऊ ५)'

पत्र सख्या—२० अ

इस अवसर पर राजघराने के नौकरों की स्त्रियो ने भी निछराबळ की,

यथा—

"१) सीवदार दयालदास रे बळ कीयो'

पत्र सख्या—२० ब

इस रस्म के बाद सभी जगह विनायकजी की सापसी वादी गईं। वहीं म

गड ऊपर सापसी पर खच हुए रुपया का विवरण द्रष्टव्य है—

। श्री विनायक जी रे सापसी रे गुपरी दी

गड ऊपर सापसी रे गुपरी दी

३६॥) लापसी गु

२०॥॥) बाट ८) घोरत

१०॥॥) गुळ"

पत्र सख्या—२१ अ

इसके बाद माया माह्वर उसकी पूजा की। हवन म निम्न नामग्री वाम में साईं गई, यथा—कु कुम, मोळी, श्रीफल, सुपारिया, जवार, तिल, घी गुलाल, खारक, गुळ, पिसता, दागा, बादाम, मूग, गीरी, दही, दूध, मिसरी, दरियाई, लाल कपडा, चावल, सरसू आदि।

तत्पश्चात् रात्रि जागरण (रातीजोगा) दिया गया। उममें विभिन्न देवी-देवताओं की स्तुति की गई।

बही के अनुसार सग-सम्बन्धियों द्वारा बनोले (नववधु को भोजन के लिए धार्मिक भक्षण करना) दिये गये, यथा—

"। बाई जी श्री मूरजकवर बाई जी रा व्याव रा बनोला आया तीणरी वीगत गाजे-वाजे गीत गावता तलेटी ऊ गढ़ ऊपर आया ऊ राणी श्री भटियाणी जी रे घरा आया।

। मैला सायबा रा आया

। राणीजी श्री राणावतजी रे तरफ सू"

पत्र सख्या—२६ अ

विवाह के अवसर पर विशाल मण्डप बनाया गया। बही म चवरी सजावे का भी उल्लेख है।

तोरण बन्दना -

तोरण बन्दन की रस्म दुल्हे के शक्ति परीक्षण के लिए की जाती है। मूरज कवर के विवाह के अवसर पर सवाई राजा जयसिंह जी ने तोरण की बन्दना की। वही के अनुसार पाच तोरण द्वार बनाये गये, यथा—

' तोरण ५ रूपया इतरी जायगा दिया—

१ बकी पोळ

१ लाहा पोळ

१ मरदानी ड्योडी

१ सीदुरिया पोल, जनानी ड्योडी

१ नागरोचीया माता रे धान

पत्र सख्या—२६ ब

हमलेवा जोड़ने के पश्चात् चवरी म मूरज कवर का सवाई राजा जयसिंह जी के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर क्यादान हुआ। क्यावळ राजघराने के सगे-सम्बन्धियों व कुछ विशिष्ट सरकारी नौकरा द्वारा भी किया गया।

जब सूरज क्वर का पाणिग्रहण सस्कार सम्पन्न हुआ। उस समय उनकी आरती उतारी गई। आगती में उन्होंने बारह मोन की माहरें व एक सौ रुपय डाले।

इसके बाद वर-वधु ने विभिन्न लोक देवी देवस्थानों की जात (परिक्रमा) दी। वहाँ रुपय भेंट किये, यथा—

- “जुगपले श्री नागलौचीया जी रे धान पधारोया न देवता री पूजा कीवी
 २१)) श्री नागलौचीयाजी रे धोक देने चढायो
 ५)) पचदेवतावा ने चढाई सु मेवगजी री
 ७) श्री वीनायकजी रे चढाया ऊ सेवग गाजी री
 १४) श्री माया री पूजा कीवी
 १४) रोकड चढाई । ताम कीरो पान
 सुपारी १४”

पत्र सख्या—३३ अ

माया की पूजा करने पर जयसिंहजी व पुरोहित को कया पक्ष की द्वार से दो मोने की कटोरिया भेंट की गई।

जयसिंह जी को निम्न आभूषण एव वस्त्र दिये गय, यथा—

- “इतरा जसिघजी न दीयो
 “२ जीनोई दीया सोना रा
 १ मोती, सोना रा बाळा
 २ परण ने दीया
 १ बीटी जडाव री

पत्र सख्या—३३ ब

सूरज क्वर के विवाह पर जिन राजाया एव नवावा को आमन्त्रित किया गया। उन्होंने निम व्रण के उपलक्ष में भेंट भेजी। उस भेंट में रुपये व सोने की मोहरें भेजी। वही से एक उगाहरण द्रष्टव्य है—

‘ नोता रा आया—

- १०००)) नबाव अमी उमराव हसन वारे नोता रा आया मोरा १०००))
 जेठ बंद ६
 १०००)) नबाव अमदुल खा री मोरा १०००)) नोता री उकीया आई’

पत्र सख्या—३४ ब

प्रीतिभोज के लिए लड्डू, जलेबी, घेवर, मावे की मिठाइया, दहावडे, पुडिया आदि मिठाइया बनाई गई।

चारात के नाथ मिठाई भेजी गई उसका विवरण द्रष्टव्य है—

“सीरावणी राजा जंसीघजी नु मीटे नीया तीरा रो विगत, तोल २६ रो जेठ वद १०

१०) राजा जंसीघजी नु मीठाई मण दस

३) लाडू ३) जलेबी ३) दही बटा १) पुडिया” पत्र संख्या—४० अ

इस प्रवचन पर राजघराने के सम्यग्धिया, सामंतो, उमरावा, राजपूता, की विभिन्न सापो के लोगो, राज के नौबरो आदि को मिठाइया के घान भेंट किये गये। वही से एव उदाहरण द्रष्टव्य है—

“उमरावां रे मीठाई

३।।) साप चांपावत र मीठाई

१) गहनाय भाइदानोत

१) मगसिंह भगवानदासात

१) बीजैसिध सबलसिधात

× × × × × ×

७२ मूरजकरण आसधानोत रो

× × × × × ×

१।) फरे आमीस नीवत”

पत्र संख्या—४४ व

दहेज -

वही के अनुसार वार्दजी श्री मूरज कवर का बहुत सा दहेज दिया गया। जडाक सोने व चांदी के आभूषण दिये गये। सोने चांदी के बत्तन दिये गये। इनके अतिरिक्त हीरे, पत्ते व जवाहरात भी दिये गये। आमेर नरेश सवाई राजा जयसिंह जी को भी बहुमूल्य आभूषण व वस्त्र भेंट किये गये।

इन सबके अतिरिक्त हाथी, घोडे, रथ, बल व ऊट भी दिये।

मूरज कवर को जडाव के निम्न आभूषण दिये गये—

नथ, नवसर हार, वाकरण बीटिया, टीका, घडिया, दुगदुगी जडाव की आदि।

इन सब आभूषणो मे हीरे पत्ते व मोती जडे गये थे।

वही का एक उदाहरण इस प्रकार है—

“१ नवसर हार वग श्री माताजी रो घोटी को

१ दुगदुगी गर कड री तरे उरी

३ माणक मोटा

- १ पनो मोटो
३ हीरा मोटा
४ छोटा माणक
। और छोटा मोटा माणक पना ।

पत्र संख्या—५० व

बाईजी साहिबा को सोन एव चादी के आभूषण भी दिये गये । कुछ आभूषण इस प्रकार है—बाजूबद, गुजरिया, तिमणिया, बीटिया, मालाए, काकरिया आदि ।

वही मे दहेज म दिये जाने वाले सोन के आभूषणों का उल्लेख इस प्रकार है यथा—

- १ बकारणिया ४
जोडी ४ अकोटा री
× × × ×
४ बाजूबदा री जाडिया ४ ताला १४
४ गुजरिया री जात्री ४ तोला १५
बहुमूल्य वस्त्रों की विगत द्रष्टव्य है—

पत्र संख्या—५२ अ

- ‘ १ तोरा री वीगत
१ बागा १ री वीगत
१ घाघरो पार चरो सुपदे कोरदार सोने री
चागेरद मायजी सजाव दरीयाई री लाल री
१ साडी जरी री बादलाई सोना री कीमत रुपया ७९॥॥)
१ बाण बादलाई लाल जरी री’

पत्र संख्या—३५ अ

बाईजी साहिबा को दहेज मे बहुत से कीमती सोने चादी के बतन दिये गये । धाल, बाटका जरजरीनो कलसिया, पानदान डबिया आदि सोने के व धाल बाटका वाटकिया, रकेबी, पानदान चरिया, कुडो, बाजोट, प्याला, पीलजात पीकदानी गुलाबदानी मुतगा, चकलोटी, बेलण चमचा, कलसिया, कुडबिया, चडा, कुडिया चालणी आदि चादी के बतन ।

वही मे चादी के बतना का उल्लेख द्रष्टव्य है—

- ‘ रूपा रा
१ धाल तोला १७३॥)२
९ बाटका वाटकीया तोला ११२॥)२”

पत्र संख्या—५२ व

जयसिंहजी व उनके परिवार वाला को कपड़े देने का उल्लेख भी द्रष्टव्य है—पाघें, पोतिया, बालात्र-दी चुदडिया, जरी की पाघें, जनाना जरी व बेश, बेसरिया साडिया, सहगा, काचलिया आदि ।

वही मे ऐसे वस्त्रों का उल्लेख इस प्रकार है—

“जैमोघञ्जी रा कवर नु तोरा मग तोरा १ नग ५०० सिरपाव भरदाना जरीरी पागा, बीमसाय पोतो ५०० बस जनाना जरी तास कमरीया कसुवल साढी घाघरा काचडिया”

पत्र सख्या—५३ अ

तकीया, बढी गादो, मन्मल का गादरा आदि-आदि रिस्तर दिय गय ।

दहेज मे पशुपन देन का भी उल्लेख हुआ है—

“२ हाथी

४० घोडा—सान री सागत रा

२०

रूपा री सागत रा

२०

१ रथ

१ बहल १ ऊँट”

पत्र सख्या—५३ व

इस बही के अनुसार सवत् १८४७ की आषाढ बंदी ८ को अभयकवर का प्रतापसिंहजी के साथ, सवत् १८७० की भादवा सुदो १० को महाराजा श्री भानसिंह जी की पुत्री सिरकवर का जयपुर के राजा जगतसिंहजी के साथ, सवत् १८१८ की आषाढ सुद ८ को उदयकवर का बूंदी के हाडा उम्मदसिंह के साथ, सवत् १८८१ म स्वरूप कवर का विवाह बूंदी के राजा रामसिंह के साथ सम्पन्न हुआ ।

य सभी विवाह राजघराने के उही रीति रिवाजों के साथ सम्पन्न हुए हैं जिन रीति रिवाजों के साथ महाराजा श्री अजीतसिंह जी की पुत्री सूरजकवर का विवाह हुआ । अत इस बही में उल्लिखित इन विवाहों के रीति रिवाजों को पुन दोहराना समीचीन प्रतीत नहीं होता ।

उदयकवर के पुत्र हुआ । जिसकी बधाई के रुपये व हसली बडोलिये बूंदी भेजे गये ।

शिशु के जन्म की बधाई लेकर आने वालों को सिरपाव के कपड़े तथा रुपये भेंट किये गये, यथा—

‘ १७५) श्री बाईजी रे कवर हुआ री बधाई लेने क्षारी सेवी नेवीडो आया तीखान सौरपाव ने फग ने रोकड धोराया सवत् १८१६ रा आषाढ मे”

पत्र सख्या—८३ ब

२३८ राजस्थान के एतिहासिक धरा का मवेंक्षण, भाग २'

पुत्र होने की बघाई आने के पश्चात् वार्डेजी माहिवा के कवर के लिए हसली कडोलिय व उनके वश (वस्त्र) भेजे गये—

२००) श्री वार्डेजी रे कवर हुआ री बघाई धाया पछे मेलीया सब् १८२०

रा मीगसर म हस्ते पीरायत के

२००) हसली पगरा मेडताऊ

१) दाडमा श्री रावराजा जी ने

१००

वार्डे जी ने—१००

१०। नवा कपडा रा फोगर ऊ वेदा

१ वेस १ तो श्री वार्डेजी नै

१ साडी मुनमुन री वसुमल चोगडद लपो सोने री जालदार पर पै गोटी

सोनेरो चोगड

१ गाधरो तासरो सोनगी बूटी जरद

१ काप आसावरी रो कसु मल सोने री बूटीदार

३

इस अवसर पर उहे परावणी के वेस (पुत्र जम पर पीहर की ओर से दिये जाने वाले कपड़े) भी दिये गये, यथा—

१००) वेस परावणी रा—

७२ कसुमल मुलमुल रो धान रा

१६

२८ केसरा मै रगीना गोररा भीलारी धान ७

१००

इस बही मे राजघराने म सम्पन्न होने वाले विवाह-संस्कार एव बच्चे के जन्मोत्सव सम्बन्धी रीति रिवाजों के बारे मे अच्छी जानकारी मिलती है।

१५६ देवलोक हुवां री बही

१ सग्रह क्रम सख्या—८५३, २ बही का नाम—देवलोक हुवा री बही,
३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—३०७, ५ लिपि समय—वि०
सब् १६५२ से १६६६ तक, ६ विशेष विवरण—यह बही मृत्यु संस्कार से सम्ब
न्धित है। इसमे महाराजा तन्तसिंह से लगाकर महाराजा सरदारसिंह के समय तक

पत्र सख्या—८३ ब

मृत्यु प्राप्त होने वाले राजघराने के लोगों की मुणावगिया (मृत्यु सम्प्रधी सूचनापत्र) का विवरण है। वही मे इस सस्कार से सम्प्रधित रीति रिवाजा का उल्लेख मुख्य रूप से है।

मृत्यु सस्कार -

सोलह सस्कारा म मृत्यु सस्कार का भी अपना महत्त्व है। राजघराने मे इस सस्कार पर बहुत से रीति रिवाज सम्पन्न किये जाते थे। मृत्यु होन की सूचना पर शोक की लहर व्याप्त हो जाती थी।

वही के अनुसार पार्थिव शरीर का विभिन्न आभूषण व वस्त्र पहनाकर शव-यात्रा प्रारम्भ की जाती थी। विभिन्न मन्त्रोच्चारण के साथ पार्थिव शरीर को अग्नि के मुपूद किया जाता था। अन्तिम सस्कार सम्पन्न होन के पश्चात् लाकाचार जान वाले किसी तात्राव मे स्नान करके घर लौटते थे। राजघराने से सम्बन्धित लोग व अग्र्य शोक सतप्ता को सात्वना देने आते थे। एसा उल्लेख भी इस वही मे है। मृतक के पीछे राजघराने की परम्परानुसार द्वादशा होता था। द्वादशा तक हवन चलने का उल्लेख भी आलोच्य वही मे है। हवन ब्राह्मण किया करत थे। वही म उल्लेख है कि महाराजा जसवतसिंह द्वितीय की पवार रानी के मृत्यु होने पर पुरोहितो द्वारा हवन किया गया। हवन मे निम्न सामग्री उपयोग मे ली गई—

कुबुम, श्रीफल, मुपारिया, धी, पेडे, मेदा (आटा) गुड, दही, दूध, अवीर, मिस्त्री, कपूर, मजीठ, शेहद दरीयाई, मोली चावल बेसर, च दन, लाल चदन, जावतरी कण भूगली, मेवोकुल, सरडा, गुलाल, काली मिच, सि दूर, हीगळू नागर-वेस इत्यादि-इत्यादि।

अन्तिम सस्कार के समय क्रिया कम करने वाल पुरोहित को बतन, खाद्य सामग्री, वस्त्र व अग्र्य वस्तुएँ दी जाती थी। महाराजा जसवतसिंह द्वितीय की पवार रानी का निधन सवत् १६५३ मे हुआ। उसके अन्तिम सस्कार पर पुरोहित को निम्न सामग्री दी गई—

“पीरोयत दान तणा—

धाली नग १ धीरत, कुबुम, चावल, रोकेड

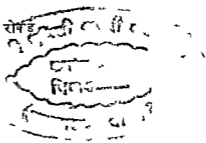
कासी री

पीरोतायण री पोसाख—

ओरणो

वाचली

गागरो।”



पुरुष की मृत्यु पर उसे पुरुष की पोशाख व स्त्री की मृत्यु पर स्त्री की पोशाख दी जाती थी।

द्वादशा के दिन ब्राह्मणों को दान दिया जाता। मृत्यु-भोज का आयोजन होता। मृत्यु भोज पर उपयोग में ली गई खाद्य सामग्री का उल्लेख भी आलोच्य बही में है। मृत्यु भोज पर राजघराने से सम्बन्धित लोग तो आमन्त्रित होते ही थे। इस अवसर पर ब्राह्मणों व गरीबों को भी भाज दिया जाता था। ब्राह्मणों को दान में रोकड़ रुपये वस्त्र आभूषण व खाद्य सामग्री दी जाती थी। इस अवसर पर उन्हें विस्तर भी बांट जाते थे। मृत व्यक्ति के पीछे देवल या छतरी (स्मारक) का निर्माण करवाया जाता था। राजघराने से सम्बन्धित व्यक्ति भी इस अवसर पर मृतक के पीछे ब्राह्मणों व गरीबों को दान देते थे।

इस प्रकार आलोच्य बही में राजघराने में मृत्यु-संस्कार पर सम्पन्न होने वाले रीति रिवाजों का विस्तृत उल्लेख हुआ है।

१६० महाराजा जसवर्तसिंह (द्वितीय) के पुत्र सरदारसिंह के विवाह की बही

१ सग्रह क्रम संख्या—८५४, २ बही का नाम—महाराजा जसवर्तसिंह (द्वितीय) के पुत्र सरदारसिंह के विवाह की बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र० ४ पत्र संख्या—७३३, ५ लिपि समय—वि० संवत् फाल्गुन वद ७ शनीवार १९४८ ६ विशेष विवरण—आलोच्य बही में महाराजा जसवर्तसिंह (द्वितीय) के पुत्र सरदारसिंह का विवाह बूदी के रावराजा विशनसिंह की पौत्री एवं रावराजा रामसिंह की पुत्री लिच्छमण कवर के साथ सम्पन्न हुआ, का विवरण दिया गया है। विवाह के पूर्व सगाई की रस्म का उल्लेख भी है। विवाह में पेरारणी (विवाह के अवसर पर बधु पक्ष की ओर से वर पक्ष के लोगों को दिये जाने वाले वस्त्र) के आने वाले कपड़ा एवं अथ वैवाहिक सामग्री पर खर्च हुए रुपये का उल्लेख है।

इसमें श्रावण की तृतीया के प्रथम सिंचारे (व्रत) पर पीहर की तरफ से बधु (लिच्छमण कवर हाडी रानी) के लिए आयी व्रत की सामग्री का भी बखाना आया है। इस प्रकार राजघराने में सम्पन्न होने वाली वैवाहिक रस्म व्रत सम्बन्धी रीति रिवाजों के बारे में अच्छी जानकारी मिलती है।

सगाई -

विवाह के पूर्व वर व बधु का सम्बन्ध तय करने की राजस्थान में एक विशिष्ट परम्परा रही है। इस अवसर पर बधु पक्ष वाले वर पक्ष के यहाँ जाकर

सम्बन्ध तय करते हैं। घर के हाथ में नारियल दकर सम्बन्ध पक्का करने का रिवाज है। प्रस्तुत वही में भी ऐसा ही उल्लेख है। बूदी के रावराजा रामसिंह अपनी पुत्री लिच्छमण खवर का सरदारसिंह के साथ सम्बन्ध तय करने के लिए जाधपुर आये। उन्होंने महाराजा जसवंतसिंह के पुत्र सरदारसिंह का अपना जवाई बनाने के लिए सोना-रूपा के नारियल सोने की मोहर व रोक्ड रुपय दिये।

श्रावण की तृतीया का व्रत -

राजस्थान में यह परम्परा है कि जब वधु समुराल में श्रावण की तृतीया का प्रथम व्रत करती है उस दौरान व्रत की सम्पूर्ण सामग्री उसके पीहर (मायने) से आती है। उस सामग्री में फल, मिठाईयाँ एवं वस्त्र आदि भेजे जाते हैं। यह परम्परा राज-घरानों में भी सम्पन्न होती थी। जमा कि इस वही में उल्लिखित है कि महाराज-कुमार सरदारसिंह की नवविवाहिता हाडी रानी लिच्छमण खवर ने श्रावण की तृतीया का प्रथम व्रत अपने समुराल (जाधपुर दुर्ग) में किया। उस व्रत की सम्पूर्ण सामग्री उसके पीहर बूदी से आयी।

इस वही में उल्लिखित सरदारसिंह की सगाई का वयन द्रष्टव्य है—

“१ सगाई रा टीका रा नाळेर आया समत १६४७ रा मा वद ३ बुधवार तारीख २८ जनवरी सन् १८६१ रा न।” पत्र संख्या—३ अ

सगाई के दस्तूर के अवसर पर सरदारों की सभा में महाराजकुमार सरदार सिंह को दिये गये नारियल व रोक्ड मुहर का उल्लेख इस प्रकार है—

“प्रायत हरनारायण श्री माराजखवार सायब रे तीलक पघराया पछे पुसपा रा हार पघराया पछे कसुमल बटका रा रुमाल में सोना रूपा रा नाळेर न सुपारीया न रोक्ड मोर १)) रु ५)” पत्र संख्या—५ अ

इस अवसर पर नारियल के साथ सिरपाव के वस्त्र देने का उल्लेख भी है, यथा—

वीगत नाळेर आया न नीरपाव आया तीण रो

× × × × × ×

२१)) ४००) थाल १ रूपा रो तीण में नीजर गुदराया

२१)) मोरा रा थान २१))

६००) रूपीया ४००) पत्र संख्या—५ ब

वही में वर पत्र की ओर से विवाह के दौरान सम्पन्न किये जाने वाले रीति रिवाजों का भी उल्लेख है, जैसे—सात काम का मुहूर्त (बाने बैठाना), विभिन्न

वैवाहिक रस्मा में गुड़ बाटना, बोलते देना, दही-देयताआ के रात्रि जागरण देना आदि ।

विवाह के दौरान राजघराने से सम्बन्धित विभिन्न लागे का जीनम भेजी गई—

‘ (वीगत जीनस रो—

८॥) १। = ।

थाल तासलीया ४५ नग जीनस

॥) = ॥ आटे नग थाल १ रो रोजीना

॥ लेसे पका तोल

— १) १। घीरत नग थाल १ रोठा राजीना लेसे पका तोल रो

— १) १॥ बूरो नग थाल १ रोठा पका तोल रो लेसे

१) १। चावल कमोल् नग थाल १ राठा लेसे मुग पका

१) १। दुध रोजीना नग थाल १ रोठा लेसे” पत्र सख्या—११ व

विवाह के दौरान राजघराने से सम्बन्धित लागे द्वारा घर की बतोल (भोज के लिए आमन्त्रित करना) दिये गये । उसका एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

“४०) ६२ माराजधिराज श्री परतापसिंघजी सा रे बहुवा

२०) ४१ बहु श्री बडा भटीयाणीजी सा रो घरवीद सु ऊण्टो

२०) थाल १ तीलक रो

२०) रोकड । पुसप

१ श्रीफल । पान

। अतर । गुलाबजल’

२०)

पत्र सख्या—१२७ व

भोज के पश्चात् घर के तिलक किया जाता । उस रोकड रुपये, फूला की माला, पान, इत्र गुलाबजल आदि भेंट किये जाते ।

वही में सरदारसिंह के ननिहाल में बत्तीसी (भात भरने के लिए ननिहाल वाले का आमन्त्रित करना) से जाने का भी उल्लेख है ।

विवाह के अवसर पर राजघराने की ओर से नौकरो, कमीणो (राजघराने का काम करने वाले), गरीबो आदि को रुपये देने का भी बखान आया है । इस अवसर पर देवस्थानों सतिया एक पितरो के स्मारक आदि पर मिठाइया के थाल वस्त्र व रुपये भेंट करने की जानकारी भी मिलती है ।

बारात प्रस्थान के समय महाराजकुमार सरदारसिंह पर विभिन्न सम्बन्धित व्यक्तियों द्वारा की गई रूपया की निह्यरावल (योद्धावर) का उल्लेख इस प्रकार है, यथा—

“जान चढी तरे सेवरा री योद्धावर हुई

१)० रावराजा सोनसिंहजी री लाई डावडी जटाव

४) २०) रावराजा जवाहरसिंघजी

× × × × ×

२)० रावराजा सुलतानसिंघ री बहु राणावतजी रा” पत्र सन्ध्या—१४ व

वही में वधु लिछमणकवर के लिए वर पक्ष की ओर से भेजे गये पड्डे (आभूषण, वस्त्र, मंवे, फल आदि के धाल) का उल्लेख है। पड्डे में विभिन्न प्रकार के हीर, जवाहर, सोने आदि के आभूषण भेजे गये। एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

“१ टीको १ हीरा रो मे हीरा अमोलक मोती

१४ ७

गर मे मोती माग री लडा रा मोती चुनी पना री

६ २४ ४ १

मीना रो आकुडो सोना रो तोला”

२)२॥

पत्र सरया—२३२ व

पड्डे में भेजी गई विभिन्न प्रकार की पोशाका का एक उदाहरण द्रष्टव्य

है—

“१ पोसाखा १ लखर १ कसुमल री

१ पोसाख १ मुलमुल री

× × × ×

१ दुपटो एक बेसरिया

× × × ×

१ काचली १ कसुमल चौफुली जळीदार

पत्र सख्या—२३४ व

वही में क्या पक्ष की ओर से वर पक्ष के विशिष्ट व्यक्तियों को वस्त्र व बारातिया का जान जवारी (क्या पक्ष की ओर से बारातियों को रूपये भेंट करना, जान जवारी कहलाती है) देने का उल्लेख है।

हाडी रानी लिछमणकवर को अनेक कीमती आभूषण, वस्त्र व दहेज दिया गया।

महाराजकुमार सरदारसिंह के विवाह पर बूदी राजघरान से जोधपुर राजघरान के लोगो को परावणी के वस्त्र दिये गये, यथा—

‘माराजकवार श्री सिरदारसोघजी साथ रो वीहाव बूदी कवराणीजी श्री हाडीजी सा परणीज न पघारीया तीण री पेरावणी रा सोरापाव बूदी सु श्री रावराजाजी री तरफ रा आया सु डायजा साथ समझाया ।’

पत्र सख्या—५८२ अ

परावणी व वस्त्र जोधपुर राजघरान से सम्बन्धित लोगो के लिये आय । एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

“६ बुदी वीहाव हुवा तीणा रे वाईजी श्री सोभागक वर वाईजी श्री समरत कवर वाईजीसा रे

२ साडीया रे कसुमल मुलमुल री चौपर लीर पीर सीकीन ऊपर लपो घेरदार घागरा री ।’

पत्र सख्या—५८२ ब

सरदारसिंह की वारात जोधपुर दुग मे लौटी । उम समय बधु ने राजघराने से सम्बन्धित बडे लोगो व चरण स्पश कर पगा लागनी की रस्म अदा की । बधु को पगा लागनी के विभिन्न लोगो द्वारा दिये गये रुपयो का उल्लेख इस प्रकार है—

‘६ राणीजी श्री राणावतजीसा रे

७) पगे लागणी रा

२) भरी रा कलस मे ।’

पत्र सख्या—७०७ अ

हाडी रानी लिछमण कवर के श्रावण की तृतीया के व्रत के प्रथम भवसर पर पीहर की तरफ से वस्त्र रुपय, फल आदि आये ।

लिछमणकवर की भाभी द्वारा भेजे गये रुपया एव वस्त्रा का उल्लेख द्रष्टव्य है—

‘१))६०)६ श्री कवराणीजीसा रे वाभीजीसा भाणोजाजी श्री भीवसिपजीसा री बहु री तरफ सु —

१))२०) वाभीजी श्री—जीसा री तरफ सू बेस रा बुदी चलण रा इग्यारे रुपीया

२०)४ वाभीजी श्री पीडीयारजी री तरफ सु बेस रा

२०) रोकड मातवा रा इग्यारे रुपीया

४ बेस

१ साडी गुलाबी र लोटपोट सी की ऊपर दोवडो मगजी बीच गोखर

१ बुढती गुलाबी गाज री रेममी बु दी री र लोटपोट मगजी पगणी गोटा री
 १ काचली गुलाबी गजरो रेसमी बु दी री ऊपर हुमी को पगणी वीचे गोखरू
 १ मीनसापो ह्यासी सोरपाव ।” पत्र सत्या—६२८ अ

इस वही में राजघराने में सम्पन्न होने वाले सामाजिक एवं धार्मिक रीति
 रिवाज के बारे में विगिष्ट उल्लेख हुआ है।

१६१ महाराजा श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री (सूरजकवरीजी) रे हाथ सच री बही

१ क्रम सत्या—१, २ वही का नाम—महाराजा श्री मानसिंहजी साहब
 के राजलोक श्री कलेबीजी (सूरजकवरीजी) रे हाथ सच री बही, ३ प्राप्ति
 स्यान—पु० प्र०, ४ पत्र सत्या—६४, ५ लिपि समय—वि० स० १८७१,
 ६ विशेष विवरण—इस वही में महाराजा मानसिंह की पुत्री सूरजकवरी के पूजा-
 पाठ एवं दान पुण्य से सम्बन्धित दैनिक खर्च का विवरण है। इसमें राजकुमारी
 का धार्मिक जीवन विशिष्ट रूप से उभर कर आया है।

धार्मिक जीवन -

इस वही के अनुसार राजकुमारियों का धार्मिक जीवन द्रष्टव्य है। महा-
 राजा मानसिंहजी की सुपुत्री सूरजकवरी नित्य पूजा-पाठ व दान-पुण्य किया करती
 थी। इस वही में पितरेसुरा, गणेशजी, हनुमानजी, भेरुजी, गोगाजी, महासतिया
 जुम्भारा (युद्ध में वीर गति को प्राप्त हुए) चामुण्डाजी, नागणेशजी की पूजा का
 उल्लेख है। इन सब की पूजा में रोळी मोळी, सुपारी, कुकुम, नारियल, चदन,
 कपूर, श्रीफल, केसर बादि को उपयोग में लिया जाता था। इससे ऐसा लगता है
 कि उस समय लोक-देवी-देवताओं को तो विशेष महत्त्व दिया ही जाता था इसके
 अतिरिक्त उस युग में महासतियो एवं जुम्भारा को भी विशिष्ट आस्था की दृष्टि से
 देखा जाता था।

इस वही में सूरजकवरी जी के द्वारा किये गये दान-पुण्य का भी उल्लेख है।
 ब्राह्मणों को दक्षिणा म रूपये, अन्न-जेहूँ (चने की दाल, चावल) हल्दी, गुड, मिसरी
 आदि दिये जाने का उल्लेख है। उन्हें विशिष्ट अवसरों पर भोजन कराये जाने का
 भी उल्लेख है। उन्हें भाजन में हलुआ जलेबी, दही दूध, पेडा, घेवर मालपूवा,
 लड्डू, पेठा, मोठ की फली व काकडी का साग आदि खिलाये जाने का भी उल्लेख
 है। आज भी ये सब भारवाड के विशिष्ट व्यंजनों के रूप में प्रसिद्ध हैं।

इसमें एक सुहागिन ब्राह्मण स्त्री को हाथी दात का चूड़ा दान में दिये जाने का भी बरान है। इससे ऐसा लगता है कि उस युग में सुहागिन स्त्रियाँ हाथी दात के चूड़े को विशिष्ट रूप से पहनती थी। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि उस युग में राजकुमारियाँ नित्य पूजा पाठ से रुचि रखती थीं एवं ब्राह्मणों एवं अरगों को दक्षिणा एवं दान दिया करती थीं।

१६२ महाराजा विजयसिंह की राणी इन्दर कुवर की बही

१ क्रम संख्या—७, २ बही का नाम—महाराजा विजयसिंह की राणी इन्दर कुवर की बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र० ४ पत्र संख्या ८२, ५ लिपि समय—वि० सं० १८२३ से १८३८ फाल्गुन सुद ८, ६ विशेष विवरण—संवत् १८२३ में महाराजा विजयसिंह का श्रीमती इन्दर भाणात से विवाह हुआ। जिनकी अभीष्ट, पंचमासी आगरणी का उत्सव सम्पन्न हुआ। १८२४ विक्रम संवत् में महाराजकुमार चिमनसिंह का जन्म हुआ। महाराजकुमार चिमनसिंह का विवाह भाटी ब्या से संवत् १८३८ में हुआ। इनकी पत्नी के अभीष्ट का उत्सव संवत् १८३८ जेष्ठ सुदी एकादशी को सम्पन्न हुआ। प्रस्तुत बही में उपयुक्त उत्सवों पर अच्छा प्रकाश पड़ा है। इस बही से लोच-देवी-द्वताम्रा के महत्त्व को भी समझा जा सकता है।

प्रस्तुत बही में १८ वीं शताब्दी में राजघराने में सम्पन्न होने वाले रीति रिवाजों एवं उत्सवों का बरान आया है। ऐसे रीति रिवाजों के माध्यम से राजघराने के व्यक्तियों का सामाजिक जीवन विशिष्ट रूप में उभर कर आया है। एसे अवसरों पर गंध दूएँ रूपों का भी इस बही में लेगा-जोता है।

सामाजिक जीवन -

राजघराने में महत्त्व में विभिन्न उत्सव मनाने की परम्परा है। यहाँ राजघराना में तो विभिन्न उत्सव मनाए जाते रहते हैं। जिनमें अभीष्ट, पंचमासी, आगरणी, जन्मोत्सव आदि का विशिष्ट महत्त्व है। इन उत्सवों को मुख्य रूप से राजघराने में ही मनाया जाता था। ये उत्सव बड़ी धूम धाम में सम्पन्न होते थे। इन अवसरों पर राजबन्धुवारियों व अन्य भागों को गुट बाँटने की विशिष्ट परम्परा रही है। इन अवसरों पर दबी-देवताओं को भेंट भेजा कर प्रणत किया जाता था। उनकी पूजा की जाती थी। राजघराना में सम्पन्न होने वाले उपयुक्त उत्सवों का गतिपत्र परिषद द्वारा विभिन्न पत्रिकाओं में दृश्य है—

अभीष्ट -

राजघरानों में इस उत्सव का विशिष्ट महत्त्व रहा है। यह उत्सव किसी महाराजा या महाराजकुमार की रानी गम्बती हान पर मनाया जाता था। मारवाड़ी भाषा में रानी के गम्बती होने को 'रानी के अभीष्ट का हाना' कहते हैं। इस अवसर पर सभी लोगों को गुड बाटा जाता था। देवी-देवताओं की पूजा की जाती थी। उनके वस्त्र, छत्र आदि चढाये जाते थे।

पचमासी -

रानी के गम्बती होने के पाँच महीने पूरे होने पर पचमासी उत्सव बड़े ही धूम धाम से सम्पन्न होता था। इस अवसर पर भी गुड बाटा जाता एवं देवी देवताओं की पूजा होती थी।

आगरणी -

यह उत्सव भी रानी के प्रसव पर सम्पन्न होता था। इस अवसर पर भी देवी-देवताओं की पूजा का विशिष्ट आयोजन होता था।

जन्मोत्सव -

रानी जब राजकुमार या राजकुमारी को जन्म दे देती, उस अवसर पर जन्मोत्सव मनाया जाता। राजघरानों में यह उत्सव अत्यन्त ही धूम धाम से होता, इस अवसर पर गुड, मिठाईयाँ, रुपये व वस्त्र बाटे जाते थे। इस खुशी में कदियों को कद से मुक्त भी किया जाता था। कुछ विशिष्ट लोगों को गाव के गाव इनायत कर दिये जाते थे। इस अवसर पर 'सूरज भगवान' 'मैरुजी' आदि की विशिष्ट पूजा होती थी।

ऐसे अवसरों पर पूजा में काम आने वाली चीजें इस प्रकार थी—

नारियल, सिद्धूर, मालीपना, तेल, घी, कूकू, मेहदी, गोळी, चावल मूग, गुड आदि। इन अवसरों पर देवी देवताओं के आभूषण व पोशाकें भी चढाये जाते थे। पोशाक में देवताओं के बाग एवं देवियों के घाघरा साडियाँ चोली आदि होते थे।

पचमासी के अवसर पर देवस्थानों में बतन आदि मोंट किये जाते। बतना में कडाइया, धालिया आदि प्रमुख थे। ऐसा इस बही से प्रमाणित होता है। उदाहरण के लिए इस अवसर पर ठाकुर जी के मंदिर में ग्यारह बतन दिये गये उसका उल्लेख द्रष्टव्य है—

"ठाकुर जी श्री सीतारामजी रे ११"

पृ० सख्या—१४

राजकुमार चिमनसिंह के जन्मोत्सव की बड़ी धूम धाम से मनाया गया। इस अवसर पर भैरुजी की पूजा की गई। पूजा में निम्न सामग्री काम में ली गई—

बाट (दसा हुआ गहूँ) मूग तेल घी, गुड़, तिल, मेहदी, मालीपना, मुपारी पोधी कुचुम, नारियल आदि।

राजस्थान के लोक-देवताओं में भैरुजी का विशिष्ट स्थान है। भैरुजी पुत्र देने के देवता मान जाते हैं, इसलिए राजघरानों में भी भैरुजी की जन्म उत्सव पर पूजा होती थी।

इस अवसर पर माताजी की भी पूजा होती थी।

इस वही में प्रसव के बाद रानी को तिलायों जाने वाली सामग्री का भी उल्लेख है, यथा—

बीदाम, अजमो, पीपलामूल, केसर बिस्तूरी, जीरा, गुद, सोपरा आदि।

ये ही चीजें देवस्थान में भेंट किये जाने की परम्परा इस वही से प्रमाणित होती है।

जन्मोत्सव पर वेश्याओं को भी मिठाईयाँ एवं वस्त्र भेंट किये जाते थे—

“पातरीया नु बाया १०।”

पृ० सख्या—६६

वही के अनुसार चिमनसिंह के जन्मोत्सव पर भक्तिन औरतों को वस्त्र बाँटे गये। नगारखाने के लागों को भी वारे (लम्बा कोट) बाँटे गये। कुछ नगारचियाँ के नाम इस प्रकार हैं—

दर्ईदास, नूरो खीवो रेहमतुलो, कासम आदि।

राजस्थान में होली के अवसर पर दूढ़ लाने की विशिष्ट परम्परा रही है इस अवसर पर दूढ़ लाने वाला मनुष्यों का समूह बालक के दीर्घायु होने की आर्ति देता है एवं उसके पिता से कुछ भेंट लेता है।

इस अवसर पर राजघरानों में भी दूढ़ उगाई जाती थी। वही में चिमनसिंह की दूढ़ लाने वाला को विशिष्ट भेंट दी गई। इस अवसर पर नाजर, जोनी, सेवग, कोतवाल आदि लोगों का महाराजा ने मिठाईयाँ के घाल भेजे। इस उत्सव को भी बड़ी धूम धाम से मनाया जाता।

राजस्थान में बालक के प्रथम वेश मुण्डन के उत्सव को भी मनाया जाता है। बालक के प्रथम मुण्डन के समय देवी देवताओं को भेंट चढ़ाई जाती थी। यह उत्सव राजघरानों में विशिष्ट रूप से सम्पन्न होता था। राजघरानों की भाषा में वेश

के लिये वे 'खोळ' कहते हैं। इन प्रकार के विद्वत्-वृत्तों को जानना। वेदों के अतिरिक्त वे अपने-अपने अपने-अपने अनेक-अनेक विद्वत्-वृत्तों के लिये 'खोळ' का नाम रखते हैं। इनमें से कुछ-कुछ ऐसे विद्वत्-वृत्तों के नाम हैं जो कि आज भी प्रचलित हैं।

राजस्थान में विद्वत्-वृत्तों का नाम 'खोळ' का नाम रखने का प्रचलन आज भी प्रचलित है। इन प्रकार के विद्वत्-वृत्तों को जानना। वेदों के अतिरिक्त वे अपने-अपने अनेक-अनेक विद्वत्-वृत्तों के लिये 'खोळ' का नाम रखते हैं। इनमें से कुछ-कुछ ऐसे विद्वत्-वृत्तों के नाम हैं जो कि आज भी प्रचलित हैं।

राजस्थान में विद्वत्-वृत्तों के अन्तर्गत वेदों के अतिरिक्त वे अपने-अपने अनेक-अनेक विद्वत्-वृत्तों के लिये 'खोळ' का नाम रखते हैं। इनमें से कुछ-कुछ ऐसे विद्वत्-वृत्तों के नाम हैं जो कि आज भी प्रचलित हैं।

गड में प्रवेश करते समय अपने परिवार के साथ जाती है। वहाँ पहुँचते ही वह अपने-अपने अनेक-अनेक विद्वत्-वृत्तों के लिये 'खोळ' का नाम रखते हैं। इनमें से कुछ-कुछ ऐसे विद्वत्-वृत्तों के नाम हैं जो कि आज भी प्रचलित हैं।

राजस्थान में मुन्ही वैवाहिक जीवन के लिए नैऋत्य के धार की उद्देश्य दुन्दुभनारा परिव्रज्या की जाती है। इस वही से ही महाराजाजी विद्वत्-वृत्तों की एक महारानी श्रीमती इन्दर भागीन द्वारा नैऋत्य के धार की परिष्कार देना बखाने द्रष्टव्य है—

'नन्दी रे गुजार ने ऊपर ऊभा पूजा कर पड़ायो । सो ते पते उठे हीन
गठजोडा खोलीयो ।' पू. तहसा—२

अथ देवी-देवताओं की भी पूजा की गई। उनके पश्चात् पड़ायो। उनके नाम इस प्रकार है—

महादेवजी नागलक्ष्मी माताजी, हीमलाज माताजी, पद्मदेवता, श्री नारायणी गौराजी, मलीनायजी, पितराजी आदि।

गड में प्रवेश होने के पश्चात् महाराजाजी को 'खोळ' भी भराई जाती। महाराजाजी भागीन को 'खोळ' भराई गई, उसमें गिना भीजें जाती गई, यथा—

रोकड़ खपय, नारियल' बाधाम, दासो, सारभे, भिसरी, गारियल के गोले, पिसता आदि।

राजस्थान में आज भी मन्थु के घर धार पर जाती 'खोळ' जाती है।

राजस्थान में विभिन्न लोक देवी देवताओं की आराधना रोग निवारण के लिए भी होती थी। अमुक बीमारी से पीड़ित व्यक्ति सम्बन्धित लोक देवी देवता की पूजा एवं आराधना करे तो उसकी बीमारी ठीक हो सकती है। यहाँ रामदेवजी बूले लगडे, अंध, कोडी की, पावूजी ऊट की, गोगाजी एवं तेजाजी साप के काटे व्यक्ति की, मोती महाराज मोतीभरा की, लुरकी माता खासी की, ओरी माता छोटी चेचक की, शीतला माता बड़ी चेचक की बीमारियों को ठीक करने वाले माने गये हैं।

वही के अनुसार महाराज कुमार चिमनसिंह को तीन बार ओरी एवं शील माता का प्रकोप रहा था। सर्वप्रथम उह सवत् १८३१ में, दूसरी बार सवत् २८३५ में एवं तीसरी बार सवत् १८३८ में चेचक निकली। तीन बार ही महाराजा एवं रानी ने शीतला माता की विशिष्ट पूजा की। उह पोशाकें चढाई गईं। उनके आभूषण चढाय गये। आभूषणों में गुजरियों, तीमणियों, बण, चीड, माला, बारलो, नथ, नंतर, कठ आदि।

राजघराने में सम्पन्न हान वाले उत्सवा, पर्वों, त्योहारों से राजस्थानी संस्कृति को विशाल परिप्रेक्ष्य में समझ सकते हैं। राजघराने के अपने कुछ विशिष्ट रीति-रिवाज हुआ करते थे परंतु अनेक रीति रिवाज सामान्य जन के रीति रिवाजों की ही तरह मनाये जाते थे, आर्थिक सम्पन्नता के कारण उनमें कुछ अन्तर अवश्य रहता था।

१६३ महाराजा श्री मानसिंहजी रे पडदायतजी श्रीमती पनराय बावडी खुदाई जिण री बही

१ क्रम संख्या—१० २ बही का नाम—महाराजा श्री मानसिंहजी रे पडदायतजी श्रीमती पनराय बावडी खुदाई जिण री बही ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र संख्या—२८७, ५ लिपि समय—वि० स० १८६२ ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत बही में महाराजा मानसिंहजी की पडदायत श्रीमती पनरायजी द्वारा खुदाई गई बावडी एवं बगीचे लगाई की मजदूरों के जमा खच का विवरण है।

इस बही से यह ज्ञात होता है कि उस समय रानिया अपनी इच्छानुसार कुछ भी सांस्कृतिक कार्य करवा सकती थी। बावडी खुदावाने एवं बाग लगवाने से उनके नाम की प्रतिष्ठा बढ़ती थी। वे अपने नाम को अमर करने के लिए भी ऐसे कार्य सम्पन्न करवाती थी। इस दृष्टि से पडदायत श्रीमती पनरायजी का विशिष्ट

रूप से उल्लेख किया जा सकता है। इस वही से उनके जीवन की लोक कल्याणकारी प्रवृत्ति उभर कर सामने आयी है। इससे लोगों को मजदूरी भी मिलती थी।

१६४ महाराजा श्री मानसिंहजी रे पडतायत श्री पनराय रे हरिद्वार व गगा तीर्थ री बही

१ क्रम सख्या—७२, २ वही का नाम—महाराजा श्री मानसिंहजी रे पडदायत श्री पनराय रे हरिद्वार व गगा तीर्थ री वही ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—५५, ५ लिपि समय—संवत् १६११ फाल्गुन सुदि ५ से आषाढ सुदि १५, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही म महाराजा मानसिंह की पडदायत पनराय गगा स्नान के उपलक्ष्य में किये गये दान पुण्य में हुए खर्च का विवरण है।

धार्मिक जीवन —

राजघरान की स्त्रिया राजनैतिक कार्यों के अतिरिक्त धार्मिक कार्यों में भी रुचि लिया करती थी। वे दान-पुण्य और तीर्थ यात्रा करती थी। इसका प्रमाण प्रस्तुत वही है। वही के अनुसार पनराय गगा स्नान के लिए हरिद्वार गई। वहाँ ब्राह्मणा को दान दिया। विभिन्न मंदिरों में दान दिया। गगाजी की पूजा की। गगा स्नान के पश्चात् जोधपुर लौटी। यहाँ पर भी खूब दान किया। विभिन्न मंदिरों में रुपये एवं गगाजल की सीसिया भेंट की, ब्राह्मणा को भोजन करवाया एवं उन्हें दक्षिणा दी।

पडदायत ने गगाजी में स्नान करते समय गगाजी की पूजा के लिए निम्न सामग्री उपयोग में ली—

दूध, घी, पेडा, पुष्प, दही, पतासा, नारियल आदि।

वहाँ ठाकुरजी, ब्रह्माजी, श्री चौधमाताजी एवं महादेवजी के मंदिरों में रुपये भेंट किये।

पडदायत ने गगाघाट पर गौदान भी किया, यथा—

“गऊदान री रूपीयो एक”

पु० सख्या—२६

गगाघाट पर ब्राह्मणों को वस्त्र भेंट किये जिनमें अगोछा व दुपट्टा प्रमुख थे।

पनराय गगा स्नान करके जोधपुर लौटी तब उन्होंने श्रीनाथजी के मंदिर में रुपये व सोने की मोर भेंट की, यथा—

‘ १) ७ भेंट मोर १) धेक ने रूपीया सात

॥) दीक्षणा री

१) सेवग हीरालाल ने रूपीयो पाव ।”

पु० सख्या—१५

इस अवसर पर जोधपुर के मन्दिरों में तो भेंट चढाई साथ ही मेडता में चतुरमुजजी के मन्दिर में भी पडदायत ने रुपया व प्रसाद चढाया, यथा—

“१ =) ठाकुर जी श्री चतुरमुजजी मेडता में वीराजे तीण रे

=) पुजापो परसाद अना दोग रो

१) भेंट रुपीयो एक”

पृ० सख्या—२२

पडदायत न महादेवजी के मन्दिर में गगाजल भेंट किया, यथा—

“1 =) माहादेवजी श्री रामेश्वरजी चाद पोळ बाग् वीराजे तीण रे श्री गगा जळ री मीसीया भराई ।”

पृ० सख्या—२४

गगाजी तीथ स्थल से लौटन के बाद आपाठ सुदी १२ (द्वादशी) को ब्राह्मणा का भाजन एव हवन करवाया । हवन में निम्न सामग्री उपयोग में ली—

कुकुम, पुष्प दही, नागरबेल, सुपारी, नारियल मूग, जवार, नारंगिया आदि ।

१६५ महाराजा श्री मानसिंहजी साहब रे पडदायत श्रीमती पनराय री बही

१ क्रम सख्या—८४ २ बही का नाम—महाराजा श्री मानसिंहजी साहब रे पडदायत श्रीमती पनराय री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—२१, ५ लिपि समय—सवत् १६२२ आपाठ वदी १२, सोमवार ६ विशेष विवरण—इस बही में पाली के महाजन अग्ररचद सचेती की पुत्री मेहताव के विवाह पर महाराजा मानसिंह की पडदायत पनराय द्वारा किये गये खच का विस्तृत रूप में बणन है ।

इस बही में पडदायत का सामाजिक जीवन उभर कर आया है । इसमें विवाह की रस्म पर अच्छा प्रकाश पडा है । बही के अनुसार पडदायत पनराय न व्यक्तिगत रूप से मेहताव के विवाह पर खच किया है । इससे हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि राजघराने के व्यक्तिया एव बड़े-बड़े महाजन परिवार के आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध हुआ करते थे । वे एक दूसरे के विवाह जसो रस्मों पर खच किया करते थे । विवाह जैसी रस्म में केवल महाराजा ही नहीं बल्कि रानिया व पडदायतों भी भाग लिया करती थी । पडदायतों साधारण रस्में नहीं होती थी ।

इस वही के शोषात्मक अध्ययन से हम यह भी अनुमान लगा सकते हैं कि वे लोग उसके सम्बन्धी रहें हों। इसलिए राणी ने उसके विवाह पर व्यक्तिगत रूप से रस किया है।

इस वही में विवाह की रस्मा का बरण धारा है। जैसे—बनोला देना, मिलणी करना, पेरारणी आदि। राजस्थानी संस्कृति में विवाह की इन रस्मा का अत्यन्त ही महत्व है।

बनोला -

दुल्हा या दुल्हन को उनके परिजन भोजन के लिए आमंत्रित करते हैं उसे बनोला देना कहते हैं। जैसाकि इस वही में उल्लेख है। पतराय न महाजन की पुत्री मेहताब का बनोला दिया, उसमें रस हुए रस का उल्लेख है—

“४॥॥) बनोले दीयो भसाड वदी १०” पृ० संख्या—१६

मिलणी -

राजस्थान में विवाह रस्म पर ‘मिलणी’ का भी विशिष्ट महत्व है। दुल्हे की बारात काया पक्ष के यहाँ पहुँचने पर साध्या के समय दोनों पक्ष के लोगों में प्रथम मिलन होना है, उस राजस्थान में ‘मिलणी’ कहते हैं। उसमें रस भी भेंट किया जाता है। इस वही में मिलणी का भी उल्लेख है—

“मिलणी रो रूपीयो एक ।”

पेरारणी -

राजस्थानी संस्कृति की दृष्टि से इसका भी महत्व है। दुल्हे के परिजन का वस्त्र व रुपये भेंट किया जाता है, उसे ‘पेरारणी’ कहते हैं। पेरारणी से तात्पर्य वस्त्र पहनाना है। इस वही में इसका भी उल्लेख है।

सामाजिक जीवन -

वही के अनुसार विवाह के अवसर पर उपयोग में ली जाने वाली सामग्री (भोजन, वस्त्र, आभूषण व वतन) निम्न थे—

खान पान -

इस वही में विवाह के अवसर पर देशी घृत खरीदे जाने का बरण है। इसी तरह विवाह के लिए अन्न खरीदे जाने का भी उल्लेख है। अन्न में चना, गहूँ, मूँग, जवार आदि। इनके विशिष्ट व्यजन बनते थे। सब्जी खरीद में कुमटिया, गवार, फलिया, खैलरा, गुदा आदि का उल्लेख है। खीर बनाने के लिए दूध खरीद भी उल्लेख हुआ है। प्रतीत होता है कि हरी सब्जी यहाँ कम ही मिलती थी

वेशभूषा -

इस बही में विवाह के अवसर पर दिये जाने वाले वस्त्रों का भी उल्लेख है। जैसे—मोलीया (साफा), जयपुर की छोट, कोर गोटी, दुपट्टी चोलदार, कुसुमत, मलमल आदि। उस समय विवाह में ये ही वस्त्र भेंट किये जाते थे। मुख्य रूप से इन्हीं वस्त्रों का प्रचलन था।

आभूषण -

इस बही में विवाह में दिये जाने वाले कुछ आभूषणों का भी बखान है। आभूषणों में सोने के डोरे, बाजूबन्द, मोतिया की कण्ठी आदि का उल्लेख है। बही के अनुसार मेहताब के पति को मोतियों की कण्ठी व कडे के रुपये दिये गये उसका उल्लेख द्रष्टव्य है—

“मेहताब रे बीद रे मोतीया री कण्ठी,

कडा रा रूपीया ५४”

पृ० सख्या—५

विवाह में दुल्हे को रोक्ड रुपये भी दिये गए इसका भी यथास्थान बही में उल्लेख आया है।

दहेज -

विवाह पर दहेज का दिया जाना ता एक सामान्य परम्परा कही जा सकती है। इस बही में भी दहेज का बखान है। इस विवाह पर विस्तरों के रूप में रेशम की गुलाबी रजाई, जाजम आदि दिए गए। बतनों के रूप में बळस, घाळ कासी रा, घाळी, पीतल का लोटा, कासी का बाटका, दुकनिया पीतल का बाटकी, पीतल की कुडकी (बम्मच), चरिया आदि दिए गए। उस समय विशेष तौर से कासी एक पीतल के बतना का प्रचलन था।

हम यह सकते हैं कि राजा रानिया की धपनी इच्छाएँ हमरा करती थीं। वे चाहे जैसा कर सकते थे। वे जिस किसी पर इतित हो जाते उसको बूट कुप दे दिया करते थे। किसी प्रियजन की पुत्री का विवाह । उनर लिए मामूनी बात थी। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि रानिया) थी।
महाजन काया के विवाह का पूरा सब राने । ४२१
दृष्टिकोण भी प्रबट होना है।

बही के अनुसार उस समय विवाह
मिलता ही है साथ ही साथ तत्कालीन समय

में तो

४१५

जाने वाली सामग्री (भोजन, वस्त्र, जेवर, बतन आदि) के बारे में भी अच्छी जानकारी मिलती है।

१६६ महाराजा श्री मानसिंहजी की महारानी श्रीमती तीजा (तृतीय) भटियाणी साहिबा ठाकुरजी (श्री कृष्ण भगवान) की मन्दिर बनवाये उण की वही

१ ग्रन्थ सख्या—१४५, २ वही का नाम—महाराजा श्री मानसिंहजी की महारानी श्रीमती तीजा (तृतीय) भटियाणी साहिबा ठाकुरजी (श्री कृष्ण भगवान) की मन्दिर बनवाये उण की वही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—२६, ५ लिपि समय—संवत् १६०५, श्रावण बदी प्रथमा से, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही में श्रीमती तीजा (तृतीय) भटियाणी ने ठाकुरजी का मन्दिर बनवाया उसका लेखा जोखा है। वही में उस मन्दिर को बनाने वाले कारीगरों के नाम एवं उनकी उपस्थिति का विवरण है। इसमें भटियाणी रानी का धार्मिक जीवन भी विशिष्ट रूप से उभर कर सामने आया है। इस वही से यह प्रमाणित होता है कि रानी की नाय सम्प्रदाय के अतिरिक्त अन्य देवताओं में भी आस्था रही है। रानी द्वारा ठाकुरजी का मन्दिर बनवाना इसी बात की पुष्टि करता है।

उस समय के बने हुए मन्दिरों की मजदूरी का प्रमुख कारण विशिष्ट मसाले का होना है। उस समय मसाले के रूप में चूना, मूरड कवर, खड़ी, बळी आदि काम में आते थे।

वही के अनुसार खड़ी को पकाने के लिए छाणो (सूखे गोबर) का प्रयोग किया जाता था। उस खड़ी के उपयोग से मन्दिरों का मजदूर बनना स्वाभाविक है।

वही के अनुसार कुछ कारीगर और मजदूरों के नाम इस प्रकार हैं—

कारीगर—मुक्तीम, घासू रमजानी, गुमान, खेतो, मानो, रामलाल, गिरधारी, नाथो, पीरो मूळो आदि।

चूनगर—गिरधारी, गेगो।

घडाईदार—तेमो, खुदाबगस, भूरियो, दुरगियो, रेहमान, हुसेन आदि।

मजदूर—करणो, जीवण, पनो बुदो तनु, बहादुर, मेताव, बगसो आदि।

इन सब कारीगरों एवं मजदूरों की उपस्थिति और समय-समय पर इन्हें दिये जाने वाले रूपों का लेखा-जोखा प्रामाणिक ढंग से रखा गया है।

वेशभूषा -

इस बही में विवाह के अवसर पर दिये जाने वाले वस्त्रों का भी उल्लेख है। जैसे—मोलीया (साफा), जयपुर की छोट, थोर गोदो, दुपट्टी घोलदार, बसुमल, मल्मल आदि। उस समय विवाह में ये ही वस्त्र भेंट किये जाते थे। मुख्य रूप से इन्हीं वस्त्रों का प्रचलन था।

आभूषण -

इस बही में विवाह में दिये जाने वाले कुछ आभूषणों का भी बरण है। आभूषणों में सोने के डोरे, बाजूबन्द, मोतिया की कण्ठी आदि का उल्लेख है। बही के अनुसार मेहताब के पति की मोतियों की कण्ठी व कड़े के रुपये दिये गये उसका उल्लेख द्रष्टव्य है—

“मेहताब रे धोद रे मोतीया री कण्ठी,

कड़ा रा रूपीया ५४”

पृ० सख्या—५

विवाह में दुल्हे की रोकड रुपये भी दिये गए इसका भी यथास्थान बही में उल्लेख आया है।

दहेज -

विवाह पर दहेज का दिया जाना तो एक सामान्य परम्परा कही जा सकती है। इस बही में भी दहेज का बरण है। इस विवाह पर विस्तरो के रूप में रेशम की गुलाबी रजाई, जाजम आदि दिए गए। बतना के रूप में कलस, थाल कासी रा, थाली, पीतल का लोटा, कासी का बाटका, दुकनिया पीतल का, बाटकी, पीतल की कुडची (चम्मच), चरिया आदि दिए गए। उस समय विशेष तौर से कासी एवं पीतल के बतना का प्रचलन था।

हम कह सकते हैं कि राजा रानिया की अपनी इच्छाएँ हुमा करती थी। वे चाहे जैसा कर सकते थे। वे जिस किसी पर द्रवित हो जाते उसको बहुत कुछ दे दिया करते थे। किसी प्रियजन की पुत्री का विवाह करना तो उनके लिए मामूली बात थी। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि रानिया खच करने में स्वतंत्र थी। किसी महाजन कया के विवाह का पूरा खच रानी द्वारा उठाने में उसका उदारवादी दृष्टिकोण भी प्रकट होता है।

बही के अनुसार उस समय विवाह रस्म की परम्परा के बारे में तो परिषय मिलता ही है साथ ही साथ तत्कालीन समय में विवाह के अवसर पर उपयोग में ली

जाने वाली सामग्री (भोजन, वस्त्र, जेवर, बर्तन आदि) के बारे में भी अच्छी जानकारी मिलती है।

१६६ महाराजा श्री मानसिंहजी री महारानी श्रीमती तीजा (तृतीय) भटियाणी साहिबा ठाकुरजी (श्री कृष्ण भगवान) री मन्दिर बणवायो उण री बही

१ क्रम संख्या—१४५, २ बही का नाम—महाराजा श्री मानसिंहजी री महारानी श्रीमती तीजा (तृतीय) भटियाणी साहिबा ठाकुरजी (श्री कृष्ण भगवान) री मन्दिर बणवायो उण री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र संख्या—२६, ५ लिपि समय—संवत् १६०५, श्रावण बदी प्रथमा से, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत बही में श्रीमती तीजा (तृतीय) भटियाणी ने ठाकुरजी का मन्दिर बनवाया उसका लेखा जोखा है। बही में उस मन्दिर को बनाने वाले कारीगरों के नाम एवं उनकी उपस्थिति का विवरण है। इसमें भटियाणी रानी का धार्मिक जीवन भी विशिष्ट रूप से उभर कर सामने आया है। इस बही से यह प्रमाणित होता है कि रानी की नाथ सम्प्रदाय के अतिरिक्त अन्य देवताओं में भी आस्था रही है। रानी द्वारा ठाकुरजी का मन्दिर बनवाना इसी बात की पुष्टि करता है।

उस समय के बने हुए मन्दिरों की मजदूती का प्रमुख कारण विशिष्ट मसाले का होना है। उस समय मसाले के रूप में चूना, मूरड, ककर, खट्टी, कळी आदि काम में आते थे।

वही के अनुसार खट्टी को पकाने के लिए छाणो (मूखे गोबर) का प्रयोग किया जाता था। उस खट्टी के उपयोग से मन्दिरों का मजदूत बनना स्वाभाविक है।

वही के अनुसार कुछ कारीगर और मजदूरों के नाम इस प्रकार हैं—

कारीगर—मुक्कीम, घासू, रमजानी, गुमान, खेतो, मानो, रामलाल, गिरधारी, नाथो, पीरो, मूळो आदि।

चूनगर—गिरधारी, गेनो।

घडाईदार—तेमो, खुदाबगस, भूरियो, दुरगियो, रेहमान, हुसेन आदि।

मजदूर—करणो, जीवण, पनो बुदो, तनु, बहादुर, मेताव, बगसो आदि।

इन सब कारीगरों एवं मजदूरों की उपस्थिति और समय-समय पर इन्हें दिये जाने वाले रूपों का लेखा जोखा प्रामाणिक ढंग से रखा गया है।

१६७ महाराजा श्री मानसिंहजी के वष गाठ की बही

१ प्रथम सख्या—१५३ २ महाराजा श्री मानसिंहजी के वष गाठ की बही, ३ प्राप्ति स्थान—पृ० प्र०, ४ पत्र सख्या— ३६, ५ तिथि ममय—संवत् १८८१ वैशाख माह ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत बही में महाराजा श्री मानसिंहजी की वष गाठ पर उनकी रानी श्रीमती देवदी न दावत (गोठ—किसी विदेशी मुंशी के अवसर पर मिठाइयाँ खिलाना एवं वाटना गोठ कहलानी है) रली। इस अवसर पर सब की मिठाइयाँ व धान वितरित किए गए आदि का बखान है।

इस बही में राजघराना के रस्म एवं रीति रियाजों की अच्छी कल्प मिलती है। वष गाठ का उत्सव राजघराना में बड़ी धूमधाम से मम्पन्न किया जाता रहा है। महाराजाघरा की वष गाठ के समय उनकी रानियाँ व्यक्तिगत रूप से उनकी वष गाठ मनानी थीं जसाकि इस बही से प्रमाणित होता है। यह उत्सव अत्यंत ही खुशी व साथ सम्पन्न होता था। इस अवसर पर विभिन्न मंदिरों में एवं परिजनों का मिठाइयाँ के थाल भेजने की परम्परा रही है। इस समय सभी देवताओं पितरों, सलियाँ क मंदिरों में मिठाइयाँ के थाल भेजकर उन्हें इस शुभ अवसर पर याद किया जाता था। इस प्रकार महाराजा मानसिंह की रानी देवदी न उनकी वष गाठ पर गाठ देकर अपनी व्यक्तिगत खुशी जाहिर की है।

इस अवसर पर मंदिरों में थाल निजवान की विनिष्ट परम्परा रही है। इन मंदिरों में कामरत सबगा (पुजारियों) रसाईदारों पूरबीया ब्राह्मणों, नाइया, घोबियों, चोकीदारों आदि का मिठाइयाँ के थाल भेजे जाते थे। बही के अनुसार जयमंदिर महामंदिर पदमसर के ऊपर मंदिर फूल मंदिर श्रीनाथजी के मन्दिर, श्री मंदिर श्री मंदिर मण्डोर, श्री मंदिर बालसमाद, श्री मंदिर अमय सागर ऊपर आदि में मिठाइयाँ के थाल भेजे गए।

इसी प्रकार महादेवजी के मंदिरों पर भी मिठाइयाँ के थाल भेजे गए। एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

“श्री महादेवजी भाव विराजे तिण रे धाळ।” पृ० सख्या—७

इन मंदिरों में वंजनाथजी व अग्नेसरजी के मंदिरों में थाल भेजे गए।

इस अवसर पर विभिन्न देवियों के मंदिरों में थाल भेजे गए हैं, जैसे— श्री नाग खेची माताजी, श्री हीमला माताजी श्री वरणी माताजी, श्री चावडा माताजी आदि। देवताओं में पंच-देवताओं एवं भैरुजी के मंदिरों में थाल भेजे गए थे।

इस अवसर पर मृत आत्माओं को भी याद किया जाता था। नाचों की समाधियों पर भी थाल भेजे गए थे। उदाहरण द्रष्टव्य है—

‘श्री देवनायजी महाराज रे समाध

१ सेवग जणा ४”

पृ० सख्या—६

इस खुशी के अवसर पर स्वर्गीय महाराजाम्रा के धडा (समाधिया) पर थाल भेजे गए। महाराजा श्री अजीतसिंहजी के धडे मडोर मे एक मिठाई का थाल भेजा गया।

वप गाठ के अवसर पर सतियों की समाधिया पर थाल भेजकर उह याद किया गया। जिन जिन सतियों के थाल भेजे गये उनके नाम इस प्रकार है—

दादीजी श्री चवाणजी, चदरावतीजी आदि।

अजीतसिंहजी की कुछ महासतिया इस प्रकार है—

अभयकवर, श्री पासवान, सुखसोभाजी आदि।

इस अवसर पर पितरा (राजघराने के मृत व्यक्ति जो देवता-जा की श्रेणी मे माने जाते है) का थाल भेजे जाते थे। पितरजी श्री जारावरसिंहजी, जेतसिंहजी, सामर पितरजी, सूरसिंहजी, सावतसिंहजी आदि।

इस अवसर पर राजपरिवार के व्यक्तियों को भी थाल भेजे जाते थे।

महाराजा की वप गाठ पर वमीणा को भी थाल भेजे गये। जैसे—दजिया, रगरेजा, पिजारो दलाला, गजधरो, खातियो नाइया चौकीदारो, राईका दरोगो आदि।

इस प्रकार इस वही से राजघराने के सामाजिक जीवन को जान सकते हैं। वप गाठ का उत्सव तो रावघराने मे विशिष्ट रूप से मनाया जाता रहा है। इस अवसर पर सभी लोगों को मिठाइया बाट कर वप गाठ की खुशी जाहिर की जाती थी।

१६८ महाराजा मानसिंहजी रे पडदायत श्री छोटा रूपजोतजी देवलोक हुवा उण री वही

१ क्रम सख्या—१६५, २ वही का नाम—महाराजा मानसिंहजी र पडदायत श्री छोटा रूपजोत देवलोक हुवा उण री वही, ३ प्राप्ति स्थान—पु०प्र०, ४ पत्र सख्या—१०, ५ लिपि समय—सवद १८६५ श्रावण सुद २ से श्रावण सुदी १३, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही मे महाराजा मानसिंह के पडदायत छोटा रूपजोत के मृत्यु-संस्कार पर होने वाले खर्च का विवरण है। राजघराने मे

मृत्यु सस्कार पर विशिष्ट परम्पराओं एवं रीति रिवाजों का पालन किया जाता था जिनका बखान इस वही म है। कुल खच चार हजार तीन सौ सात रुपये पौने ग्यारह आने हुए।

मृत्यु सस्कार -

वहीं के अनुसार मृत्यु सस्कार पर राजघराने में विभिन्न तरह के दान दिये जाने की परम्परा रही है। इसमें वस्त्र दान, शैयादान, बतन दान, आभूषण दान, भोजनदान, गरुडदान, रुपयादान आदि प्रमुख हैं। वहीं के अनुसार पटदायत श्री जोटा रूपजान जी के देवलोक होने पर महाराजा मानसिंह जी ने उनके पीछे "वारहवा" किया। वारह दिना तक ब्राह्मण, गरीबों एवं कमीना को दक्षिणा एवं दान दिया। उह भोजन कराया। पटदायत जी के पीछे वारह दिन तक गरुड पुराण पढवाया।

पटदायत के पीछे उनका एक, तीजे नवें, ग्यारहवें व बारहवें व दिन पर विशेष दान दिये गये। मंदिरों में रुपये भेंट किए गए। जनानी व मर्दानी पोशाक दुपट्टा, अगोछा, शैयादान में डोलिया, पयला, रजाई नविया, बतन दान में तीरवाण परात, झारा बडछी, चरी, तासत्री पीतल का लोटा आभूषण दान में कई तरह के आभूषण एवं भगवान की सोने की मूर्ति आदि ब्राह्मणों को दिये गये। उनकी भस्मी पुष्कर जी में भेजी। उस अवसर पर भी ब्राह्मणों को दान दिया गया।

१६६ महाराजा श्री मानसिंह जी के राजकुंवर छत्रसिंह के विवाह की बही

१ क्रम संख्या—२४४, २, वहीं का नाम—महाराजा श्री मानसिंह जी के राजकुंवर छत्रसिंह के विवाह की बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पय संख्या—१६०, ५ लिपि समय—संवत् १८२६ वशाख सुदी १२, ६ विशेष विवरण—महाराजा मानसिंह व महाराजकुमार छत्रसिंह की सगाई गांव कल्याणपुर के राव दुरजनसिंह चौहान की पुत्री से हुई। प्रस्तुत बही में देवडी रानी द्वारा महाराजकुमार छत्रसिंह जी की सगाई पर सब किये गए खर्चा का विवरण है।

सामाजिक जीवन -

राजघराने में सगाई की रस्म का विशिष्ट महत्व था। इस रस्म को भी ध्यान ही ठाट-बाट के साथ सम्पन्न किया जाता था। घर व वधु पक्ष व बीच रुपयो, कपडा, मिठाईया व आभूषण का लेन-देन होता था। इस अवसर पर घर पक्ष की ओर से विभिन्न देवी-देवताओं को खर्चा, मिठाईया, वस्त्र व आभूषण की भेंट पढ़ाई जाती थी। ब्राह्मणों को भोजन दिया जाता था। कमीना (राजघराने का नाम-काज करने वाले व्यक्ति) को खर्चा मिठाईया से प्रसन्न किया जाता था।

प्रस्तुत वही के अनुसार महाराजकुमार की सगाई में एसी ही परम्परा का पालन किया गया है। सगाई के समय चावड़ा माताजी के धाभूषण चलाए गए।

इस अवसर पर माताजी का हार (हवन) भी किया गया। सम्बन्धित राजपरान के व्यक्तियों को भोज दिया गया। श्राद्धाणा का भोजन खिलाया गया। कर्मियों को विभिन्न नोटों से प्रसन्न किया गया।

इस वही में राजपरान के रीति-रिवाज परम्परा आदि की तो जानकारी मिलती ही है साथ ही साथ इन ऐतिहासिक बहियाँ से राजस्थानी संस्कृति के विविध को भी भली भाँति समझा जा सकता है।

१७० महाराजा श्री मानसिंह जी की रानी श्रीमती भटियाणी साहिबा के हाथ एवं रीति वही

१ उमर सन्ध्या—२४६, २ वही का नाम—महाराजा श्री मानसिंहजी की रानी श्रीमती भटियाणी साहिबा के हाथ एवं रीति वही, ३ प्राप्ति स्थान—५० प्र०, ४ पत्र सन्ध्या—५६ ५ लिपि समय—संवत् १६२१ श्रावण वदी प्रतिपदा से चैत्र शुद्ध पूर्णिमा, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही में महारानी भटियाणी के हाथ एवं का विवरण है। वही में विभिन्न उत्सव एवं पर्वों पर बाटी गई मिठाई एवं रुपया का विवरण है। रानी ने व्यक्तिगत रूप से विभिन्न पर्वों एवं उत्सवों पर मंदिरों में, ब्राह्मणों को, अपना परिजन को मिठाइयाँ रुपये एवं वस्त्र नोट दिए हैं। इस वही में रानी का धार्मिक एवं सामाजिक जीवन उभर कर आया है। यहाँ कप गाँठ के उत्सव का भी विवरण है।

धार्मिक जीवन -

राजपरिवार में विवाह एवं अन्य उत्सवों पर ब्राह्मणों को जो दक्षिणा दी जाती, उसे 'भूरसी दक्षिणा' कहते थे। इस दक्षिणा का इस वही में उल्लेख है।

राजस्थान में प्राचीन समय से ही विभिन्न पर्व मनाए जाने की परम्परा रही है। जस—छमछरी (संवत्सरी), धावण की तीज, नागपंचमी, रक्षाबंधन बछवारस, जमाष्टमी, गोगानम आदि। ये सभी पर्व राजपराना में भी मनाए जाते रहे हैं। इन पर्वों पर महारानी श्रीमती भटियाणी ने विशिष्ट रूप से मिठाइयाँ, रुपये एवं अन्य चीजें वितरित की हैं। इस वही में ऐसे पर्वों पर ही प्रकाश डाला गया है। पर्वों का धार्मिक दृष्टि से महत्व है। साथ ही अर्थ के बटवारों की प्रक्रिया भी ज्ञात होती है।

महारानी ने छमछरी (संवत्सरी) के अवसर पर ब्राह्मणों को भोजन कराया, इसका उल्लेख निम्न पंक्तियों में द्रष्टव्य है—

“१) बाई ईंदर कुंवर बाई रे धूमछरी रा ब्रामणा ने भोजन कराया तीणरा सावण सुद ६ नम नु जीमाया ।”

पृ० सख्या—३

नाग पंचमी पर्व -

इसका भी धार्मिक दृष्टि से विशिष्ट महत्व है। राजघराने में इसे भी धूमधाम से मनाया जाता रहा है। रानी ने इस अवसर पर मिठाई के लिए रुपये दिये उसका बखान द्रष्टव्य है—

“सावणीया नागपंचम रे मंले गई जीण ने—

१) मीठाई रा दीया”

पृ० सख्या—५

राजस्थान में रक्षाबंधन का पर्व भी अत्यंत ही धूमधाम के साथ मम्पन्न होता है। यह पर्व भाई बहिन के पवित्र प्रेम का प्रतीक है। इस अवसर पर राजघराने में मिठाइयाँ रुपये एवं वस्त्र देने की परम्परा रही है। रानिया व राजकुमारियाँ अपन भाइयाँ के राखियाँ बाधती थीं एवं मिठाइयाँ भेजती थीं। इस वही में भी इस अवसर पर महारानी द्वारा भेजे गए मिठाइयों के बाला एवं रुपयों का उल्लेख है—

“सावण सुद १५ राखडी रा बाला मेलीया रुपीया घरीया ।”

इस अवसर पर थोढ़णी व काचली भी दी जाती थीं यथा—

छोटा भटियाणीजी बाई परतापकवर ने दीना राखडी रा—

केसरिया थोढ़णी, दुसीकेरी ने काचली कोर गीटा री ।’

राजस्थान में ‘गायानम’ के अवसर पर नागदत्ता की पूजा होती है। इस वही में इस वष का भी मनाए जाने का उल्लेख है। महारानी द्वारा नागमंदिर में रुपये भेंट किए गए थे—

‘नागमंदिर र पुजारी न १ रुपया ।’

इस वही में ‘जन्माष्टमी’ के पर्व को मनाने का भी बखान है। महारानी ने कृष्ण भगवान के मंदिर में पुजारी को इस अवसर पर एक रुपया भेंट किया।

यहाँ भाद्र मास में पड़ने वाली बहवारस’ के पर्व को भी हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन पुत्रविहीन सलनाएँ ‘गाय माता’ की पूजा करती हैं। यह पर्व राजघराना में भी सम्पन्न होता रहा है। पर न अपने परिजना एवं ब्राह्मणों को रुपये व सोने इस वही में द्रष्टव्य है—

“श्री जोरावरमिथजी लाल भवरासिध ने

'टोगडा बह्मरारस' की पूजा करने वाली सवगणियों का भी रुपये भेंट किए गए। इस अवसर पर मंदिरा में भी रुपये भेंट किए जाते थे।

भाद्र मास में ही पड़ने वाले श्राद्ध पक्ष पर राजघराने द्वारा ब्राह्मणों का भोजन करवाने की सुदृढ़ परम्परा रही है। वहीं में इस अवसर पर ब्राह्मणों को भोजन कराए जाने का उल्लेख है—

“बाईजी श्री चादकबर बाईसा री सराध तीज नुवे जीण रा ग्रामणा न भोजन कराया”
पृ० सख्या—१३

राजघराने में धन पर विशिष्ट खर्च किया जाता रहा है। जो भी साधु-सन्यासी उपवास करते थे, उन्हें भी रानी द्वारा भेंट किए जाने का उल्लेख है—

“(२) फतेसागर माये बाबा जमी में बंठ न उपवास कीया जीण रे भेंट मेलीया।”
पृ० सख्या—१६

उपयुक्त उल्लेखों से ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि महारानी भटियाणी के मस्तिष्क में धार्मिक विचार कूट कूट कर भर हुए थे। महारानी ने ऐसे अवसरों पर ब्राह्मणों को गाँवों तक दान में दी है।

राजघरानों में विवाह की रस्म तो विशिष्ट रूप से मनाने की परम्परा रही ही है। अपने सम्बन्धिता के विवाह के अवसर पर रानी ने कपड़े एवं रुपये भेंट किए हैं। इस अवसर पर दुल्हे को बनोला (विवाह के अवसर पर दुल्हे के परिजन उसे विशिष्ट भोजन के लिए आमंत्रित करते हैं, उसे बनोला देना कहते हैं) देने का भी कारण इस वही में था है—

“(२०) चवाणजी रे लाल रे बनोला म सरच।”

इस अवसर पर दुल्हे की मा को वेश (पूरी पोशाक) के रुपये भी भेंट किए जाते थे। महारानी द्वारा ऐसे ही विवाह पर २००) दो सौ रुपये वेश के खर्च किए जाने का इस वही में उल्लेख द्रष्टव्य है—

“भादवा सुद ७ बहु श्री चवाणजी रे लाल रीणजीतसीध रे ब्याव रा वेश रा दीया रोकडी दोय सौ।”
पृ० सख्या—१०

इस अवसर पर कमीणा (दरजी लौहार, खाती, माली, नाई आदि) को रुपये एवं कपड़े भी भेंट किए जाते रहे हैं। महारानी ने एक दरजन को रुपये एवं ओढ़णी भेंट की उसका उल्लेख इस प्रकार है—

‘दरजी दयाराम री वऊ ने दोय रुपिया ने ओक ओढ़णी।’

पृ० सख्या—२६

राजघरानों में होली का त्यौहार तो विशिष्ट घूमघाम से सम्पन्न होता रहा है। इस अवसर पर राजा अपने परिजनों एवं श्रम्य लोगों को दावत देते थे। रानिया भी व्यक्तिगत रूप से राजघरान के लोगों को एवं श्रम्य लोगों को रुपये व मिठाइया भेंट करती थी। इस वही में भी होली के अवसर पर रानी भटियाणी द्वारा राजघराने के सेवकों को दावत के रुपये दिए जाने का वरुण है—

‘सौरकार रा मीनखा ने गोठ रा दीना बीस रूपिया।’ पृ० सख्या—५५

इस वही में श्रीमती भटियाणी रानी ने कुछ विशिष्ट पर्वों, उत्सवों, रस्मों एवं त्यौहारों पर व्यक्तिगत रूप से रुपये खर्च किए उभका उल्लेख है। राजघराना में ऐसे पर्वों, उत्सवों रस्मों एवं त्यौहारों को किस तरह मनाया जाता था, उसकी झलक तो मिलती ही है साथ ही साथ महारानी भटियाणी के धार्मिक एवं सामाजिक जीवन को भी समझा जा सकता है। इस वही में राजघराने में सम्पन्न होने वाले रीति रिवाजों एवं परम्पराओं के बारे में अच्छी जानकारी मिलती है।

१७१ महाराजा जसवन्तसिंहजी (द्वितीय) के थडे री वही

१ क्रम सख्या—२५६, २ वही का नाम—महाराजा जलवन्तसिंहजी (द्वितीय) के थडे री वही, ३ प्राप्ति स्थान—पृ० प्र०, ५ पत्र सख्या—, ५ लिपि समय—संवत् १६५६ वैशाख वद १ रविवार (सूरजवार) से जेठ वदी १०, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही में महाराजा श्री जसवन्तसिंहजी (द्वितीय) के थडे (मृत्यु स्मारक) पर हुए ‘भोग’, ‘छमछरी’ (सबत्सरी), ‘तसली’ ‘पूजापा’, ‘वरसगाठ’ (महाराजा जसवन्तसिंहजी की जयन्ती) एवं ‘फूल मण्डली’ आदि उत्सवों पर खर्च हुए रुपये का विवरण है।

धार्मिक जीवन -

महाराजा जसवन्तसिंह के निधन के पश्चात् अगले वर्ष उनके थडे पर छमछरी, तसली पूजापा वरसगाठ (जयन्ती) एवं फूलमण्डली का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र आभूषण, बतन रुपये आदि दान में दिए गए।

छमछरी फूलमण्डली वरसगाठ आदि का धार्मिक दृष्टि से विशिष्ट महत्त्व है। राजघराने में स्वर्गीय महाराजाओं की छमछरी उनके देवल पर फूलमण्डली का आयोजन एवं उनके जन्म दिन (जयन्ती) को उत्सवों के रूप में मनाने की परम्परा रही है। ये राजघरान के अपने रीति रिवाजों एवं परम्पराओं वही जा सकती है।

छमछरी -

भारतीय सभ्यता में धार्मिक दृष्टि से इसका विनिष्ट महत्व है। महाराजा जयसन्तसिंहजी के मृत्यु के दिन ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र वतन एवं रुपये दान में दिए गए। बतनो में घाल, चाटविया परात चरिया लोटा भारा आदि दिए गए इन छमछरी कहा जाता है।

फूलमण्डली -

होली के बाद राजघराने द्वारा राजकीय 'घडा' का फूला से सजाया जाता था। उसे 'फूलमण्डली' कहते हैं। महाराजा जयसन्तसिंह के 'घडे' को भी फूला से सजाया जाता था। इस अवसर पर ब्राह्मणों का दक्षिणा दी गई एवं उन्हें भोजन कराया गया। इन अवसर पर ब्राह्मणों को सान की कार के दुपट्टे भेंट किए गए।

घरसगांठ -

राजघराने में स्वर्गीय महाराजाओं की घरसगांठ (जय ती) मनाने की भी परम्परा रही है। महाराजा जयसन्तसिंह की भी घरसगांठ सन् १६५६ आश्विन वती नम (६) के दिन मनाई गई। इस दिन राजघराने के सदस्यों ने उनके नाम के ब्राह्मणों को रुपये, वस्त्र, प्रसाद एवं इत्र आदि दिए। इन अवसर पर देवस्थान में भी रुपये की भेंट चलाई गई। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

“२) माजी श्री देवडी सायबा रा भेंट” पृ० सख्या—६

‘श्री दादीजी सायबा रा—

५) १ ४) भेंट १) दुपट्टी वेसरीया भीरानपुरी

१) परसाद पुसपा री पुडी रा’ पृ० सख्या—८५

महाराजा जयसन्तसिंह के घडे की पूजा के लिए निम्न वस्तुएं काम में ली गईं—

बंसर, परसाद, कुकुम, पुष्प आदि।

इस वही में राजघराने के सदस्यों का विशेषतः धार्मिक जीवन के साथ दिवंगत राजा की श्रद्धाजलि दिये जाने के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश पड़ा है।

१७२ महाराजा श्री मानसिंह के राजलोक श्रीमती तोजा

भटियारणी रे हाथ खर्च री वही

१ क्रम सख्या—२६४, २ वही का नाम—महाराजा श्री मानसिंह के राजलोक श्रीमती तोजा भटियारणी रे हाथ खर्च री वही ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०,

४ पत्र सख्या—६८ ५ तिथि ममय—सवत् १९३२, ६ विशेष विवरण—
प्रस्तुत वही मे तृतीय भटियाणी के निजी सच का विवरण है ।

धार्मिक जीवन -

वही मे महादेवजी के पुजाये एव वृष्ण भगवान के लिए बनाई गई पोगाक के खर्च का उल्लेख है । वही मे जगह जगह गवरी पूजन का भी वरण है । गवरी पूजन वाली कुवारी कयाआ को महारानी द्वारा दिए गए रुपये एव मिठाइया के थालो की भी चर्चा है । इससे लगता है कि महारानी की महादेवजी, पावती एव वृष्ण भगवान व प्रति विशिष्ट आस्था थी ।

दान -

इस वही मे धार्मिक उत्सवा पर द्राह्यणा को दान दिए जाने का वरण है । यहाँ विकलागा एव ढालिया को प्रदान किए गए रुपयो के सच का भी उल्लेख है । इससे महारानी की उदार प्रवृत्ति का परिचय मिताता है ।

सामाजिक जीवन -

सानपान—वही मे जगह जगह मिठाइयो, पिसतो, दाखो आदि मे सच हुए रुपया का विवरण है । उस समय मिठाई राजघराने का विशिष्ट व्यजन था ।

वेशभूषा—वही मे मलमल, फागणिया, ओढणी आदि खरीदे जाने मे सच हुए रुपया का भी विवरण है । फागणिया ओढने फाल्गुन मास मे ओढे जाने का आज भी रिवाज है । फाल्गुन मास मे महिलाओं द्वारा फागणिये ओढने का प्रयोग किया जाना जोधपुर शहर की विशिष्ट परम्परा रही है ।

खोळ मे रुपये डालने की रस्म—वही मे किसी नव विवाहित वधु की खोळ (भोली) मे रुपये डालने का वरण है । यह परम्परा आज भी निभाई जाती है ।

घुडले की रस्म—वही मे घुडले की रस्म पर महारानी द्वारा कुवारी क याओ को घुडले की गोठ के लिए दिए गए मिठाई के थाला का वरण है । आज भी कुवारी कयाए चत्र मास मे घुडले खा के विधे हुए सिर के प्रतीक के रूप मे छेद किए हुए घडे को लेकर घर घर घूमती हैं । प्रत्येक घर से उह कुछ न कुछ दिया जाता है । इस रस्म का पालन वर्तमान युग मे भी वसा ही हो रहा है जसा पहले होता था ।

इस वही से तत्कालीन महारानियो के धार्मिक एव सामाजिक जीवन तथा रहन सहन के बारे मे अच्छी भलक मिलती है ।

इस वही से यह भी निष्पन्न निकलता है कि महारानियों को व्यक्तिगत रूप से धार्मिक व अन्य कार्यों में खच कराने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी। वे अपने व्यक्तिगत खर्च में अपने रुचि को चोजें भगवा सकती थीं।

१७३ महाराजा श्री मानसिंह के राजलोक श्रीमती तीजा तृतीय भटियाणी से सम्बन्धित वही

१ क्रम संख्या—३००, २ वही का नाम—महाराजा श्री मानसिंह के राजलोक श्रीमती तीजा तृतीय भटियाणी से सम्बन्धित वही ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र० ४ पत्र संख्या—४२, ५ लिपि समय—संवत् १६०४ व १६०५, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही में महाराजा मानसिंहजी की महारानी श्रीमती तीजा (तृतीय) भटियाणी द्वारा गुलाब सागर के ऊपर बनाय गये एक ठाकुरजी के मन्दिर पर खच हुए रूपया का विस्तृत विवरण दिया गया है। इसमें मन्दिर को बनाने वाले कारीगरों के नामों का भी उल्लेख हुआ है।

इस वही के अनुसार यह कहा जा सकता है कि महारानी ने राजनीतिक गतिविधियों के साथ साथ धार्मिक गतिविधियों में विशेष रुचि ली है।

यह एक सराहनीय कार्य कहा जा सकता है क्योंकि उस समय नाथ सम्प्रदाय का बोलबाला था। भटियाणीजी द्वारा स्वतन्त्र रूप से कृष्ण मन्दिर बनवाने से ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि वे उच्च कोटि की वैष्णव विचारा की महिला थीं। इस मन्दिर के बनवाने से एक तथ्य और उद्घाटित होता है कि नाथों की पूजा के साथ-साथ अन्य सम्प्रदायों की पूजा पर कोई रोक नहीं थी।

१७४ महाराजा श्री मानसिंह के राजलोक श्री तीजा भटियाणी से रैवास री वही

१ क्रम संख्या—३०४, २ वही का नाम—महाराजा श्री मानसिंह के राजलोक श्री तीजा भटियाणी से रैवास री वही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र संख्या—२४, ५ लिपि समय—वि० सं० १६०५ ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही में महाराजा मानसिंह की महारानी तृतीय भटियाणी ने रहन सहन और खर्च का विवरण दिया है। विभिन्न वस्तुओं पर खिये गये खच के माध्यम से हम उनके सामाजिक जीवन को भली भाँति समझ सकते हैं।

सामाजिक जीवन -

बस्त्र—मलमल की रंगाई पर हुए विशेष खच से ऐसा लगता है कि उस समय मलमल का विशेष प्रचलन था। मलमल को विभिन्न रंगों से रंगा जाता था।

४ पत्र सख्या—६८, ५ लिपि समय—संवत् १६३२, ६ विशेष विवरण—
प्रस्तुत वही मे तृतीय भटियानी के निजी सच का विवरण है।

धार्मिक जीवन -

वही म महादेवजी के पुजापे एवं कृष्ण भगवान के लिए बनाई गई पोशाक के सचों का उल्लेख है। वही मे जगह-जगह गवरी पूजन का भी बखान है। गवरी पूजन वाली कुंवारी ब्याओ को महारानी द्वारा दिए गए रुपये एवं मिठाइया के थालो की भी बर्चा है। इससे लगता है कि महारानी की महादेवजी, पावती एवं कृष्ण भगवान के प्रति विगिष्ट आस्था थी।

दान -

इस वही म धार्मिक उत्सवों पर ब्राह्मणों को दान दिए जाने का बखान है। यहाँ बिकलागा एवं डालिया को प्रदान किए गए रुपया के खच का भी उल्लेख है। इससे महारानी की उदार प्रवृत्ति का परिचय मिलता है।

सामाजिक जीवन -

राजधान—वही मे जगह जगह मिठाइया, पिसता, दाखो आदि मे खच हुए रुपयो का विवरण है। उस समय मिठाई राजघराने का विशिष्ट व्यजन था।

वेशभूषा—वही मे मलमल, फागणिया ओढणी आदि खरीदे जाने मे खच हुए रुपया का भी विवरण है। फागणिया ओढने फाल्गुन मास मे ओढे जाने का आज भी रिवाज है। फाल्गुन मास मे महिलाओं द्वारा फागणिये ओढने का प्रयोग किया जाना जोधपुर शहर की विशिष्ट परम्परा रही है।

खोळ मे रुपये डालने की रस्म—वही म किसी नव विवाहित बधु की खोळ (ओळी) म रुपये डालने का बखान है। यह परम्परा आज भी निभाई जाती है।

घुडले की रस्म—वही म घुडले की रस्म पर महारानी द्वारा कुंवारी क यात्रा को घुडले की गोठ के लिए दिए गए मिठाई के थालो का बखान है। आज भी कुंवारी ब्याए चत्र मास मे घुडले खा के विध हुए सिर के प्रतीक के रूप मे छेद किए हुए घडे को लेकर घर घर घूमती है। प्रत्येक घर से उह कुछ न कुछ दिया जाता है। इस रस्म का पालन वर्तमान युग मे भी बसा ही हो रहा है जैसा पहले होता था।

इस वही से तत्कालीन महारानियों के धार्मिक एवं सामाजिक जीवन तथा रहन सहन के बारे मे अच्छी भलक मिलती है।

इस वही से यह भी निष्कर्ष निकलता है कि महारानी की व्यक्तिगत रूप से धार्मिक व अन्य कार्यों में खूब करने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी। वे अपने व्यक्तिगत खर्चों में अपने रुचि की चीजें मगवा सकती थी।

१७३ महाराजा श्री मानसिंह के राजलोक श्रीमती तीजा तृतीय भटियाणी से सम्बन्धित वही

१ क्रम संख्या—३००, २ वही का नाम—महाराजा श्री मानसिंह के राजलोक श्रीमती तीजा तृतीय भटियाणी से सम्बन्धित वही ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र संख्या—४२, ५ लिपि समय—संवत् १६०४ व १६०५, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही में महाराजा मानसिंहजी की महारानी श्रीमती तीजा (तृतीय) भटियाणी द्वारा गुलाब सागर के ऊपर बनाये गये एक ठाकुरजी के मन्दिर पर रात्रि हुए रुपया का विस्तृत विवरण दिया गया है। इसमें मन्दिर को बनाने वाले कारीगरों के नामों का भी उल्लेख हुआ है।

इस वही के अनुसार यह पता जा सकता है कि महारानी ने राजनीतिक गतिविधियों के साथ साथ धार्मिक गतिविधियों में विशेष रुचि ली है।

यह एक सराहनीय कार्य कहा जा सकता है क्योंकि उस समय नाथ सम्प्रदाय का बालबाला था। भटियाणीजी द्वारा स्वतन्त्र रूप से कृष्ण मन्दिर बनवाने से ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि वे उच्च जाति की वैष्णव विचारों की महिला थी। इस मन्दिर के बनवाने से एक तथ्य और उद्घाटित होता है कि नाथों की पूजा के साथ-साथ अन्य सम्प्रदायों की पूजा पर कोई रोक नहीं थी।

१७४ महाराजा श्री मानसिंह के राजलोक श्री तीजा भटियाणी से रेवासरी वही

१ क्रम संख्या—३०४, २ वही का नाम—महाराजा श्री मानसिंह के राजलोक श्री तीजा भटियाणी से रेवासरी वही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र संख्या—२४, ५ लिपि समय—वि० सं० १६०५, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही में महाराजा मानसिंह की महारानी तृतीय भटियाणी के रहने सहने और खर्चों का विवरण दिया है। विभिन्न वस्तुओं पर किये गये खर्च के माध्यम से हम उनके सामाजिक जीवन को भली भाँति समझ सकते हैं।

सामाजिक जीवन -

यस्त्र—मलमल की रंगाई पर हुए विशेष खर्च से ऐसा लगता है कि उस समय मलमल का विशेष प्रचलन था। मलमल को विभिन्न रंगों से रंगा जाता था।

उन्होंने अपनी कविता में भगवान श्री रामचन्द्र जी का गुणगान किया है। उनसे भवसागर से पार लगाने की प्रार्थना की है। वही से ऐसा प्रतीत होता है कि यह भटियाणी रानी प्रताप कुँवर अच्छी कवयित्री थी जिसका उल्लेख मुशी देवीप्रसाद ने भी किया है। उनकी राम के प्रति विशिष्ट आस्था थी। उदाहरण के लिए कुछ पक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

“भवसागर में डूबता
कर गहि बाढी बार
पिता मातु सुत बधु सब
औ भूटो जजाळ
साचो एके प्रीतम हरी
रघुबर दीन दयाळ।”

कविता की पृ० सं०—१

वही के अनुसार भटियाणी साहिबा (प्रताप कुवर) ने श्री रघुनाथ जी (राम जी) के मंदिर में भेंट (रुपयो की) चढाई। उन मंदिर के पुजारियों को वस्त्र, बतन, रुपये आदि दान में दिये। उदाहरण के लिए—

“साध दामोदरदासजी रे
२ लोटा १ गीलास १ जपुर रा”

पृ० संख्या—१

अथ पुजारियों का भी वस्त्र, बतन आदि दिये। बतना में लोटा, कलसिया एवं वस्त्रो में सतरंग, घोतिया एवं पाघें दी गई।

प्रतापकु वरजी ने श्री रघुनाथजी के जरी की पोशाक बनवाई एवं एक सोने के मुजबंद की जोड़ी भेंट की।

प्रतापकु वरी का साहित्यिक जीवन के साथ-साथ धार्मिक जीवन आदि सस्कारों का अच्छा दिग्दर्शन इसमें हुआ है।

१७६ महाराजा मानसिंहजी के बाईजी श्री स्वरूपकवर रे विवाह की वही

१ ब्रम सरया—४००, २ वही का नाम—महाराजा जानसिंहजी के बाईजी श्री स्वरूपकवर रे विवाह की वही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र० ४ पत्र संख्या—१६६, ५ लिपि समय—संवत् १८८६ फाल्गुन बदी ६, ६ विशेष विवरण—महाराजा मानसिंह की पुत्री स्वरूपकवर के विवाह में सच हुए रुपया का प्रस्तुत वही में विवरण दिया है।

मलमल पर बधज का काम भी होता था। रंग करने में रंगरेज और पट्टे प्रसिद्ध थे। ये दो जातियाँ आज भी रंगई का ही काम करती हैं। मलमल पर गुलाबी फूलों का बंध किया जाता था। दुग्गा, दुग्गाला व ओरना भी काम में लिया जाता था। इन त्रहों में जयपुर की चुन्दी का भी उल्लेख है। उग गमय यह चुन्दी भी प्रसिद्ध थी। आज भी इस चुन्दी के धारे में लोकगीत प्रसिद्ध है। बहो व अनुसार सोन व गोट का उपयोग किया जाता था। मगमन भी विविष्ट रूप में काम में आती थी। ये सब चीजें मगराणों अपने लिए उपयोग में लेती थीं।

शृंगार -

बहो में महारानी व शृंगारण इन के रच का उल्लेख है। इन मुख्य रूप में गुलाब, क्यडा आदि का उपयोग में लिया जाता था। मारिदा की लडा का भी उल्लेख हुआ है। यह लट गले में पहनी जाती थी। आज भी मोतियों की लडा का प्रभूषण व रूप में विविष्ट मह में दिया जाता है।

खान-पान -

बहो में महारानी के खाने योग्य विभिन्न मिठाइयाँ व रच का लेखा जोखा है। महारानी के लिए विभिन्न तरह की मिठाइयें बनती थीं। जिनमें मुख्य हैं— लड्डू, जलेबी पडा पेडा कीटी या, खीचारी पेठी, नुखती, धेवर, दाल के लड्डू, मालपुवा सवादान, मीसरी, पनामा आदि मिठाइयाँ पर सोन का बक चढाया जाता था। ये सब मिठाइयाँ आज भी विविष्ट व्यंजना के रूप में प्रसिद्ध हैं।

उत्सव -

इस बहो में महारानी की बंध गोट पर किए गए रच का भी विवरण है। इसमें रानी की गोट पर मिठाइयाँ बाँटने का उल्लेख है। इस अवसर पर पूजा पाठ किए जाने का भी उल्लेख है। ब्राह्मणों को दान भी दिया जाता था।

१७५ महाराजा मानसिंह जी के राजलोक श्री तोजा भटियाणी साहिबा (प्रताप कुँवर) के बरणाया कवित्तरी बहो

१ क्रम संख्या—३४६, २ बहो का नाम—महाराजा मानसिंह जी के राजलोक श्री तोजा भटियाणी साहिबा (प्रताप कुँवर) के बरणाया कवित्तरी बहो
 ३ प्राप्ति स्थान—पृ० प्र०, ४ पत्र संख्या—७३ ५ तिथि समय—संवत् १६२१,
 ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत बहो में महाराजा मानसिंह की तृतीय भटियाणी (प्रताप कुँवर) के साहित्यिक व धार्मिक जीवन का दिग्दर्शन है। बहो के अनुसार

उन्होंने अपनी कविता में भगवान श्री रामचन्द्र जी का गुणगान किया है। उनसे भवसागर में पार लगाने की प्रार्थना की है। बही स गेया प्रनीत होता है कि यह भटियाणी रानी प्रताप कुंवर अच्छी कवयित्री थी जिसका उल्लेख मुशी देवीप्रसाद ने भी किया है। उनकी राम के प्रति विगिष्ट आस्था थी। उदाहरण के लिए कुछ पक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

‘ भवसागर में डूबता
कर गहि बाढी वार
पिता मातु सुत बधु मव
ओ झूटी जजाळ
साचो एवे प्रीतम हरी
रघुवर दीन दयाळ ।’

कविता की पृ० स०—१

बही के अनुसार भटियाणी साहिबा (प्रताप कुंवर) ने श्री रघुनाथ जी (राम जी) के मन्दिर में मँट (रुपया की) चढाई। उन मन्दिरों के पुजारियों को वस्त्र, बतन, रुपये आदि दान में दिये। उदाहरण के लिए—

“साध दामोदरदासजी रे
२ लोटो १ गीलास १ जंपुर रा”

पृ० सख्या—१

अथ पुजारियों को भी वस्त्र, बतन आदि दिये। बतना में लाटा, कलसिया एवं वस्त्रों में सतरंग, घोटिया एवं पाषे दी गई।

प्रतापकुंवरजी ने श्री रघुनाथजी के जरी की पोशाक बनवाई एवं एक सोने के भुजबंद की जोड़ी मँट की।

प्रतापकुंवरों का साहित्यिक जीवन के साथ साथ धार्मिक जीवन आदि सकारा का अच्छा दिग्दर्शन हममें हुआ है।

१७६ महाराजा भानसिंहजी के बाईजी श्री स्वरूपकवर रे विवाह की बही

१ ग्राम सरया—४००, २ बही का नाम—महाराजा भानसिंहजी के बाईजी श्री स्वरूपकवर रे विवाह की बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—१६६ ५ लिपि समय—संवत् १८८६ फाल्गुन वदी ६, ६ विशेष विवरण—महाराजा भानसिंह की पुत्री स्वरूपकवर के विवाह में खच हुए रुपये का प्रस्तुत बही में विवरण दिया है।

सामाजिक जीवन -

प्रस्तुत वही म विवाह की रस्म व समय सम्पन्न किये जाने वाले राजघराने के रीति रिवाजों का उल्लेख है। वही के अनुसार दस अवसर पर कई रस्म रिवाजों एव परम्पराओं का पालन किया गया।

रस्म -

सबप्रथम इस अवसर पर राजघराने के रिवाज के अनुसार राठीडा की कुल देवी नागएाची जी की पूजा की गई। इसका बाद विनायक जी (गणेश जी) की पूजा की गई। गणेश जी की पूजा में नारियल, कुकुम, मोठी चावल आदि उपयोग में लाये गये। इस समय विभिन्न दजी देवताओं की भी पूजा होती थी। जिनमें चावडा माताजी, हीगलाज माताजी, काला जी गोरा जी, महादेव जी आदि प्रमुख हात थे।

बागल के आने पर वर पक्ष का विशिष्ट आदर सत्कार हुआ।

तोरण की वदना -

राजस्थानी संस्कृति में तोरण की वदना का अर्थ महत्व है। वही के अनुसार स्वरूप कवर के पति (वर) न परम्परागत रूप से तोरण वदना की।

भावर लेने की रस्म -

विवाह मण्डप में (चवरी में) कथा अपने बनने वाले पति के साथ साथ भावरे (फेरे) लेती है, सभी विवाह पूरा माना जाता। वही के अनुसार स्वरूप कवर का उसके पति के साथ हथलेवा जोड़ा गया। उसने अपने पति के साथ साथ भावर (फेरे) लाये।

कथादान की रस्म -

विवाह मण्डप में कथा को सगे सम्बन्धियों द्वारा रुपया धाभूपणो एव वस्त्रा आदि की भेंट दी जाती है उसे कथादान कहते हैं।

वही के अनुसार यह रस्म परम्परागत रूप में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर स्वरूप कवर को राजघराने के सम्बन्धित लोगों न बहुत सी भेंटें दी जिनमें रुपये, धाभूपण व वस्त्र प्रमुख थे। इस अवसर पर उसे श्रु गारदान भी भेंट किया गया।

बारात को भोजन खिलाने की रस्म -

इस अवसर पर बारात में आने वालों को विशिष्ट मिठाइयों का भाग दिया गया। मिठाइया में जलेबी घेवर लड्डू मावा पखा लपसी हलुआ आदि खिलाए गए।

... के ...

... के ...

... के ...

'कवरीजी रे देवाह' जतारी इरोड़ी से गिनाइया गयो ।"

इम अवसर पर डावडिरो (दावियो) को वही धोसाके री सई । तरो भी मिठाइयो के घाल देकर प्रसन्न किया गया ।

नाजर लोगो को भी मिठाइयो से धा १०० रिपु पाए ।

विवाह सम्पन्न हो के घा" दुहरे क इल्लत से हाथी नी सारासो पर विभिन्न देवताओ देवियो व सोन देनी देगताओ नी परिवर्ता म पूजा की । इनमें सारोसपी, काला गोर्राजी, लक्ष्मीजी अणमाताजी, बालरा मातापी, रामदेवपी, भातूपी, गुसाईजी, मल्लीनाथजी, गोगाजी, गेहाजी, धावडापी, रामभद्रजी, महादेवपी, अहाजी आदि प्रमुख थे । इम सभी को कपडों नी भण अडाई गई ।

दहेज -

इस अवसर पर बाईजी थो इमरुण कवर का बहुत सा दहेज दिया गया । दहेज म सोना चांदी दिए गए । साथे ताम्बामियों के चामकुमारी धाभूणम म मण । दिये । आभूणों म ताम दस प्रकार है—मण, तीवर्णाम, मणिमं गीर मना री, मुजबद घाणि । या कुमारी म दिगपू म अड़ा सोर विभिन्न मण म मिस (पागावें) भी दिए गए ।

धान -

इस अवसर पर आहाणा का अटा, मणों धारि धान के मण किये गए ।

इस वही से जोधपुर राजघरान के विवाह सम्बन्धी रीति रिवाज के अलावा उस समय प्रचलित वस्तुआ के भाव और खानपान आदि पर अच्छा प्रकाश पड़ता है।

१७७ महाराजा श्री मानसिंहजी के राजलोक श्रीमती तोजा तृतीय भटियानी रे हवन री वही

१ क्रम सरया—४१०, २ वही का नाम—महाराजा श्री मानसिंहजी के राजलोक श्रीमती तोजा तृतीय भटियानी रे हवन री वही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सरया—१५, ५ लिपि समय—संवत् १९१८, ६ विशेष विवरण—इस वही में महाराजा मानसिंह के तृतीय भटियानी द्वारा महला में हुए हवन (होम) एवं उसमें ब्राह्मणा को दिए गए दान-दक्षिणा के बारे में विस्तृत विवरण है। इसमें राज परिवार के लोगों का धार्मिक जीवन विशेष रूप से उभर कर सामने आया है।

धार्मिक जीवन -

राजस्थानी संस्कृति में व्रतों का विशिष्ट महत्त्व है। राज परिवार में भी व्रत रखने की परम्परा प्रचलित थी। विशेष तौर से रातिया व राजकुमारियाँ व्रत रखा करती थीं। व्रत पूरे होने पर उन्हें 'उजवणा' (व्रत पूरा होने पर होम द्वारा समापन करने की प्रक्रिया) किया जाता था। इस अवसर पर ब्राह्मणा को बुला कर महलो में हवन करवाया जाता था।

प्रस्तुत वही में ऐसे ही हवन का वर्णन आया है। यह हवन महारानी भटियानी के समय महलो में सम्पन्न करवाया गया। वही के अनुसार हवन सामग्री यह थी—भू ग, तिल धी, बाजरी चावल जायफल, गुलाल, चावल हींगलू कपूर, तमाल पत्र, धीफल केसर सुफारिया भोजपत्र, पतासा पान नागर, जवार, नारियल आदि।

दान दक्षिणा -

अन्न दान—इस हवन में ब्राह्मणा को अन्न दान दिया गया। जिसमें मसूर की दाल, भू ग जवार, उड़द, तिल, चने की दाल, बाजरी आदि दिए गए।

वस्त्र दान—कसरिया दुपट्टे मुलमुल रजाइया घोटिया आदि दिये गये।

आभूषण दान—ब्राह्मणा को सोने की टीकड़ी, मुरकिया, घोटिया आदि भेंट किए गए। इस अवसर पर ब्राह्मणा का वत्तन भी भेंट किए जाते थे।

इस प्रकार राज परिवार में समय-समय पर हवन आदि हुमा करते थे । ब्राह्मणों को दान दक्षिणा हाती थी । इससे पान होता है कि रानिया एव राज-कुमारियों की धमपालन के प्रति विनिष्ट रचि थी ।

१७८ महाराजा मानसिंहजी के राजलोक पांचवां भटियाणीजी री छत्ररी री बही

१ श्रम सख्या—४३४, २ वही का नाम—महाराजा मानसिंहजी के राजलोक पाचवा भटियाणीजी साहिबा री छत्ररी री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—८१, ५ लिपि समय—सवत् १६३७ फाल्गुन सुदी १३ से सवत् १६३६ फाल्गुन सुदी ४ ६ विरोप विवरक—यह वही महाराजा मानसिंह की महारानी पाचवी भटियाणी की यादगार म बनाई गई छत्ररी (मृत व्यक्ति की स्मृति में बनाई जाने वाली ममाधि) से सम्बन्धित है । छत्ररी का बनवान में लगभग द्वा वष लग । प्रस्तुत बही में इन दो वर्षों में छत्ररी पर खच हुए रूपया का विवरण है । यह छत्ररी 'पच कुण्डा छत्ररी' के नाम से तयार हुई । पच कुण्डा छत्ररी राजपूती स्थापत्य बना की दृष्टि से विशिष्ट मानी जाती है ।

राजघराने के लोग की छत्ररिया विशिष्ट रूप से बनाई जाती रही है । जोधपुर में न केवल राजाओं की बल्कि रानियों की भी कई छत्ररिया मडोर में देखने को मिलती है । एसी छत्ररिया में महाराजा मानसिंह की महारानी श्रीमती पाचवा भटियाणीजी की पचकुण्डा छत्ररी का विशिष्ट महत्व है । यह छत्ररी स्थापत्य कला की दृष्टि से उत्कृष्ट है । इससे एसा अनुमान लगाया जा सकता है कि इसमें कारीगरों का विशिष्ट वाय हुमा है ।

छत्ररी की नीव देते समय या छत्ररी बनाने का मुहूर्त करते समय पूजा के वायक्रम का आयोजन होता था । इस अवसर पर ब्राह्मणों को भोजन भी करवाया जाता था । पूजापे के रूप में दूध, दही, श्रीफल, तेल, पतासा आदि काम में लाते थे । इस अवसर पर ब्राह्मणों को खाद्य सामग्री (जैसे—आटा, गुड, दाल, घीरत आदि), बतन (जैसे—कलसियों, वाटकियों आदि) आभूषण (जैसे—सोने की टीकड़ी) आदि दान में दिये जाते थे । इन सब दान दक्षिणाया के पश्चात् छत्ररी बनाने का वाय प्रारम्भ किया जाता था ।

इस वही के अनुसार कुछ कारीगरों के नाम इस प्रकार हैं—गजधर—माली गणेश, किसना, सूरजमल, सीताराम, माली धनो आदि । कारीगरों एव चूनगरों

के ऊपर एक पेशगार होता था जो इनकी हाजरिया एवं रुपये पैसा का लेखा-जोखा रखता था।

छतरी बहुत सुन्दर बनाई जाती थी। छतरी में मृत व्यक्ति की प्रशस्ति लिखने हेतु मकराने के पत्थर का उपयोग किया जाता था, ऐसा इस बही में प्रमाणित होता है। इस बही में 'घाटू भाटे' का उल्लेख है। यह पत्थर गायत्र छतरिया के लिए विशिष्ट उपयोगी रहा है। इस बही के अनुसार छतरी को सफेद रंग से रंगने हेतु कली में 'मकराने की जीफरी' को मिलाया जाता था। मकराने की जीफरी सम्भवतः सफेद पत्थर से बनती थी। जिसे कली में मिलाया जाता था। जिससे कली विशिष्ट प्रकार की हो जाती थी।

इस बही से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मृत व्यक्तियों पर छतरिया बनवाना राजघराने की अपनी परम्परा रही है। मारवाड़ में स्थापत्य कला के विकास की दृष्टि से इसका अध्ययन उपयोगी है।

१७६ महाराजा श्री तरतसिंहजी रे महाराजकुमार श्री माघोसिंहजी रे वर्ष गाठ री बही

१ ग्रन्थ संख्या—५३६, २ बही का नाम—महाराजा श्री तरतसिंहजी रे महाराजकुमार श्री माघोसिंहजी रे वर्ष गाठ री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र संख्या—१५३, ५ लिपि समय—संवत् १६२५, ६ विषय विवरण—प्रस्तुत बही में महाराजा तरतसिंह की राणावत रानी द्वारा महाराजकुमार माघोसिंह की वर्ष गाठ पर खर्च किये गये रुपये का विवरण है। राजघरान में वर्ष गाठ के उत्सव को विशेष रूप से मनाया जाता था। बही के अनुसार इस अवसर पर राजघराने से सम्बन्धित व्यक्तियों, देवस्थाना, ब्राह्मणा, कमौणो आदि को मिठाइयों के थाल भेंट किए गए। ब्राह्मणों को वस्त्र दिए गए।

यह बही, बही न० १५३ से मिलती जुंती है। विशेष विवरण के लिए बही न० १५३ देखें।

१८० महाराजा श्री तरतसिंहजी रे राजलोक श्री राणावतजी री बही

१ ग्रन्थ संख्या—८०६, २ बही का नाम—महाराजा श्री तरतसिंहजी रे राजलोक श्री राणावतजी री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र संख्या—३०४, ५ लिपि समय—संवत् १६३६, ६ विषय विवरण—महाराजा तरतसिंह की रानी राणावत द्वारा देवस्थाना के लिए तथा 'राखी', 'सोमवती अमावस्या',

'निरञ्जना इग्यारम' पर रक्षित हुए रूपों का इस प्रती में वर्णन है। इस वही म रानी का धार्मिक जीवन ही उभर कर आया है।

यह वही, वही न० २४६ से मिलती जुलती है। विशेष विवरण के लिए वही न० २४६ देखें।

१८१ महाराजा श्री तख्तसिंहजी के राजलोक के जनम कुण्डलियों की वही

१ ब्रम सख्या—८२६, २ वही का नाम—महाराजा श्री तख्तसिंहजी के राजलोक के जनम कुण्डलिया की वही ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—२८, ५ लिपि समय—ख्रि० स० १६०० स १६३० के मध्य, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही म महाराजा तख्तसिंह के राजलोक पडतायत, महाराजकुमार एवं महाराजकुमारियों की जन्म कुण्डलिया का विस्तृत विवरण संस्कृत भाषा में लिपिबद्ध किया है।

प्राचीन समय से ही जन्म कुण्डलिया बनवाने का रिवाज रहा है। जनमानस अपना भविष्य के भाग्योदय जानने के लिए पण्डितों द्वारा जन्म कुण्डलिया बनवाता है। राजस्थानी संस्कृति के अनुसार विवाह संस्कार पर वर व प्रथु की जन्म कुण्डलिया को विशेष महत्व दिया जाता है।

राजघरान में भी अपने भविष्य की जानकारी के लिए जन्म कुण्डलिया बनवाई जाती थी। जन्म कुण्डलिया बनाने के बदले में पण्डितों को रुपये, वस्त्र, मिठाइयों आदि की भेंट दी जाती थी।

यही म वडा राणावतजी वडा भटियाजी श्री चावडीजी, श्री भटियाणीजी, श्री राणावतजी श्री वडा तुवरजी श्री तीजा भटियाणीजी श्री तुवरजी महाराज कुमार जसवतसिंह, बाईजी श्री यादवकवरजी, वडा भटियाणीजी के महाराजकुमार, वडा राणावतजी के महाराजकुमार प्रतापसिंहजी श्री चावडीजी के महाराजकुमार रणजीतसिंहजी, वडा राणावतजी के महाराजकुमार केसरीसिंहजी बाईजी इन्द्रकवर, मानसिंहजी (सुरताणसिंहजी), गगा के बेटे जुहारसिंहजी, परबत के बाईजी, गगा के बाईजी गिभयकवरजी, वड बेटे की कुरजा, गगा के बाईजी छोटेकी, गगा के बाईजी की, मनोहरसिंहजी, सूरतसिंहजी, पडदायत जसराजजी श्री मतमगी आदि की जन्म कुण्डलिया अंकित है।

तत्कालीन ज्योतिष सम्बन्धी मायताओं के अध्ययन हेतु यह सामग्री उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

१८२ महाराजा जसवतसिंहजी (द्वितीय) के राजलोक श्री जाडेचीजी जसवत सराय कराई उण रो बही

१ क्रम सख्या—८३१, २ वही का नाम—महाराजा जसवतसिंहजी (द्वितीय) के राजलोक श्री जाडेचीजी जसवत सराय कराई उण रो बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—४१ ५ लिपि समय—संवत् १६५५ माह सुद १३ से माह सुद ७, ६ विशेष विवरण—संवत् १६५५ म महाराजा जसवत सिंह की जाडेची रानी ७ महाराजा जसवतसिंह (द्वितीय) की यादगार मे जसवत सराय बनवाई । उस सराय की प्रतिष्ठा पर खच हुए रुपया का विवरण है ।

धार्मिक, सामाजिक रीति रिवाज -

भारतीय सस्कृति के अनुसार प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य के पूरा होने पर उसकी प्रतिष्ठा करवाई जाती है । राजघराने में यह परम्परा एक विशेष ढंग से निभाई जाती रही है । इस शुभ अवसर पर ब्राह्मण लोग से हवन करवा कर इमारत की प्रतिष्ठा करवाई जाती थी । पूजा पाठ का आयोजन होता था । हवन व पशुवा द्राह्मणों को भूरसी दक्षिणा' (किसी महत्वपूर्ण कार्य के पूरा होने पर राजघरान की आर से ब्राह्मणों का जो दान दिया जाता था उसे भूरसी दक्षिणा कहते हैं) दी जाती थी । उन्हें भोजन करवाया जाता वस्त्र व रुपय भेंट किये जाते थे । इमारत का निमाण करवाने वाले महाराजा या रानी का उनके सम्मान में सामन्तों व अन्य विशिष्ट लोगों द्वारा नजराना (सम्मान में भेंट किये गये रुपय व सामन की माहुरें) दिया जाता था ।

उपयुक्त सभी उल्लेख इस वही में देखे जा सकते हैं । इस प्रकार यह प्रतिष्ठा का उत्सव भी राजघराने के रीति रिवाजों में विशेष महत्व का विषय है ।

इस समय गौदान होता था और हवन में रुपय भी भेंट किये जाते थे, यथा—

५) गऊदान रा

७) होम 'री भेंट'

पत्र सख्या—५ व

ब्राह्मणों को भूरसा दक्षिणा दी गई यथा—

' १०)। सीरमालीया ने भूरसी रा'

पत्र सख्या—६ अ

प्रतिष्ठा पर पुष्पा की मालाएँ एवं चौसरे भगवाय गय । उन पर खच हुए

रुपया का विवरण इस प्रकार है यथा—

१७) पुसप खरीद माली भगवान रा

४॥) चौसरा नग ५० नग ११ लेने

७॥ =) पवीतरा नग २०० नग २५ लेखे

८॥॥) मालावा नग २५ रा २ लेखे

पत्र सख्या—६ ब

जाडेची रानी ने महाराजा जसवतसिंह (द्वितीय) की यादगार एव लोकापकार हेतु जसवत सराय का निर्माण करवाने पर सामन्तो एव अत्रय विधिष्ट लागा ने उनके सम्मान मे नजराना भी दिया, यथा—

“श्री दरवार सायबा रे नीजर नीछराबर करण ने हस्त कामदारजी

२))१४) श्री दरवार सायबा रे लेखे भेट करण सारू रोकड

२))१४)

४) श्री जवानसिघजी

१५) श्री गोपालसिघजी

२) पूजर रसूलजी रे”

पत्र सख्या—११ अ

प्रतिष्ठा के समय अग्निहोत्री श्रीकृष्णजी को रुपये भेंट किये गये यथा—

“२५) अगनोतरी सीरीकीसनजी रे भेंट’

पत्र सख्या—१७ ब

ब्राह्मणा को वतन दान मे दिये गये यथा—

सीरमाली गीरधारी हसते रसी—

५) कळस माटो छोटो

१२) कळसीया ताबा रा छोटा

७) कळसीया ताबा रा माटा

३) चरीया पीतल री’

पत्र सख्या—३४ अ

जसवत सराय की प्रतिष्ठा के पुनीत पावन अवसर पर हवन किया गया ।

उसके लिए निम्न चीजें उपयोग मे ली गईं—

बुकुम मोळी मरसू सुपारिया, लूग डोडा जगाल, मेहदी, दाल चीनी, कवल के बीज, कुटक, श्रीफत हिगळू, जावतरी, नतरवालो, आबी हळद, हळद के गाठिय बादाम, दाखें, पिसता, काजल की पुडी, भोज पत्र मिसरी, कपास, धूप, चदन, सिंगोडा, जायफल, काली मिच सलाजीत, जटामाणसी, कपूर, केसर, अवीर, सिंदूर, गुलाल, सेहण, सरब ओखदी, चदन का चूरा, कागणी गोटा, क्षारक, गुड, किस्तूरी, इय पचभूतिया तावे की आदि ।

इस अवसर पर मंदिरों मे भेंट चढाई गई, यथा—

“१२५) मूरता नग १। आसरे गी

२) बाटकीया नग २ २) आसरे री

१) छतर नग १।) मर आसरे

पत्र सख्या—३६ अ

बही में मुखार रतन द्वारा जसवंत सराय के लिए बनवाये गये दरवाजा के खच का भी उल्लेख है। दरवाजा के लिए सागवान की लकड़ों का काम में ली गई।

बही में राजघराने के धार्मिक एवं सामाजिक रीति रिवाजों के अतन्त इमारत (जसवंत सराय) की प्रतिष्ठा करने का जिक्र है। एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि रानी जाडचीजी ने लोकोपकार के लिए जसवंत सराय का निर्माण करवा कर अपने लोक कल्याणकारी चरित्र का परिचय दिया है। स्थापत्य कला की दृष्टि से भी बही का अध्ययन उपयोगी है।

१८३ महाराजा विजयसिंह री बही

१ क्रम सत्या—८३७, २ बही का नाम—महाराजा विजयसिंह री बही
३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र० ४ पत्र सत्या—२०, ५ लिपि समय—वि० स०
१८१७ स १८३८ ६ विशेष विवरण—इस बही में महाराजा विजयसिंहजी के समय सम्पन्न हुए मुण्डन मस्कार एवं दूध के वार में विस्तृत विवरण दिया गया है।

सांस्कृतिक रीति रिवाज -

दूध उगाना—हाथी के त्यौहार पर एक समूह के रूप में कुछ गहरिये लाग गाने-बजाते ज में लेने वाले शिशु के पिता के घर पर जाते हैं और बच्चे का दूधत है अर्थात् दीर्घायु होने का आशीर्वाद देते हैं।

राजघराने में ता राजकुमारा की दूध उगाने के लिए कई समूह भ्रान्त थे। वहाँ से रोक्ड रुपय, वस्त्र तथा मिठाइयाँ प्राप्त करते थे।

भङ्ग से जो बड़ा किया जाता (मुण्डन मस्कार)—सोलह मस्कारों में मुण्डन मस्कार का भी अपना विशिष्ट महत्व है। अब भी राजस्थान में इस मस्कार का विशेष ढंग से सम्पन्न किया जाता है। बच्चे का मुण्डन किसी स्त्री स्वेता के यान पर सम्पन्न किया जाता है। दही-देवता को 'बुरम' (मिठान्न) की भेंट चढ़ाई जाती है। धीरे-धीरे गीत गाती हैं। मुण्डन करने वाले को सवा रुपया, सवा पाच या सवा इक्कीस रुपय भेंट किये जाते हैं।

राजघराने में इस मस्कार का पण्डितों द्वारा मुहूर्त निकलवाया जाता था। पूजा-पाठ होता था। मुण्डन-मस्कार धार्मिक यातावरण में सम्पन्न किया जाता था।

इस बही में दूध एवं मुण्डन मस्कार पर काफी प्रकाश डाला गया है।

बही में दूध उगाने का उदाहरण दृष्ट्य है—

“राणीजी श्री सेखावतजी रा डावडा रे दूढा हुई तीण री वीगत—
 ३ नागौर म श्री कवरा रा जनम हुआ तीण री दूढा नागौर मे हुई
 १ कवर श्री फतेहसिधजी री
 १ कवर श्री भोमसिधजी री
 १ कवर श्री सीन्दारसिधजी री’

पत्र सख्या—१ अ

दूढ करण ने माय गया तीण री विगत नीचे—
 २५) कवर श्री गुमानसिधजी रे दूढ स० १६१६ रा
 फागण सुद १५ री हुई तर
 २५)२ श्री हजर मू पाया
 २५) रोकड २ बागो ताली

१ १

पत्र सख्या—१ व

दूढ के अवसर पर रानी को भी उसक पीहर स समय व कपटे भेट होते थे ।
 इसके अलावा अन्य रानिया भी उसे रुपये व वस्त्र भेंट करती थी यथा—

‘ ३३) १५ बीकाजी श्री मानसिहजी कवरजी श्री गुमानसिधजी रे बेटा री
 बरु चक्रवाणजी रे १६३६ रा मगमर मुत् ११ न कवर जनमिया जीण री
 दूढ १६३६ रा फागण सुद १५ रे दन हई, तर इण मुजब आया सु जमा—
 २५) रोकड खासा खजाना सु
 २) नवा कपडा रा कोठार सु
 १) बागो १ केसरीया वज बाडा रा सला र गज २॥ ३

× × × ×

॥॥) गोटो सोनेरी तालो ॥॥) लबी १॥ रा गज ६। = पत्र सख्या—३ अ

राजघराने म व्यक्ति दूढ उगाने जाते थे, उहे वहाँ स रुपये दिये जात थे—
 ‘१२) १५ दुदण न होली मगलाय ने माय गया जणा १०

१ नाजर गगादास	१ व्यास
२ जोसी	१ पीरोयत
२ बदीया	१ कोतवाल
१ सेवग श्री माता जी रा	१ जनानी दाडी रो दोढीदार

पत्र सख्या—३ ब

इस अवसर पर दूढ के उपलक्ष म रुपय व मिठाइया के थाल दिये जात
 थे यथा—

श्रीमन् ईशानु दिमा—

१२ गोकुड रूपीया

२ नाजर गगादास ने

२ व्यास नु प्रोयत न

१ १

१ जोसीया नु

३ वानवान ने

१ बेदीयानु

१ नग रो

२ मोसगी रो बाळ गे

१ सातमा रा मिनरा नु ३)

१ ज्जानु दोढी रा

१ सेवग श्री माता जी नु

१२)

पत्र मस्या—३ अ व

इस घवसर पर मिठाइया से नरे घात भी दिय जात थे, यथा—

११ घाल ११ पुरस्या

१ व्यासजी २

१ नाजर गगादास रे

× × ×

× × ×

× × ×

१ जोसीया २

१) कोतवाल न

आदि आदि ।

पत्र सस्या—४ अ

मुण्डन सस्कार पर भी राजघराने से रुपये, वस्त्र तथा मिठाइया वाटी जाती जाती थी यथा—

वका मगराज श्री विजसिंघजी सायबा रा राज म

२५) राणीजी श्री न्चडीजी रे कवरा री तथा कोकाजी खीवरा हुई

२५) कवरजी श्री सरसिंघजी री खीवर

२५)१ श्री न्चवार सु पायो

२५) गोकुडा

१ पासाख १

२५)१

पत्र सस्या—६ अ

खावर (मुण्डन) सस्कार पर देवी-देवताओं की पूजा होती थी । मुण्डन का मुहूर्त निवाला जाता था और मंगलाचार के गीत गाये जात थे । इस वहा की निम्न पक्तिया से उपयुक्त बात स्पष्ट है यथा—

' मोरथ रो बाळ श्री राणीजी सा रा डावडा लारे राज रा मीनख
गीतरेणीया ऊ दोढी ऊपर जरोला म व्यास प्रोयत जोसी बेदीया सारा
हाजर हुवे जठे डावडा रे माथे ऊ बाळ श्री नागसेचीमा माताजी रो सेवग

लेने पधराव तर जोती लगा लीसे तीण री पुजन व्यास पुरायन करे तीण बसन मगलाचार कराव । पछे पाछा घाल सबग सेने डावडा रे माये धरे तरे रगराग करती माय गइ ।” पत्र संख्या—१० अ

ऐसे अवमरा पर राजघरान म भी प्राय उही देवताओ की पूजा होती थी जो सामान्य जनता पूजती है । वही रीति रिवाज सम्पन्न हात ये जो सामान्य जनता सम्पन्न करती है । अंतर बवल इतना ही था कि राजघरान म एसे रीति रिवाज विशेष ढग स सम्पन्न होते । उनम हजारो रुपय खच होत । दूमरी तरफ जनता साधारण ढग से एसे ही रीति रिवाज का सम्पन्न करती थी ।

इस वही म उल्लिखित उपयुक्त दोना संस्कार राजस्थानी संस्कृति की विशेषता को उद्घाटित करते हैं ।

१८४ महाराजा श्री तरतसिंहजी रे राजलोक श्री जाडेचीजी री वही

४ पत्र संख्या—१२७४, उ वही का नाम—महाराजा श्री तरतसिंहजी र राजलोक श्री जाडेचीजी री वही ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र० ४ पत्र संख्या—४६ ५ लिपि समय—संवत् १९३२ भादवा सुद १२ से भिगसर सुद ४, ६ विशेष विवरण—राजघराने म ‘अगरणी’ व जमोत्मव मनाने की परम्परा रही है । वही के अनुसार महाराजा तरतसिंह के जाडेचीजी ने ‘उड़ी रानी राणावत की अगरणी’ एव महाराजकुमार व जम हान पर उनका जमोत्मव मनाया । इनस एसा प्रतीत होता है कि राजाया म परम्पर घनिष्ठ प्रेम था । व आपसी सद्भाव बनाये रखती थी ।

अगरणी का उत्सव -

गभवती रानी के स तान होने के पहले अगरणी उत्सव मनाया जाता था । इस समय गुड बाटा जाता था । राजघराने की महिलाएँ (रानिया, राजकुमारिया व अन्य) गभवती रानी का खोल भरती थी । उसकी खाने-पीन की हर इच्छा पूरा की जाती थी । इस अवसर पर गभवती रानी का रुपये वस्त्र, मिठाइया आदि भेंट किये जात थे । वही की कुछ पक्तिया द्रष्टव्य है—

‘अगरणी रा उछव भादवा सुद १२ ने हुयो तरे

पाळा तथा साधा आई तीण रा

खाळा रा जमा—

६) साजो श्री लीजा भटीयाणी दादीजीसा रा दुण्डेरा रा

६) रोकड बळदार १) साडी

१) मवा रा थाल १) काचळी पृ० सख्या—१

६) नानजी श्री भोपालसिधजीसा रे बळप्रा रा—

४) राकड १) साडी लपा री

२) मवा रा थाल १) काचळी बोग री

१) श्रीफन पृ० सख्या—५

रानी को दी गई वस्त्रा की मेंट स लगता है कि उस समय साडी का भी प्रचलन था ।

जन्मोत्सव —

राजघराने में जन्मोत्सव मनाने की परम्परा रही है । वही क अनुसार रानी जावेही बडा रानी राणावत द्वारा महाराजकुमार को जन्म देने पर उनका जन्मोत्सव विशेष हर्षोल्लास के साथ मनाया । इस अवसर पर राजघराने के व्यक्तियों को मिठाइयां व घाल ब्राह्मणों की दक्षिणा, बमीणों का इनाम व मंदिरों में पोसाण एवं मिठाइयां के थाल मेंट किये गये । महाराजा तो अपने राजकुमार का जन्म उत्सव मनाते ही थे । मगर किमी रानी द्वारा दूसरी रानी क राजकुमार जन्म लेने पर उनका जन्मोत्सव मनाना राजकुमार को जन्म देने वाली रानी क प्रति विशिष्ट सम्मान एवं प्रेम का ही प्रतीक है ।

जन्मोत्सव पर राजकुमार के हाथ में राजघराने के एवं सम्बन्धित व्यक्ति रुपये दते थे । ऐसा ही उल्लेख इस वही में आया है यथा—

'श्री भवरजीसा रा हाथ में रोकडा बळदार

५) श्री छोटा राणावतजीसा री तरफ ऊ श्री भवरजीसा र हाथ में

१) भार घान

५) रुपीया पाच बळदार

वही के अंतिम पृष्ठ पर

इस अवसर पर पडदायतें भी महाराजकुमार के हाथ में रुपय, मिठाइयां व वस्त्र मेंट करती थी यथा—

१) पडदायत श्री मेहताबरायजी रा

१) राकड रुपीया १) आरणीयो

१) थाल मवा रा १) टोपी

पृ० सख्या—६४

अब लोग भी जिनका राजधराने में मन्व-घ होता था, महाराजकुमार को नोट देते थे, यथा —

- २) नमुजी री बऊ रा १) आरणीयो दुसीया रो
 १) टोपी दुसीया री ७० सख्या—७२

महाराजकुमार के जन्म की बधाई दान वाला को भी रुपय इनाम में दिया गया, यथा—

- श्री भवरजीसा रा जनम मीगसर बद ४ गुरुवार ने
 २२) श्री तीजा देवडीजीसा रा
 ५) डावडिया न
 ६) मालसा वालीया ने ७० सख्या—५३

इस वही में राजधराने में राजकुमार के जन्म के पहले व जन्म होने पर सम्पन्न की जाने वाली परम्पराओं एवं रीति रिवाजों के बारे में विशेष रूप से जानकारी मिलती है।

१८५ महाराजा श्री तहतसिंहजी रे राजलोक श्री तीजा (तृतीय) चवाणजी रे जनानी डयोढी खच री

१ व्रम सख्या—१५५६, २ बही का नाम—महाराजा श्री तहतसिंहजी साहब र राजलोक श्री तीजा (तृतीय) चवाणजी रे जनानी डयोढी खच री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ८ पत्र सख्या—६५, ५ लिपि समय—संवत् १६३६ आदिवन मास से १६३७ मीगसर बद १४, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही में जनानी डयोढी के खच का विवरण है। तृतीय चौहान रानी द्वारा रगरेज, सुनार, कदोई पिजारे आदि को काम के बदले दिये गये रुपयों का विवरण है। इस वही से उस समय उपयोग में आने वाले कपड़े, आभूषण, मिष्ठान्न, बतन, बिस्तर आदि तथा वस्तुओं के भावा के बारे में अच्छी जानकारी मिलती है।

कपड़े —

वही में दुपट्टे व मलमल का उल्लेख आया है। इनको कुछ विशेष रंगों में रंगा जाता था, इनके मूल्य भी अंकित किये गये हैं। कुछ पक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

। =) रोपीया रो कीरमची गज २। =

॥ ≡) ॥॥ मुलमुल वेंगणीया गज ४ =

। -) ॥ मुलमुल मेरी गुलाबी गज ६॥ -

७० सख्या—१

अगरखिया व पायजामा व रंगान का भी वणन है, यथा—

गुलाबी रंगीया

अगरखीया ४

पायजामा ४

उस समय अगरखिया व कुरता व पहनन का बहुत रिवाज था। जगनाथी मन्मल प्रसिद्ध थी। इसका उल्लेख इस प्रकार है—

॥ २ ॥ ४ जगनाथी मृत्तमूल गज ४

पृ० सख्या—३

इस मन्मल से अगरखिया, ओरणो व पायजाम बनवाय जात थे। जाली व ओरणा की भी इसमें शर्चा है।

वही के अनुसार कपडा को रंगन के लिए उपयोग म लिय जात वाल रंग निम्न है—

गहरा गुलाबी बेंगनिया, कबूतरिया, अगूरिया मोनिया हल्का गुलाबा, कपागिया (कपास जैसा आदि)।

इसमें राजघरान क रगरजा क नाम भी आये है। यह रगत ईमाम बन्ध व जमाल रगरज स करवाई जाती थी।

इसमें स्त्रिया की पोशाक का भी उल्लेख है। यथा स्थान काचली, कुरती व लहंगा का भी वणन है।

मिठाईय -

इस वही में देवस्थान में भेजी गई एव जनानी डयोडी में विभिन्न अवसरों पर भगवाई गई मिठाई का उल्लेख आया है।

राजकुमारों की वय गाठ पर भगवाई गई मिठाई का उल्लेख इस प्रकार है, यथा—

०) मीठाई खरीद

१) छोटा नाडू

१) पनामा खरीद

पृ० सख्या—२२

ओरी माता के चढाई गई मण्डार में बोलमा का प्रसाद व गिवरात्रि व अवसर पर चढाई गई मिठाई का वणन है। मिठाईयो में देवर, लड्डू जलेबी कीटी, पढा हलुआ मोतीचूर के लड्डू, मोइतिली (छोटे मखाणो) तिल पापडो आदि का उल्लेख है। कुछ नमकीन का भी जिक्र है यथा—कचोरिया सेव, सिगोड की सेवा आदि।

विवाह के अवसर पर मगवाई गई मिठाई का उल्लेख है, यथा—

III =) पोस रा मास मे

III -) वद १० माराज श्री जालमसिंहजीसा रा व्याध
रो बनोलो मलीयो तीण मे मीठाई—

घेवर मीसरी

I -) II)

पृ० सरया—२७

वध गाठ पर मगवाई गई मिठाई का उल्लेख इस प्रकार है—

श्री समरथ बाईजी लाल री वरस गाठ रो उछन

४) मीठाई

१) पतासा मारू

१) गुजा रा पठा १) III)

१) मीठाई १) री २ =

१) छोटो लाडू २ =)

पृ० सग्या—२८

इस प्रकार 'कीरयावर', श्री माता की पूजा के लिए 'बोलमा का प्रसाद' चढाने के लिए, माताजी के मंदिर पर फूल मण्डली के समय एक गड ऊपर आने वाली मिठाइया का उल्लेख इस बही मे है ।

आभूषण -

इस बही मे विभिन्न आभूषणों का भी जिक्र है जो समय-समय पर बनवाये गये । इनमे कुछ आभूषणों के नाम इस प्रकार है—बोर (सोने का), मादलिया, वडा, हासली, टोटिया साकलिया, कडला, गूगरो की बालिया, नवरिया, सोने की चूडिया, सोने का हार, मोतियों का हार, हाथी दात का चूडा आदि ।

इनमे से कुछ आभूषण देवस्थान भी भेजे जाते थे । बही मे राजघराने के आभूषण बनाने वाले कुछ सुनारों के भी नाम आये हैं, यथा—पूमाराम, मगाराम, रतनाराम, जीतमल आदि ।

वहा के अनुसार सोन चादी के आभूषणों को तोलने के लिए तोले व रती का प्रयोग होता था ।

बतन -

बही मे उस समय उपयोग मे लिये जाने वाले विभिन्न घातुआ के बतना के बारे मे भी उल्लेख है ।

पीतल व बतना व नाम इस प्रकार है—धान, घालिया, परात, बढावतिया, भारा कुडची कुडचा लोटा, पीतल वा गडवा, बळस, घाटकिया आदि ।

ताम्र व बतन इन प्रकार हैं—बागना, दग, दग के ढक्कणे, डाल आदि ।

वासी के बतन इस प्रकार है—घाटकिया, घाटका, तासली, घाली घाटि ।

कुछ पीतल व बतना का उल्लेख इस प्रकार है, यथा—

घासण री बीगन

पीतल रा वासण

१२) धान मोटा छाटा

३ ६

१०) घालीया

१) परात

विस्तर -

वही में पिजार से जनानी डयादो के लिए तैयार किये गये कुछ विस्तरा वा भी यथास्थान उल्लेख है । कुट्टेक के नाम इस प्रकार हैं—

घासिया, तबिया, पीडे (बाजोट) पर रखन की गादी, गदरा, पयरणा, रजाई आदि ।

इसमें खाखा नामक पिजारे का नाम आया है । यह राजघराने का पिजारा था ।

घासिया का उल्लेख इस प्रकार है, यथा—

घासिया १ लागी रो पाटरे रो, बाईजी लाल सामबा रे ।

इस वही में उस समय क बपडे, मिठाइया, आभूषण, बतन एवं विस्तर आदि के बारे में विस्तृत रूप से उल्लेख है । साथ में वस्तुओं के मूल्य भी उल्लेख है और वही-वही मजदूरी के पैसों भी उल्लेख किये गये हैं । इसमें तत्कालीन राजघराने के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर प्रकाश पडा है ।

१८६ महाराजा श्री तख्तसिंहजी के पडदायत श्री रूपजोत री बही

१ क्रम संख्या—१६२१, २ बही का नाम—महाराजा श्री तख्तसिंहजी के पडदायत श्री रूपजोत री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र संख्या—६८, ५ लिपि समय—संवत् १९१६ जठ बदी १०, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत

वही में देवस्थान, पाकशाला तथा दासियों पर खर्च हुए रुपयों का विवरण दिया है। वही में महाराजा तर्कसिंह ने श्री रूपजोत को पडदायत की पदवी दी, उस रस्म पर खर्च हुए रुपयों का भी विवरण है।

पडदायत की पदवी, राजघराने की रस्म -

राजघराने में यह परम्परा थी कि महाराजा जिस रखेल पर खुश हो जाते उसे 'पडदायत' (पदों में रहने वाली) की पदवी देते थे। इस अवसर पर उसे सोना इनायत दिया जाता था। इस अवसर पर एक रस्म का आयोजन होता था। जिसमें नई पडदायत को पूव की पडदायतों रुपयों व वस्त्रों की भेंट भी देती थी। राजघराने के अग्र्य लोग भी उसे भेंट देते थे। इस दिन नई पडदायत का सम्मान होता था। यह रस्म भी राजकुल में महत्वपूर्ण मानी जाती थी। प्रस्तुत वही में उपयुक्त सभी उल्लेखों का वर्णन है।

इस वही के अनुसार महाराजा श्री तर्कसिंहजी ने अपनी रखेल रूपजोतजी को पडदायत की पदवी दी और उसे पैंरों में सोना व हाथों में हाथों दात का चूड़ा पहनने का अधिकार प्रदान किया। यह दिन राजकुल की परम्परानुसार एक रस्म के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर ब्राह्मणों को रुपये दान में दिये गये। वही का कुछ अंश उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत है—

“जेठ वद १० सोनो इनायत हुवो ने चूड़ो दात रो पटीया रो ने पडदायत पदवी हुई तरे

६।।) नग श्री घरम वद—

१) जोसी सावलदास दीढी रा चूडा रो

१) घर रा वीरामणा ने भूरसी रो

× × ×

१) पनरायजी रो वामणी ने भूरसी रो

पृ० सख्या—१३८

इस अवसर पर कमीणों को भी रुपये दान में दिये जाते थे, यथा—

६।।।) कमीणा ने दीया

१।।।) लखारा काळु रो बहु न

१) चूडो पेरायो तिण ने

× × ×

१) घर रो नायण काच दीखायी तरं १)

पृ० सख्या—१४१

१८७ महाराजा श्री तस्तसिंहजी के पडदायत श्री फूलराय रे दान पुन री बही

१ क्रम सख्या—१६४५ २ बही का नाम—महाराजा श्री तस्तसिंहजी
क पडदायत श्री फूलराय रे दान पुन री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४,
पत्र सख्या—१५ ५ लिपि समय—१६३७ वैशाख वद ७ से १६४६ आषाढ
वद ७, ६ विशेष विवरण—महाराजा तस्तसिंह के पडदायत फूलराय द्वारा पुण्य
हेतु विभिन्न अवसरा पर ब्राह्मणा को कराये भोजन व दक्षिणा म खच हुए रुपया का
विवरण है ।

धार्मिक जीवन -

राजधरान की स्त्रिया राजनीतिक कार्यों के साथ-साथ धार्मिक कार्यों में भी
बराबर भाग लेती थी । व ब्राह्मणा का मुक्त हस्त से दान करती थीं एव उन्हें
विभिन्न अवसरो पर भोजन व दक्षिणा के लिए आमंत्रित करती थी ।

प्रस्तुत बही में एसा ही उल्लेख है । महाराजा तस्तसिंह की पडदायत
फूलराय ब्राह्मणा को पुण्य अजन करन हेतु भोजन कराती थी व उन्हें दक्षिणा देती
थी । बही के अनुसार ग्यारह ब्राह्मणा को भोजन कराया । उस भोजन के लिए
पाच रुपया की चीजें आयी, जिनका उल्लेख द्रष्टव्य है, यथा—

५)

- | | |
|------------|-----------|
| २।) खाड | १) धीरत |
| ३।) आटो | १) मुगधणो |
| =) केरीया | =) साग |
| =) दूध | =) मसाला |
| | १) दीखणा |

पृ० सख्या—१

कुछ ब्राह्मण व ब्राह्मणिया को दक्षिणा के रुपये भेंट किये, उनके नाम इस
प्रकार है यथा—

१) जोसी छोटमल्जी

१) जोसी रघुनाथ री बहू

१) जोसी देवीचंदजी

पृ० सख्या—१

सब १६३६ में भाद्रपद मास में बारी के ब्राह्मणा का भाजन कराया गया ।
उस समय जो जीनम आयी उसका उल्लेख द्रष्टव्य है, यथा—

३) खाड

३।) घीरत

॥) मदा

। =) आटो

। ३) दीखणा रा दीया

पृ० सख्या—२

संवत् १६४४ मे जिन ब्राह्मणों को भोजन कराया उनके कुछ नाम इस प्रकार हैं, यथा—

वीरत वीरामणा री

१) वीरा मानीरामजी

१) बारा साळगरामजी

१) व्यास मगदत्तजी

पृ० मस्या—१६

इस प्रकार तत्कालीन धार्मिक धर्मकाण्ड। एव महाराजा के उप पत्निया के जीवन पहनुआ पर वही म प्रवाश पडा है ।

914192-

पगुद	गुद	पृष्ठ नं०	पक्ति स०
महदास	महेगदास	०३	१०
३५	४५	४५	१६
आसा	भाडा	१२५	१
रूपतिषणी	रूपतिषत्री	१२६	१
सिपीत	सिपीत	१३१	२१
६६	३६	१३२	२२
४२	४३	१३३	५
वी	री	१३३	१३
मानसिच	मानसिष	१३६	१६
१०२	१०३	१४६	८
६	३	१५५	१५
क्यात	स्यात	२०३	१०
युपटो	दुपटो	२१६	२
बाजुवन्द	बाजुवन्द	२१६	८
मिसत्री	मिसत्री	२३६	१८
वादि	आदि	२४५	२०
शयादात	शयादान	२५८	६
वप	पव	२६०	२०
रपये	रुपये	२६१	१
दृष्टि	दृष्टि	२६३	२
महानी	महारानी	२६६	२०
गाठ	वपगाठ	२६६	२१



- * जन्म सन् १९३०, माळूगा ग्राम (जोधपुर)
- * शिक्षा एम ए, एन एल बी, पी एच डी
(राजस्थान विश्वविद्यालय)
- * संस्थापक निदेशक राजस्थानी शोध संस्थान,
चौपामनी, जाधपुर (१९५५)
(जाधपुर विश्वविद्यालय से मायता
प्राप्त शाधकेन्द्र)
- * सम्पादक शाध पत्रिका परम्परा (१९५६ से
वर्तमान तक)
- * सम्पादित ग्रन्थ इतिहास की सामग्री—धीम ग्रन्थ
प्राचीन राजस्थानी साहित्य—पचास ग्रन्थ
- * ग्रन्थ लेखन डिगल गीत साहित्य, राजस्थानी
साहित्य कोष व छद्म शास्त्र आदि
- * राजस्थानी के युग प्रवक्तक भूबन्ध कवि
व्यारह काव्य कृतिया प्रकाशित
- * केन्द्रीय साहित्य अकादमी तथा अनेक संस्थाओं
से पुरस्कृत व सम्मानित
- * शोध निर्देशक इतिहास व राजस्थानी विषय
(जोधपुर विश्वविद्यालय)
- * प्रोजेक्ट निर्देशक भारतीय इतिहास अनुसंधान
परिषद्, नई दिल्ली
- * महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश (फोट
जोधपुर) के सम्पाद्य निदेशक